राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डा० पद्मधर पाठक

[ निदेशक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ]

ग्रन्थाङ्क १५५

# अजीत विलास



सम्पादक

डा० शिवदत्तदान बारहट एम. ए., पी. एच. डी.

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)

**Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.**

1984

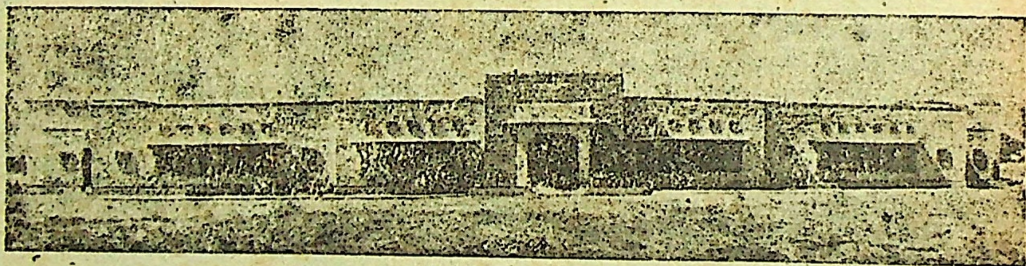
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक
[ निदेशक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ]

ग्रन्थाङ्क १५५

# अजीत विलास

सम्पादक
डा० शिवदत्तदान बारहट एम. ए., पी. एच. डी.



प्रकाशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.

1984

प्रथमावृत्ति 500

मूल्य रु० 33.50

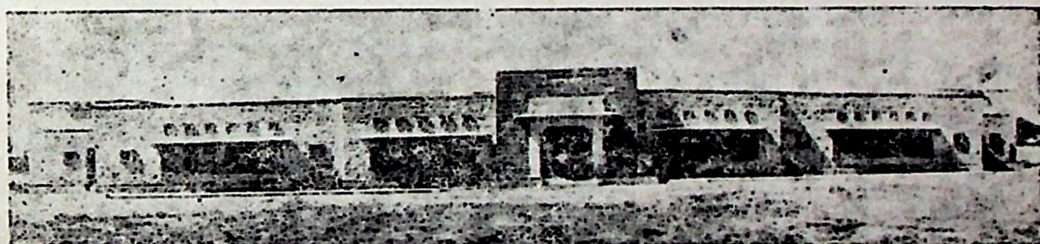
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक
[ निदेशक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ]

ग्रन्थाङ्क १५५

# अजीत विलास

सम्पादक
डा० शिवदत्तदान बारहट एम. ए., पी. एच. डी.



प्रकाशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)
**Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.**

1984

प्रथमावृत्ति 500 मूल्य रु० 33.50

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत: अखिल भारतीय तथा विशेषत: राजस्थान प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक
डा० पद्मधर पाठक

ग्रन्थाङ्क १५५

सम्पादक
डा० शिवदत्तदान बारहट

प्रकाशक
राजस्थान राज्य संस्थापित
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

मुद्रक
विनोद प्रिंटिंग उद्योग, जोधपुर

वि. सं. 2040 ई. सन् 1984

# विषय -- सूची

# प्रधान सम्पादकीय

चौपासनी से एक बार प्रकाशित हो जाने के बाद इस 'विलास' में दुबारा शिरकत करने के पीछे हमारा क्या आकर्षण रहा इस बात की जानकारी प्राक्कथन एवं प्रस्तावना में मिल जाती है। अभी तक जितनी प्रतियां मिल चुकी हैं संयोगवश वे दोनों ही गुमनाम हैं और यही अभाव उनके रचनाकाल अथवा लिपि-काल को लेकर पाया जाता है। इसका भी एक कारण है। यहां वर्णित सामग्री के स्वरूप को देखकर यह तो स्पष्ट है कि इतना लम्बा कालक्रम आंखों देखा कदापि नहीं हो सकता है।

बहीनुमा ख्यात लेखन की यह जो सामंती परम्परा थी उसका मूल उद्देश्य घटनाओं को संकलित करते रहने का था। आलोच्य कृति में वर्णित घटनाओं के इस मर्यादित क्रम के बावज़ूद उल्लिखित तथ्यों की जांच पड़ताल करने के लिए और भी अनेक ग्रन्थ हैं। उसी आधार सामग्री के बीच इस रचना को भी रखकर देखना चाहिए।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के मर्मज्ञ डा० रघुवीरसिंह जी सीतामऊ ने प्राक्कथन लिखकर बड़ी कृपा की है। आंखों पर अधिक जोर न डालने के प्रति-बन्ध की अवहेलना कर उन्होंने प्रतिष्ठान के प्रति अपने पुराने स्नेह का परिचय दिया है। ग्रन्थ के सम्पादक श्री शिवदत्तदानजी ने बड़ी लगन से ग्रन्थ का सम्पादन किया है। अनेक आवश्यक टिप्पणियां देकर उन्होंने शोधार्थियों का मार्ग सरल किया है।

प्रूफ शोधन आदि में श्री गिरधरवल्लभ दाधीच, कनिष्ठ तकनीकी सहायक का पूर्ण सहयोग रहा। विनोद प्रिंटिंग उद्योग, जोधपुर के व्यवस्थापक श्री चन्द्रप्रकाश परिहार ने अपना पूरा सहयोग देकर थोड़े ही समय में यह पुस्तक मुद्रित कर दी। एतदर्थ श्री दाधीच व प्रेस व्यवस्थापक दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

पद्मधर पाठक
निदेशक

22 नवम्बर, 1983

# प्राक्कथन

यद्यपि उन पूर्ववर्ती प्रारम्भिक ख्यातों की कोई प्रतियां अथवा तत्सम्बन्धी कोई प्रामाणिक उल्लेख अब तक देखने को नहीं मिले हैं. तथापि ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि मारवाड़ में "ख्यात-लेखन" की परम्परा ईसा की 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से तो अवश्य ही किसी न किसी रूप में प्रारम्भ हो गई होगी, क्योंकि राव जोधा के समय से ही जो वार, तिथि आदि मिलते हैं, वे अधिकांश में सही प्रमाणित होते हैं। मुहणोत नैणसी कृत "मारवाड़ रा परगना री विगत" में उल्लिखित ये सही पूर्ववर्ती तिथियां आदि उसे ऐसी ही पूर्ववर्ती ख्यातों, आदि से ही प्राप्त हुई होंगी, जो कालान्तर में मारवाड़ के प्रामाणिक इतिहास का आधार बन गई।

यह निर्विवाद सत्य है कि प्राय: ये सब ही ख्यातें व्यक्तिगतरूपेण ही लिखी गई, जिनको लिखने वाले प्राय: राजकीय अधिकारी होते थे, और उन ख्यात-लेखकों के नाम कभी भी उन पर नहीं लिखे जाते थे। पुन: ये सभी ख्यातें निजी संग्रहों में ही सुरक्षित रहीं जिससे सन् 1563-1583 ई. तथा सन् 1678-1708 ई. के बड़े अन्तरालों में जब जोधपुर में राठौड़ राज्य का अस्तित्व तक नहीं रह गया था, तब भी उनके पश्चात्कालीन ख्यात-लेखकों को उनसे पूर्ववर्ती तथा उन अन्तरालकालीन घटनाओं सम्बन्धी सही वार-तिथि माह और घटनाओं के प्रामाणिक विवरण प्राप्त हो सके थे ऐसे ही विभिन्न समकालीन विवरणों का आकलन कर मुहणोत नैणसो ने अपनी "ख्यात" तथा "मारवाड़ रा परगना री विगत" ग्रन्थों की रचना की थी।

नवम्बर 28, 1678 ई. को पेशावर में जब महाराजा जसवन्तसिंह का देहान्त हुआ, तब उनके कोई पुत्र विद्यमान नहीं था, अतः औरंगज़ेब ने मारवाड़ राज्य को सीधा मुग़ल शासन के अधिकार में लिया। तब जोधपुर क्षेत्र में जो मुग़ल-राजपूत संघर्ष प्रारम्भ हुआ, वह लगभग तीस वर्ष तक चलता ही रहा। इन वर्षों में जोधपुर नगर और किले पर मुग़ल आधिपत्य बना रहा। इस तीस वर्षीय मुग़ल-राजपूत संघर्ष काल की घटनाओं की जानकारी तब लिखी गई ख्यातों आदि से ही प्राप्त हो सकती है। ऐसी ही जानकारी का उपयोग कर महाराजा अभयसिंह के काल में वीरभांण रतनू ने "राजरूपक" नामक ऐसे ऐतिहासिक काव्य की रचना की, जिसमें

अधिकांश ऐतिहासिक घटनाओं के सही तिथि-माह-वर्ष दिये गये हैं, और उसी कारण उसके सारांश को लेकर छोटा काव्य लिखना सम्भव नहीं था। स्पष्टतया तब लिखी गई ऐसी ख्यातों, अन्य विवरणों, और "राजरूपक" काव्य, आदि के आधार पर महाराजा मानसिंह के आदेशानुसार उनके समय में लिखी गई "मारवाड़ की ख्यात" में इस तीस वर्षीय मुग़ल-राजपूत संघर्ष का प्रामाणिक विवरण दिया जा सका था।

प्रस्तुत "अजीत-विलास" ऐसी ही एक ख्यात है, जिसमें औरंगज़ेब का देहान्त होने के कोई बीस दिन बाद से लेकर मार्च 1707 ई. अजीतसिंह के जोधपुर पर अधिकार करने तक के मुगल-राजपूत संघर्ष तथा उसकी मृत्यु पर्यन्त अजीतसिंह के शासन-काल विषयक प्रारम्भिक महत्व की विशिष्ट आधार-सामग्री मिलती है।

जोधपुर के चारण वणसूर महादान के संग्रह के जिस "फुटकर ख्यात" शीर्षक हस्तलिखित ग्रन्थ में "अजीत-विलास" नामक सम्पूर्ण ग्रन्थ प. 71 अ-121) अप्राप्य है, वह ईसा की 19 वीं शताब्दी के तीसरे दशक के लगभग लिखा जाने लगा था। प्रतिलिपिकार ने चाहा था कि जोधपुर राजघराने सम्बन्धी विभिन्न कालीन ख्यातों की क्रमश: प्रतिलिपि कर एक ही पोथी में जोधपुर राज्य के तब तक के इतिहास को सुलभ कर दिया जावे। पूर्ववर्ती वृत्तांत किन-किन ख्यातों से संकलित या नकल किये गये यह निर्धारित करना सम्भव नहीं है। परन्तु जब उस ग्रन्थ का प्रतिलिपिकार "श्री अजीतसिंघजी रा अहवाल" लिखने को प्रवर्त्त हुआ था, तब उसे अजीतसिंह के शासनकाल के उस संघर्ष-कालीन विवरण विषयक एक मात्र "अजीत-विलास" ग्रन्थ (अथवा ख्यात) उपलब्ध हुआ। अत: उससे नकल करने लगा, परन्तु प्रारम्भिक अंश की कोई 20 पंक्तियां लिखने के बाद उस पत्र 70 ब को अधूरा ही छोड़कर अगले पत्र 71 अ पर शीर्ष पर "श्री नाथजो साय छै" लिख कर नीचे उस ग्रन्थ का शीर्षक लिखा-"महाराजा अजीतसिंघजी रो अजीत बीलास लीषतै' और बाद में ही इस मूल ग्रन्थ की प्रतिलिपि करना उसने प्रारम्भ किया।

इस समूचे ग्रन्थ को पढ़कर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह ग्रन्थ सम्भवतः महाराजा अजीतसिंह के देहान्त के कुछ समय बाद अवश्य ही संपूर्ण कर दिया होगा। इसमें केवल नाहर खांन के मारे जाने [ अक्तूबर 1. 1722 ई. ] के बाद महाराजा अजीतसिंह के विरुद्ध अजमेर पर शाही सेना भेजे जाने के सन्दर्भ में दो बार 'आंबेर' के स्थान पर 'जैपुर" लिखा मिलता है, जो स्पष्टतया प्रतिलिपिकार की ही भूल जान पड़ती है।

श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ, में "सुरक्षित "कविराजा-संग्रह" की

सबही हस्त-लिखित पोथियों. ग्रन्य हस्तलिखित ग्रन्थों अथवा प्रतिलिपियों की पूरी-पूरी छान-बीन के बाद भी कोई अन्य ख्यात देखने में नहीं आई, जिसमें इस तीस वर्षीय मुगल-राजपूत संघर्ष का समकालीन विस्तृत विवरण सुलभ हो। अतएव इस काल की घटनाओं के विवरण के लिये "अजीत-विलास" का विशेष महत्व सुस्पष्ट हो जाता है। महाराजा मानसिंह (1803-43 ई.) के आदेशानुसार उन्हीं के शासन-काल में रचित "जोधपुर राज्य की ख्यात" में भी आधारग्रन्थ के रूप में इस ग्रन्थ से अवश्य ही लाभ उठाया गया होगा, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। "फुटकर ख्यात" शीर्षक वाली हस्तलिखित पोथी गौरीशंकर ओझा को सुलभ नहीं थी, अतएव वे उसका समुचित उपयोग नहीं कर पाए थे, तथापि तेस्सीतोरी ने "अजीत-विलास" विषयक जो भी संक्षिप्त जानकारी अपने "डिस्क्रिप्टिव केटेलाग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स" (खंड 1-भाग 2, पृ 18-19, में प्रस्तुत की है, उससे ओझा ने भरपूर लाभ उठाया था (जोधपुर0, 2, पृ. 566-67, 603)।

तेस्सीतोरी ने "अजीत-विलास" को "महाराजा अजीतसिंह जी री ख्यात" भी कहा है, तथापि इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में राव सीहा के मारवाड़ आने के समय से लेकर महाराजा जसवंतसिंह के देहान्त तक का सक्षिप्त इतिहास दिया है, और आगे उसी क्रम में महाराजा अजीतसिंह के विखा (संकट) काल का विस्तृत इतिहास लिखा है। इस सारे विवरण में लेखक ने बीच-बीच में अनेकों पारम्परिक पद्य उद्धृत किये हैं। मार्च 12, 1707 ई. को जोधपुर के किले पर अधिकार कर लेने के बाद उसके पूर्ववर्ती उस काल में जिन-जिन ने उसकी स्वामीभक्तिपूर्ण सेवा की थी, उनकी प्रशंसा में महाराजा अजीतसिंह रचित 212 दोहे दिये हैं। मारवाड़ राज्य-शासन और मुगल साम्राज्य के साथ अजीतसिंह के सम्बन्धों आदि का विवरण कालानुक्रम से दिया गया है। गुजरात की सूबेदारी के काल में महाराजा अजीतसिंह ने द्वारका-यात्रा की थी। वह कष्टदायक भी हुई थी। उसका काव्यात्मक विवरण दिया गया है। फर्रुखसियर के पतन और बाद की दिल्ली की गतिविधियों में अजीतसिंह के योगदान की समुचित जानकारी दी गई है। सैय्यदों के पतन के साथ हो युवा मुगल सम्राट् मुहम्मदशाह के साथ महाराजा अजीतसिंह के सम्बन्ध बिगड़ने लगे, और मई, 1723 ई. में अजीतसिंह अजमेर में शाही सेना का सामना करने को तत्पर हुआ। समझाए-बुझाए जाने पर वह मेड़ते लौट गया, और समझौता हो जाने पर सन् 1723 के उत्तरार्द्ध में उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र अभयसिंह को शाही दरबार में भेज दिया। तदनन्तर अजीतसिंह के मन में 'दिल्ली तरफ से खतरो घणो पड़ियो'। अन्ततः "चूक (षड्यन्त्र) से महाराजा अजीतसिंह वैकुण्ठ चला गया। उसके साथ सती होने वाली राणियों की सूची के साथ ही यह ग्रन्थ समाप्त हो जाता है।

यह हर्ष का विषय है कि उसी "अजीत-विलास" का यह सुसम्पादित संपूर्ण पाठ प्रकाशित हो रहा है। राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी, ने 'परम्परा', भाग 27, में इसके अपूर्ण पाठ को प्रकाशित कर इतिहासकारों की जो जिज्ञासा जागृत की थी, वह अब पूरी हो सकेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ को राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, प्रकाशित कर रहा है, उसके लिये हम उनके बहुत अनुगृहीत हैं, क्योंकि वह अप्राप्य ग्रन्थ अब इतिहासकारों को सहज सुलभ हो जावेगा।

रघुबीरसिंह

"रघुवीर निवास"
सीतामऊ (मालवा)
मई 30, 1983

# प्र स्ता व ना

ईसा की सतरहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में मारवाड़ राज्य के दीवान और सुप्रसिद्ध इतिहासकार मुहणोत नैणसी ने सुव्यवस्थित ढंग से प्रामाणिक इतिहास–लेखन परम्परा प्रारम्भ की। अपने ऐतिहासिक ग्रन्थों के लिये सामग्री-संकलन के कार्य में तब उसने अपने सहकर्मियों के साथ ही अन्य व्यक्तियों को नियुक्त किया था। अतः इस कार्य में संलग्न व्यक्तियों और परिवारों में इतिहास - लेखन के प्रति अभिरुचि जागृत हुई। परिणाम स्वरूप नैणसी के बाद भी वहां पर ऐतिहासिक ग्रन्थों के सृजन और प्रामाणिक आधार-सामग्री के संग्रह का कार्य चल निकला, जिससे धीरे-धीरे इस प्रक्रिया का विकास भी होता रहा। ईसा की अठारहवीं सदी में मारवाड़ के इतिहास और यहां के शासकों के जीवन वृत्त को लेकर अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना हुई। इसी परम्परा के अन्तर्गत अठारहवीं सदी के मध्य में महाराजा अजीतसिंह के जीवन और शासनकाल पर 'अजीत-विलास' नामक एक चम्पू इतिहास की रचना हुई।

तैस्सीतोरी ने हस्तलिखिति ग्रन्थों के सर्वेक्षण-प्रतिवेदन में पारलू निवासी महादान वणसूर के संग्रह से प्राप्त "फुटकर ख्यात" के विवरण के अन्तर्गत सर्व प्रथम इस 'अजीत-विलास' नामक ग्रन्थ का उल्लेख किया था[1]। लेकिन इसके पश्चात् एक लम्बे समय तक यह ग्रन्थ अप्राप्य ही रहा। इस समयावधि में राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने इस 'अजीत-विलास' ग्रन्थ का उल्लेख करते हुए उसमें दिये गये अजीतसिंह रचित कुछ दोहे उद्धृत अवश्य ही किये,[2] लेकिन तब ग्रन्थ की पूर्ण प्रति अप्राप्य होने के कारण इसका वे समुचित उपयोग नहीं कर सके थे। कालान्तर में डा. नारायणसिंह भाटी को 'राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी' जोधपुर के संग्रह में इस 'अजीत-विलास' की अपूर्ण प्रति सुलभ हुई, जिसको उन्होंने 'राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी' से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक शोध पत्रिका 'परम्परा' के भाग 27 [सन् 1969 ई0] में प्रकाशित किया है।

अपने सम्पादकीय आलेख में डा. नारायणसिंह भाटी ने तैस्सीतोरी द्वारा वर्णित "अजीत-विलास" ग्रन्थ की उक्त प्रति के विषय में लिखा है कि इसके उद्धरणों और विवरण से पता चलता है कि दोनों ग्रन्थों के प्रारम्भिक अंशों में समा-

---

1. डेस्क्रिप्टिव केटलाग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स, खण्ड 1, भाग 1, पृ. 18-19 नं. 5, प. 77 अ-12। अ.

2. ओझा., जोधपुर., भाग 2, पृ. 566, 567,603,

नता है, परन्तु तैस्सीतोरी द्वारा उल्लिखित प्रति में अजीतसिंह के बनाये हुए दोहे इस प्रस्तुत प्रति में नहीं है, और इस प्रकार दोनों में पर्याप्त भिन्नता भी है[1] किन्तु तब डा. नारायणसिंह भाटी इस प्रति को देख भी नहीं पाये थे।

तैस्सीतोरी द्वारा वर्णित "फुटकर-ख्यात" नामक ग्रन्थ राजस्थानी कोषकार श्री सीताराम लालस से अक्तूबर 1976 ई. में क्रय किया जाकर श्री नटनागर शोध-संस्थान, सीतामऊ में संगृहीत किया गया। तब 'अजीत-विलास' नामक इस चम्पू इतिहास-ग्रन्थ की उक्त प्रति प्रथम बार सुलभ हुई थी। तदनन्तर जब उसकी उपयोगिता और महत्व की दृष्टि से उस प्रति में प्राप्त पाठ की प्रतिलिपि करवा कर "परम्परा" में प्रकाशित "अजीत-विलास" से उसका मिलान किया गया तब जो महत्वपूर्ण तथ्य सामने आये वे इस प्रकार हैं:—

दोनों प्रतियां एक ही मूल प्रति की प्रतिलिपियां हैं। इनमें मुगल बादशाह औरंगजेब के मरणोपरान्त चैत्र कृष्णा 5,1763 वि. के दिन अजीतसिंह द्वारा जोधपुर पर अधिकार करने की घटना तक का विवरण लगभग समान ही है। इस बात का डा. नारायणसिंह भाटी ने भी उल्लेख किया है। लेकिन प्रकाशित प्रति में अनेक स्थलों पर मूल प्रति के कुछ वर्णन प्रतिलिपिकार की असावधानी के कारण छूट गये हैं। यही नहीं प्रकाशित प्रति के पद्यांशों में स्थान-स्थान पर अनेक अक्षर और पक्तियां त्रुटित हैं, और छंदो—भंग की त्रुटियां भी मिलती हैं, जिनका उल्लेख डा. नारायणसिंह भाटी ने किया है।[2] यों स्पष्ट हो जाता है कि प्रकाशित प्रति का यह अंश भी त्रुटिपूर्ण ही है। इसकी तुलना में सद्यः प्राप्त प्रस्तुत प्रति में विवरण और पद्यांश पूर्ण और दोष रहित है।

चैत्र कृष्णा 5,1763 वि० की घटना के बाद का विवरण दोनों प्रतियों में सर्वथा भिन्न है। "परम्परा" में प्रकाशित प्रति में संक्षिप्त रूप में मुगल दरबार तथा मारवाड़ की कतिपय आन्तरिक घटनाओं का ही उल्लेख मिलता है। ये विवरण अति संक्षिप्त और कालक्रम की दृष्टि से अव्यवस्थित भी हैं। प्रकाशित अंश में स्थान स्थान पर 'जैपुर' शब्द का प्रयोग भी इस प्रति की प्रामाणिकता पर प्रश्न चिह्न लगाता है। इसके विपरीत प्रस्तुत प्रति में 'विखा' ( संकट ) काल के स्वामी-भक्त सामन्तों और सेवकों की प्रशंसा में महाराजा अजीतसिंह द्वारा बनाये गये 212 दोहों के साथ ही महाराजा अजीतसिंह के शासन-काल [ 1707-1724 ई. ] का विस्तारपूर्वक व्यवस्थित इतिवृत्त मिलता है। पुनः महाराजा अजीतसिंह की सं० 1773 वि० में की गई द्वारिका यात्रा सम्बन्धी

1. परम्परा, भाग 27, सम्पादकीय, पृ. 6.
2 परम्परा, भाग 27, सम्पादकीय, पृ. 6.

117 दोहे भी उपलब्ध हैं, जिनमें ठाकुर द्वय राठौड़ कल्याण सिंह मेड़तिया, आलणियावास और राठौड़ सरदारसिंह मेड़तिया, रींया, की मृत्यु पर महाराजा अजीतसिंह द्वारा बनाये गये मरसियों के दोहे भी सम्मिलित हैं । इस प्रकार 'विखा रा दूहा' और 'द्वारिका-यात्रा सम्बन्धी इन दोहों' से यह ग्रन्थ ऐतिहासिक के साथ ही साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बन गया है ।

डा. नारायणसिंह भाटी ने 'अजीत-विलास' के इस अन्तिम अंश के लिये अपनी राय प्रकट करते हुए लिखा है, कि तैस्सीतोरी द्वारा वर्णित 'अजीत-विलास' की प्रति का यह अन्तिम अंश अन्य ख्यातों से उद्धृत किया गया है । लेकिन उनका यह मत उक्त प्रति की जानकारी के अभाव में लिया गया जान पड़ता है । प्रकाशित प्रति के अन्तिम अंश की रचना ग्रन्थ के प्रारम्भिक भाग की शैली से भिन्न ढंग से की गई है । साथ ही इस अन्तिम अंश में 'जेपुर' का प्रयोग भी ग्रन्थ को १८ वीं शती के उत्तरार्द्ध की कृति होने का संकेत देता है । अतः इस अंश के लिये अनुमान के आधार पर यह कहा जा सकता है, कि ग्रन्थ की पूर्ण प्रति उपलब्ध न होने से प्रकाशित प्रति के प्रतिलिपिकार ने यह वर्णन अति संक्षिप्त रूप में बाद में लिखी गई किसी अन्य ख्यात से लेकर इस प्रति में जोड़ दिया है । यों प्रकाशित ग्रन्थ के अंतिम अंश की प्रामाणिकता शंकास्पद ही है ।

इसके विपरीत इस प्रस्तुत समग्र प्रति में शैली की एकरूपता और घटनाओं का काल-क्रमानुसार सही वर्णन इस ग्रन्थ की पूर्णता तथा प्रामाणिकता का द्योतक है । प्रस्तुत प्रति में दोहों आदि के समावेश से ग्रन्थ का साहित्यिक महत्व बढ़ गया है । अतः इस ग्रन्थ के सम्पूर्ण पाठ का प्रकाशन ऐतिहासिक और साहित्यिक दोनों ही दृष्टियों से महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है ।

"परम्परा" में प्रकाशित "अजीत-विलास" के अतिरिक्त इसी नाम के एक ग्रन्थ की एक प्रति "अनूप संस्कृत लायब्रेरी, बीकानेर", में सुरक्षित है ।[1] इस ग्रन्थ के विवरण से ज्ञात होता है कि पंचोली बलू के पुत्र जगतराय ने संवत् 1738 वि. [ 1681–82 ई. ] में मेड़ता में यह ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ कर दिया था ; लेकिन यह एक सर्वथा भिन्न रचना है, और प्रस्तुत ग्रन्थ से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है ।

"अजीत विलास" नामक इस चम्पू इतिहास-ग्रन्थ की अब तक ये दो प्रतियां ही उपलब्ध हो सकी हैं । इन दोनों में ही ग्रन्थकार का नाम नहीं मिलता । लेकिन ग्रन्थ में घटनाओं का व्यवस्थित वर्णन और तिथियों व संवतों आदि का उल्लेख ग्रन्थकार की ऐतिहासिक रुचि को उजागर करता है । राजस्थानी गद्य के

1. कैटलाक आफ राजस्थानी मेन्युस्क्रिप्ट्स इन अनूप लायब्रेरी, पृ. 1, नं. 2.

साथ पद्य के मिश्रण से रचयिता की साहित्यिक रुचि स्पष्ट देख पड़ती है ।

ग्रन्थ में वर्णित घटनाओं की सजीवता, संवत् तिथियों का प्रामाणिक ढंग के उल्लेख से यह आभास मिलता है कि प्रस्तुत ग्रन्थ की रचना यदि समसामयिक नहीं तो कुछ समय बाद की तो अवश्य ही है । ग्रन्थ की प्रस्तुत प्रति में "आंबेर" का उल्लेख इस बात का सशक्त प्रमाण है । अतः इस ग्रन्थ में वर्णित घटनाओं और तिथियों की ऐतिहासिकता की जांच-पड़ताल कर इस सम्पूर्ण 'अजीत-विलास' के सुसम्पादित संस्करण का प्रकाशन अत्यावश्यक और समीचीन प्रतीत हुआ ।

वर्तमान में ग्रन्थ की घटनाओं की जांच-पड़ताल के साथ ही ग्रन्थ में आये पद्यांशों का शुद्ध पाठ, कठिन शब्दों के अर्थ आदि भी यथास्थान और सेवकों का संक्षिप्त परिचय पाद टिप्पणियों में देकर उसे अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है ।

सम्पादन-कार्य में मुझे आदरणीय महाराजकुमार डा रघुबीरसिंह जी का स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन और डा. मनोहरसिंह राणावत, उप निदेशक, श्री नटनागर शोध–संस्थान, का समयोचित परामर्श प्राप्त होता रहा है, जिसके लिये मैं उन दोनों का हृदय से आभारी हूं । यह सम्पादन कार्य श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ की शोध परियोजना के अन्तर्गत पूरा किया गया था ।

प्रस्तुत ग्रन्थ अजीत विलास के प्रकाशन के लिये मैं डा. पद्मधर पाठक, निदेशक, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, का आभारी हूं जिनके सहयोग से यह ग्रन्थ पाठको को सुलभ हो सका ।

यथा संभव प्रयत्न करने पर भी इस कार्य में यदि कहीं कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिये सुविज्ञ पाठकों से क्षमा प्रार्थना करता हूं ।

इति शुभम् ।

**शिवदत्त दान बारहट**

सीतामऊ
18-2-83

# शुद्धि-पत्र

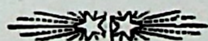
| पृष्ठ संख्या | पंक्ति/पाद टिप्पणी | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ |
| ३ | १६ | है | छै |
| ४ | शब्दाथ ४ | खे चा | खेड़ेचा |
| ५ | १२ | भाणे जो | भाणेजो |
| | १५ | हुवें | हुवे |
| ७ | ८ | दौडे | दौड़े |
| ८ | २ | वसाया | वसायो |
| ९ | टि० ४ | सायल | सातळ |
| १० | १५ | जोरावर्रा | जोरावरी |
| ११ | शब्दार्थ १ | जीनकर | जीत कर |
| १२ | १ | कीधी | कीधो |
| १४ | ४ | वीकाणौ, व्यारै | वीकाणा, त्यारै |
| | १३ | मुहाडै | मुहाड़ै |
| १६ | १५ | की | री |
| १८ | १ | भिडे | भिड़े |
| १९ | १७ | कछवाई | कछवाई |
| २१ | ३ | निकलक | निकलंक |
| २२ | ४ | रोवै | रोपै |
| २३ | ३ | दवा सुकर | दवारा सुकर |
| २४ | ७ | हरभाड़ा | हरमाड़ा |

| १ | २ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|
| २४ | १२ | अडे | अड़े |
| २४ | टि० १ | मार्च ७, | मार्च १७ |
| २५ | १ | पाछो, पढ़ाय | पाछै, पठाय |
| | ७ | डको | डंको |
| २७ | ४ | अमर | ऊमर |
| | ५ | अभासी | अमासी |
| | १६ | आय | आप |
| २८ | ९ | ब्रह्न | ब्रह्मा |
| २९ | ६ | मंढा | मुंढा |
| | ११ | तय | तप |
| ३२ | टि० १ | १५६ | १७६ |
| ३३ | ५ | झूजंण | जुंभण |
| ३५ | १५ | तुरगेस | दुरगेस |
| ३७ | १६ | उड़ाय | उठाय |
| ३६ | १७ | पहेली | पेहली |
| ३८ | टिप्पणी | अगस्त २९ | अगस्त २१ |
| ३९ | ९ | ईंदसीघ | ईंदरसींघ |
| | १० | आंया | आपां |
| ४४ | २ | अयो | आयो |
| ४५ | १२ | मंढा | मुंढा |
| ४७ | ७ | परै | पटै |
| | ७२ | पिछ | छिप |
| | १३ | मेलिया | मेलियो |
| | १४ | गयो | गया |
| ५१ | १ | राणा जी रै | राणा जी नै |
| ५४ | ८ | पाछ | पाछै |
| ५७ | ५ | जांणा | जाण |
| ५८ | १८ | कांढीया | काढीया |

| १ | २ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|
| ५८ | टिप्पणी-२ | 62-63 | 72-73 |
| ६० | ११ | ने | रै |
| ६१ | १७ | मद | वद |
| ६५ | १० | तेजासिंह | तेजसिंह |
| | २० | मीकलसर | मोकळसर |
| ६६ | १४ | ··· छाना | सगळा छांना |
| | १६ | हथ | हठ |
| ६७ | ७ | कुछ | कुण |
| | १६ | ताऔ | ताको |
| ७१ | १७ | ३ | उ |
| ७२ | ११ | संवत् १६४४ | संवत् १७४४ |
| ७३ | ९ | उवा | उवै |
| | १८ | पछ | पछै |
| | २० | बकड़ | पकड़ |
| ७४ | १ | भयाचंद | मयाचंद |
| ८४ | ७ | करै | कटै |
| ८६ | १० | तोड़ा | तोडा |
| ८७ | २१ | देव गाव | देवगांव |
| ८९ | १३ | तूटै | तूटै नहीं |
| | १५ | काम | काम आया |
| ९४ | १५ | कंडल | कुंडल |
| ९९ | १३ | दालतखान | दोलत खान |
| १०० | १७ | राच | चार |
| १०१ | २ | देवाळिये | देवळिये |
| | १८ | जांचा | चांपा |
| १०२ | ८ | आटै | आंटै |
| | १६ | फूरयो | फुरमायो |
| १०४ | ८ | अमैंसिघजी | अभैंसिघजी |

| १ | २ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|
| १०५ | १७ | उरजनसिं | उरजनसिंघ |
| १०६ | ६ | राज न | राजन |
| १०८ | ५ | खाय | खाम |
| ११२ | १२ | फर | फैर |
| ११६ | १२ | लारां | सारां |
| १२० | ७ | कस | कंस |
| | १३ | खेड़ै | खंडै |
| १४२ | टिप्पणियां १ | कूपामत | कूंपावत |
| १४६ | ११ | काणीह | काकाणीह |
| १५१ | टिप्पणियां १ | (१५-२६) | (२५-२६) |
| | १८ | मै | तरै |
| १५२ | २ | महोकमसिंघ | मोहकमसिंघ |
| | ५ | उवारै | उवादै |
| | टिप्पणी १ | अप्रेल १५, | अप्रेल २५ |
| १५६ | ९ | अ - वारी | असवारी |
| | २० | सांचोती | सांचोरी |
| १५९ | ७ | खां | रवां |
| | टि० १ | जून ११ | जून १० |
| | २ | जून १२ | जून ११ |
| | ४ | जून १ | जून ११ |
| १६२ | १८ | रावळ | रावळा |
| १६४ | १० | चांदावत | चांपावत |
| | १६ | राणा जी | राणी जी |
| १६५ | ३ | राणा जी | राणी जी |
| | १८ | जपुर | जैपुर |
| १७९ | १६ | छोटा | घोटा |
| १७० | २० | तोत मारी | तो तयारी |
| १८१ | ८ | फत | फतै |

| १ | २ | ३ | ४ |
|---|---|---|---|
| १७४ | ७ | तोई | तो कोई |
| १७५ | ५ | आप | आय |
| १७७ | टि. ३ | क 7,90 | क्र० 7/10 |
| १७९ | ६ | असाढ सुद ११ | असाढ सुद १५ |
| १८० | १० | गुनी | गुनो |
| | १७ | पा - वी | पाटवी |
| | १९ | उण | उटा |
| १८४ | १५ | तठ, गोमतो | तट, गोमती |
| १८४ | १७ | मिळ | मिळं |
| १८६ | ८ | बीठे | वीते |
| | १३ | अपनी | अपनो |
| १८९ | १७ | मस | मन |
| १९४ | ९ | खोजरो | खोजटो |
| | १० | मन्नन | मन्नत |
| २०३ | १६ | कर | करै |
| २०८ | ९ | बूज | बूजै |
| २१६ | १० | मनोरपुरा | मनोरपुर |



# अजीत-विलास

## महाराजा श्री अजीतसींघजी रो 'अजीत-विलास' लिखते [1]

अथ राठोड़ मारवाड़ में आया तिण री हकीगत लिखतै-

राव सीहोजी सेतराम रो; राव सीहोजी कनवज सुं आया । सं. १२१२ रा काती सुद २[2] लाखा फूलांणी[3] नूँ मार पाटण रा चावड़ा मूलराज[4] नु फतै दीराई नै मूलराज रै वैण[1] सोलंकणी परणीजीया[5] । नै पाछो कनवज नुं कूच कियो । सु मारग में खेड़ नगर मुकाम हुवो । तरै रात रा सोलंकणी नु सुपनो[2] आयो-'म्हांरी आंतां इणां झाड़ां में अळूजसी ।' तरै सीहाजी नींद लैण दीनी नहीं । नै पल लागै तरै तीन वार सावचेत[3] कीनी, नै तीन कमची वाही; नै केयो - "थारै तीन पुतर हुसी, सुं इण देस रा धणी हुसी; ने डीलां घणां बदसी[4] । नै म्हारै तो बांगला रा राजा री बेटी सूँ विवाह हुवो है, सुं ऊवा[5] राणी वडी जोराबर है । नै च्यार उण रै कंवर है । सुं उण सुं तो म्हारो राजीपो कम । नै म्हैं बैठां जितरै तो थ्हांरो इज हुकम रहसी । पिण पछै तो रांणी महाधूत[6] है नै पाटवी कंवर महा अनीत है । सुं म्हानुं वडो विचार हैं । नै थे भोळा देस रा हो सुं म्हानू पूरो सोच है ।' युं करतां कन्नोज प्होता । पछै सोलंकणी रै तीन पुतर हुवा, वडो आसथान, नै सोनग नै

---

**शब्दार्थ-**

1. वैण = बहिन । 2. सुपनो = स्वप्न । 3. सावचेत = सावधान । 4. डीलां घणा बदसी = बहुत बडी संख्या में फैलेंगे । 5. उवा = वह । 6 महाधूत = महाधूर्त्त, कपटी ।

---

**टिप्पणियां-**

१- राठोड़ां री ख्यात पत्र 71 अ से 114 ब।

२- शुक्रवार, सितम्बर 30, 1155 ई. ।

३- लाखा फूलाणी-कच्छ का शासक 1320-1344 ई.)

४- यहां मूलराज सोलंकी होना चाहिये, गुजरात का शासक (941-994 ई)।

५- उदैभाण चांपावत (ग्रन्थ, 100, पत्र 9 क) के अनुसार राव सीहा का विवाह मूलराज सोलंकी की पुत्री राजलदे सोलंकी के साथ हुआ था । लेकिन बीठू ग्राम से प्राप्त सीहा की देवली लेख में इस रानी का नाम 'सो(ळं)क पारवति' उत्कीर्ण है । इ. ए., भाग 40, पृ. 309 ।

अज । सु सीहोजी तो राम सरण हुवा ।[1] पछै तो सोकां रै म्हावो मांय[1] वण नहीं, नैं पाटवी पूरो थेक राखै ।[2] नै जीवां री घात[3] हुती जांणी, तरै चावड़ी नैं तीनू वेटा उठां सु निसरीया । घोड़ा बीसेक नै चाकर फेर ही रजपूत साठ सितर सु रथ व्हैलां सूं पाटण आवै ।

आवतां आवतां मारग में पाली रे तलाव डेरो कीयो । तरै पाली रा करस्यां [4] तथा लोकां[5] केयो - 'अठे गरासीया, मैर[6] जोरावर है, स्हैर में डेरो करो, न्हीतर रात रा थ्हांरो डेरो उरो लेसी[7] ।' तरै इणां केयो - म्है रजपूत हां, म्हारो गिरासीया कांई लेसी ।' डेरो बारेई राखियो । तरै रात रा गिरासिया आया नै झगड़ो हुवो । सुं घणा नु तो मार नाखिया नै घोड़ा तीस चालीस खोस लिया, नै दूजा न्हास गया । दिन उगै पाली रो लोक देखे तो गिरासीया मुवा पड़िया है, नै घोड़ा खोस लिया । तरै लोगां जाणियो - 'अे वडा रजपूत, वडो झगड़ो कीनो ।' तरै इणां नुं पूछियो - 'आप कुण खांप सिरदार छो ?' तरै इणां सारी वात केही । तरै पाली रा लोकां केयो - इणां गिरासीयां रो म्हानूं वडो दुख है, आप जावतौ[8] करो तो म्है आपरी खांणगी नै रोजगार देवां ।' तरै इणां केयो-'ठीक है रेहस्यां ।' तीनू ही भाई पाली रया, नै दोय एक दौड़ा किया[9], फतै हुई । तरै पाली वाळा इणां नुं हासल कर दीयो, सुं अजेस लागो जाय है ।

---

**शब्दार्थ-**

1. म्हावो मांय = अन्दर ही अन्दर । 2. थैक राखे = द्वेष रखते हैं । 3. जीवां री घात = मरवाने का षड्यन्त्र । 4. करस्यां = कृषकों । 5. लोकां = प्रजा । 6- गरासीया, मैर = लुटेरा जाति विशेष । 7 उरो लेसी = छीन लेंगे । 8 जावतो = प्रबंध सुरक्षा । 9 दौड़ा किया = धावे बोले ।

---

**टिप्पणी-**

१- राव सीहा का कन्नौज लौटना व वहां उसकी मृत्यु का उल्लेख अविश्वसनीय है। वस्तुतः सीहा की मृत्यु पाली के निकट वीठू ग्राम में कार्तिक वदी 12,1330 वि. = सोमवार, अक्तूबर 9,1273 ई को हुई थी, जहां से उसका देवली लेख प्राप्त हुआ है । इ. ए., भाग 40, पृ. 301 ।

पछै गांव खेड़ गोहीलां रो आसथानजी नु नालेर आयो[1], परणीया । पछै डाभी उणां रै परधान था, तिणां रा भेद सुं गोहीलां नै मारीया ने खेड़ उरी लीनी। पछै आसथानजी तौ सं. १२४८ वैसाख सुद १५[१] बीसी सुभटां[2] सुं नै पातस्या पीरोजस्या मका री जात जावतां[3] पाली मारी, जिण पर खेड़ सूं रातो रात चढीया सुं पाली झगड़ो कर कांम आया, नै पाली री ओळांवंध[4] छुड़ाय दीया ।[२] तरवार एक धार बुही, पातस्या री फौज में पिण घणा कतल हुवा ।

हमै आसथानजी रो वंस तो मारवाड़ में रयो खेड़ेचा[5] राठोड़ कहाणा । नै सोनगजी ईडर गया, जठै ईडरेचा राठोड़ कहांणा । नै अजजी दुवारकाजी गया, उठा रो राज लीनो; तठै वाढैल राठोड़ कहांणा ।

उण समैं मंडोवर पड़ीयार राज करै था नै आसथानजी रा बेटा आठ ८; तिणां में वड़ो धूहड़ तिण री विगत-

धूहड़ रे बेटा पांच ५; रायपाल धूहड़ रो बड़ो बेटो, मेहरेलण[6] कहांणां। (रायपाळ रै) आठ वेटा, जालण रायपाल रो बड़ो बेटो–

## कवित

पाट हुवै तिण प्रसिद्ध, राव धूहड़ रजधारी ।[7]
पाधोरै[8] पडीयार, हिचेरण रह्यो हजारी ।।
रायपाल रढ़ रांण, दिया दत द्रव दुकाळे ।[9]
पति कमधां परचंड, वैर बाप रो वाळे ।।
खेसीया सऊ पडीयार खळ, लियो मंडोवर लाख रो ।
जिण पाट राव जालण जिसो, सूरज हुवो साख रो ।।१।।

---

**शब्दार्थ-**

1 नालेर आयो = विवाह का प्रस्ताव आया । 2. सुभटां = शूरवीर । 3. जात जावतां = यात्रा पर जाते हुए । 4. ओळांवंध = बंधक बनाये गये व्यक्ति । 5. खेड़ेचा खेड़ के निवासी । 6. मेहरेलण = देवराज इन्द्र । 7. रजधारी = सम्पत्ति वाला । 8 पाधोरै = विजित किया । 9. दुकाले = अकाल ।

---

**टिप्पणी-**

१– बुधवार, अप्रेल 29,1192 ई. ।

२– राव आसथान की मृत्यु की यह तारीख और घटना भी काल्पनिक है । परम्परा में प्रकाशित 'अजीत विलास' में संवत 1348 वि. लिखा हुआ है, जो ठीक प्रतीत होता है । लेकिन इस संदर्भ में फिरोजशाह का उल्लेख पूर्णतया असंगत है ।

कनहराव जालण रो;[१] बेटा तीन ३। छाड़ो कान्ह रो। तीडो छाड़ा रो, बेटा सात-

कवत

रीधु पाट 'कन्हराव' उपड़ चऊवाणा ऊपर।
धाव करै धमचाळ,[1] सरग गयो साझै समर[2] ।।
तिण पाट सुरतांण, हुवो 'छाड़ो' हाथाळो।
धींग महेवे धणी, इळा कंमधा उजवाळो।।
सिर धार छत्र 'तीडो' सबळ, पाट तँण पर तपै प्रीथी।
कूँभटे दूरग[3] साको कियो, कमंध राव कीरत कथी।।१।।
वद 'सातल'[4] चऊवांण, 'साह'[5] था सार संभायो[6] ।
सभीयाणै गढ़ सझै, अधपती ऊपर आयो।।
'तीडै' कंमधा छात, जद भाणे जो जांणो।
मिळ 'सातळ' री मदत, तेग हथ कोस सतीणो[2] ।।
धूंसीया[7] सीस असुरां धड़ां, हाकै गढ़ पालट हुवां।[8]
हींदवा छात दोनू हुवें, मर मारै आ रण मुवां।।२।।

सलखो तीडा रो, बेटा च्यार ४। वीरम सलखा रो, बेटा पांच ५। चूंडो वीरम रो, बेटा १४। रीड़मल चूंडा रो, बेटा २४ चोईस। जोधो रीड़मल रो, बेटा १३।

---

**शब्दार्थ-**

1. धमचाळ = युद्ध। 2. साझै समर = भली प्रकार युद्ध करके। 3. कूँभटे दूरग = सीवांणा के दुर्ग का नाम। 4. सातल = सीवांणा का चौहान शासक। 5 साह = अलाऊद्दीन खिलजी 6. सार संभायो = शस्त्र ग्रहण किये। 7. धूंसीया = नष्ट किये। 8. गढ पालट हुवां = दुर्ग पर दूसरों का अधिकार हुवा।

---

**टिप्पणियां-**

१– मारवाड़ की ख्यातों में पीढ़ी के इस क्रम में भिन्नता है। इन ख्यातों में रायपाल का पुत्र कन्हराव (कनपाल) और कन्ह का पुत्र जालणसी लिखा है। उदैभाण चांपावत (ग्रन्थ 100) पत्र 11क; जोधपुर ख्यात, भाग 1, पृ. 21-22

२– जोधपुर ख्यात (भाग 1, पृ.23) के अनुसार सातल सोम की सहायतार्थ लड़ता हुआ राव तीड़ा मंगलवार, मई 15, 1296 ई. के दिन मारा गया था।

### कवत

'तीड़ा' रे छत्रपती, 'सलखो' पाटोधर[1] ।
सलख तणै समरथ, वंस चो 'वीरम' तरवर ।।
वाढै 'विरख' फरास, जोयां पर खाग बजायो[2] ।
पाड़ देपालां पूठ, आप राव ही काम आयो ।।
तिण पाट घाट रावाँ तिलक बेठो चूंडो बापरै ।
घर धूण व गाथाँ धूपटै, इळ वस[3] कीधी आपरै ।।१।।
प्रथम वडो परताप, देव चावंड वर दीनो ।
अस सोवत अराक, खोस असुरान[4] खजानो ।।
सही[5] ईदां' रो साथ, अभंग 'टीहो' लै आयो ।
घाते गाड़ी घास, वडो तरतोज[6] वणांयो ।।
मारीया मुगल लोहाँ मिलै, आय मंडोवर ऊपरां ।
स्याम धरम भींच ईदा सकज, धूंस खाग[7] लीधी धरा ।।२।।
थिर चूंडा ने थपे, दूरग मंडोवर दियो ।
तुरकां री जड़ तोड़,[8] काम जोरावर कीयो ।।
तठा पछै तुरकांण, नेस लीधी नागौरी ।
रीधु कमधजां राज, सूंप नव-कोटी सारी ।।
भाटीयां चूक[9] कीधो मिलै, लख असुरां दळ लाविया ।
आवियो काम चूंडौ' अभंग,[10] पछै गढ़ पळटाविया ।।३।।
तेण पाट सराज, सीस पर छत्र संभायो ।
मंडोवर मछरेत, कमधजां राव कहायो ।।
अड़स अवनी कज, जंग कीधै जैताई ।
'मोकळ' राणो मुरड़, गाढ सीसोद गमाई[11] ।।
साथ कर राव सक जोसतै, जीण चढ पिंगल गंजियो ।
बापीक बेर[12] लीधो विहद, भाटी 'सदो' भंजीयों[13] ।।४।।

---

**शब्दार्थ-**

1. पाटोधर = पाटवी, उत्तराधिकारी । 2. खाग बजायो = युद्ध किया । 3. वस = अधिकार में । 4. असुरान = मुसलमान । 5. सही = सभी । 6. तरतोज = षड्यन्त्र । 7 धूंस खाग = तलवार के बल पर । 8. जड़ तोड़ = नष्ट करके । 9. चूक = धोखा । 10. अभंग = अजेय । 11. गाढ़ सीसोद गमाई = सिसोदियों नें शक्ति खो दी । 12. बापीक वैर = पिता का बदला । 13. भंजीयो = मारा ।

### बात

सतैजी आप रो राज छोड़ ने मंडोवर भाई रीड़मलजी नुं दीनो ।[१] राज रीड़मलजी कीनो । तिण उवासतै सताजी रो नांव पीढ़ियां में दीधो नही । रीड़मलजी सुं राज री पीढ़ी लिखी ।

### दोहा

रीड़मल मैहमद मार (नै), खेसी सो खुरसांण ।
वडा पवाड़ा[1] वाद नै, साभ‍ै कै घमसांण ।।१।।
दौडे जिण 'नाडूल' पर सोनगरा सींधार ।
गांम गांम अरू ठौड़ नै, सबळ वजायो सार[2] ।।२।।
दुंद उठै मेवाड़ दिस बचनां धर रे वेध[3] ।
भाई काकां चाभड़ै, खोट वसु रे खेध ।।३।।

### बात

राव रिड़मल राज करता राणे मोकल भांणेज ने ऊण रै काके चाचै मेरे चूक करने मारीयो । तिणरो वेर रावजी लीनो । चाचा मेरे ने मारीयो ने मोकल रे पाट रांणा कुंभा ने बैठाणीयो । रावजी फोज लेने चितौड़ गया था सुं उठै बरछीयां री चवरीयां मांड ने सात सो सीसोदियां री बेटियाँ जोरावरी सुं राठौडां ने परणाय दीनी[4] । रांणो कुंभो पाट बैठो तरै राज रो काम सारो रावजी करै । आ बात सीसोदियाँ रा मन में भाई नहीं[5], तरै सीसोदिया राणा कुंभा ने भखायो[6] सुं रावजी ने मारीया । रावजी काम आयां पछै रावजी जोधोजी पाट बेठा । सुं मंडोवर तो राणां रो अमल हुवो नै राव जोधोजी कावनी रे थळ[7] गया । उठै भाई मोटा

---

**शब्दार्थ-**

1. पवाड़ा = महत्वपूर्ण कार्य । 2. सार = शस्त्र । 3. वेध = विरोध ।
4. परणाय दीनी = विवाह कर दिया । 5. भाई नहीं = पसंद नहीं किया ।
6. भखायो = भ्रमित किया । 7. कावनी रे थळ = काहूनी इलाके में ।

---

**टिप्पणी-**

१– वस्तुतः राव चूंडा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र रणमल से अपने छोटे पुत्र कान्ह के पक्ष में राज्य परित्याग करने का वचन प्राप्त कर लिया था । अतः रणमल ने अपने छोटे भाई कान्ह को टीका प्रदान किया और स्वयं मेवाड़ चला गया । कान्ह के बाद सत्ता मंडोवर की गद्दी पर बैठा । तब रणमल ने मेवाड़ी सेना की सहायता से मंडोवर पर अधिकार किया था ।
– विगत., भाग 1, पृ. 26-27; रेऊ. मारवाड़., भाग 1, पृ. 69

कर साथ भेळो कर नै कावनी रा थळ ते आय ने रांणा सु राड़ करी ने वैर वाळियो ।[1] धरती पूठी वाळ ने जोधपुर गढ़ वसायो । गयाजी री जातरा कीनी । पेहला १५१० सं. मंडोवर रो थांणो मार सीसोदिया सिंघार ने चितौड़ ने चलाया था । तुक- 'तिण वार राव जोधे तुरी,[2] पीछोले सर[3] पाविया'

राणा सुं राड़ कीवी सुं राणो भागीयौ । पछे सला कीवी । आँवळ बांवळ सींव कीधी[4] । पछै सं १५१५ जोधपुर गढ़ वसायो–

पनरै सं पनरोतरे, जेठ मास जोधाण ।
सुद ऐकादसी वार सन, मंडै गढ म्हैरांण[1] ।।१।।
(पछै) पीराग गंगाजी परस नै,[5] आवत कीयो सबोळ ।
ऊगरे साह हुसेन नै, भिड़ भागा बहलोळ ।।२।।
आया फिर आपण धरा, निस दिन घुरै निसांण ।
जितरा में जोखामियो,[6] जोध धणी जोधांण[2] ।।३।।

## बात

पछै राव सातलजी पाट बैठा, टीको साझियो ।

---

**शब्दार्थ-**

1. वैर वाळियो = बदला लिया । 2. तुरी = घोडे । 3. पीछोले सर = पीछोला झील । 4. आंवळ बांवळ सींव कीधी = आँवालियां (झाड़ी विशेष वाला क्षेत्र राणां का और बवूल वृक्षों वाला क्षेत्र जोधा का, इस प्रकार सीमा का विभाजन किया । 5. परस नै = दर्शन करके । 6. जोखामियो = मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

---

**टिप्पणियां-**

१– शनिवार, मई 12, 1459 ई. । इस दिन जोधपुर दुर्ग की नींव रखी गई थी ।

२– वैशाख सुदी 5, 1545 वि. = सोमवार, अप्रेल 6, 1489 ई. के दिन राव जोधा की मृत्यु हुई थी ।
–ओझा. जोधपुर., भाग 1, पृ. 250 ।

'जौध' पछै जोधार,.... ...................... ....... ........।
धूंस विधूस सिधार, मेछ 'घडूको' मारीयो[1] ॥१॥
वरस दोय तीन बजवजै[1] राव कहो फिर राम ।
पाछै 'सूजो' पाटवी, भाई वेठो ठाम ॥२॥

राव सूजो जोधा रो- तिण वासतै राज पीढी में सूजो जी लिखीया ।

**दूहा**

मिळ लोहा मुगळांण, सूँ, जुध कीनो जिण जाय ।
खेस खान नागौर रो, दीनी बंध छुड़ाय ॥१॥
'वीको' चढ बीकाण सूँ, आयो थो एक वार ।
गाज सुणै,[2] पाछो गयो, वणै न चूक तिवार ॥२॥

कंवर वाघोजी सूजाजी रो वेटो सूजै जोवतां ही राम केहो थो–

**दूहा**

संवत पनरे सौ वरस वरस एकोतर तास ।
चवदस भाद्रव चांदणी, वसे कंवर सरगवास[2] ॥१॥

**बात**

पछै सूजोजी रै पाट वाघाजो रो वेटो गांगोजी वेठा, ने मेवाड़ उप्र चलाया—

**दूहा**

कटक करै मेवाड़ पर, गोढ़वाड़ धर गाह ।
'सांगो' राणो सळकने,[3] पेठो[4] भाखर मांह ॥१॥

---

**शब्दार्थ-**

1. वज वजै=प्रसिद्धि हुई । 2. गाज सुणै = गर्जना सुन कर । 3. सळकने = निकल कर । 4. पेठो=चला गया ।

---

**टिप्पणियां–**

१– जोधपुर के निकट कोसाणा नामक ग्राम में चैत्र सुदी 3, 1548 वि.=गुरुवार, मार्च 1,1492 ई. के दिन लड़े गये इस युद्ध में मांडव के शासक नादिरशाह खिलजी का अधिकारी, अजमेर का हाकिम मल्लूखां (मलिक युसुफ) सिरिया खां और मीर घुड़ला मारे गये थे । इस युद्ध में घायल होकर राव सायल भी काम आया । (जोधपुर की ख्यात भाग 1, पृ. 47-48) ।

२– भादवा सुदी 14, सं. 1571 वि.= रविवार, सितम्बर 3,1514, ई. ।

कवत

गांगो राव गंभीर, सार वहो सक जाइ।
काकै 'सेखै' कुमत, चाल धरकुलां चलाई॥
लै 'दोलतियो' लार, आहाचै रावां सिर आयो।
सेंधा मूँढा[1] सार. वेढ 'सेवकी'[१] बजायो॥
दळ सहैत भागो दोलतियो, मुदई[2] सेखों मारीयो।
जस खाट[3] फते कर जोधपुर, पट हथ[4] गंग पधारियो[२] ॥१॥

दूहा

पनरै सौ अठीयासियै, जेठ सुकल पख जांण।
पंचम तिथ गंग पामीयो[5], अमरापुर आथाँण[3] ॥1॥

बात

मालदेजी गांगाजी रे टीके वेठा, तुक–
'गंग' तणा 'माल' मुरधर मोड़'
मालदेजी मेवाड़ां नु भगाया-साख
जिण करै जोरावरां, रूड़ो भगायो रांण।
गयो उदैसिंघ गिरवरै, मेल खतरवट[6] माण[7] ॥१॥
रावजी परगना जीता तिण री विगत-

कवत

राव बड़ो रंढाळ,[8] मुलक के लिया मारे।
थिर 'जोधाणै' थान, सदा आदू सिर धारे॥

---

शब्दार्थ–

1. सेंधा मूँढा=परिचित चेहरे। 2. मुदई=मुख्य। 3. जस खाट=यश अर्जित करके। 4. पट हथ=शस्त्रधारी। 5. पामीयो=प्राप्त किया। 6. खतरवट=क्षत्रित्व। 7. माण=मर्यादा। 8. रंढाल=शक्तिशाली।

---

टिप्पणियां–

१– सेवकी=जोधपुर से 20 मील पूर्व में स्थित।
२– राठोड शेखा सूजावत और नागौर के मुसलमान अधिकारी दौलतखां की सम्मिलित सेनाओं से राव गांगा का यह युद्ध सेवकी नामक ग्राम में मंगलवार नवम्बर 2,1529 ई. के दिन हुआ था। -बांकीदास., पृ. 11, सं. 109।
३– जेठ सुदी 5,1588 वि.= गुरुवार, मई 9,1532 ई.।

'सोझत' नै 'सीमयाण' लड़ै 'मेडतै' लड़ाई।
'जैतारण' 'जालोर' 'पोहकरण' फतै पाई ॥
'सांचोर' 'फलोधी' सर करे,[1] सांभर' 'डीडवाणो' सिरै ।
'नागौर' बीकाणो' 'मालपुर' भोग[2] फतैपुर' ही भरै ॥१॥
आछौ गढ 'अजमेर' वणी 'वधनोर' वडाई।
'भादराजण' नाडूल' 'टोंक' 'भीनमाल' सवाई ॥
वोली 'वाहडमेर' मार, 'कासली' मेवासो।
'चित्रकोट' 'रायपुरो' दुंही 'खाटू' रेवासो ॥
'कोटड़ो' 'भीणाय' 'मलारणो', 'तोडो' झी 'दोसो' चाटसू ।
'जाजपुर' लीध 'नारायणो', झीखै खांगां झाट सूँ[3] ॥२॥
'कोसीथल' धर कोट, पुरो मदार वडाई।
'जोजावर' 'सांणौद' एक लाडणू' कहाई ॥
जीण बांधो जगद्रथ, जोध जिता जोधरा।
भागवली भूपाल, सीस छत्र हिंदव सारा ॥
खुड़ताल लीध खावड़ खगां, 'मांडणपुर' सूँ ता मही।
मालदेव राव मडोवरै, लोड धरा एती लाई ॥३॥
असी सैहस असवार, चढै भड साथ सवाई।
लियां धरां फोजरे, दसूँ दिस फिरै दुहाई ॥
'जेतो' 'कूपो' 'जसो' 'जेतसी' 'तेजल' भारी ।
'अखो' पंचायण 'जसू' धींग 'खींवो' खगधारी ॥४॥

अै सिरदार उंवा दिना[4] था । पंचोली अभो ऊंवा दिनां दीवांण थो।

## दूहा--सोरठा

घणा किया घमसांण[5], भोम किती ही भांजिया।
तद दीली सुरतांण[6], इळ मुरधर पर आविया ॥१॥
लायो 'वीरम' लार, दूदावत[7] दुःख पावियो।
चित में साळ चीतार[8], मेड़तिया रायमल रा ॥२॥

---

**शब्दार्थ—**

1. करै = जीनकर। 2. भोग = कर। 3. खागां झाट सूँ = तलवारों के बल से। 4. उवां दिना = उन दिनों। 5. घमसाण = लड़ाइयां। 6. दीली सुरताण = दिल्ली का शासक शेरशाह सूरी। 7. दूदावत = राठोड़ दूदा के वंशज। 8. साळ-चीतार = कष्टों को याद करके।

कीधी साथ 'कीलाण'[1] जैतावत छळ जोय नै ।
पूरब हूंत[2] पठांण, बीकपुरो लायो विहद ॥३॥
सेरसाह पतस्याह, संवत सोळे सै सही ।[1]
मिल आयो घर मांह सबळा दळ खुरसाण रा । ४॥
गांव समेल अजमेर रे राड़ हुई ।[2] तुक–
'माल दे आयौ मुरड़ छूटा पग[3] छत्रपती रा'

**बात**

मालदेवजी भाग आया, पहाडां में जाय बैठा । सेरसाह जोधपुर आयो । रावजी रा लोक उमराव गढ में था तिणा कजियो[4] कीनो । निदान गढ छूटो । तुरकाणो हुवो[5] । सेरसाह बरस दोय मारवाड में रेयो[3] पछै दीली कानी कुंही काम पड़ीयो तरै बादशाह कूच कर परो गयो । रावजी फेर पहाडां माहे सूँ देस में आया । पातस्याही थांणा मारीया । ने जोधपुर अमल कीयो ।

नै मेडते आय जैमल सु सं. १६१० रा वैसाख वद२[4] जाय नै राड करी । कितरायक राजपूत ने पं. अभो काम आयो पछे रावजी पाछा जोधपुर आया नै फेर फोजां विदा कीनी । सु सं. १६१३ फागण सुद 2[5] फोजां मेड़ते जाय लागी । उण समै बीकानेर सूँ राणो ऊदैसींघ परणीज

---

**शब्दार्थ–**

1. कीलाण=बीकानेर का शासक कल्याणमल । 2. पूरब हूंत=पूर्व की ओर से । 3. छूटा पग=पैर उखड़ गये । 4. कजीयो=झगड़ा,युद्ध । 5 तुरकाणो हुवो=मुसलमानों का अधिकार हुआ ।

---

**टिप्पणियां**

१– दिल्ली के शासक शेरशाह सूरी ने मारवाड़ पर सं. 1600 वि. (सन् 1543-44 ई.) में आक्रमण किया था ।

२– समेल गिरिका का यह प्रसिद्ध युद्ध पौष सुदी 11, सं. 1600 वि.=शनिवार, जनवरी 5,1544 ई. के दिन हुआ था । वीरविनोद, भाग 2. पृ. 810-11

३– जोधपुर पर अधिकार हो जाने के बाद स्वयं शेरशाह वहां नहीं ठहरा था । उसने खवासखां को वहां पर नियुक्त कर दिया था ।

४– बुधवार, मार्च 21,1554ई.; विगत., भाग 1, पृ 59; लेकिन जोधपुर ख्यात (भाग 1, पृ. 76) के अनुसार यह लड़ाई वैशाख सुदी 2,1610 वि.=बुधवार, अप्रेल 4, 1554 ई. के दिन हुई थी ।

५– सोमवार, फरवरी 1, 1557 ई. ।

ने पाछो आयो थो। सू जैमलजीनूँ केह्यो--थे मालदे जी सूँ पड़पो नहीं[1] । थे म्हां साथे चालो, पटो लाख दोय रो देसा। सूँ जैमलजी नु रांणोंजी साथे ले गया। मैड़ते मालदेजी रो अमल हुवो[१]। फिर परताप घणो हुवो। तरै अकबर पातस्याह आयो तरै रावजी फौजां मेली, पातस्थाह सूँ लडौ मेड़तै जाय। सूं फौजां आय मेड़ते पातसाह सुं राड़ कीवी सं. १६१७ साको कीयो सांवता[२]। पछै मालदे जी सूँ मेड़तो छूटो। अकबर पातस्याह रो अमल हुवो। पछै मालदेजी काळ कीयो।

दूहा

संवत सोले सै सई, वरस उगणीस वकाई।
माल हुवो तद मरण, मास काति सुद मांई[३] ॥१॥

वात

पछै चंदरसेणजी टीके बैठा, पछै भाई रामजी दिली जाय
ने फौजां ले आयो–

कवत

फोजां 'रामो' फेर उठा ले पाछो आयो।
जोधाणो जे वार, सबळ चंद्रसेण सभायो॥
विग्रह घर रै वेध, मास आठे फेर मंडाणो।
जोर देख जमराण, राव गढ-कीध छडाणो॥

---

शब्दार्थ–

1 पड़पो नहीं = सामना नहीं कर सकते।

---

टिप्पणियां–

१– राठौड़ जैमल वीरदेवोत ने फागुन वदी 12 (बुधवार, जनवरी 27,1557 ई.) को मेड़ता छोड़ा था। इसके बाद ही वहां राव मालदेव का अधिकार हुआ।

२– बादशाह अकबर की सेना ने मंगलवार, जनवरी 27, 1562 ई. के दिन माल कोट को घेरा। तथा चैत्र सुदी 2, शनिवार, मार्च 7,1562 के दिन वहां पर युद्ध हुआ था। –अकबरनामा. (अं.अ.) भाग 2, पृ. 249-50; जोधपुर ख्यात, भाग 9 पृ.77

३– राव मालदेव की मृत्यु कार्तिक सुदी 12, 1619 वि.—नवम्बर 7,1562 ई. के दिन हुई थी। विगत., भाग 1, पृ. 42,47; वीरविनोद, भाग 2,पृ.813

पलटीयो दुरमगढ जोधपुर, संवत् १६२२ में ।
फेर विग्रो धर कमधजां, गया गिरंदा गाळ[1] में[१] ।।१।।
तद सारै तुरकाण, हुई मुरधर हंकारै ।
वीकाणौ रो राव, तिको चढ आयो व्यारै ।।
जोधाणो जागीर, आय पातस्याही अकबर ।
रयो रायसींघ वरस, तीन जौधाणै ऊपर ।।
साह री फोज चंदसेण रै, पाछै लागी पाहडै ।
'कळा खान' ने कमधज कटक, आया सामा आवडै[2] ।२।।

वाढियो[3] सोले वरस, इम चंदरसेण अतारा ।
ठांम ठाम दी ठोर, खान सिर खागां मारा ।।
सज पेहला 'समीयाण' पछै पिपलाण पहाड़ै[4] ।
सीरोई लग सरस, डूंगरपुर हुंत अखोड़ै ।।
बासवाळ वगड ईडर विचै, धस मुहाडै धावियो ।
जोर विखो कर जोधवी[5] इळ ने पाछो आवियो ।।३।।

## दूहा

सोले से समत सई, वरस सेतीस बचावी ।
जठै राव जोखम रहो, गांव सारण माही[२] ।।
दुरंग नवा में दुरंद, वरस तीन फेर रहाणो ।
विखो सवळ विसतार, वरस दस आठ बचांणो ।।

---

## शब्दार्थ-

1. गिरदा गाळ में = पहाड़ों में । 2. आया सामा आवड़ै — आमने सामने होकर झगड़ा करते हैं । 3. वावियो = व्यतीत किया । 4. पिपलांण पहाड़ै = पीपलाण के पहाडों में । 5. जोधवी = वीर ।

---

## टिप्पणियां-

१– राव चंद्रसेन ने मार्ग शीर्ष सुदी 10, 1622 वि. = रविवार, दिसम्बर 2,1565 की । रात्रि में जोधपुर दुर्ग छोड़ा था-जोधपुर ख्यात, भाग 1, पृ. 87 ।

२– सोजत परगने के सिचियाई ग्राम में राव चंद्रसेन की मृत्यु माघ सुदी 7, सं 1637 वि. = बुधवार, जनवरी 11, 1581 ई. के दिन हुई थी–जोधपुर ख्यात, भाग, 1 पृ. 90

कंवर दोय राव रा, 'उगर'[1] 'आसो' लड़ मुवा[१]।
रहो रायसींघ हेक, जोध जिम भेळा हुवा ।।
पगै जाय असपति मिलै,[2] जद भेळ करायो ।
स को वसी ले साथ, सेहर सोझत मझ आयो ।।
कमधजां बेध इळ कारणै, आपस लागी आकरी ।
भोमवट व्यांर सारी भगी, चावे मांडी चाकरी ।।

**बात**

चंद्रसेरण मुवां पछै अकबर पातस्याह जोधपुर मोटा राजा उदेसींघ नु दीयो[२]। धरती रो विखो भागो ।

**दूहा**

ऊदो कवर अभंग. भड़ माल थकां[3] फुरमांण ।
जुदो[4] हुवो जोधवी, पण खत्रवट आफाण ।।१।।
मालराव जोखामियां गो ऊदो दरगाह ।
जागीरी पाई जुदी. समपी अकबर साह ।[३]।२।।
आठ पोहर उदो उठै, हाजर हुकम परसांण ।
करै धरा कज चाकरी. मेछपति मेहरांण ।।३।।
ऊदै की आळोच नै[5], असपती सुं अरदास[6]।
बापोती[7] पाऊं वसु, सेहस नवो सुखवास ।।४।।

---

**शब्दार्थ-**

1. उगर=राव चंद्रसेन का पुत्र उग्रसेन । 2. असपति मिले=बादशाह से मिल कर । 3. माल थकां=राव मालदेव के जीवन काल में । 4. जुदो=अलग । 5. आलोच नै= विचार विमर्श कर के । 6. अरदास=निवेदन । 7. बापोती=पैतृक सम्पत्ति ।

---

**टिप्पणियां-**

१- यह घटना चैत्र सुदी 3,1638 वि.=सोमवार मार्च 26, 1582 ई. की है-जोधपुर ख्यात, भाग 1, पृ. 92 ।

२- जोधपुर ख्यात. (भाग 1, पृ. 94) के अनुसार यह घटना भाद्रपद वदी 12,1640 वि.= रविवार, अगस्त 4,1583 ई. की है ।

३- सन् 1571 ई. में उदयसिंह ने बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार की, तब उसे समावली का परगना मिला था ।

'ऊदा' री अरदास सूँ, तुरत कह्यो सुरताण।
सारी धर कोटां सहेत, जद दीनो जोधाण ॥५।

**बात**

उदैसिंघजी हाथी घोड़ा सिरपाव लेने जोधपुर आया। रायसिंघजी सिरोही मुवां।[१]

**दूहा**

सिरोही रासो[1] लड़ै, रहो खेत राठौड़।
तद वसियां सोभत थी, लायो मुरधर मोड़ ॥१॥

**बात**

मालदेजी पछै पीढ़ियां में मोटा राजा ऊदैसींघजी रो नांवो लिखाणो।

माल पाट मेहपती, राज उदियासिंघ राजे।
मोटो राजा मछर छत्र, मुरधर सिर छाजे॥
वसु पिता की वाळै,[2]जोध लीनो जोधाणो।
संवत सोले सै चाल, मास भाद्रपद टाणै[२]॥

**बात**

उदैसिंघजी गुजरात की तरफ पातस्याह री चाकरी आछी कीनी–तुक
'मछवर मुदफर मार सरस गुजर खंड साजै' और सीवाणो लीनो।

---

**शब्दार्थ-**

1. रासो=रायसिंह, राव चंद्रसेन का पुत्र। 2. वाळै=पुनः प्राप्त कर।

---

**टिप्पणियां-**

१-- राव रायसिंह दताणी के युद्ध में गुरुवार, अक्तूबर 17, 1583 ई. के दिन मारा गया था। जोधपुर ख्यात, भाग 1, पृ. 94।

२- भाद्रपद माह में जोधपुर परगना जागीर में मिल जाने के बाद राजा उदयसिंह कातिक वदि 9,1640 वि.=रविवार, सितम्बर 29, 1583 ई के दिन जोधपुर आया था। (–विगत., भाग 1, पृ. 76)

दुरंग सीवाणो दोट, लियो भतीजो मारे ।
कहत नाम कलियाण, सुणयो ओ वाको सारे ।।[१]
गिरासियो इ तो सो गाहटै, जड़ लग जारे बजाड़ियो ।
.................................................. ।

**दूहा**

भादराजण रो भोमियो, जोर रहै हरराज ।
मोटे राजा मारनैं, कियो वडालो काज[1] ।।१।।
दोय आबू रा देवड़ा, सांवत 'तोगो' सिंघार ।
नव कोटो नांवो कियो, जोधाहर[2] जोधार ।।२।।
सोले सत इकावने, सुद पुनम आषाढ़ ।
देवलोक[3] ऊदो हुवो, गंगाहर अवगाढ़[2] ।।३।।

**बात**

मोटा राजा रे पाट राजा श्री सूरसिंघ जी बेठा ।[3] अकबर पातसाह टीको दीयो । राजा सूरसिंघ जी उदैसिंघ जी रा ।

**दूहा**

सिरोही सुरताण पर, सूर बंध समसेर ।
वेर लियो 'रायसिंघ' रो, किया देवड़ा जेर[4] ।।१।।

---

**शब्दार्थ–**

1. वडालो काज=गर्व का कार्य । 2. जोधाहर=राव जोधा का वंशज ।
3. देवलोक=स्वर्गवास । 4. किया देवड़ा जेर=देवड़ा (चौहानों की एक शाखा) राजपूतों को परास्त किया ।

**टिप्पणियां–**

१– मोटा राजा उदयसिंह माघ कृ 10,1645 वि. गुरुवार, जनवरी 2,1589 ई. की मध्य रात्रि में छलपूर्वक सीवाणा दुर्ग में प्रविष्ट हुआ । वहां राठोड़ कला रायमलोत लड़ता हुआ मारा गया था । (जोधपुर ख्यात ०, भाग 1, पृ. 100)

२– मोटा राजा उदयसिंह की मृत्यु लाहौर में आषाढ़ सुदी 15,1651 वि. रविवार, जुलाई 12,1595 की रात्रि के अन्तिम प्रहर में हुई । (अकबरनामा (अं.अ.) भाग 3, पृ. 1027-28) ।

३– राजा सूरसिंह को बुधवार, जुलाई 23,1595 ई. के दिन टीका प्रदान किया गया था । (जोधपुर ख्यात०, भाग 1, पृ. 122) ।

**कवत**

मारे जिण मेवाड़, भिडे खग राण भगायो ।
सगले थाणा साझ, कमधजां अमल करायो ।।
जुध दिखण में जोर, 'अंबर[1]' था कीध अकारो ।
नोवत तोग निसांण, लियो रण मार चकारो[2] ।।[१]
सर करै धरा गुजरात सह, मार मेवासा मोडिया ।
सूरसिंघ सीस सत्रुवां तणा, तरवारा मुह तोड़िया ।।१।।

वीरां हूवो वेध[3], लड़ै अजमेर लड़ाई ।
'किसनो'[4] करण सिंघार, सूर रण जीत सवाई ।।
सळक गयो करमसेण, संक मानी पत साही ।
महा जोध मेमंत, गिरासिया खागै गाही ।।
सूर रो भींच 'गोयंद'[5] सकज, रहियो रण भाटी रचै ।
दोड़िया साथ सामंत गरा, मार मार लौहा मचै[२] ।।२।।

**बात**

सूरसिंघ जी काळ कियो,[३] गजसिंघ जी पाट बेठा । जहांगीर पातस्याह टीको दीयो ।

---

**शब्दार्थ-**

1. अंबर=मलिक अंबर । 2. रण मार चकारो = रणक्षेत्र में घनघोर युद्ध करके । 3. वीरां हूवो वेध = भाइयों में विरोध उत्पन्न हुआ । 4. किसनो = राठोड़ किसनसिंह उदैसिंहोत, किसनगढ़ राज्य का संस्थापक । 5. गोयंद = गोयंददास सोभावत भाटी ।

**टिप्पणियां-**

१- नांदेड़ (19°9' उ. 77°20' पू.) नामक स्थान पर यह युद्ध मई 7,1602 ई. के दिन लड़ा गया था (जोधपुर ख्यात ०, भाग 1, पृ. 124; मलिक अम्बर०, पृ. 35) ।

२- गुरुवार, मई 25,1615 ई. की रात्रि में राठोड़ किसनसिंह आदि ने गोयंददास भाटी को मार दिया तथा अजमेर से किसनगढ़ की तरफ भाग खड़े हुए थे । तब उनका पीछा कर राजकुमार गजसिंह ने किसनसिंह को भी मार डाला था ।

३- महिक्कर (दक्षिण में) निवास के समय मंगलवार, सितम्बर 7,1619 ई के दिन सूरसिंह की मृत्यु हुई थी । (जोधपुर ख्यात०, भाग 1, पृ. 146) ।

**दूहा**

सोले सै छीयोतरै, महीने आसु मास ।
टीकायत बेठो तखत, सूर तणो गजसाह[१] ।।१।।

जहांगीर दीली हुतां, परठियो गज सरपाव ।
नोवत घोड़ो नव सहस, रीधु कमधजां राव ।।२।।

**कवित**

कंवर पदै कीर नाल, लड़ै जालधर लीनो ।
कुरम खगां थी खेस, दळा परकुटो लीनो ।।
पूरब गढ़ी पजाय, भोम दुकांवळ भांजै ।
विखम[1] जिकै मेवास, अंगजी गजवंध गंजै ।।
'दळथंभ' नाम लड़तां दिखण.[२] कमधज राव कहावियो ।
तरवारीयो[2] जोर तीडाहरो, चंहू दिस नांव वंचावियो ।।१।।

**दूहा**

संवत सोले स सई, वक चोराणवे वरस ।
जेठ महीनो तीज तिथ, रवीवार पखलेस[3] ।।१।।

गजसिंघजी आगरै काळ कीनो । देस में नवमें दिन खबर आयी । राणी कछवाई ने और केई गायण्यां सत कीनो । सती रा दान में सिकदार राघोदास कामदार वगैरे कैद में था तिणा नूं छोड़ दिया । पं. बळू कैद में थो तिण नु छोड़ता था सु नह छूटो-हूँ घरे जाऊं तरै म्हारै घरे कुस्याली[3] होय सो आ बात आछी नहीं । सु नह छूटो । गजसिंघ जी काळ कीयो तरै जसवंतसिंघ जी बूंदी हाडा छत्रसाल रै परणीजण पधारीया था । उठा थी परबारा पातसाह जी री हजूर पधारीया । पातसाह साहजहां नु महाराज आयां री खबर हुई तरै साहजादा दुवारा सुकर* ने मेल

---

**शब्दार्थ-**

1. विखम = दुर्जेय । 2. तरवारीयो = तलवार चलाने में निपुण । 3. कुस्याली = खुशी, आनन्द । 4 दुवारा सुकर = शाहजादा दाराशिकोह ।

**टिप्पणियां-**

१– बुधवार, अक्तूबर 6,1619 ई. के दिन गजसिंह का राज्यारोहण हुआ था । (जोधपुर ख्यात०, भाग 1, पृ. 150) ।

२– मलिक अम्बर के विरुद्ध शौर्य प्रदर्शन के फलस्वरूप महाराजा गजसिंह को शाहजहां ने दलथंभ की उपाधि दी थी ।

३– रविवार, जेठ सुदी 3,1694 वि. = मई 6,1638 ई (पादशाह नामा., भाग 2, पृ. 97) ।

ने दिलासा दिराई । पछै महाराज पातसाह री हजूर गया तरै दोय ऊमराव पातसाह रा हुकम था

पातसाही दरबार री पोल में पेठतां[1] सामा आयनै ले गया महाराज पातसाह सु मुजरो कीयो । पातस्याह छाती सूं लगाया, पातस्याह महाराज नुं टीको दियो-

**मनहरण कवित**

साह फेर कही वाण[2], जसू कूँ दियो जोधाण,
नव कोटां सींव जाण, धणी धर सारी को ।
एतो मनसव जात, ऐता असवार साथ,
कही मुंह सेती साक, च्यार है हजारी को ।।
मोतन की माला दई, साथ सरपाव तई,
बोहोत वखान करै, सेन कूँ सुधारी को ।
सिरोसा(पा)व दुसाले और साथ कूँ दीये सजोर,
विदा किये साह रूप देखै असवारी को ।।१।।

**बात**

घोड़ो, हाथी, जड़ाऊ कटारी, तरवार, मोती ने मोतियां री माला, रूपा रा नगारा इनायत कीया । टीको काढ़ मोती हाथ सूं चेड़ीया । तीन लाख दाम पातस्याह जी रां महाराज निजर किया सुं पातस्याह जी माफ किया । सं. १६९४ रा असाढ़ वद ७ सुकरवार [1] टीके बेठा । बळू पंचोली नुं देस सुं बुलाय ने कांम दीनो ।

**मनहरण कवित**

'मंडोवर' राज थान, जोड़े अजमेर ताम,
'जालोरी' विखम धाम, आबु भळे भाय कै ।
जेसो ही जैसलमेर, पुंगल को कोट फेर,
बडे गाढ़ घाटनेर, पारकर ल्याय कै ।।
कीराड़ू सहै(त) सीम, भई है धरा कदीम,
राव मालदेव जैसे कमधज राव कै ।
वंद के अवतार लिया, गिरासीया खिसाय (दिया),

---

**शब्दार्थ**

1 पेठतां=प्रविष्ट होने पर । 2. वाण=बचन ।

**टिप्पणियां-**

१- शुक्रवार, मई 25,1638 ई., (उदैभाण चांपावत, ग्रन्थ 100, पत्र 35 ख; विगत, भाग 1, पृ. 123)।

वापी का खेत (ह) लिया बारबें वरस मैं ।।
सीवजी हुकम कीना, हाथ सेती पान दीना;
कोढ़ी निकळक कीना, ब्रिम कूं पलक मैं ।।

**बात**

म्हाराज रो जनम सं. १६८३ रा महा वद ४ भोम[१] सु बारे बरस री ऊमर में म्हाराज टीकै बेठा । पोहकरण राव चंद्रसेण जी, मालदे जीरा वेटा छोटा, तिणां भाटीयां रै अडाणी[1] मेली थी, सुं किणी पाछी लिवी न थी । सुं हमार[2] महाराज पातस्याह रा हुकम सेती भाटीयां नु प्होकरण में सुं काढ़ दीना, जायगा उरी लीनी ।[२] पछै जैसलमेर रावळ मनोहरदास कने रामचंद्र जोरावरी लीनी थी टीके वेठो थो । सुं महाराज फोजां मेल रामचंद ने परो काढ़ीयो । भाटी सबळसिंघ नुं मनोहरदास रे खोळे[3] देने टीके बेठाणियो ।

पातस्याह साहजान रे विना हुकम साहजादो मुराद ने औरंगजेब गुजरात सुं नै दिखण सुं दानुं भाई स्यामल होय आवता था । सु पातसाहा म्हाराज नु ने भाई जाळोर रा धणी राव रतनसिंघजी[३] नु और उमराव राजा साथे देने विदा किया । औरंगजेव सा सूँ राड़ करण मेलिया । सुं सं १७१४ रा वैसाख वद९[४] ऊजीण कने राड़ हुई राव रतनसिंघ जी काम आया । ने महाराज रो साथ काम आयो ।

**कवत-काम आया तिण भाव रो ।[५]**

नव 'चांपा'[4] नखतेत, चहूं दिस दुनियां चावा ।
'जेता'[5] च्यार जवान, ठीक खट 'जोधा' चावा ।।

---

**शब्दार्थ—**

1. अडाणी = रहन । 2. हमार = अभी । 3. खोळे = गोद । 4. चांपा = राव रणमल के पुत्र चांपा के वंशज, चांपावत राठौड़ । 5. जेता = जेतावत राठौड़ ।

**टिप्पणीयां—**

१— मंगलवार, दिसम्बर 26, 1626 ई. ।

२— पोकरण पर कार्तिक वदी 6, 1707 वि. = शनिवार, अक्तूबर 5, 1650 ई. के दिन महाराजा का अधिकार हुआ था । (जोधपुर ख्यात. भाग1 पृ 209)

३— ३–राव रतनसिंह रतलाम का शासक था ।

'४— शुक्रवार अप्रेल 16, 1658 ई. । यह युद्ध उज्जैन के निकट धरमत (23° उत्तर, 75° 43 पूर्व, वर्तमान फतेहाबाद रेल स्टेशन से 2 मील दक्षिण पश्चिम में) नामक स्थान पर हुआ था । (मआसिर. पृ 5-6)

५— इन कवित्तों में युद्ध में मांरे गये व्यक्तियो का खांपवार उनकी गिनती लिखी हुई है ।

दस दूण मेक 'भाटी' दुभल, खुदालंम दळ खंडीया ।
'देवड़ो' हेक ऊहड़ दूहा, दांवण सीस बीहाठिया ।।
'कुंपावत' खट कहै, अवर पांच 'ऊदा'[1] ओपै ।
'मेड़तिया' खट मरद, रेहया हद भिड़ा रोवै ।।
करमसोत पांच कोप, दुगम खट ईंदा दीठा ।
पांच प्रचंड चहुवांण, नीवेध रहे न तीठा ।।
पाखती च्यार 'पाता' पड़ै, मुंहो हेक महैवचो ।
तुरताण पांच अखई तणा, साथ एक रूपो सचो ।।
भला पांच 'भींवोत' गुड़ै तीन कणियागिर ।
जैपालो हेक जोर, ऊभै डूंगर होय अम्मर ।।
पूरवियो एक पड़े, बैस ऐक सुर स्याई ।
कायथ तीन कसुंड, बामणां तीन वड़ाई ।।
प्रोहितां हेक दळपत पड़ै, चारण हेक चंवारियो ।
मारको हेक बालो मरण, इक मांगलियो आवियो ।।
जूझे हेक 'जुझाण', मछर दोय मुहता मुवां ।
पीपाड़ा दोय परा, हेक सांखल खळ हुवा ।।
बधे एक बकाल लिखे वादक त्रंवालो ।
पीढियां सबळ खवास.[2] हेक गेहलोत वडालो ।।
धांधलां तीन खग धूपटै, रीधु ऐक खीची रहो ।
साहणी तीन बाग समर, फौजदार जगपति कहो ।।४।।
बाणदार दोय बेहसे, ऊभै अवाद अखाड़ै ।
पड़े पलाणियो हेक, ऐक पांडव[3] खग आड़ै ।।
पनरे बरकंदाज[4] पैक,[5] ईको खड़खड़ियो ।
दोय भायल हेक कुरम, परा ऐक, सोहड़ पड़ियो ।।
संवत सतरै सै सई, बरस चावो चवदोत्तरो ।
वद महिनो बैसाख, नवम भृगवार निरंतरो ।।५।।

---

**शब्दार्थ–**

1. ऊदा = राठोड़ उदा सूजावत के वंशज, उदावत राठोड़ । 2. खवास = निजी सेवक । 3. पांडव = घोड़ों का सईस । 4. वरंकदाज = बन्दूकधारी सिपाही । 5. पैक = एक ।

मुगलां मार जसवंत, ऊरडै मुरधर आवियो[1] ।[१]

**बात**

पछै पातसाह साहजहाँ बड़ा बेटा दवा सुकर ने औरंगजेब सामो मेलीयो । धवलपुर[2] राड़ हुई । द्वारा सुकर भागो[२] ।

मास जेठ सुद माह, कीधो घमसांण अकारो[3] ।
तिथ नवमी वरताय, डुळे तब भागो दवारो ॥
तुरत पिता सूँ मिलै, उठा था नाठो आगो ।
फावी[4] औरंग फतं, लेण पातस्याही लागो ॥१॥

**बात**

औरंगजेब आगरै आय साहजहां नै कैद कीनो । मुरादबगस सुं दगो कर पकड़ मारीयो । आप तखत बैठो । दुवारा सुकर ने खेद काढियो ।[5] महाराज ने बुलाय सरफराज कर साथे लीनां । साह सूजा[6] भाई सुं राड़ ने चढ़ीयो । औरंगजेब रा डेरा तो कुरडै हुवा था, पेली कानी सुं सूजो आयो । सुं राड़ थपी । तरै महाराज साह सूजा सुं वात कराय औरंगजेब ने ऊभी लड़ाई छोड़, औरंगजेब री वही रा कितरायक लोग ने खोस ने जोधपुर उरा आया ।[3]

**कवत**

'सूजा' सूँ 'जसराज', ज्वार वतकाव जताई ।
म्है जावां छां मुरड, भिड़ो थे दोनो भाई ॥

---

**शब्दार्थ–**

1. ऊरड़ै मुरधर आवियो = झपटता हुआ मारवाड़ की तरफ आया । 2 धवलपुर = धौलपुर । 3. घमसाण अकारो = भयंकर युद्ध । 4. फावी = शोभित हुई । 5. खेद काढ़ियो = खदेड़ दिया । 6. सूजा = शाहजादा शाह सूजा ।

**टिप्पणियां–**

१– मारवाड़ के सामन्तों ने महाराजा जसवंतसिंह को युद्ध से बलपूर्वक हटाया था (वही पृ.18)

२– यह युद्ध शामूगढ़ नामक स्थान पर जेठ सुदी 9,1714 वि. रविवार, मई 30,1658 ई. के दिन हुआ था । (जोधपुर ख्यात. भाग 1, 225-26; आ. ना., पृष्ठ 94)

३– खजवा के मैदान से महाराजा जसवन्तसिंह जनवरी 4,1649 ई. की अर्ध रात्रि में औरंगजेब की सेना में लूटपाट कर निकल गया था । (मआसिर०, पृ. 13; वही०, पृ. 32)

डेरा उड़ड़ू दरब, लाख लाखा मुह लूटै ।
'खेळू' 'माळू' खोस कितां मारग विच कूटै ।।
यो आवियो मुरड़ जसवंत, उठा जोस वगे मन जोधपुर ।
साझियो कोट नव साहसे, कोट दिली पती तेण कर ।।१।।

**बात**

सतरे पनरोतरै सूजो भागो । औरंगजेब जीतो महाराज सुं कोप कर[1] जोधपुर रायसिंघ अमरसिंघोत ने दीनो । विदा कियो सुं गांव हरभाड़ा सु पाछो फिर गयो । दुवारा सुकर साथ करने अजमेर आयो । औरंगजेब था राड़ कीनी । महाराज नै औरंगजेब मनाय ने गुजरात रो सोबो दीनो । [1]

**कवत**

फिरीयो द्वारो फेर, लाख दळ साथै लायो ।
अडे आय अजमेर,[2] उठी ओरगसाह आयो ।।[2]
जद राजा जसराज मदत द्वारा री मांडी ।
सुणीयो असपती सहू [3] छातपती धीरज छाड़ी ।
लिख भेजीयो कवळ पंजो, लिखत महाराज मत आवजो ।
म्हैं आपस मैं समझस्यां, वलि थे पाछा जावजो ।।१।।
राज 'जसा' महाराज, ऐम फिर पाछो आयो ।
भाई दोनू भिड़ै, मारको सबळ मचायो ।।
चावो महिनो चेत, किलम[4] खल हुवा किताई ।
ईला भार उतरै, बटी हिंदवाण बधाई ।।
भाज गयो फिर द्वारो भीडे, जंग जीतो औरंग जदे ।
इळ तणै बेध आखाड़सिध, वेढ च्यार कीधी वदे ।।२।।

---

**शब्दार्थ-**

1. कोप कर = क्रोधित होकर । 2. अडे आय अजमेर = अजमेर आकर युद्ध के लिये तैयार हुआ । 3. सहू = सभी, सम्पूर्ण । 4. किलम = मुसलमान ।

**टिप्पणियां-**

१- यह गुजरात सूबे का शाही फरमान चैत्र सुदी 4, 1715 वि. = मार्च 7,1659 ई. के दिन जोधपुर पहुँचा था (बही., पृ. 37, विगत., भाग, 1, पृ. 147)

२- अजमेर के निकट दोराई नामक स्थान पर हुई इस लड़ाई रविवार, मार्च 13,1659 ई. के दिन दारा भागा था (बही. पृ. 37; जोधपुर ख्तात., भाग 1, पृ. 230-31)

पाछो फौज पढाय, कहे द्वारो पकड़ायो ।
आयो आपंण पास, महल गरदन मरवायो[1] ॥
मारे पहल मुराद, मांहलो[2] वेध मिटायो ।
आगे खुरम अढ़ार, कोप कर वंस कटवायो ॥
तिण वार साह औरंग तुरत, चढनै दोली चालियो ।
जसराज धरा गुजरात ने हुकमी[3] सूबे हालियो ॥३॥[1]

पेहल पोंच गुजरात, कमधजां डको दीयो ।
भोम मेवासा भंजा, अमल करड़ो अत कीयो ॥
सरद खान कर सरस, सीवाने मार खीसायो ।
बड़े भाग जसराज, सुर हर सुर सवायो ॥
धस आवियो फेर गुजरात, धर सौबै गाजी साहरे ।
अणभंग राव सारी इला, तेज तरुण जीम साहरै ॥४॥

## बात

पछै कावल री तरफ पठाणां फिसाद[4] कियो जद पातसाह महाराज ने काबल रो सूबो दियो । महाराज कावल पधारिया ।[2]

## कवत

कमधां त्यार कर कूच, आंण सूबे बरताई ।
जातां समै जोधार, लडे पठांण लड़ाई ॥
पड़ै पठाणा पाड़, पैहल तो पंच हजारी[5] ।
खड़ै सूजायत खान, भीच पातसाही भारी ॥

---

### शब्दार्थ

1. गरदन मरवायो = कत्ल करवाया । 2. माहलो = आन्तरिक । 3. हुकमी = आज्ञा-कारी । 4. फिसाद = उपद्रव । 5. पंच हजारी = पांच हजार का मनसबदार ।

### टिप्पणियां

१– महाराजा जसवंतसिंह गुजरात के लिए चैत्र सुदी 6,1715 वि. शनिवार, मार्च 19,1659 ई. के दिन जोधपुर से रवाना हुआ था । (बही०, पृ. 38)

२– वस्तुतः महाराजा जसवंतसिंह को जमरूद की थानेदारी सौंपी गई थी । उसे काबूल की सूबेदारी नहीं मिली ।

मारको सवळ तीसे संवत, मचे राह खड़पे मांही ।[१]
बाजिया खाग आडे विदे, सुर पाड़ पड़िया सही ॥१॥
रेहा और आरण,[1] कटक किलमाणँ कांई ।
भिड़ँ जसा रा भींच, जिका कही साख[2] जताई ॥
सामंत, 'दोय जोधा' समस्थ, धारा रहीया धूधडे ।
दीवांण 'बछो' नव दुरग रो, पडै पंचोली चापड़ँ ॥२॥
सरसा 'चांपा' सात, सात मेड़तिया साथे ।
दोय 'कूपा' ऐक 'महू' हुवा खट 'भाटी' साथे ॥
ऐक 'बालो' एक अखा', 'सींधल ऐक सवायो ।
विढे दोय 'चहुवांण', 'देवड़ा ऐक कहायो ॥
'कुरमा' राव त्रण कटकँ, सुमर राम बागा समर ।
चवदै बरकंदाज चढ़, अफछर वर हुवा अमर ॥३॥
सरस हुवो घमसांण, रेहो आरण हद रचे ।
पाधर करँ पठाण. राह चलिया सह समचे ॥
साहजादा ले साह· आप पिण चाले आयो ।
रहै दोय त्रण वरस, सलाह कर दिली सिधायो ॥[२]
राखियो ज·ो पीसोर में, सो अखतीयार[3] समपीयो[4] ।
मेवासिया पांव लागा मिळै, चोरी छाड़ी चंपीयो ॥४॥

**बात**

सिन्यासी रिधपुरी हिंगलाज जी[३] री तरफ सुं आय ने समाध लीनो ।

---

**शब्दार्थ**

1. आरण = रणक्षेत्र । 2. साख = शाखा, उप जाति, खांप । 3. अखतीयार = अधिकार । 4. समपीयो = सौंपा ।

**टिप्पणियां**

१– खड़पा घाटी का यह युद्ध शुक्रवार फरवरी 27 से सोमवार, मार्च 2,1674 ई. को हुआ था । इस युद्ध के अंतिम दिन शुजायत खाँ मारा गया था । (वही०, पृ. 146, 157; 161, 163; जोधपुर ख्यात, भाग 1, पृ. 243-246)

२– बादशाह औरंगजेब जून 27,1674 ई. से दिसम्बर 23, 1675 ई. तक हसन अब्दाल में रूका था । तब महाराजा जसवंतसिंह जून 15,1674 ई. के दिन बादशाह से मिला था । (मआसिर०, पृ. 132, 133, 148)

३– हिंगलाज जी = बलूचीस्तान के सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थल हिंगलाज देवी ।

**कवत**

हींगुलाज चे हुकम, उठै सीनासी आयो ।
रीध सिध पुरी नाव, गरु हरराम बतायो ।।
बरस अमर बावीस, करै कै तीरथ कासी ।
कमधां सु बतकाव[1], ऐम कहै जोग्य अभासी ।।
तापियो वरस हूं पांच तक, इम देवी तब उच्चरै[2] ।
'जसराज' तणै घर जनम लैं, कोट नवां राजस करै ।।१।।

**बात**

अे समाचार सिन्यासी केहा । समाध री दुवायती[3] मांगो ।

**कवत**

मास सात गरभवास, राखसी जादम राणी ।
.... .................................................... ।।
अदीठ चक्र बहसी इळा. सेह मचकूर[4] सुणावियो ।
विख्यात नाम माहरो वसु, सिघ 'अगजीत' स्व आखियो ।।
माला वभूत पोथी मिलै, सोंपी सिध सुभाव सूँ ।
आठमें वरस लेईस ऊरा[5], याद करे सो आय सूँ ।।

**बात**

अै सारा वचन सिध रा छै। कवत तो घणां छै, पण एक लिखीयो छै । रा० दुरगदास जी अे सारी बातां म्हाराज सूँ मालम कीनी, म्हाराज राजी हुवा । अजीत-सिघ जी रे गरभ रो दिन इण सिध समाद लीनी सो ही दिन गिणीजियो ।

**कवत**

पैतीसो वरस परस, भादर पद मास भणिजै ।
वद नवमी गुरवार, गरभ चो दिन[6] गीणीजै ।।[1]

---

**शब्दार्थ**

1. बतकाव=बातचीत । 2. उच्चरै=कहा । 3. दुवायती=आज्ञा । 4. सेह मचकूर=सारा विवरण । 5. लेईस ऊरा=ले लूंगा । 6. गरभ चो दिन=गर्भ धारण करने का दिन ।

**टिप्पणी**

१- गुरुवार, भादवा वदी 9,1735=अगस्त 1; 1678 ई. ।

**बात**

मास च्यार तो अजीतसिंह जी रे मां जादम जी ने गरभ रा हुवा था, ने मास छव दळथंभण जी री मां कछवाई जी ने गरभ रा हुवा था इतरा में महाराज धांम पधारीया ।

**कवत**

पैंतीसे पीसोर, पोस वद दसोठाणयो ।
गुरवार राव मारू गेहण,[1] धरण दस दे धड़हड़ी ।।[१]
सती गावणा, सात, आठ तद भई ऊछाहे[2] ।
ऐक ब्रह्न कलियाण, साथ बलियो[3] सत साहे ।।
बसतो पुरव वास, जनम पेलंतर जांणै ।
सो पूगो मनमंध, वात की अखी[4] दीवाणै ।।

राणी जादम जी रे मास च्यार था, ने नरुकी जी रै गरभ मास 6 छव ने दिन पांच था । रांणी जादम ने कछवाई राणी गरभ सुं थी सु सती होय थी[5] सुं उमरांवां सती न होण दीवी ।

**कवत**

राज वीज[6] राखतां, राज नव कोट राखियो ।
राज वीज राखतां, कमध वंस नीर चढ़ायो[7] ।।
राज बीज राखतां, रहो धरम दोनु राहे ।
राज बीज राखतां, साळ[8] हुवो पतसाहे ।।
राखतां बीज राजा तणो, कितो सुजस सुर पुर के हो ।
तिण वार उदेसिंघ लखधीर तणा राज बीज सु रेहो ।।१।।

**बात**

आ खबर मारवाड़ में आतां पेहली खोटा बिरंतत[9] होण लागा । पछै पोस

---

**शब्दार्थ–**

1. मारू गेहण=मारवाड़ का आभूषण । 2. उछाहे=उत्साहपूर्वक । 3. बलियो= जल गया । 4. अखी = विख्यात । 5 सती होय थी=सती हो रही थी । 6. राज बीज=राजा का अंश । 7. नीर चढ़ायो=गौरवान्वित किया । 8. साळ=शूल, कष्टकारी । 9. खोटा बिरतंत=बुरी घटनायें ।

**टिप्पणी–**

१– गुरुवार, नवम्बर 28, 1678 ई. । (वही० पृ. 75; राजरूपक, पृष्ठ 17)

सुद 14 सोमवार,[१] लिखीया आया। चंदरावत राणी ने बीस गायाणियां सत कियो।

पातसाह महाराज रो वाको[1] सुण नै दीली सु अजमेर आयो। पाछलो दोख[2] विचारियो। ऊजीण री राड़ रा तो सामो म्हाराज रो गुण मानियो थो। पातसाही थंभ[3], बड़ा राजा, भला रजपूत सीपाई छै, खांवद रा काम उपर चाहै जिण सु राड़ करे। मांहरा मुंढा आगे पिण कहै सुं सो चाकरी वजाय ल्यावसी। ओ विचार ने म्हाराज नुं सरफराज किया। पिण महाराज चाकर रेह्यां पछै पातस्याह नै साह सूजा री राड़ में चढी कजियै[4] छोड़ आया था, तिण रो दोख पातसाह धारीयो थो। एक वार जोधपुर रायसिंह अमरसिंघोत ने लिख दीनो थो। सुं उण रै रंग निजर न आयो[5], तरे पाछो गयो, जोधपुर न आयो। पातसाह रा मन में दोख तो घणो थो, पिण कांई वात ढ़व[6] लागै न थी। नै म्हाराज रो पिण तय थो। तरै म्हाराज सुं ललोपतो[7] कर ने देस उतन, गुजरात रो सोबो दीनों, पछै काबल मेलीया। सुं महाराज पण मोटा राजा सुग्यान था। औरंगजेब रो तप थो। सुं पातसाही चाकरी भोळाई तिण में कसर पड़ण न दीनी। साम धरम री रीत छै, तिण भांत धरम साजियो महाराज काल कियो तरै पातसाह खेधो घणो करणों मांडीयो। पेहला तो मन में दंगो करने पैसोर महाराज रा साथ नै दिलासा[8] मेली। महाराज रे वेटा होसी तरै जोधपुर देस्यां। अेह समाचार चलाया ने आप पातसाह दीली सुं कूच करने अजमेर मुलक दावण रै वासते आया, नै दिखण ईंदरसिंघ ने हजूर आवण रो हुकम मेलियो। पातसाह साथे सारा साहजादा ने उमराव था। सुं अजमेर आय ने अजमेर सुं वादरखां उमराव ने जोधपुर मेलीयो।[२] सु म्हाराज रा सारा उमराव बहादरखां सुं मिलिया। वादर खां दिलासा दीवी, कोल बचन दीना। महा-

---

**शब्दार्थ—**

1. वाको = घटना। 2. दोख = वैर भाव। 3. थंभ = स्तम्भ। 4. चढी कजियै = युद्ध के समय। 5. रंग निजर न आयो = परिस्थितियां अनुकूल नहीं दिखाई दी। 6. ढव = अवसर। 7. ललोपतो = खुशामद। 8. दिलासा = आश्वासन।

**टिप्पणियां—**

१— दिसम्बर 16,1678 ई.।

२— वस्तुतः बादशाह औरंगजेब ने खान जहां बहादुर को अजमेर पहुंचने के पहले फरवरी 15, 1679 ई. के दिन जोधपुर जाने के लिये नियुक्त किया था। बादशाह इसके बाद फरवरी 20, 1679 ई. के दिन अजमेर पहुंचा था (मआसिर. पृ. 172-73)

राज रै वैला होसी तरै जोधपुर देसां । अबार गढ़ खाली कर देवो । महाराज रै माल हसम[1] होवै सुं सूप देवो ।

बात कर गढ़ खाली करायो । मांहै कुंही[2] माल थो सुं ऊरो लीनो, थाणों राखियो । नबाब बहादर खां पातसाह री हजूर गयो[3] । दरबार रा उमराव कित-रायक बहादर खां साथे गया पातसाह दीली गयो । दिखण सुं इंदरसिंघ आयो ।

मारग में आवतां लाहोर में महाराज श्री अजीतसिंघ जी दळथंभण जी जनमिया-

## दूहो

बुधवार चेत वद चोथ तिथ[1], इष्ट ३५. घड़ी पुल १० ।
जंत नाद रैबा गाज रै, हरखिया[4] देवता नत्र साहे केई दवारै जै जै करै ।।१।।

दोनू ऐक दिवस, एक जाया अवतारी ।
पेहला 'अजो' प्रकट, पछै दळथंभ पधारी ।।२।।

## बात

उमरावां पातसाह नैं आ बात अरज लिख देस ने खबर मेली, मारो साथ कूच कर दीली आवजो, म्है पिण दिली पातसाह री हजूर आवां छां । पछै दरबार रा उमराव दिली आया था । पातस्याही ऊमराव सारा गया था, देस रो साथ पिण भेळो हुवो । भाटी रुघनाथ, पंचोली कैसरीसिंघ दीवाण वगेरे देस सुं गया । सुं सारा भेळा हुवा । महाराज अजीतसिंघ जी बालक था, सुं तो डेरे राखिया, नैं और सारो साथ पातसाह रै मुजरै गया । पातसाह सिरपाव दिलासा दीवी, नैं फुरमायो, महा-राज रो सारो खजानो माल ऊरो देवो, छिपावो मती । सुं चोड़े[5] माल थो सुं तो परो दीनो ।

पछै पातसाह ऐक राह करण सारू जजीयो लगायो ।[2] नैं इंदरसिंघ रूपीया छतीस लाख देणा करने जोधपुर मांगीयो ।

---

**शब्दार्थ—**

1. माल हसम = सम्पत्ति । 2. कुंही = कुछ भी । 3. हजूर गयो = दरबार में गया । 4. हरखिया = प्रसन्न हुए । 5. चौड़े = प्रकट रूप में ।

**टिप्पणियां—**

१— फरवरी 19,1679 ई. ।

२— अजमेर से लौट कर बादशाह औरंगजेब ने 1 रबिउल अव्वल, सन् 1090 हि० = गुरुवार अप्रेल 3,1679 ई. के दिन जजिया सम्बन्धी आदेश प्रसारित किया था । (मआसिर०, पृ. 174) ।

**दूहा**

असपत सूँ इंदरसिंघ, इळ कज तोत ऊठाय[1] ।
राजपुत्र जसराज रा, वाळक धरती खाय ।।१।।

पेस करूं पतसाह रैं, रूपीया लाख छतीस ।
मांगी इंदरसिंघ मुरधरा, साह करो बगसीस ।।२।।

**बात**

पं. केसरीसिंघ ने माल रैं वासते पातसाह कैद कियो ।

**दूहा**

लाख वात लागू थकै, सिंघवी सुंदरदास ।
कहियो कूड़ा कमधजां, तरण पातल कथ तास ।।१।।

जसा घरै हुजदार[2] थो, हुवा लूणहराम ।
इंदरसिंघ था मिलियो अठै, करबा भूंडा काम[3] ।।२।।

**बात**

केसरीसिंघ नुं कैद कर त्रास[4] दिखाई । नैं केसरीसिंघ जैहर खाय मुवो ।

**कवत**

सिंघवी काजी सरो, चुगलियां करण चढ़ायो ।
.............................................................................।।

सनमुख सुंदरदास झूठ कमधां था झगड़ै ।
भागो मुरधर भरम, बात तिण सारी बिगड़ै ।।

---

**शब्दार्थ-**

1. तोत ऊठाय = बवंडर खड़ा करके । 2. हुजदार = अधिकारी । 3. भूंडा काम = बुरे कार्य । 4. त्रास = कष्ट ।

नीमक री लाज जाणी नहीं, खोटो दमड़ा खायकी ।
जोर की बुरी जांणै जगत, पातळ वाली पायकी ।।१।।

**बात**

दरबार रा उमरावां तो दोय महीनां तांई अरज विनती कराई । पेस न आई[1] । राज ईदरसिंघ ने पातसाह दियो[1]—

**तुक**

ईदरसिंघ ने असपती -राज पैंतीसे दीनो ।
विदा होय तिह वार, कूच हरखाय कीनो ।।

**बात**

उमरावां छळ करनै अजीतसिंघ जी नुं तो देस चलाया[2] नैं दळथंभण जी नें लेने सारो साथ दीली रह्यो थो । देस में समाचार मेलिया - 'म्है तो अठै म्हां सूँ वणसी सुं करसां । थे उठे देस में ईदरसिंघ जी नु अमल मत देजो ।' दरबार रो साथ दिली रह्यो थो । सुं पातसाह धरती न दीनी, दोळी[3] चोकी वेठांणी । तरै साथ लड़ण री तयारी कीनी । चढ़ ऊभा रेहा । चढ़ी अंणीयां[4] दलथंभण जी ने परा काढिया ।[2] उमरांवा साको कीनो । असवार तीन सो था ।

---

**शब्दार्थ—**

1. पेस न आई = सुनवाई नहीं हुई । 2 देस चलाया = मारवाड़ की तरफ रवाना किया । 3. दोळी = चारों तरफ । 4. चढ़ी अंणियां = युद्ध के लिए सैनिक पक्तियां ।

**टिप्पणियां—**

१– बादशाह ने राव इन्द्रसिंह को द्वितीय जेठ वदि 12, 1735 वि. = सोमवार, मई 26, 1679 ई. के दिन जोधपुर का टीका दिया था । (वही०, पृ. 102; मआसिर० पृ. 175-156)

२– वस्तुत: राजकुमार अजीतसिंह और दलथंभन दोनों को ही खीची मुकनदास की देखरेख में राठोड़ मोहकमसिंह मेड़तिया के परिवार के साथ इस संघर्ष के पहले ही मारवाड़ की तरफ भेज दिया था । (जोधपुर ख्यात, भाग 2, पृ. 44) ।

**सोरठा**

सई तीन से असवार, अड़िया भड़ अगजीत रा ।
साको करण संसार, अवचल[1] नामो आपरो ।।१।।

बांणक फौज वणाय, कमधज जमना खेत पर ।
रहिया खाग संभाय, दळ झूजंण पतसाह रा ।।२।।

साथ उठी पतसाह, ऊभो जामल आयने ।
रूके पेली राह, चऊं दिस कानी चापड़ै ।।३।।

**बात**

दरबार रो साथ लड़ काम आया तिण री विगत पातसाह री सात चोकी चढ़ी आई थी ।

पाय नाम 'पोलादसी'[2], साथ सीदी रे सारा ।
'हामद' खान 'हमीद', किया के जोध करारा ।।
'जामले' खोज मीरां जिसो, ऐकां करण ऊवेल रो ।
मछरेत पठांण 'कमाल दी' दावै सकत दलेल रो ।।१।।

**बात**

और पातसाही उमराव तोपखानों वगैरे लोक घणो थो । महा भयानक मेछ काळ रूपी दरसाया ।

**कवत**

करवा प्रळेकाळ, अपपर ऊलटे आया ।
घड़ी सात घमसांण, कमधजां कीध अकारो ।।
गज बागां गाहटै, पोळ दिली पडवारो ।
पड़ै पांच सो खेत, लोह सो सातां लागा ।
होय खंड विहंड़[3], मेछ केतां रा भागा ।।

---

**शब्दार्थ**

1. अवचळ = अमर । 2. पोलाद-सी = फौलादखां, दिल्ली का कोतवाल । 3. खंड विहंड = छिन्न भिन्न ।

जोरावर जोध जसराज रा, कळू[1] नाम साको करै ।
हालिया सर केता[2] हरख, वदै वाद अपछर[3] वरै ॥१॥

## दूहा

संमत सतरे छतीसे, वद सावण बाखाण ।
तीज तिथ दीली प्रथम, रांणी दत रण मांह[1] ॥१॥

जसवंत री हाड़ी जी बुंदो खागाँ जुड़ै,सांवळै दला पतस्याह ।
पहला लड़ दोनु पड़ै, पांड़ै मेछ अपार ॥२॥

कमधजकै रहिया कलह, साख साख सिरदार ।
कहूं नाम सारा निरख, सगळी वात सुधार ॥३॥

पेहला सात परचंड़, सार 'जोधा' लड़ साचै ।
रेहो खेत रीणछोड़, रुक रुकां मुह राचै ॥४॥

'वीठल' पीथल विहद, वंस दियो उजवालो ।
'महासिंघ' मूछाळ, 'जगतसिंघ' रतनावालो ॥५॥

'कुंभकरण' कीरतसिंघोत, जोधो 'चंदरभाण' द्वारकादासोत
जोधो रामसिंह रेख राखी रहच, आतस ऊड़ता ऊपरै ।
नांखियो तुरी नव लाख में, गरे पाड़ पड़ियो गरै ॥

भाटी नव काम आया तिण री विगत-

रूघनाथ, सगतसिंघ, उदैभाण, महासिंघ म्होवणदास, हिंदूसिंह, जुजारसिंघ महैसदास । मेहराज रा मछरायता, रुक बाज रिण में रया ।

---

**शब्दार्थ-**

1. कळू = कलियुग । 2. केता = कितने ही । 3. अपछर = अप्सरा ।

**टिप्पणी-**

१- बुधवार, जुलाई 16, 1679 ई. ।

उदावत छः विगत–भारमल, गोयंददास, आसो जसु, गोरधन. रुघनाथ चांपावत नाहर, सोभावत जोगीदास कुसलावत, और लोक कितरायेक काम आया। कितरायेक निसरीया [1] । ने करणोत दुरगदास जी पेहला महाराज साथे जाण रो, निकळण रो सिरदारां हट कीयो। तरै दुरगदास जी केयो - लोह लागां विनां नीकलूँ नहीं।' पछै दुरगदास जी लोहां पड़ीया । पछै सिरदारां रा केयां सुं निकलिया–

## दूहा

दुरगदास आसा तणो, मंत्री वड वर वीर ।
राज अचळ थिर राखवा, साहस धरै सधीर ।।१।।

अस झुंडा विच ओरवे, जाडे थंडा देख ।
काम न आयो साम कज, लिखै विदाता लेख ।।२।।

काची मन धारी नहीं, चढ़ै चोगणो छोह ।
खेत पडे खग झालियां, जब लागै तन लोह ।।३।।

भाई 'देदो' आय भल, सांवत सकजे राम ।
मुख आगळ तुरगेस रै, तुरत आवियो काम ।।४।।

## बात

इण रीत दुरगदास जी निकलिया नै भाई देदकरण जी[1] काम आया। नै पातस्याही लोक पिण घणा मुंवा। पांच सो काम आया हुसी[2] । नै सातसोरै पाटो फिरीयो[3] ।

---

**शब्दार्थ–**

1. निसरीया = निकल गये । 2. काम आया हुसी = मारे गये होंगे । 3. पाटो फिरीयो = मरहम पट्टी करवाई ।

**टिप्पणी–**

१– यह देद करण कौन था ? स्पष्ट नहीं है क्योंकि वंशावलियों में राठोड़ दुर्गादास के इस नाम का कोई भाई प्रमाणित नहीं होता ।

पछै पातसाह ऐक तोफान उठायो । किणी रो डावड़ो[1] आणियो । चवड़ै वात जाहर कीवी[2]जसूतसिंघजी रो बेटो म्हैं पकड़ आणियो छै [3] ।''[1]

**कवत**

राव दिली दरगाह, ऐम तुतीयो उठायो ।
सीदी सोह बिरतंत,[4] साह ने जाय सुणायो ।।
कैह मुरड़ेगा कंमध, काम पिण केता आया ।
गुजबी केईक लोग, कैद में आणे कीना ।।
सांदू सूरजमल जीव घट भांज दीना ।
किलमियो एक लड़को कठा, यो दमड़ा[5] दे आणियो ।
कमधजां राव म्है पकड़ियो, । इण विध[6] तोत उठावियो ।।१।।

**बात**

खेत[7] में लोहां पड़िया सुं उठ आया । रूपसिंघ उदावत, म्होकमसिंघ जगतसिंघोत मेड़तियो, महासिंघ चांपावत ।

**तुक**

ऊपडे ऐक अजानबाहू, आसावत दुरगो अभंग ।

**बात**

दुरगदास जी विखो करण रे वासते पहेली तो वसी रो लोक संभाल ने ठीकाणैं मेलिया[8], ने चांपावत सोनग जी ने समाचार मेलीयो तुरका सुं जोधपुर

---

**शब्दार्थ–**

1. डावड़ो = लड़का । 2. जाहर कीवी = प्रसिद्ध की । 3. आणियो छै = लाया है । 4. बिरतंत = विवरण । 5. दमड़ा = पैसे । 6. इण विध = इस प्रकार । 7. खेत = रणभूमि । 8. ठीकाणैं मेलिया = सुरक्षित स्थान पर भेजा ।

**टिप्पणी–**

१- कोतवाल फौलादखां ने किसी दूध वाले के घर से एक बच्चा मंगवा लिया था । बादशाह ने उसको मुहम्मदीराज नाम देकर जैंबुन्निसा बेगम को सौंप दिया था । (मआसिर० पृ. 179) ।

में राड़ करजो, मार ने थाणायतां[1] नु काढ देजो।

## कवत

करणो सबलो काम, ऐम घर बाहर आयो।
विखो करेवा काज, वसी रो लोक[2] संभायो॥
कागदा खबर भेजी सकल, सोनगजी हूंता संहू।
मारजो मुगल थांणा म्होर, कोट कोट जेता कहूं॥१॥

## बात

दिल्ली री राड़ में लोक सारो इतरो काम आयो। दरबार रो – राणी जादम, कछवाई, उमराव चाकर सेंतालीस। उमरांवां रा वेली पचावन तथा साठ काम आया।

जोधपुर में चांपावत सोनगजी ने भाटी रामजी साथ भेलो कर रहया था। सो इणां दुरगदास जी रा समाचारां उपरै गढ सझायो[3]। जोधपुर में पातसाही थाणायत ताहरवेग' थो तिण ने लूट लीनो। ने काढ दीयो। देस में जायगा जायगा उमरावां जाय ईंदरसिंघ जी री आमदानी उपर पातस्याही थाणां उठाय दीना, ठोड़ ठोड़[4] सूं काढ दिया। सीवाणों बालां[5] धवेचां उरो लियो। कोचक वेग थाणायत नु उड़ाय दीनो।[1] मेड़ते राजसिंघ प्रतापसिंघोत गोपालदासोत माधोदासोत मेड़तिया पातसाही थाणो उठाय दीनो। थाणायत सेख सादुला[6] ने पकड़ कैद कियो, पछै साथ भेलो कर ने अजमेर थाणायत तेवर खां सु पोहकर जी में राड़ कीनी।

---

**शब्दार्थ–**

1. थाणायतां = अधिकारी। 2. वसी रो लोक = परिवार परिकर वाले। 3. गढ सझायो = दूर्ग की मजबूती की। 4. ठोड़ ठोड़ = जगह जगह। 5. बालां = राठोड़ों की बाला शाखा। 6. सेख सादुला = शेख सादुल्ला खां।

**टिप्पणी-**

१– यह घटना रमजान 13, सन् 23 जुलूसी = शुक्रवार, अक्तूबर 9, 1679 ई. की है। (वकाये रणथम्भोर०, पृ. 383)।

**दूहा**

ऐकादसी तिथ अंधार पख[1] वरसा खट तीसे वरस।
भेलीयो मंडल जाय भादवै सुरां सूरज को सरस[१] ॥१॥

**बात**

इणी तरै इंद्रसिंघ जी फोजां ले आयो। अठै सोनगजी गढ़ संभायो। सोनगजी उदैसिंघ और ही खांप खांप रा सारा सिरदार था। अखैराज दलपतोत प्रोहित थो। भगवानदास ऊहड़ कीलेदार थो। सारा ही दरबार रा काम ने तन दीनो।

**दूहा**

ऊहड़ा हाथ इतवार[2] सू. करै आद कूंची[3] किलो।

**कवत**

इंदरसिंघ नेडो आय, पड़ै नव कोसां ऊपर।
........................ ........................................... ॥
मोहल होय तीन मिलै, हालिया[4] पीहर[5] सारू।
अवतारी अगजीत, मेहमत छाने[6] मारू ॥
आविया लिखत फिर इदर रा, दुरग नवे मुह दीजिये।
मेल सूँ पटा मोह सुं मिलो, काय[7] लड़ाई कीजिये ॥१॥

**बात**

दरबार रा उमरावां पाछा जाव[8] करड़ा[9] कीया।

---

**शब्दार्थ-**

1. अंधार पख = कृष्ण पक्ष। 2 इतवार = विश्वास। 3. कूँची = चाबी। 4. हालिया = चले। 5. पीहर = पिता का घर। 6. छाने = गुप्त रूप से। 7. काय = क्यों। 8. जाव = उत्तर प्रत्युत्तर। 9. करड़ा = कटु।

**टिप्पणी-**

१- गुरुवार, अगस्त 29, 1679 ई. (वकाये रणथंभोर०, पृ. 345; मआसिर०, पृ. 179; राजरूपक०, पृ. 47)

## दूहा

इत नागोरी आवियो, इत मारू अणभंग ।
सोनग दुरग सझायने, खळ रोपे गज खंभ ।।

पछै बात विसटाळो होण लागो[1] ।

## दूहा

सुण रो आळोच[2] सही, यों सुण दुरग अभंग ।
इंदरसिंघ था मिलसी अवस, देसी परो दुरग ।।१।।

## बात

तरै दुरगदासजी सारा उमरांवा ने कहायो-"रखे[3], ईंदसीघ जी सुं बात करो । राज री राणीयां तो पीहर गई छै । आयां मुलक मारसां । विखो करसां । सारा मों सुं भेला हो जो । ईंदरसिंघ री बातां रे भोले भूल जो मती । निदान[4] उणरे खोट[5] छै ।'

## कवित

हाले कर हिलोळ, साथ वसियां ले सारी ।
गया सिरोही गोढ़, भोम विसलपुर भारी ।।
खीची वडा खवास, जेण मानियो गंजाणी ।
सबळ विखा रो साथ, फेर मुकनेस' किलाणी[6] ।।
मालदेराव पिण मानियो, सदा राख केतां सीरै ।
कोट गढ सोंप रावत कियो भदो खजाने गढ़ भरै ।।१।।

## बात

ईंदरसिंघ जोधपुर था कोस एक ऊपर आंण डेरो कियो । दरबार रा उमराव

---

शब्दार्थ–

1. विसटाळो होण लागो = बातचीत होने लगी । 2. आळोच = विचार । 3. रखे = ऐसा न हो कि । 4. निदान = अन्ततः । 5. खोट = दगा । 6. किलाणी = कल्याण का पुत्र ।

जोधपुर में था तिणांरी कुसामद घणी किवी । पैहला सुं तो उमराव मानी नही । ईंदरसिंघ ने वचना घणा करड़ा केया । घणा काजिया[1] होसी, तरै धरती थांहरै हाथ आवसी ।

## निसाणी

सूरा पूरा जुंभसी, हुवै टूक टूकाणी ।
पड़सी केई खेत में, वर अपछर वाणी ।।
जद होसी गढ़ पालटो[2], ईंदा जोधाणी ।
बात कीयां किम आवसी, धरा राज विराणी[3] ।।
साह फसाया आपनै, करवा तुरकाणी ।
राज उठाया तोतिया, कर कूड ऊपाणी ।।
जिकै कहै जसराज रै, वेटा कद जाया ।
जांरी जीभ कुढावजै[4], काढीजै काया ।।१।।

## बात

पछै उमरावां बातां सुं ललचिया[5], बात किवी । पेहला ईंदरसिंघ रो कंवर आय ने उमरावां ने मुजरे ले गयो । पछै ईंदरसिंघ भादवा सुद ७ जोधपुर गढ़ दाखल हुवो ।[1] गढ चढतां परमांण उमरावां सुं कुचरणी[6] कीवी ।

## कवत

गढ़ चढ़तां लग गरज, सुपेह[7] दिल थी सारी ।
'सोनग' था उण सायत, खंवाखस[8] कीध सवारी ।।

---

**शब्दार्थ–**

1. काजिया = लड़ाई झगड़े । 2. गढ़ पालटो = दुर्ग पर अधिकार होगा । 3. विराणी = पराई । 4. कुढावजै = निकलवा दें । 5. ललचिया = लालच में आये । 6 कुचरणी कीवी = तंग किया, छेड़खानी की । 7. सुपेह = राजा । 8. खंवाखस = द्वेषपूर्ण व्यवहार ।

**टिप्पणी–**

१– मंगलवार, सितम्बर 2,1679 ई. ।

वीठल तणौ वरजांग, खोट देखे बल खायो[1] ।
तजे सभा तिण वार, उरड़ डेरां ने आयो ।।
सोंपियो हसम सिरकार रो, पटक हाथ पिछताविवो ।
ततकाल वैण[2] दुरगा तणा, आद उठे उर आवियो ।।१।।

सोच पड़ै सोनग, सूर भारी सरमायो ।
मार रीस मन मांह, कूच जेत सूँ करायो ।।
सटके[3] वसी संभाय, इळा घातियो उचालो[4] ।
विखै हालियो वहै, वयण कहि बड़े वडालो ।।
सुख कर राव सुईस नहीं[5] दुरग लीध मो कर दगो ।
रावत या करसी दूंड, भारथ लड़ जद तूँ भगो ।।२।।

## बात

पछै सोनगजी सिरोही जाय दुरगदासजी सुं भेळा हुआ । दुरगदासजी सोनगजी नु धीरज बंधाई । केहो मैं तो थ्हानै पहला इज केयो थो, इण रो भरोसो मत करजो । सो होणहार इण ईज भांत । हमें पिसतावो किस्यो करणो[6] । आंपा सारा भेळा होय ने उण नै गढ़ माह सूँ परो काढस्यां, खुस्याली राखो । पातस्याही स्हेरां कनै दंड पेसकसी लेसां ।

पछै ईंदरसिंघ जी जोधपुर में वदनियत पकड़ी । साहूकार, म्हाजनां ने दरबार चाकरां ने कैद करणा मांडीया । दिन दस ओ फितूर राखयों । गरज दामरी सरी नहीं[7] । रैत पिण रजु[8] हुई नहीं । ईंदरसिंघ गढ़ में कोठारा ताळा तोड़ सरब मता[9] ने ठाकुर जी री मुरतां वगैर सारो माल उरो लियो । कदीम मोहल थो सुं ढायो, दोढ़ी[10] दिखण कानी काढी । आदू[11] मारग छोड़िया, उतपात मांडिया । पछै सोभत री तरफ व्यास देवदत्त ने पकड़ण सारु बीका जेतावत नु मेलियो । सुं

---

**शब्दार्थ**

1. बल खायो = क्रोधित हुवा । 2. वैण = बचन । 3. सटके = शीघ्रता से । 4. घातियो उचालो = उपद्रव खड़ा किया । 5. सुईस नहीं = सो नहीं सकेगा । 6. किस्यो करणो = कैसा करना । 7. सरी नहीं = नहीं हुई । 8. रजु = राजी । 9. सरब मता = सारी सम्पत्ति । 10. दोढ़ी = ड्योढी । 11. आदू = परम्परागत ।

बीका रै ने व्यास रे केहबत[1] हुई व्यास केही-'बेड़ियां नहीं पहरूं ने नहीं हालूं।' तरै व्यास मुवो।

**कवत**

बीकै नै इम व्यास, भलां चाभड़ियो।
पाछै उलट पुलट, लौहड़ा आड़ा लड़ियो।।
व्यास पड़ै रण बीच, साथ खट साथी साथे।
केहियो पड़ीयां वचन, हत्या भारी कीधी हाथे।।
ईदरसिंध कर अधरम, मूळ विरामण मरवाया।
ढाही परम परधाम, चलंण तुरकांण चलाया।।
काजी बांग कुराण, पाठ महिजिद पढाया।
बेद पुराण बचन, दुसट बुध[2] परा दुराया।।१।।

**बात**

पछै राव ईंदरसिंघ जी देस रो बंदोबसत करण चढ़ीयो। सुं सीवाणां री तरफ धवेचा राड़ कीनी, सु उठी सुं हट ने पातसाह री हजूर अजमेर गयो। पातसाह दीली सुं दूजीवार अजमेर आयो थो।[1] राव आपरा साथ नै लिख नै जोधपुर में भाटी रामा ने मरायो।

मेवाड़ ऊपर पातसाह मुहम[3] कीवी। राव केहचो-'मोनु सीवांणो जागीर में देवो तो हूं अमल करूं।' पातस्याह रा मन में मारवाड़ रो दरद घणो। मेवाड़ में फौजां मेली सुं मगरा ऊपर अकबर शाहजादो चढियो फौज ले ने गयो—

---

**शबदार्थ—**

1. केहवत = कहा सुनि, कटु वार्तालाप। 2 दुसट बुध = दुष्ट बुद्धिवाला। 3. मुहम = अभियान।

**टिप्पणी-**

१- औरंगजेब बुधवार, सितम्बर 3,1679 ई. के दिन दिल्ली से रवाना होकर सितम्बर 25,1679 ई को अजमेर पहुंचा था। (मआसिर., पृ 180)।

**कवत**

कांठा ऊपर कटक, पेहल थो अकबर पड़ियो ।
जुध उदावत जोर, ट्रक कुंभाणी जुड़ियो ।।
वेग ली काढ अनड़ा वसी, खरे खेत लड़ीयो खरो ।
दाणवाँ[1] ढ़ाही ढहीयो तुरत, गज थाटां ऐहवो गरो ।।

अकबर पाछो ऊहट, जाय पड़ियो 'जैतारण' ।
कमधज कांठा मांह, सको गालो पेसारण ।।
सुण असपती सऊ, हलक राणां गर हले ।
समचे फौजां साथ, घाट सिर थाणां घलै ।।
दस सहस[2] देस देहवट करो, सहाय आय चढ़ीयो सिरे ।
सळकीयो छाड़ राणो सहर, काकरवान वन वन फिरै ।।२।।

औरंग घाट आय, भांज देहबारी भेळी ।[1]
गया मेवाड़ा गिरां, मेल खग अणी ने मेली ।।
मलेछ ऊदैपुर मांह, दोड़ हरधाम[3] डिगायौ[4] ।
कुतबा[5] मुला कुराण, पाठ तुरकांण पठायो ।।

आवियो काम 'उगरो' उठै, पडतां देवल परम रो ।[2]
अवसाण वड़ै 'धनराज' अडै, साझै कूपा सरम रो ।।३।।

---

**शब्दार्थ–**

1. दांणवां = दानव, मुसलमान । 2. दस सहस = उदयपुर के राणाओं का विरुद । 3 हरधाम = देवमन्दिर । 4. डिगायो = नष्ट किया । 5. कुतबा = खुतबा, विज्ञप्ति ।

**टिप्पणियां–**

१– देहबारी का यह युद्ध रविवार, जनवरी 4, 1680 ई. के दिन हुआ था (ओझा०, उदयपुर०, भाग 2, पृ.559)

२– उदयपुर का प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण का मंदिर तोड़ा गया था । (मंआसिर०, पृ. 186; इसरदास०, पृ. 78 ब)

सरकीनी सुरताण, मार मेवाड़ मेवासो ।
अयो फिर अजमेर, हींदवा मांडण हांसो ।।

## बात

इंदरसिंघ ने पातसाह बधनोर थाणै मेलियो । ऊठे गयो ने मारवाड़ देस में सांसण[1] किताहेक अटकाया[2] । तिंवरी रो पुरोहित नगराज दळपतोत तागो[3] कर मुवो । पातसाह अजमेर बेठो मारवाड़ सुं खेधो मांड़ियो[4] सीवाणै फौज मेल ने गढ़ ढ़हायो । पातसाह एक राह करणों मांडीयो । सोबां सारा ही समाचार मेलियो-

## तुक

सर कीध धरा चकथौ कहै, हमे कोण हिंदू रयो ।
जसराज हुतो गजराज रो धींग सोही ढायो ।।१।।

## बात

सोनग जी दुरगदास जी भेला होय म्हाराज अजीतसिंघ जी नै छांनै राख खीची मुकनदास जी खोळे घाल[5] धरती में दोड़ीया । विखो कीनो सीवांणा कानी तीन च्यार हजार आदमी भेला हुवा । सेनापती सोनगजी दुरगदासजी हुवा । जालोर जाय बिहारी फतेखां कने पेसकस लीवी । फतेखां पातस्याह ने समाचार मेलीयो । पातसाह मुकरब खां ने जालोर मेलीयो । राठोड़ सारा बिलाड़ा आय नै ईंदरसिंघ रो थाणायत मारीयो[1] म्हाराज जसवंतसिंघजी रा दरबार रा घोड़ा १०० उठे सु लीना । पछै जोधपुर रे पाखती आय नै धोंकळ कीनो । मारग रा गांव

---

**शब्दार्थ-**

1. सांसण = दान में दी गई कर मुक्त भूमि । 2. अटकाया = रोका । 3. तागो = सत्याग्रह की वह रीति जिसमें अपनी बात मनवाने के लिए अपने शरीर पर शस्त्रों से घाव किए जाते हैं। 4. खेधो मांडियो = ईर्ष्या रखने लगा । 5. खोळे घाल = गोद देकर ।

**टिप्पणी**

१– बिलाड़ा का यह युद्ध जेठ वदी 10,1736 वि. = गुरुवार, मई 13,1680 ई. के दिन हुआ था । (राठोड़ां रा ख्यात, ग्रन्थ 72, पृ. 106 क) ।

मारीया। बधनोर सुं ईंदरसिंघ जोधपुर आयो । खेतासर[1] में राठोड़ां सुं राड़ कीनी ।

पेहला ईंदरसिंघ जोधपुर आवतां करमसोत साहब खां ने केयो-'थे कुचमाद[1] करी थी सु कुचमाद हुई । हमें मेळ करो । दोय लाख रो पटो सोनगजी दुरगदास जो नु देवो ।' ईंदरसिंघ री मां ईंदरसिंघ ने केयो-' थे राठोडां ने बेराजी कर काहू कीयो[2] ।

## तुक

वांदी खेल जाणै विढण, खरो खेल होसी खगां ।
लासीया[3] नास आसी लुटै, भूँडा थे दीससो भगां ।।१।।

## बात

ईंदरसिंघ जी रे सारां रजपूतां ईंदरसिंघ जी री मां ने केयो-'थो' म्हां सारा में दोस कूँ काढो छो । थांहरां परधान साहब खां रे केहे थ्हांरे बेटे ओ काम कमायो छै[4] म्है तो हमेई मुंढा कने लड़ण ने उभां छां ।' ईंदरसिंघ साथे इतरो लोक थो- ३०० वंदूकां वाळा,६ मोटी तोप, ६० सुतरनाल, २० घुड़नाल, १०४ वाण रामचंगी, 400 असवार, 500 पाला ।

आगै खेतासर सारा राठोड़ म्हाराज रा चाकर भेळा हुवा था । ईंदरसिंघ ऊठे गयो, राड़ री तयारी हुई । राठोड़ां तरतोज[5] इण भांत कीयो-

## दूहा

उण वेलां बांटी अणी, हुवो दुरगो हरोळ ।
रखवाळो पूठी तणैं, सोनग हुवो चंदोल ।।

---

## शब्दार्थ

1. कुचमाद=धूर्त्तता । 2 काहू कियो=क्या किया । 3. लासीया=किराये के लोग, बेगारी । 4 कमायो छै=किया है । 5. तरतोज=व्यूह रचना । 6. अणी=सेना की पंक्ति ।

## टिप्पणी-

१- खेतासर - ओसियां से 6 मील दक्षिण पश्चिम में ।

'उदैभांण' जोधा तणों बांका अणी वणाय ।
पाणी ऊपर राखिया, डेरा सहूं संभाय ॥२॥

सोले साक विड़ौत्रै संवत, सतरै सार ।
जेठ छतीसे वाजियो, सुद तेरस सोमवार[१] ॥३॥

**बात**

घड़ी पांच राड़ हुई । ईंदरसिंघ री फौज भागी ।

**दूहा**

सो दस घोड़ा सांवठा,[1] अवर सवासै ऊंट ।
तोप तीन डेरा किता, लिया कमधजां लूट ॥१॥

आध धरा ले आंध लग, दोठा सांवत दोय ।
दुरगा सोनग देखतां, ना को हुवो न होय ॥२॥

**बात**

पछै ईंदरसिंघ तो बात कर जोधपुर आयो । राठोड़ सारा गांव चेराई गया पछै जोधपुर जावतां मारग में बालरवा रा डेरा सु रा. उदैसिंघ लखधिरोत चांपावत राव ईंदरसिंघ कनै था सु ने कूपावत प्रतापसिंघ सुंदरसेणोत फेर सोनग जी दुरगदास जी कने वात करण गया । ने केयो राव रै चाकर रेवो[2] पटा लेवो । तरे सारा राठोड़ां उदैसिंघ जी ने मोसा[3] बोलिया– स्याबास तोने, जसराज थोने इण दिन रे वासते अरधीया था । सो तूं आज अे विसटाळा[4] ल्यावे ।' ओर बातां घणी

---

**शब्दार्थ**

1. सांवठा = बड़ी संख्या में । 2. चाकर रवो = सेवा स्वीकार करो । 3. मोसा = व्यंग वचन । 4 अे विसटाळा = इस प्रकार के प्रस्ताव ।

**टिप्पणी–**

१– सोमवार, जेठ सुदी 13,1736 वि. = मई 31, 1680 ई. । (वही०, पृ. 104-105; राजरूपक; पृ. 61; जयपुर अख० (औरंगजेब) वर्ष 23 भाग 4, पृ. 118) ।

केही । तरैं उदैसिंघ जी तो सारा भायां राठोड़ां भेळा बैस रया । नैं प्रतापसिंघ पाछो राव कनै गयो । राठोड़ां अै वचन ऊदैसिंघ जी नु कैया था—

**कवत**

सुणो उदैसिंघ सुर इसे परधाने आवो ।
रहा राव रे राज,[1] दोख ज्यां पूरो दावो ।।
भूप जसै भुजराज, सिरां सारा सनमाने[2] ।
पाली थी परैं, खसण[3] सुरताणैं खानैं ।।
कनवजे राव कारण करै, आज तनै दिन आखियो ।
ऐह भांत उदेसिंघ एखटो, राठौड़ा मिल राखियो ।।१।।

**बात**

राव जोधपुर गयो, पातसाह ने समाचार मेल ने मदत मंगाई । आप गढ में पिछ बेठो । राठोड़ां साराई जोधपुर री पाखती जाय मुलक बिगाड़णो मांडीयो[4] । पातसाह ईंदरसिंघ री मदत मुकरबखां ने मेलिया । तरै राव बारै निकल नैं राठोड़ा रै वांसै[5] चढीयो । राठोड़ गोढ़वाड़ री तरफ गयो । राव पाछो आयो । मुकरबखां पातसाह री हजूर गयो । नै अरज कीनी-'राव में बाकी कांई नहीं[6], राठौड़ जोर छै[7] ।

राठोड़ गोढवाड़ री तरफ गया तरैं राणैं दीटो[8]–अे देस में आया आछा नहीं । इणा पाछैं पातसाही फौजां आवसी बिगाड करसी । अे पिण निदान धरती बिगाड़सी । निदान[9] पातसाही फोजां साहजादो ऐक वार राठोड़ां पाछै गोढ़वाड़ नाडूल आयो । राठोड़ां री मदत कंवर भींव मेवाड़ सु आयो । पातस्याही फौज में

---

**शब्दार्थ–**

1. राज=तुम (राठौड़ उदैसिंह के लिये सम्बोधन) 2. सनमाने=सम्मानित किया । 3. खसण=लड़ाई । 4. बिगाड़णो मांडियो=बरबाद (नष्ट) करने लगे । 5. बांसे=पीछे । 6. बाकी कांई नहीं =शेष कुछ भी नहीं है । 7. जोर छै=शक्तिशाली हैं । 8. दीठो=देखा, सोचा । 9. निदान=निश्चित रूप से ।

तेहबर खां हरोळ थो । तिण सुं राड़ हुई ।[1] कंवर भींव तो भागो, राठौड़ाँ सुं राड़ हुई । राड़ अवल कीवी[1] । तेहबर खाँ रा पग छूटा । पातसाह तेवरखां सु बेराजी हुवो । फेर मदत तेबर खां री मेली । राठोड़ां घाटा सजिया[2] । राणो रांजसिंघ मुवो, जैसींघ राणों टीकै बेठो पातस्याह रा मन में राठोड़ां उपर रीस धखण ने राणो राजसिंघ मुवो ।

## दूहा

चलियो सरग चितोड़पत, कलसिंघ पोत करन रो ।
वेद धरम आड जणांण विधां, वळे पालग खट वरणरो ।।
मासां कातीक मास में, दे विप्रां लखदान ।
सुद दसमी दस साहसे, राम केहचो राजान[2] ।।२।।

## बात

तरै मेवाड़ां में सोच घणो हुवो, हेकंप[3] हुवा । तरै दुरगदास जी जाय धीरप[4] वंधाई । जैसिंघ नै टीकै बेठाणियो[5] ।

## दूहा

जैसिंध तिलक राजान रै, थिर पाटोधर थापियो ।
दुरगेस आय दीवाण रै, राज डीगंतो राखियो ।।१।।

## बात

दीवांण[6] नैं टीको दे दुरगदास जी सोनगजी भेळा होय मेडतै डीडवाणें जाय

---

**शब्दार्थ–**

1 अवल कीवी = श्रेष्ठ शौर्य का प्रदर्शन किया । 2. घाटा सजिया = पहाड़ी मार्गों की मोर्चा बंदी की । 3. हेकंप = हड़कम्प । धीरप = धैर्य । 5. टीके बैंठाणियो = गद्दी पर बैठाया । 6. दीवांण = मेवाड़ के शासकों का विरुद ।

**टिप्पणियां–**

१– नाडोल का यह युद्ध सोमवार, सितम्बर 27,1680 ई. के दिन हुआ था । (वक़ाये रणथंभोर०, पृ. 574; राठोड़ां री ख्यात०, ग्रन्थ 72. प. 107 ख) ।
२– शुक्रवार, अक्तूबर 22,1680 ई. ।

पेसकसी लै पाछा फलोधी आया । पातसाही फोजां में बाड़मेर ही पातसाही फोज हामदखां नै ईंदरसिंघ वांसे हुवा । राठोड़ अठी उठी[1] मुलक मारता फिरीया । फलोधी सुं फेर पाछा गोडवाड़ आया । हामदखां ने ईंदरसिंघ पाछा फिर गया । राठोड़ गोडवाड री तरफ आया तरै अकबर राठौड़ां सु मेळ कियो[2] । कह्यो-म्हारे पातसाह सुं मन खांत[3] पड़ीयो, थे म्हां सूं भेळा हुवो[4] । तरे राठौड़ा केह्यो - 'थे तखत वेसो, तो म्हानु इतबार[5] आवै । तरै अकबर तखत बैठो-

## दूहा

माघ वद मास नाडूल में, जुग नवमी तिथ जाणियो ।
वाप था मुरड़ टीके बयठ, भड़ दिली कज ताणियो[1] ।।१।।

## बात

अकबर रा उमराव राठोड़ां सामां आया । राठोड़ अकबर रे हजूर आया, मुजरो कीयो । हाथी सिरपाव पाया । आ खबर अजमेर में पातसाह सुणी, सोच कियो ।[2] चित्तौड़ सूं स्याआलम[6] ने बुलावण रो हुकम कियो । अकबर ने राठोड़ भेळा होय, तेहबरखान नै हरोळ करने पातस्याह ऊपर अजमेर ने चलाया । नेड़ा आया, आमा सामा मोरचा लागा । पातस्याह रा डेरा स्हेर बारे हुवा था । रात रा राड़ री तयारी अकबर कीवी थी । परभाते राड़ थपी[7] । पातस्याह अकबर ने कहाड़ियो- 'थांरी तकसीर माफ कीवी सूं उरो आव । और ही पातसाही लोक थांरे साथे छै तिणा नै आवै तिणा नुं लेतो आवे ।' सुं तेबरखां पातस्याह कने परो गयो । तरै

---

### शबदार्थ-

1. अठी उठी = इधर उधर । 2. मेळ कियो = समझौता किया । 3 मन खांत = दुराव, विरोध । 4. भेळा हुवो = शामिल होवो । 5. इतवार = विश्वास 6. स्या आलम = शाहजादा मुहम्मद मुअज्जम, शाह आलम । 7. राड़ थपी = युद्ध करने का निर्णय किया ।

### टिप्पणियां-

१- सोमवार, जनवरी 3,1681 ई. । (राजरूपक, पृ. 92; जोधपुर ख्यात०भाग 2,पृ. 62) ।
२- वादशाह औरंगजेब को यह सूचना जनवरी 7,1681 ई. के दिन मिली थी । (जयपुर अख० (औरंगजेब) वर्ष 24, भाग 1, पृ. 244-45; मआसिर०, पृ. 197) ।

राठोड़ां दीठी अै तो मांहो माह एक दीसे छै । म्हां उपर चूक छै, परा निकळां[1] ।' दुरगदास जी सोनगजी दोय तुंगा करने जैतारण री तरफ उरा आया तरै अकबर सारो हसम खजानो ऊभो मेल ने भागो ।[१] सुं राठोड़ां सु आय सामल हुवो । ओलभा[2] दीया । थे ओ काहूं कीयो । तरै राठौड़ा केयो-'तेबरखां परो गयो । म्है जाणी थे बाप बेटो ऐक छो, तरै म्है उरा आया । चूक पड़ी[3] । हमै फेर साथ भेळो कर पातस्याह सुं राड़ करस्यां ।

तेवरखां पातस्याह कने गयो थो तिण नै पातस्याह आंब खास में मरायो[२] । नै साह आलम चितौड़ सुं आयो थो, तिण नु अकबर रे नै राठोड़ां रे पाछै विदा कियो । ईंदरसिंघ ने पिण साथे कर दियो । राठोड़ अकबर नै लेनै जालोर गया । पाछै साह आलम आयो । पेहला हरोळ आयो थो, तिण था राड़ हुई । पछै अकबर नै राठोड़ सांचोर गया । उठे साह आलम आयो । क्युहिक चावटो[4] पिण हुवो । आदमी काम आया । पछै राठोड़ सीवाणा री तरफ होय नै गोडवाड़ आया । साह आलम पिण उठे आयो, मेळ री बात हुई । मोहर हजार च्यार राठोड़ां नै खरची मेली सुं राठोड़ उरी लीवी, नै मेळ पिण न कीयो । सोनगजी तो सीख करनै[5] वसीयां सिरोही रै गांव विसळपुर थी तठे आया ने दुरगदासजी अकवर ने लै ने आगा[6] कोलीवाड़ा री तरफ गया । साह आलम पाछो कीयो सुं सिरोही रेयां । राठोड़ां तरफ तरफ सुं मुलक बिगाड़ियो । दुरगदासजी पालणपुर सु पेसकसी लीनी, नै थीराद सांचोर सुराचंदा मारीया । साह आलम री फोज महेवा रा गांव राठोड़ां ने जाय पोती, राड़ हुई । पछै राठोड़ अणकुलै होय नै आबू आया । पछै दुरगदासजी अकबर

---

**शबदार्थ –**

1. परा निकळां = यहां से निकल जावें । 2. ओलभा = उपालंभ । 3. चूक पड़ी = गलती हुई । 4 क्युहिक चावटो = थोड़ी बहुत झड़प । 5. सीख करने = विदा लेकर । 6. आगा = आगे की तरफ ।

**टिप्पणियां-**

१– जनवरी 17,1681 ई. के प्रात: अकबर अपने शिविर से भाग खड़ा हुआ था(मआसिर०, पृ,202) ।

२– मआसिर०, पृ 201 ।

नै दिखण सीवा¹ कनै चालिया । मारग में रांणा जी रै डूंगरपुर रै राव मिजमानी मेली । देस में सोनगजी रेया ।

साह आलम अजमेर पातसाह री हजूर गयो । ईंदरसिंघ नै पातसाह हजूर बुलायो । अतराजी[1] कीनी । साहबदीखां नै जोधपुर मेलियो । ईंदरसिंघ दिसां[2] फुरमायो-'कटक बारै काढ़ देवो ।' तरै साह आलम अरज कीवी – ओहो तो[3] इण हीज लायक छै । पिण पातसाह इण नुं बधायो[4], सु हमे इतरो कियां पातसाह रो आछो न लागसी । भलां जोधपुर खालसे राखो ने नागौर इण रै राखो । तरै पातसाह जोधपुर तो ईंदरसिंघ था तागीर[5] कियो ।²

साहबदीखां ने जोधपुर मेलियो थो, सो ओ बिलाड़ै गयो ने जोधपुर इनायत खाँ आयो । सोनगजी जोधपुर री तरफ आया । साहबदीखां सुं राड़ करी ।³ साहबदीखां बिलाड़ा सुं इनायतखां री मदत आयो थो । आमा सामा आदमी राड़ में घणा काम आया । आ राड़ सं १७३८ लागतं हुई ।

इनायतखां जोधपुर दाखल हुवो । साहबदीखां पातसाह री हजूर गयो । राठोड़ फलोधी रो तरफ गया, ठाम ठाम पेसकसी लीवी । पातसाह इनायतखां ने रीझ मेली[6], ने केह्यो—'तू मारवाड़ रो जाबतो राखै । म्हे दिखण जावां छां । दुरगदास अकबर ने लेने गयो छै । तिण रो जतन करणो छै ।'

---

**शब्दार्थ—**

1. अतराजी = नाराजगी । 2 दिसां = के लिये । 3. ओहो तो = यह तो । 4 बधायो = सम्मानित किया । 5. तागीर = जब्त । 6. रीझ मेली = प्रसन्न होकर पुरस्कार भेजा ।

**टिप्पणियां—**

१– यहां सिवा (शिवाजी) का उल्लेख गलत है । वस्तुतः इस समय उसका पुत्र संभाजी भोसले मराठा शासक था ।

२– 15 रबियुल अव्वल सन् 24 जुलूसी = मार्च 25, 1681 ई. के दिन इन्द्रसिंह से राजा की पदवी और जोधपुर जब्त किया गया था । इस समय इसके मनसब में 1500 सवार भी कम किये गये । ( जयपुर अख. (औरंगजेब) वर्ष 24 भाग 2, पृ. 54 )

३– यह लड़ाई 25 जमादियुल अव्वल सन् 24 = जून 4, 1681 ई. के दिन हुई थी । (जयपुर अख० (औरंगजेब) वर्ष 24, भाग 2, पृ 312, 321-222)

राठोड़ म्होकर्मसिंघ किलाणसिंघोत मेड़तिया जैमलोत पातसाही मनसबदार अकबर रै मांमले तेहवर कनै थो, सुं तेहबरखां ने मारीयो तरै म्होकर्मसिंघ अजमेर सुं निकळ ने अैवाकी थको[1] घरै जाय बैठो थो। तोसीणों जागीर में थो, तठै बेठो थो। सुं उण नै पातसाह चूक करने मारणो विचारियो थो। सु ऊ मुरड़ नै[2] राठोड़ां भेळो सोनगजी सामल हुवो। सोझत री तरफ हरनाथ ने कान गिरधरदासोत चांपावत साथ वे भेळो कर बगड़ी कनै सोझत रा हाकम सिरदारखां सुं राड़ करने काम आया।[1] म्होकर्मसिंघ राठोड़ां सुं भेळो हुवां रो ने बगड़ी राड़ हुवा रो समाचार पातस्याह सांभळ ने[3] इनायत खां नै मसलत करण सारू[4] जोधपुर था हजूर बुलायो। जितरै च्यार दिन भळावणियो[5] कासम खां ने जोधपुर मेलियो।

साहजादा साह आलम रा बेटा अजीम ने, ने असद खां वजीर ने अजमेर राखिया, ने आप पातसाह दिखण ने कूच कीयो आसोंज सुद ६[2]। नै फुरमायो- किणी वेंत[6] राठोड़ां सुं मेळ कर जो। जोधपुर अजीतसिंघ जी नु दे जो। 'चोडे[7] आ फुरमाई पिण मन में दोख दगो[8] घणो।

पछै असदखां सोनगजी सुं मेळ री बातां कराई। जोधपुर अजीतसिंघजी ने देणो कीयो। कागद मेलिया। राठोड़ सारा अजमेर नु चालिया सुं मेड़ते रे गांव 'पूनलोते'[3] आया। उठा सुं असद खां कने बात करण मेलिया। असदखां केयो- 'जोधपुर वगेर मुलक ने सात हजारी मनसब जसवंतसिंघजी रै दस्तूर अजीतसिंघजी नु देसां।' कोल वचन लिखने तयार किवी। अे समाचार आदमियां सोनगजी

---

**शब्दार्थ–**

1. औवाकी थको = विद्रोही होकर। 2. मुरड़ ने = बदल कर। 3. सांभळ ने = सुनकर। 4. मसलत करण सारू = सलाह करने के लिये। 5. भळावणियो = देखरेख के लिये। 6. किणी वेंन = किसी तरह से। 7. चोड़े = प्रत्यक्ष। 8. दोख दगो = ईर्ष्या द्वेष।

**टिप्पणियां–**

१– जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 68।

२– गुरुवार, सितम्बर 8,1681 ई। (मआसिर०, पृ. 212)।

३– पूनलोता = मेड़ता से 24 मील उत्तर पूर्व में।

नु लिखीया। राठोड़ स कोई राजी हुवा। इतरा में अजाणचक[1] सोनगजी काल कियो। तरै बात मोकूफ रही[2]। वात करण ने आदमी गया था सो उरा आया [3]। राठोड़ सारा पुनलोतां सुं पाछा परा गया।

कवत

कागद मोहर करै, कवल अर पंजा कीना।
ततकाल कर तयार, हाथ विसटाळू[4] दीना॥
सुद दूजो आसोज, वळे सातम सनवारै।
सुतन वीठल गयो सरग, सुणै इम वाको सारै।[1]।१॥

बात

आ खबर असदखां पातसाह ने दिखण अरज लिख मेली। तरै पातसाह राजी हुवो। पाछो हुकम लिखियो—'अबे मेळ करो मती। सोनग धोंकल रो मूळ[5] थो, सो मुवो। ने दुरगदास अठे दिखण में छै। उठे थे जोधपुर तो इनायत खां ने जागीर में देजो, कासम खां ने हजूर मेलजो।

आहा बात राठोड़ां सुणी तरै सोनगजी री जायगा सोनगजी रो बड़ो भाई अजबसिंघजी वीठलदासोत ने सेनापति थापियो[6]। ने सोझत सुं असद खां सिरदारखां ने उरो बुलायो। ने सिरदार खां री जायगा फोजदार सीदी नु मेलियो। राठोड़ां भेळा होय ने सेनापत अजबसिंघ ने थापने कूच कीयो, मुलक में दोड़िया। मकराणा

---

शब्दार्थ-

1. अजाणचक=अचानक। 2 मोकूफ रही=स्थगित हो गई। 3. उरा आया=चले आये। 4. विसटाळू=मध्यस्थता करने वाले दूत। 5. धोंकळ रो मूळ=झगड़े की जड़। 6. थापियो=नियुक्त किया।

टिप्पणी-

१— शनिवार द्वि. आसोज सुदी 7,1738 वि.=अक्तूबर 8,1681 ई.। (जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 68; राजरूपक पृ. 201)।

सु पेसकस लीवी । ने दीवाळी रे दिन मेड़तो मारीयो[1] । सुं असद खां रो बेटो एतकाद खां राठौड़ां रे पाछै हुवो सु राठोड़ मेड़तो मार ने डीगराणा कने सं. १७३८ रा काती सुद १[1] एतकाद खां सुं राड़ कीवी सु अजबसिंघ जी काम आया । पछै एतकाद खां तो अजमेर गयो । इनायत खां जोधपुर रेयो । कासम खां पातसाह री हुजूर दिखण गयो ।

राठोड़ सेनापति उदैसिंघ लखधीरोत ने थापियो । पुर मांडल मारी, ने कासम खां दिखण[2] जावतो थो तिण सुं राड़ कीवी निसाण नगारा खोस लियो[3]। पछै अजमेर जोधपुर री फोजां राठोड़ां रे पाछ हुई थी सुं फिर आई । राठौड़ सोझत री तरफ पहाड़ां परा गया । अड़तीसो[4] संवत पूरो हुवो ।

सं. १७३९ लागो । उदैसिंघ साथ ले ने गुजरात री तरफ गयो । भाटी रामसिंघ, रा. जगराम पातसाही मनसब छोड़ आया । रा. बीजो सबळसिंघोत ने यां सिरदारां जुदा जुदा[5] तुंगा कर ने धरती में खेटा किया[6] । रा. जगाराम उदावत आगै राणां रो चाकर थो, पछै पातसाही चाकर रयो । सुं जैतारण में पातसाही थांणायत नुरमअली नु सावण वद १४ मारीयो ।[2]

## सवइयो

पीठ[7] नवंध जोधाण को चाकर,
उठे खुमाण के वास वसायो ।
जोखमिये छत्रपती 'जसाह' के
साह खुमाणसी कोपर धायो ।।

---

**शब्दार्थ–**

1. मेड़तो मारीयो = मेड़ता लूटा । 2. दिखण = दक्षिण । 3. खोस लियो = छीन लिया । 4. अड़तीसो = सं. 1738 वि० । 5. जुदा जुदा = अलग अलग । 6 खेटा किया = उपद्रव मचाया । 7. पीठ = वंशानुगत ।

**टिप्पणियां–**

१– मंगलवार, नवम्बर 1, 1681 ई. । यह युद्ध डीगराणा के पास इंदावड़ (मेड़ता से 8 मील दक्षिण पश्चिम में) नामक ग्राम में हुआ था (जोधपुर ख्यात० भाग 2, पृ. 68)।

२– रविवार, जुलाई 23,1682 ई. । युद्ध में नुरमअली नहीं मारा गया था ।

भई अनीत कुपीत दीवाण में,
जोर 'उदावत' खुर रखायो।
मोसर[1] पायके मारु महाबली,
यों 'जगराम' मुरड़ के आयो ।।१।।

## बात

संवत गुणताले जेतारण मारी एक तुंगो वीजै चांपावत वगेरे सोझत, पींपाड़, बिलाड़ारी सींव में दुंद मचायो[2]। उतराद तरफ राम भाटी दुंद मचायो। जोधपुर रा सोवादारां सुं कजीया कीना। ऐकण तरफ जोधां धूम घाली[3]। अे समाचार इनायत खां सुण ने नुरमअली ने चढायो। सो भादराजण मारी। कजियो हुवो और उदैसिंघजी, मोकमसिंघजी, राजसिंघजी ने दुरगदास जी रो भाई खींवकरण जी साथ ले चढ़ीया था। सुं गांव 'खीराळू' मार[4] पाछा आवे था[5], सुं गांव रांणपुर में सैद मेहमूद फोज लेने पांछा सूँ आण व्हीतो[6] भादरवा वद ९ राड़ हुई।[1] इतरो साथ काम आयो–भं. भगवानदास विठलदास रो बाप ने भं. रामचंदर रुघनाथ रो बाप, दफतरी कही जे थो, सुं काम आया। और परषोतम सिन्यासी ने सिवदास पंचोली ने सुंदर प्रोहित राहिण वासी, ने जीवराज भंडारी पीथा रो इतरा काम आया सिरदारां सिवाय।

पछै गुजरात सुं उदैसिंघजी स को साथ विसनदास बाला रे घरे माकलसर[7] आय भेळा हुवा। नुरमअली इणां उपर आयो। भादवा सुद १३[2] राड़ हुई। पछै स को साथ भाखरां आप आप रै ठीकांणै गया। उदैसिंघजी गांव 'सारण' गया। सीदी

---

### शब्दार्थ-

1. मोसर = अवसर। 2 दुंद मचायो = उपद्रव खड़ा किया। 3. धूम घाली = झगड़ा करने लगे। 4. खीराळू मार = खैरालू नामक ग्राम को लूट कर। 5. आवे था = आ रहे थे। 6. आण व्हीतो = आ पहुंचा। 7. माकलसर = मोकलसर।

### टिप्पणियां-

१– गुरुवार अगस्त 17, 1682 ई.। (जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ 70; राजरूपक०, पृ. 218-20)।

२– सोमवार, सितम्बर 4,1682 ई.। (मुंदीयाड़० पृ. 179)।

कनै पेसकसी लीवी । पछै रा. जगराम जी जैतारण कने पेसकसी लीवी । गांव बोराड री गढ़ी संभाई । मोहकमसिंघजी आण भेळा हुवा । मेर नरो मुढां आगे हुवो[1] नुरमअली आय राड़ कीवी मगसर वद १२[१] ।

संवत १६४० लागो । मेड़तो अजमेर ने मगरा री तरफ उदावत जगराम जी ने म्होकमसिंघ जी मेड़तीये धूम घाली । असद खां रो बेटो एतकाद खां इण पाछै दोड़ियो, राड़ां हुई । जोधपुर री तरफ बेधो कजीयो सिरदार करतां, इनायतखां फोजां मेलतो, निदांन साहजादा अजीम ने, ने असदखां ने पातसाह हजूर बुलाया । अे दिखण गया । इनायत खां रेयो । राठोड़ कितरायेक आखता[2] होय ने पातसाही सोवायत सुं मिलिया । जागीरां लिवी । म्होकमसिंघ ने अणदसिंघ मेड़तिये सिकंदर बैग हसते[3] बात कीवी नै उदैभाण मुकनदासोत जोधे पिण बात कीवी । लाख रो पटो लिखायो । और सारा सिरदार साख साख रा दरबार रे कांम धूम मचावता फिरीया ।

सांवतसिंघ जोगीदासोत, खींवकरण आसकरणोत, तेजकरण दुरगदासोत ने राम भाटी वगेरे साथ फलोदी री तरफ कजीया किया । गांव लूटीया । इनायतखां री फौज जोधपुर सुं चढ़बो करी[4] । गांव गांव रांड़ करी । पछै राम भाटी वगैरे अजमेर री तरफ आया । इनायत खां जोधपुर था नुरमअली नुं पाछै चढायो, सुं फिर आयो । मेड़तियो म्होकमसिंघ तुरकां रे हरोळ थो, तिणां ने मेड़तै जाबता सारू राखिया । राम भाटी ने, ने सांवतसिंघ चांपावत मेळा हुवा । बंवाल वगेरे गांव मारीया । पछै मेड़ते जैतारण सोझत री तरफ आया । फोजां रो भार सिरदारी[5] सांवतसिंघजी झाली[6] । पछै जगराम जी सुं भेळा हुवा । गांव मारग मारणां मांडीया । मैड़तिये शादूल भोलाई[7] करणी मांडी थी, उण नै वरजियो[8] । उण न

---

**शब्दार्थ–**

1 आगे हुवो = मार्ग दर्शक बना । 2. आखता = अधीर । 3. हसते = माध्यम से । 4. चढ़बो करी = चढती रही । 5. भार सिरदारी = नेतृत्व का उत्तरदायित्व । 6. झाली = ग्रहण की । 7. भोलाई = नासमझी, नादानी । 8. वरजियो = मना किया ।

**टिप्पणी–**

१-- शुक्रवार, दिसम्बर 1,1682 ई. । (राजरूपक०, पृ. 227-28) ।

मानियां. तरै सारो साथ सादूळ उपरै आया । राड़ हुई । सादूळ मुवो[1] । पछै जोधपुर री तरफ दुंद ऊठीयो । इनायत खां री फोजां आई सु फिर गई ।

पछै सांवतसिंघ ने भाटी रामसिंघ रा. जगराम जी सोझत रा थाणायत सेरीणी वेहलोल[2] सुं राड़ कीवी । सांवतसिंघजी चांपावत ने भाटी रामसिंघ जी सं. १६४० रा वैसाख वद २ काम आया[1] । रामसिंघ कांम आयो जांणा ने रा.प्रताप-सिंघ प्रिथीसिंघोत करमसोत इंणां रा गांवा उपर वसियां माथे दोड़ियो[3] वैसाख वद १२ ।[2] तठा पछै हरनाथ भींवोत करमसोत साथ करने दोड़ियो । गांव उसतरां अनो-पसिंघ कूंपावत तुरकां री तरफ सुं थाणे थो, तिण सुं राड़ कीवी । इतरा में पातसाह जी रा लिखिया दिखण सुं इनायत खां ने आया, जागीर वदली । तरै इनायत खां सीवांणो तो पुरदल खां मेवाती ने दियो ने सुजाणसिंघजी ने उरा बुलाया[4] । सोझत मेलिया जेठ में । आगै सोझत बलोल खां थो सु इनायत खां सुं रीसाय ने गुजरात परो गयो ।

मेड़तियो म्होकमसिंघ किल्याणदासोत ने तुरकां चाकर राखियो थो, मेड़तै जाबता सारु राखियो थो । सु इनायत खां जोधपुर था म्हैमदअली ने मेलियो थो सो मेड़ते वेझपा ऊपर आय डेरा किया । म्होकमसिंघ भेलो रेहचो । पछै इनायतखां रा केहचा सु म्हैमदअली चूक कर असाढ वद ७[3] म्होकमसिंघ ने मारीयो । पातसा-हजी ने आ खबर इनायत खां लिखी । म्हैमदअली रे उवासतै इजाफो मंगायो । पातसाह पाछो लिखियो-'ईसा फीतूर[5] कर किणी ने मारो मती । बेराजी कर फिसाद पैदास करो मती । स कोई ने दिलासा देवो लगाय लेवो धरती रो भेद लेवो ।'

सं ९७४१ लागो । भाटी रिणछोड़दास रामसिंघ हरदासोत साथ भेलो करनै दोड़ियो । तुरकां रो पिछम दिस रो थांणो मारीयो । साह मेमद सीधी नु मारीयो । इनायत खां फोज मेली थी, पाछी उरी आई । भाटी मेसदास उदं भाणोत दिखण सुं

---

**शब्दार्थ-**

1. मुवो = मारा गया । 2. सेरीणी वेहलोल = सैय्यद वहलोल खां । 3. वसियां मांथे दोड़ियो = परिजनों पर धावा किया । 4. उरा बुलाया = वापस बुलवा लिया । 5. फितूर = उपद्रव ।

**टिप्पणियां–**

१– शनिवार, मार्च 22, 1684 ई. ।

२– मंगलवार, अप्रेल 1, 1684 ई. ।

३– मंगलवार, मई 27, 1684, ई. । लेकिन राजरूपक (पृ. 256) के अनुसार यह घटना मंगलवार जून 11, 1684 ई. की है।

दुरगदास जी कनै सीख कर घरां नु आवतो थो, सुं सोभत जैतारण बिचै राठोड़ सुजाणसिंघ रा साथ सुं धको हुवो,[1], तठै काम आयो सावण सुद ६ ।[१]

सगरामसिंघ जुझारसिंघोत चांपावत पातस्याही पटो छोड़ विखो कियो, और साथ भेळो होय तापू आया । जोधपुर था इनायत खां चढीयो थो सुं पाछा फिर आयो । पछै साथ सिवाणै तरफ गयो । फेर जोधपुर री तरफ आया, गांव मारीया। पछै साथ केई वार घर वसीयां संभालण[2] जावता, फेर केइ वार भेळा होय कजीया करता मुलक बिगाड़ता । कदेक[3] घरे जावता । तरै इनायत खां ने नचीताई[4] हुती। फेर राठोड़ बेहधा करता । तरै इनायत खां ने सोच पड़तो[5] । इनायत खां पिण वसियां उपर फौज मेलतो, वसियां रो विगाड़ करतो । तरै इनायत खां नुरमअली ने भादराजण उदैभाण जोधा उपर विदा कियो । माह सुद ७ राड़ हुई ।[२] इनायत खां नुरमअली ने इण भांत दूहो केयो-

उदो मिळियां की हुवो, छतो पटो फिर छाड़ ।
तिण ने त्रास दिखाळजे[6], अवर न भाजै आड़[7] ।।१।।

**बात**

पछै राड़ में नुरमअली भागो । नाळ १ उदैभाण खोस लिवी । सुं नुरम अली भाग नै डेरां आयो । इनायत खां ने समाचार मेलियो । तरै इनायत खां म्है-मद अली नु मदत मेलियो । तिण सु पिण गरज न सझी । तरै इनायत खां पुरदळ खां नै मेलियो । सु हमला तो घणां ही कीनां, निदांन बात करने जोधां ने कांढीया। भादराजण में तुरकां रो अमल हुवो । नुरमअली जोधपुर आयो । उदै भाण फेर घाटे आय ने घाटा में थांणो घालियो ने पुरदळ खां सीवांणै गयो ।

हमैं सुजाणसिंघ जी री हकीगत-

---

**शब्दार्थ**

1. धको हुवो = सामना(झगड़ा)हुवा । 2. संभालण = देखने के लिये । 3. कदेक = कभी कभी । 4. नचीताई = निश्चिन्तता । 5. सोच पड़तो = घबराहट होती । 6. त्रास दिखाळजै = दण्डित करना । 7. आड़ = मर्यादा ।

**टिप्पणियां–**

१– बुधवार, अगस्त 6, 1684 ई. । इस वर्ष दो श्रावण थे । यहां दूसरे श्रावण की तिथि दी गई है ।

२– शनिवार, जनवरी 31,1685 ई. ।
(जोधपुर ख्यात., भाग 2, पृ. 62-63; राजरूपक, पृ. 272)

### कवत

सूजै केहर सुतन[१], पहल 'जालंधर'[1] पायो ।
पाई सोझत 'पछै, उठा 'समीयाणे'[2] आयो ।।
दूजी वार दलेल, सबळ जागीर वताई ।
सोझत कोट सुजाण, दिलासा फेर दिवाई ।।
आवियो कमध पैहला अठै, 'सोझत' पालण परजरो ।
दस मास पछै 'समीयाण' दिस, जद गो[3] पुरदळ ज़रजरो ।।१।।

### बात

नुरमअली जोधपुर आयो । पुरदळ खां ने संवत् चालीसा बिचै समियाणो हुवो, सु संवत इगतालीसा रा फागण[२] में अमल हुवो । रा. उरजनसिंघ प्रतापसिंघोत जेतावत नागोर था कुचेरा रो पेटो छोड़ ने दोड़ीयो, सु मेड़ता रो गांव राहण मारीयो । पछै जैतारण री तरफ आवियो । दरबार रो साथ भेळो हुवो—तेजकरण दुरगदासोत, भगवानदास जोगीदासोत तेजसिंघ आइदानोत, मुकनदास सुजाणसिंघोत । अे सारा भेळा हुय ने जोधपुर दुंध मचायो । फेर मेड़ते आया; गगरांणा, गंठीया कनै द्रिब[4] लुटीयो । पछै सारा वसियां आया । तोड़ा दिसी[5] फीतूर सुण इनायत खां दोनु बेटा नुरमअली म्हैमदअली ने विदा किया । सु मारण में जावतां सोझत रो गांव महेव मारीयो । मांहे भाटी काम आया पकड़ीया गया, चेत वद १४, [3]ओ काम हुवो । दोय लुगायां पकड़ी गई । नुरमअली तोडा सुं पूठो आयो[6] । अजमेर रेह्यो, म्हैमदअली मेड़तै रेयो ।

दरबार रो साथ स को सिरदार भेळा होय गांव कांणाणे राड़ कर मेवाती

---

**शब्दार्थ-**

1 जालंधर=जालोर । 2. समीयाणो=सीवांणा । 3. जद गो=जब गया । 4. द्रिब=द्रव्य । 5. तोड़ा दिसी=तोडा की तरफ । 6. पूठो आयो=वापस आया ।

**टिप्पणियां—**

१— सूजै केहर सुतन=राठोड़ सुजाणसिंह केसरीसिंहोत जोधा,जुनिया का ठाकुर ने महाराजा जसवंतसिह के मरणोपरान्त शाही सेवा स्वीकार की ।
२— फरवरी 10 से मार्च 10, 1685 ई. ।
३— सोमवार, मार्च 23, 1685 ई. ।

पुरदळ खां ने मारीयो । बड़ी राड़[1] हुई, संवत १६४१ रा चैत सुद १ बुधवार[1] ओ काम हुवो । आगै तोडा री तरफ जावतां नुरमअली महेव मारी थी । भाटी सबळसिंघ ने केद कर ले गयो थो । सुं सबळसिंघ पेहली तो दोय लुगायां केद में साथे थी, तिणा ने मार ने पछै आप बेड़ियां पैहरियां लोह कियो[2] । सुं पांच सात तुरक मारीया । नुरमअली तांई जाय प्होतो । नुरमअली रे लोह लगायो । पछै भाटी ने तुरकां मार लीनो । पछै सगरामसिंघजी, उदैसिंघजी, जगरामजी, उरजनसिंघ जी मेड़तै आय अजमेर री तरफ दुंद मचायो, धरती लूटी । उतराद[3] री तरफ रिणछोड़दास ने सुजांणसिंघ धरती बिगाड़ी । खींवकरण सुजाण पिछम[4] धरती विगाड़ी, नै दिखण गुजरात री तरफ उदैसिंघजी भगवानदासजी मुकनदासजी तेजसिंघ जी धरती बिगाड़ी । इनायत खां ने घणी[5] चिंता हुई ।

सं. १७४२ लागो । सुं नुरमअली ने तो मांहोमाह खानाजंगी[6] हुई सुं नुरमअली मारीयो गयो । खींवकरण आसकरणोत साथ भेळो कर ने सांचोर मारी । उदैसिघजी जुदोई[7] साथ भेळो कर ने धरती बिगाड़ी । इणां पाछै म्हैमदअली फिरीयो । राठोड़ां पाली री तरफ आय ने पेसकस लिवी । जगरामजी भेळा हुवा । जेतारण री तरफ धोंकळ मचायो । मेड़ते अजमेर, सोझत सारी तरफ धोंकल कियो । इसड़ा[8] अनत काम किया । आगे एक तुंगो करने सगरामसिंघजी, भगवानदासजी, मुकनदासजी, तेजसिंघजी भाटी रिणछोड़दासजी पेहला तो ऊगवणी[9] तरफ दौड़िया, फेर दिखण-उत्तर दिस आय जायगा जायगा धोंकळ मचायो । पछम री तरफ फळोदी बीकुंकोर तांई[10] दोड़ीया । तुरकां री तरफ खांडै खुस्याल[2] पाछै रह्यो । गोडवाड़ रे गांवां बिगाड़ किया । गांव बूसी ने सींधलावटी 'विगाड़ कियो । भादराजण राड़ कीवी । पछै खांडो पांछो घिरीयो ।

---

**शब्दार्थ-**

1. बड़ी राड़ = भयंकर लड़ाई । 2. लोह कियो = प्रहार किया । 3. उतराद = उत्तर दिशा । 4. पिछम = पश्चिम दिशा । 5. घणी = अधिक । 6. खानाजंगी = गृह युद्ध । 7. जुदोई = पृथक् रूप से । 8. इसड़ा = इस प्रकार के । 9. उगवणी = पूर्व की तरफ । 10. तांई = तक ।

**टिप्पणियां-**

१- मार्च 25, 1685 ई. । राजरूपकं०, पृ. 279-81 मआसिर०, पृ. 256 । लेकिन जोधपुर ख्यात० (भाग 2, पृ. 73) पर चैत्र सुदी 2, = गुरुवार मार्च 26 लिखा है ।

२- खुस्याल कौन था, स्पष्ट नहीं है ।

### दूहा

मिरजियो फिर पाछो मुड़ै, अधिक खोयो आपरो।
जोधपुर जाय रहियो जदै, खांडो बांडो बापरो ।।१।।

बेटा पावै बाप रै, उण दिन लागो आय।
मिरजो वाको मांडने, सूधो खान सुणाय ।।२।।

पछै म्हैमद अली मेड़ते रयो !

### दूहो

मुह आगळ[1] मिरजो हुवो, पूठ खुस्याल पठांण।
खांडो खांडा खायकी, महादूत जमरांण ।।१।।

तद मिरजो तातै हुवो, घोड़े पाखर घाल[2]।
चापर[3] करनै चालियो, खांडे साथ खुस्याल ।।२।।

### बात

मेड़तै जावतां म्हैमदअली तो आगे थो, ने पढांण खुस्याल पाछै थो । सुं मारग में रा. हरनाथ चंदरभाणोत जोधो जासूसी लगाय दोड़ियो । खुस्याल ने मारीयो। सारा सिरदार भेळा होय ने सीवाणै ने जालोर उपर दोड़िया । जालोर मारी । जालोर विहारी फतैखां पाळनपुर वाळां रे थी । फतैखां नु इनायत हुवां मास एक दोय हुवा था, सुं वैसाख मद १४[1] राठौड़ जालोर मारी । ने पाछा सीवाणै आय जालोर री लूट रो धन माल बांटीयो । उण समै जालोर में फतेखां री तरफ सुं मु. जैराज थो । सुं फतेखां ने समाचार देने फतेखां ने बुलायो । सुं राठोड़ां रो पाछो करणो[4] विचारियो थो । पिण राठोड़ां रो साथ भारी सुण फतैखां बैठ रहियो । सिरदार सिवाणां सु आय आप आपरी वसीयां गया । फेर सिवाणै भेळा होण री सेंठ ठैहराय गया[5] ।

---

**शब्दार्थ—**

1. आगळ = आगे । 2. पाखर घाल = घोड़े की जीन कस कर । 3. चापर = शीघ्रता से । 4. पाछो करणो = पीछा करना । 5. सेंठ ठैहराय गया = निश्चित कर गये थे ।

**टिप्पणी—**

१— गुरुवार, मई 7, 1685 ई. ।

मु. उगरो किसनदासोत गाड़ीयां ले जालोर जाय थो । सुं जालोर कनै फतेखां गाड़ीयां ऊपर दोड़ियो । उगरो मांरणस वाढ ने काम आयो । फतेखां गाड़ीयां लूट जालोर गयो । उदैसिंघजी, जगरामजी अजमेर री तरफ था सु पाछा आया। मगरा री तरफ म्हैमदअली पाछै दोड़ियो । राठौड़ मगरै किरणी तरह आघा उतर गया । म्हैमदअली पाछो मेड़तै उरो आयो । उदैसिंघजी खेरवै आया । तेजसिंघजी मुकनदासजी, भगवानदास सु मिळिया । देस में फितूर कियो। देस में तुरकां रा थांरणा जायगा जायगा था तिरणां सुं कजिया किया । बादर खेतो खवास जोधपुर री तरफ दोड़तो सुं इनायत खां री फौज बादर खेता नु मारीयो ।

सं. १७४२ लागो । पातसाह दिखरण में थो सुं उठा रा पातस्याह सिकंदर[1] कनै बीजापुर उरो लियो । सिंकदर ने कैद कियो और पिरण किला लेवे थो[1], इतरा में मारवाड़ रा सोबायत रो लिखियो इरण भात पोतो[2]- 'दुरगदास ने देस में उठा सुं आवरण देजो मती' । तरै पातस्याह जी उठे दुरगदास जी नु पकड़ंरण रो तलास कियो[3] । जायगा जायगा लिखिया मेलिया । दुरगदासजी देस में आवरण ने तैयार हुवा । पातस्याह जी रो मतो[4] दुरगदास जी ने अकबर ने पकड़ लेरण रो । तरै अकबर दुरगदास जी बात कीवी-हमे तो अठा सुं दिल उठीयो, देस में जाइजे । परदेस में घरणा दिन हुवा । खेधा[5] में कितरीक उमर बीती । हमैं महाराज री खबर करसां । किरण तरै[6] सु छै नै मारवाड़ रा उमराव राठोड़ दोड़े छै, तिरणां ने देखां। रखे, म्हों बिनां महाराज ने बारै काढै, म्है छाना[7] राखिया छै । बेंत हुसी[8] तरै बारे पधरावसां । इसी न होय मांहरै हाथा उतरै[9] ।

सेतीसा रा सिंघ, जरद[10] मरदा अंग जड़िया ।
इधक पराकम आरण, खिडंत सूं आघा खड़िया ।।

---

**शबदार्थ—**

1. लेवे थो=अधिकार कर रहा था । 2. पोतो=पहुँचा । 3 तलास कियो=खोजबीन की । 4. मतो=विचार । 5. खेधा=लड़ाई झगड़ा । 6. किरण तरै=किस प्रकार । 7. छाना=गुप्त । 8. बेंत हुसी=अवसर आने पर । 9. हाथां उतरे=प्रभाव से निकल जाय । 10. जरद=कवच ।

**टिप्पणी—**

१— सिकंदर=बीजापुर का शासक सिकन्दर ।

अड़तीसै वरस लागै उठे, दिखण 'सिभू' रा देस में ।
पूछियो कुसल बुधबल पकड़, वंकम सादे वेस में ।।१।।

कोकंन गिर रहे कमध, धुरा चोमासो ढाळे ।
सजड़ो अकबर साह, सहत सुर समत सींधाळै ।।
नित भोजन नव नवां, मिलें 'सिभू[1] मैहमानी ।
अतदे आदर भाय, हुकमी यो हुवो ख्यानी ।।
आवियो वेहत[2] अजमेर सों. उपड़ै पूठै असपती ।
घूंकळ लाख करवा धरा, छळ वळ मंडिया छत्रपती ।।२।।

पांच वरस लग वात, प्रथम दुरगे करी वैणा ।
मिळिया फिर रचमचै, सिभू सुभचिंतक सैणा ।।
अकवर था अरुबरु[3], निजर सोगात निहारी ।
वैठ अदब सुं वगल, संपत की बातां सारी ।।
ऊठीयो धार एको अधक, अड़ी खंभ[4] गढ आपरै ।
आपड़ीयो ठाम अकवर उठै, छांवणियां कर छापरै ।।३।।

ठावा कीया ठीक, हेर असपत हंकारे ।
ऊलट आया असुर, उपरां पडण[5] आपारे ।।
खेध करै खलवट, विगर दखलाद वधारे ।
दुरगै साझै दळा, ओझ भुज भाजै भारै ।
धरै साज सा राख सिभू हुतां, झूझाउ खग झालियो ।
घणां दीह[6] पाछै घरनु कमध, चित उदास कर चालियो ।।४।।

चकतो रोपे चलण, कट पूंदीख कळियो ।
पोळ उठी खट वरस वसु दिस[7] दुरगो वळियो ।।
निकट भीवड़ा नदी, पेहल आवियो वहंती ।
हजरत हलां करी, पूठ दब[8] फोजां पोहती ।।
सांफळो हुवो[9] सैंधां !मुहाई, ईसध हूत ओता करो ।
तिण सहैत तुरकिया ताड़िया[10], इळ राह चक आकरो ।।५।।

---

**शब्दार्थ–**

1. सिभू=सम्भाजी भोंसले । 2. वेहत=चलकर । 3.अरुबरु=आमने सामने । 4. अड़ी खंभ=उद्यत होकर । 5. उपरां पडण=आक्रमण करने के लिये । 6. दीह=दिन । 7. वसु दिस=मारवाड़ की ओर । 8. दब=दबिश । 9. सांफळो हुवो=युद्ध हुआ । 10. ताड़िया=भगायर ।

मेछघटा[1] मलवटै, दीध जैंत रा डंका ।
का नव सैहस नहटै, बड़ा सांवत रणबंका ।।
ऊदा त्रिहूं[2] अडोल[3], रूपसी रावत ततपर ।
उदैभाण अवसाण, साज हरराम सरम्भर ।।
लंकाळ[4] गळ उदै लखा, वध चांपावत वजबजै ।
तैतमाल त्रिहूं गळ जोड़ियां, ढाहग का हुय वाधजै ।।६।।

गाढो गोपीनाथ वळे, विजमाळ वरदाई ।
खींवो बांहां खुस वधै पुर लाज वधाई ।।
चौंडावत (चोरंग) चोट, झाड़ खग 'कूपै' डीको ।
भारथ भारथसिंघ, वखाणों हाथां बीको ।।
बांकड़ो ब्रिम जोसी बदे, रिपुदळ लारे रोसिया ।
सोभता किया सिरमालियां देसी और विदेसियां ।।७।।

सीवजी धूपट सार, घाट विद्याधर थांमण ।
पोहकरणां दोय परा, वळै बांणा वण बामण ।।
पोस चोथ वद पख, मिले सह सुरज मंडल ।
तोल र वाई तेगतन, किया डूंगर तंडल ।।[1]

बात

और आसामिया[5] घणी काम आई ।

---

शब्दार्थ–

1 मेछघटा = मुगल सेना । 2. त्रिहूं = तीनों । 3. अडोल = अडिग । 4. लंकाळ = सिंह । 5. आसामिया = प्रमुख व्यक्ति ।

टिप्पणी-

१– बुधवार, नवम्बर 24,1686 ई. ।
लेकिन जोधपुर ख्यात॰ (भाग 2, पृ 75) के अनुसार यह युद्ध नींवगांव (चाकन से 5 मील उत्तर-पूर्व में) में पौष बुदी 5, 1743 वि. = गुरुवार, दिसम्बर 9,1686 ई. दिन हुआ था । इसी तरह डा. रघुबीरसिंह के अनुसार यह युद्ध जून 1686 ई. में हुआ । (दुर्गादास राठोड़, पृ. 93)

**कवत**

हीयै माने हार, हुकम सु इंदरसिंघ हटियो ।
मुगल असांफत मुवो, तोल[1] दिली रो घटियो[2]।।
काढ़िया द्रांग हेटे किलम, दियो दुरगा बादसा ।
पुंडीर धीर प्रथीराज रे[3], उण जिम अं भड़ आदसा ।।१।।

**बात**

पछै दुरगदास जी अकबर जी मसलत कीनीं । अकबर जी जिहाज वेस विलायत गया ।[1] नै दुरगदास जी दिखण निसरीया ।

ने देस में राठोड़ां धोंकल किया । उदैसिंघ जी राजसिंघ जी जगराम जी तेजासिंघ जी उदैभाण जी खींवकरण जी, मुकनदास जी, किसनसिंघ जी विजोजी, सूजोजी रूपसिंघ जी, नाहरखान जी सारो ही साथ धाटी धूपट उगोणा[4] धसिया । हाड़ा दुरजणसिंघ नु साथे ले देस में आया । इनायत खां राठोड़ां पाछै आयो थो । सु पाछो जोधपुर गयो । सारां राठोड़ मांकळसर रेह्या । श्री म्हाराज नु बारे पध-रावणां[5] ठहराया । चांपावत उदैसिंघ जी नु मेलिया ।

**तुक**

आठ वरस अगजीत, राजा जी छाने रहिया ।
छतो करीजे छत्रपती, नर पूर होय नचीत[6] ।
कमधां ठीक कर ठींमर[7] भड़ै थपावियो ।
हाडो पिण राजी हुवो दुरजणसिंघ सिरदार ।
धरा कमधज सधार, मीकळसर बेठा मिले ।
उदैसिंघ सझियो उठां राजा लावण लार ।

---

**शब्दार्थ–**

1. तोल=प्रभाव, शक्ति । 2. घटियो=कम हुवा । 3. पुंडीर धीर प्रथीराज रै=चौहान पृथ्वीराज के पूंडीर सेनापति के समान । 4. उगोणा=पूर्व दिशा में । 5. बारे पधरावणा=प्रकट करना । 6. नचीत=निश्चित । 7. ठींमर=गम्भीर ।

**टिप्पणी-**

१– दुर्गादास ने शाहजादा से जनवरी 26,1687 ई. के दिन विदा ली । इसके बाद फरवरी 4. 1687 को वह फारस के लिये रवाना हुआ था । (राठोड़ दुर्गादास ०, पृ.78) ।

भूम सिरोही भाळ, राजाजी रहता सदा ।
लवध तणै लखधीर रे, पंथ करै प्रोचाल ।।

**कवत**

राजथंभ[1] राठोड़ रूप, उदो रिणमाळै ।
जुड़ 'पूड़' जाहर करण, हर जैंपत दिस हालै ।।
संघ सिरोही सहर, बैस मुकनेस बुलायो ।
कहयो सरब मजकूर, अधपती लेवा आयो[2] ।।
आण दां[3] धणी अगजीत मु, जिण दिस थ्हांरो जांण में[4] ।
परगटीयां हमै नव कोट पत, हरख होय हिंदवाण में ।।१।।

खरा वचन[5] सुण खास, मुकन खीची मुसकायो ।
साफ जाब सीताब,[6] दिख पाछो दिबरायो ।।
मोनु थे महराज, सुणो किण दिन सुंपाया ।
तिण सुं तुरीयां तगड़[7], आप फिर लेवा आया ।।
सुंपीया दुरग मोनु सुपहै[8], छाना साथ सूँ ।
आवियां तिकां सूँपीस अवस, हस नै हाथो हांथ सूँ ।।२।।

कूड़ा[9] हथ थे करो, जिके तो पेस[10] न आवै ।
दुरगो दिखण हो हमें, सुणियो छै आवै ।।
धीरप जितरे धरो, तिते हूं करू तयारी ।
सोंपीस तांहरा सुपहै, सुधरासी बाजी सारी ।।
वंग री वात वंग सुं वणै, जिका कहूं छूं राज ने ।
राजपूत धांके सह राखवा, लोकक अपणै लाज ने ।।३।।

तुरस[11] वचन सुण तरै, उदैसिंघ काढी आंखां ।
के ही घणो मुकन, पगै तों आई पांखां[12] ।।

---

**शब्दार्थ–**

1. राजथंभ = राज्य का स्तम्भ । 2. लेवा आयो = लेने के लिये आया । 3. आंण दो = ले आवो । 4. जांण में = निगाह में । 5. खरा वचन = दो टूक बात । 6. सीताब = शीघ्रता से । 7. तुरीया तगड़ = घोड़ों को दौड़ते हुए । 8. सुपहै = राजा । 9. कूड़ा = झूठे । 10. पेम – सफल । 11. तुरस = रूखे बोल 12. आई पांखां = गर्व हो गया है ।

जेण वटाऊ जांण, खोट दाखै छै खीची ।
गुदड़ी छाइ गुदमाळ, भींच जड़ आखां मींची ।।
मोकना काम मेले मो करु (मुंहगो) खरच मंगावतो ।
महाराज अठै छै मुसकसां, कागद लिखै कहावतौ ।।४।।

हट न अहीयो हमें, नटे किम होय निरालो ।
म्हारौ साचो मतो, तिल कोई न करु टालो ।।
महां सीरखो[1] घर मांह, और, कुछ छै इतवारी ।
आद बुन्यादी अडग, वाड[2] मुरधर वंसधारी ।।
जिण भांत दियो[3] अगजीत ने, तिण विध हूं ले जावसूं ।
आंण दे निसंक कै तो अवस[4], मोकना तोह मरावसूं[5] ।।५।।

दुरगो दुरगो दाखै[6], सो किसुं उण रे सारु ।
उण सरीखा उमराव, मह पछै होय था मारु[7] ।।
किम तूं ढांढस करे, जीव सुं जुग में जावे ।
हित सूं म्हारे हाथ, पछै नामो सरपावे ।।
समझ रे अजू खीची समझ, बळवंत उदो बोलियो ।
कर निजर कोप[8] करडांण[9] कर, ताओ असमर तोलियो ।।६।।

तद मुकंद डर तुरत, अधपती किया आरो ।
आंण देस अठै, मत कोई मोनु मारो ।।
कवळ लीध मुह कहे, मुहता कीर मजाजो ।
महाराज मौकने राजसूं, अरज............पाजो ।।
सोचने ने दीठ खीची सकल, टळै न वातां टाळियां ।
उठीयो लेण अजीत नु, तुरत हाथ दे ताळियां ।।७।।

गढ़पत रहे तो गांव, मुकंद रे निजरां मांहै ।
तठै चढ़े गो तुरत, समुख मिळ बात सराहै ।।

---

**शब्दार्थ—**

1. म्हां सरीखो = मेरे समान । 2. वाड = रखवाला । 3. जिण भांत दियो = जिस तरह भी दोगे । 4. अवस = अवश्य । 5. मरावसूं = मरवा दूंगा । 6. दाखै = कहता है । 7. मारु = मारवाड़ के । 8. कर निजर कोप = आंखों में क्रोध भरकर । 9. करडांण = गर्व से ।

इतरा दिन मैं अठे, राज नु छांनै राखै ।
मेल दुरंग रे मांहि, लोक किण दियो न लखै[1] ।।
महराज हमै मोटा हुवा जिण सूं सारा जाणियां ।
लेण रे काज लसकर लखां,[2] उदैसिंघजी आणियां ।।८।।

इम तद[3] केह्यो 'अजीत', सामतो सोची सोली ।
आठ वरस में उमर, दिखै प्रदेसै बोली ।।
जांणै छै केई जोध, कठै छै राजा केहो ।
खासा धरती खोस, औ रहे धोंस अवेहो ।।
प्रजाव देख मोटा मिनख, जांणै छै केई छतो ।
जाणबो[4] हमे जरूर सु, म्हारै छै ओइज मतो[5] ।।९।।

'दुरगदास' छै दिखण, कदै आसी कुण जांणै ।
हाजर भड़ जै हुवा, तिको भारो टंक टांणै[6] ।।
हुवो हूं हुसीयार, तुरी खुरीयां तगड़ांऊ ।
राग बाग रस राख, वदोवद[7] खाग बजांऊ ।।
किम रेहूं फेर छिपियो कहो, खेड़पती[8] दाखै खरो ।
'मुकनेस' निरभय मोनु प्रथम, कर उछाह परगट करो ।।१०।।

'मुंकद' होय मनगरे[9], सरब कुळ-रीत सीखाये ।
गुढै आपरै गोढ़, पाछै राजा पधराये ।।
तठै करै सरतंत, चितवी वहंत चढ़ाया ।
उदैसिंघ रै उण सरद, हाथे सो पाया ।।
मारवो राव मिळियो मछर, वागा नाद सुहावणां ।
प्रगटीया सुणै हरखी परज[10], बधा सधा हुवा बधांवणाँ ।।११।।

कमधां धर कुळदेव, दिव्य नागणैचां देवी ।
मंडल मोंड महाराज, सुध पुजा कर सेवी ।।

---

**शब्दार्थ–**

1. दियो न लखै = किसी को पहचानने नहीं दिया । 2. लखां = लाखों । 3. इम तद = तब इस प्रकार । 4. जाणबो = ज्ञात होना । 5. ओइज मतो = यही विचार । 6 टंक टाणै = अवसर । 7. वदोवद = बढ़ चढ़ कर । 8. खेड़पती = खेड़ प्रदेश का शासक राठोड़ राजा अजीतसिंह । 9. मनगरे = गंभीर । 10. परज = प्रजा ।

चैत चांनणै पख, दसम रिववार दसैहरो[1] ।
प्रगट हुवा छत्रपती, बडे दिन दुनियां विवरो ।।
साथ में खवर दे सांढीया[1], माकळसर मेलाविया ।
सामतां सको हाड़ा सहत, बोहत सताब बुलाविया ।।१२।।

अधपती आगै उदैसिंघ, ऐम अरज उचारी ।
हाजर हूंय हथ जोड़, आपरो आग्या कारी ।।
नख - चख[2] सुधो नमख भूप चे हथरो भरीयो ।
साम धरम सिरधार, धुधड़े चित में धरीयों ।।
सामतां किता वीभतो सदा, रहतो क्युहिक राजरो ।
प्रगटाविया छता कर छत्रपती, अवसर पाए आज़रो ।।१३।।

महाराज दिल मेल, आप उदीयासिंघ आगै ।
सगळी वातां सुंणी, दाखवी संगळां डागै ।।
जनम हुवो मो जदै, दिली सुं था पिण दूरां ।
आय उतरीया अठै, स कोई मिळियां[3] सूरां ।।
प्रवेश कियो म्है पछै, संजत लिया सैहर में ।
पातसाह पड़ै हाऊ पकड़वा[4], जम रूपी हुय जैहर में ।।१४।।

जिण दिन मारा जतन, कहो किण ही किया ।
सांमो[5] आण सिताब, दुष्ट रै मुहड़ै दिया ।।
जद माता जादम, अकल सु मतो उपायो[6] ।
सोऊ छानै राख, पोहप[7] कुसळे पोहचायो ।।

---

**शब्दार्थ–**

1. सांढीया = ऊंट सवार । 2. नख-चख = नख से शिखा तक, सम्पूर्ण । 3. मिळियां = शामिल हुए । 4. हाऊ पकड़वा = डराने वाले जानवर पकड़ने के लिये । 5. सांमो = सामने । 6. मतो उपायो = योजना बनाई । 7. पोहप = राजा ।

**टिप्पणी–**

१– बुधवार, चैत्र सुदी 10,1743 वि० = मार्च 13,1687ई. । लेकिन अजीतसिंह के प्राकट्य की तिथि के बारे में व्यापक मतभेद है । राजरूपक (पृ. 297) के अनुसार चैत्र सुदी 15, शुक्रवार, मार्च 18,1687 ई. और जोधपुर ख्यात० (भाग 2, पृ. 79) के अनुसार वैसाख वदी 5,1743 बुधवार, मार्च, 23,1687 ई. के दिन प्रकट हुए थे ।

देस में लाय कै दिन दबक[1], रूड़ा[2] बळूदें राखियो ।
सांभळी तिका म्है ही श्रवण, सुरज छै तिण साखियो[3] ।।१५।।

मोनूं म्होकमसिंघ, झूंझ में हाथां झैले ।
वसी आपरी बीच, मेड़तियो जतना मेले ।।
भारी भाव भाथांण[4], वळै मो उपर बूहा ।
आय साह अजमेर टूकड़े कीया टूहा ।।
घेरीयो मुलक फोजां घणी, अत गत माची आकरी ।
वध कियो[5] त्यार कमधां विखो, आपड़ी छाम ओताकरी ।।१६।।

सांवत म्होकमसिंघ, तरे दिल भारी ताकी ।
दुरगा सुं दे दिष्ट,[6] पकै की बातां पाकी ।।
मारे घरे महाराज, इता दिन रहिया ओळे ।
हाथ पकड़ हमैं, खेड़पत राखौ खोळे ।।
तिण दिवस आथ[7] आसा तणै, ससवै[8] होय संभावियो ।
एकंत[9] राख मोनु अठै, धमचक[10] करवा धावियो ।।१७।।

**बात**

पछै म्हाराज ने उदैसिंघ जी सांडेरे लाया । मगरा री तरफ फौज भेळी करण नुं ओठी मेलियो । पछै सारा भेळा आय हुवा । आप आपरी मिसळ में उतरीया । म्हाराज बिछायत नोबत सारी ही कीनी । हाड़ा सु महाराज राजी हुवा सनमान कीयो । हाड़ै मोत्यां री माळा निजर कीनी ।

**कवत**

साथ सुं पेहळां थाय, धर मुरधर में धसीया ।
कठै कठै कोर, विचरता वांसे वासिया ।।

---

**शब्दार्थ**

1. दबक = छुपाकर । 2. रूड़ा = अच्छी तरह से । 3. साखियो = साक्षी । 4 भारी भाव भाथांण = तरकस तीरों की झड़ी । 5. वध कियो = बढ़कर किया । 6. दे दिष्ट = विचार कर । 7. आथ = भार । 8. ससवै = सावधान होकर । 9. एकंत = अलग से । 10. धमचक = उपद्रव ।

महमानी मनुहार ठावका[1] हुई ठिकांणा ।
निछरावळ अर निजर, दीध पेसां देसांणा ।।
आवियो लोक परजा उलट, सको दरसण सामरै[2] ।
वारणां[3] लीध आसीस दे, निज बलहारे नामरे ।।१।।

**बात**

पछै सिरीयारी सोभत तरफ गया । इनायत खां जोधपुर थांणो राख सोभत हुय बिलाड़ै आयो । बात कराई । कोई राड़ करो मती, देस में म्हाराज री चोथ ठहराई[4] । इनायत खां अजमेर गयो । महाराज सीवाणै जाय बिराजिया । बेपारियां नु दिलासा दिनी । मारगबुहा[5], दोड़ा धावी मिटी ।

हमैं दुरगदास जी दिखण सुं अकबर नुं विलायत मेल, आप देस में दोड़िया आया । श्रीजी[6] नु अरजदासत मेली । आगला पाछला दुःख सुख रा सारा लिखिया । ने ओ लिखियो– 'हूं दिखण सुं आवतो मारग में रतलाम रहयो । उठा सुं अखैराज रतनसिंघोत जोधा नु साथे लियो, केकड़ी सु डंड लियो । मालपुरै आय सैद कुतब सुं राड़ कीवी । ने अनोप सिंघजी उठे काम आया । मालपुरो सहर मार थांणायत कनै पेसकसी ले जंभर मेवात तरफ मारी । उठै राड़ हुई, रजपूत काम आया । पछै टोहाणो मारीयो और काम किया । हमें हजूर आय कितरायक काम री अरज मसलत[7] करणी छै। सुं कर सुं । ३ दिन भला हुसी सुं श्रीजी रा कदमां लागसूं[8] ।' इण भांत अरजदासत आई । श्रीजी बांच[9] राजी हुवा ।

**कवत**

मांहरे घर में मुदे, आज दुरगो इधकारी[10] ।
बुधमान बळवंत, सुधारी बातां सारी ।।
कमधांपत इम के हो, सुण रही परगह[11] सारी ।
दुरजणसिंघ जद दीद एक हाड़ै हांकारी ।।

---

**शब्दार्थ-**

1. ढावका=चुनिंदा । 2. साम रे=स्वामी के । 3. वारणा=बलीहारी । 4. चोथ ठहराई =आय का चौथा भाग कर रूप में निश्चित किया । 5. मारग बुहा=मार्गों पर आवागमन शुरू हुवा । 6. श्रीजी=महाराजा । 7. अरज मसलत=निवेदन व विचार विमर्श । 8. कदमां लाग सूं=सेवा में उपस्थित होऊंगा । 9. बांच=पढ़कर । 10. इधकारी=अधिकारी । 11. परगह=प्रजा ।

बळे, कीध कई बात, देख अंदेसो दूरो ।
संवत पिण इण समे, पेठ सुं हुवो पूरो ।।
आवियो जिते दुरगो अठे, वदियो थो जिम वायदो ।
रंग पूणे छता राजान रो, अनमन[1] ने रह्यो आलायदो[2] ।।१।।

महाराज मों बिनां, कमधजै जाहर किया ।
खीची मुकंद खवास, देख जो इण कूं दिया ।।
जदै वसियो (हूं) जुदो, बांठ रड हुयनै बेठो ।
मारण मन (रे) मांह, पराभय भारीज पेठो ।।
सामळी बात अगजीत सह, रिदे धार[3] चुपके रह्यो ।
सामता सहेत 'हाडे' सुणी, किणी जाब[4] ना फिर कह्यो।।२।।

हमै संवत १६४४ लागो । पातसाह दिखण में भाग नगर[1] लियो थो । मारवाड़ री खबर महाराज परगट हुवां री पोहती । तरै पातस्याह सोच कियो । इनायत खां नु रीस लिखी[5]-इण तरै राजा छाने रह्यो तो सु कांई गरज सरी नहीं । हमैं ही ज्यु जाणै ज्यु राड़ कर दाव पड़ै[6] जठे पकड़ मारै । इण हुकम पर इनायत खां मालपुरा सु अजमेर आयो, सोच कियो । बैचाक[7] पड़ीयो । मास १ में मुवो । गुजरात सु कारतलब खां पातस्याह रा हुकम सु जोधपुर आंवण सारु डेरा बारे किया । इतरै इनायत खां नु मुवो सुणियो, तरै कारतलब खां पातस्याह जी ने अरजी लिखी—'गुजरात री तरफ भोमिया मांथो उठायो[8] छै । जोधपुर रां जावता रो किणी और ने हुकम हुवे । ने हूं गुजरात हीज रहूं । तिण उपर गुजरात रा जावतां रो हुकम करतलब खां नु आयो । नै लसकरी खां जाफर खां हुकम सु जोधपुर आय मुलक में अमल कीयो ।

पछै दुरगादास जी महाराज सु मिलणों विचारियो—

---

**शब्दार्थ—**

1. अनमन=उदास । 2. अलायदो=अलग थलग से । 3. रिदेधार=हृदय में रखकर । 4. जाब=उत्तर । 5. रीस लिखी=नाराजगी का पत्र लिखा । 6. दाव पड़ै=मौका मिले । 7. बैचाक=अस्वस्थ । 8. मांथो उठायो=उपद्रव किया ।

**टिप्पणी—**

१— भावनगर=हैदराबाद का प्राचीन नाम ।

**कवत**

दीली मंडल होय, गयो थो दुरगो गाडै ।
आवस राख अंण राग[1] छत्रपत हुंता छाड़ै ।।
आव फिर आयो आप, सोच बुनियाद संभाळै ।
बांस वाद किम वणै, अंत न भली उकराळै[2] ।।
हर भांत (कर) कर नै हमें, मांहरै मां म्हाराज सूं ।
रजवात पकड़ गोडे रहिस, अंतर मेटीस आज सूं ।।

अो विचार दुरगदास जी रो म्हाराज सुंण ने कहो–मैं तो दुरगदास जी सुं और क्यूंही विचारी न थी। लोगां भखाया[3], तिण सु उव हीं इतरा बेराजी हुवा। पेहला तो इतरा मोटा मोटा काम कीना था। पछे वेराजी हुय अलायधा[4] घरै बंस रह्या। हमें दुरगदास जी कहै तो मिलण ने आवां। पिण हमें जरुर आवे। घर रो कांम हाथ संभावे[5]। सारा सुं सिरे बिहार[6] दुरगदासजी रो व्है। निदान महाराज दुरगदास जी ने लेण[7] पधारीया–

**कवत**

इत राजा अगजीत, दीछ भर[8] सांमो दीठां ।
जांण हितू जोधार, मुंह सूं बोल्यो मीठो ।।
दुरगो सामो दौड़ सुपह रावां संभाया ।
पछ मिले अंग प्रसव, धाए[9] कळस बंदाया ।।
धवळ रेणी फेर मंगळ धवळ, आगा ग्रह में आणिया ।
आरती उतार लेऊ वारणा, बांह बकड़ वेसाणिया ।।१।।

**बात**

पछै महाराज तो पहाड़ां में रेहण सारु[10] पधारीया,ने दुरगदास जी सिंध री तरफ गया। ऐ संगरामसिंघजी भेळा हुवा। पछै उतर तरफ जाय पेसकसी लीवी। और मारग मारिया[11]। जोधपुर रो नायब फौज ले आयो, राड़ हुई। आदमी १५

---

**शब्दार्थ–**

1. अंण राग=द्वेष। 2. उकराळै=पुरानी बातों को याद करना। 3. भखाया=भड़काया। 4. अलायधा=एकान्त। 5. काम हाथ संभावे=कार्य अपने हाथों में लें। 6. विहार=व्यवहार। 7. लेण=लेने के लिये। 8. दीछ भर=नजर भर कर। 9. धाए=दौड़े। 10. रेहण सारु=रहने के लिये। 11. मारग मारिया=मार्गों पर लूट मार की।

मुंवा पछै फौज तुरकां री जोधपुर गई। उण समै दरबार रा साथ में भं भयाचं
काम आयो।

**तुक**

दूठ जगो महादेव, सिंघवियां ललपत सरस।

**बात**

और पण कोई दरबार रो चाकर काम आयो। पछै दुरगदास जी तो सिं
री तरफ गया था, ने जैतारण री तरफ उदावत जगरामजी ने हाड़ो दुरजणसिंघजी
चांपावत मुकनदासजी उदावत राजसिंघजी बलरामोत सोभत ऊपर चलाया[1]
आगे पिण सुजाणसिंघजी रे इणां सुं खेधो थो सुं सुजाणसिंघजी पिण चढ़ने साम
आया। मुहमेज[2] हुई। दुरजणसिंघ हाडो पेहलाई टळने[3] उरो आयो। तरै सिर
दार पिण नाके छळ[4] हुवा निसरीया। गढ़ी में मांणस राख[5] ने फेर लड़ाई
चढ़ीया। पछै सुजाणसिंघजी सुं राड़ किवी। निदांन जगरामजी, मुकदासजी
मुड़िया[6], तरै रजपूत कांम आया। पछै सुजाणसिंघजी हाड़ा रै पाछै पड़[7] को
दसेक खेद[8] काढ़ियो। पछै जगराम जी रेहता जिण गढ़ी उपर सुजाणसिंघजी
गया। पहाड़ां में वन में झांगी[9] बांकों[10] मारग थे, सुं झंगी बाढ़ ने गढ़ी ढाई
ने घाटा नाका वांधीया, ने हाड़ा आदमी हजार ऐक था, सुं चल विचल हुवा। त
दुरजणसिंघजी ने जगरामजी दुरगदासजी कने पुकारू[11] गया। मैह तो धणी र
काम उपर दोड़ां ने सुजाणसिंघजी आडो फिर कजिया करे।' तरै दुरगदासजी
बोलिया हुई सु हुई हमें जावण देवो। थे पेहला बसी उणां री गांव रास में लुटी
उण केसा माथे उणां थांरी गढ़ी ढाई। ने हूं तो थांरा कथन में छू[12]। थे केहसो
करसूं। थांहरो उपर राख सूं। मुलक मारसां। पिण मांहो माह इधकी ओछी
करो मती–

जद उदो जगराम, सुण इसी बेसुवादी[13]।
तांमस आंणे[14] तेज, विसर में उठीयो वादी॥

---

**शब्दार्थ :–**

1. ऊपर चलाया=धावा किया। 2. मुहमेज=आमना सामना। 3. टळने=अल
होकर। 4. नाके छळ=युद्धार्थ तत्पर। 5. मांणस राख=सैनिकों को नियुक्त कर 6. मुड़िया=
पीछे लौटे। 7. पाछै पड़=पीछा करके। 8. खेद=खदेड़ कर। 9. झांगी=झाड़ी आदि।
10. बांको=विकट। 11. पुकारू=निवेदक। 12. कथन में छूं=सलाह मे हूं। 13. बेसुवादी=
कटु। 14. तामस आंणे=क्रोधित होकर।

## बात

तरै दुरगदास जी इणां ने पाछा वेसारणिया ललपत[1]। कीवी ने कह्यो-सुजांण-सिंघ जी ऊपर चालसां ।' सु सारा चढने आया। बीस कोस रा आंतरा सुं दोड़िया। सुंपरभात रा सोझत आंण घेरीयो ने सुजांणसिंघजी गढ संभायो। दुरगदासजी वारे मोरचा लगाया। सेहर सुं सांकड़ा[2] नेड़ा सुं मांहे कूदण ने आकता हुवा[3]। सुं राड़ हुई। आदमी मुवां, आथण तांई लागा रह्या. सेहर मिळियो नहीं। रात रा डेरां आया। मोरचा चोकी पोहरा रो जावतो कीनो। ने दिन उगतां खबर आई- जोधपुर सुं फोज आवै छै।' तरै दुरगदासजी उदास हुयने चढ़ गया। पछै तुरकां री फोज सोझत आई। दुरगदासजी चांग हुयने मगरा में पैठां। आगे पुर मांडल गया। तुरकां रे थाणायत ने गढ़ी में घेरीयो। राड़ हुई। राड़ में हाड़ा दुरजणसिंघ रे गोली लागी सुं मुवो।

पछै दुरगदास जी उठा सुं रामपुरे गया ने अखैराज रो पाछलो वेर भंगायो[4]। ने अखैराज जी रतलांम रह्या। पछै दुरगादास जी घरे आया। ने जग-राम जी सुजांणसिंघ जी रा अकस कर गढ़ी चुंथाई[5]। पछै सारा बिखर गया। सुं आप आपरी वसियां गया। सुजाणसिंघ जी अकड़ करने उदावतां सुं खेधो मांडीयो[6]। रायपुर मारने राजसिंघ जी कना सु छुड़ाय लियो। जायगा सारी ही जोई, धान रा खोड़ा लूटीया। निबाव ने बुलायो, सो निबाव आयो। सारो मगरो सतपुड़ो पहाड़ सोझियो। ने गावां री सारी उनाली बिगाड़ी। उदावत ओळं[7] बैठ रया। अै समाचार श्री म्हाराज ने पोहचिया[8]। तरै राजसिंघ जी जगराम जी ने दिलासा, लिख मेली–'म्हारे घणां वात छो[9], हमार तो समै देखो[10] छो, ओछी बाढ़ जो,पछै समज लेसां।' दुरगदासजी म्हासूँ दुभद्या[11] मांडी। जुदा थे होय ने भांडी मांडी छै। सुं माहो म्हाय समझ कळवळ सु[12] काम कीजो।

सं. १७४५ लागो। दिखण में दिखण री पातसायत लीवी। ने सिंभू ने

---

**शब्दार्थ-**

1. ललपत = मीठी बातें। 2. सांकड़ा = नजदीक 3. आकता हुवा = उद्यत हुये। 4. वेर भंगायो = शत्रुता मिटाई। 5. चुंथाई = रोंद डाला। 6. खेधो मांडियो = द्वेष रखने लगे। 7 ओळं = छिपकर। 8 पोहचीया - प्राप्त हुये। 9. घणां वात छो = विशेष महत्व के से। 10. समै देखो = समय देखकर। 11. दूभद्या = दुविधा। 12. कळवळ सुं = तरकीब से।

पकड़ीयो ।[१] अठै महाराज चोथ रे वासतै जालोर फोज म्हैली । बिहारी सुं राड़ हुई दरबार री फौज मुड़ी । पछै जोधपुर सुं काजमवेग दोड़ियो । सु जेतावत नाथो नारायणदासोत रो गुढ़ो मारीयो, ने नाथा ने पकड़ने तुरक कीयो । आहा बात सुण ने (पातसाह) राजी हुवो । पछै निबाब कारतलब खां ने सुजायत खां[२] रो खिताब दियो ।

सं. १७४६ लागो । रा. राघोदास द्वारकादासोत खंगारोत जोधो नबाव सु बोला बोल बिसर कर[1] छाड़ गयो थो । तिण ने मेड़ता रे फौजदार मेहमद अली पकड़ ल्यायो । तिण ने नवाब मरायो । तिण रे वेर भतीज हरनाथ चंदरभाणोत म्हैमदअली सुं राड़ कीवी । म्हैमदअली मेड़ता सुं तागीर होय ने जावतो थो सुं अंह मारग में जाय पोता ! मेड़तियो गोकलदास हरनाथ जी सुं जाय सांमळ हुवो । सं असी कोसां उपर मिरजा ने जाय पोहोता, राड़ हुई । तुरक मुंवा, मेंहमद निसरीयो । पछै राठोड़ां माल लूटीयो । राठोड़ पिण काम आया, ने बीवी ने पकड़ लाया ।

### तुक

मारुवै[2] लूट सारी मता[3], झपटै घोड़ा घातीया ।
पूठ[4] तिण बंद बीबी पकड़, हाथो हाथ ले आविया ।

### बात

जोधपुर सुं सूजायत खां रे नायव काजम बेग दोड़ कर गांव देछू मारीयो ।

---

### शब्दार्थ–

1. विसरकर=भूल कर । 2. मारुवै=मारवाड़ के योद्धा । 3. मता=धन सम्पत्ति । 4 पूठ=पीछे से ।

### टिप्पणी–

१– सम्भाजी भोंसले को फरवरी 1689 ई. के अन्तिम दिनों में गिरफ्तार किया गया था । तथा मार्च 12, 1689 ई. के दिन औरंगजेब ने उसे मरवा दिया । (मआसिर० पृ. 320, 323, 325; भीमसेन (अं. अ), पृ. 169) ।

२– इसका वास्तविक नाम मुहम्मद बेग था । उसे कारतलबखा और फिर सुजायत खां की पदवी दी थी– (मा० उ०, भाग 5,222-223) ।

रा. जगराम देवीदासोत चांपावत राड़ कर काम आयो । पछै कुरणो[1] मारीयो । सो सोनगरो मुकनदास कांम आयो ।

तुक

मलवटै दौड़ दीठो मुलक, चोकस कागद चाढियो ।
सहेसे नव हेक हासळ सीरो, किलमा लेवण काढ़ियो ।।

सं० १७४७ लागो

तुक

सुवो[2] खान सुजात, सु तो गुजरात सिधायो ।
मिरजो काजम मुखी[3], जोधपुर अमल जमायो ।।

बात

तुरकां महाराज सु मैळ कियो । मारग बहै तिण में चोथ कर दीवी । सुजाणसिंघ जी मेड़ते आया ।

तुक

सोभत कंमध सुजाण, छोड़ जागीरी पटो ।
जठा मेड़तै जाय, सयदा कीन सहटो ।।

बात

रा. मुकनदास दरबार रो साथ ले देस में आयो ने चौथ लीवी । अजमेर रे गांव बोहोफळी रहिया । अजमेर रो नायब आय ने लड़ाई कीवी । पछै डीडवांणै जाय ने पेसकसी लिवी । फतैपुर सु कायमखानियां री

---

शब्दार्थ-

1. कुरणो = कोरना नामक ग्राम । 2. सूबो = सूबेदार । 3. मुखी = मुख्या ।

फौज आई, सु राड़ हुई । आमा सामा[1] आदमी कांम आया । पछै मुकंददास जी श्री महाराज री हजूर आया ।

अजमेर सीपैदारखां[1] सोबो थो, पिछम तरफ चु. चंदो पनोरीयां रो राड़धड़ा उपर आय ने दाव लिया[2] । वांसै[3] राव ईसर वाहार चढ़ियो सो कांम आयो । पछै ईसर रो बेटो ठाकुर सी कटक कर दुरगदास जी सांमळ हुवो । पाछो वेर वाळियो । सुरा चंदा जाय लागो कोट पाडीयो, हल बाह्या ।

### तुक

सुराचंदा इतै संभायै, चंदराण त्रहांण चढायै ।
राड़ हुई चंदो गयो निसर, आरंण पड़ियो दीठो ईसर ।।

### बात

पछै ईसर रो बेटो ठाकुरसी पाट बेठो[4] । उदावत जैतारण री तरफ दोड़िया । पछै सुजात खां गुजरात सु आयो । पछै काजम वेग बूसी मारी । बूसी वाळै लुगायां बाढी । उवाका री फरदां[5] सु पातसाह सुणियो-सुजात खां माहराज ने चौथ देवे है, मेल राखै है । तिण उपर सुजात खां सु पातसाह अतराज हुयने हुकम आयो—म्हाराज रा थांणा उठाय दीजो । तिण ऊपर नबाब सुजाणसिंघ जी लिखियो । सु महाराज रा थाणां उठाय दिया । सिरदारां नवाब सु बात कराई । तरै नवाब कह्यो -- 'हूं तो महाराज रो भलो चाहूं छूं । पिण उवाका री फरदां लोकां रा लिखिया सुं पातसाह ने खबर पोहती । ने सुजाण-सिंघ जी थेटसुं[6] लागु छै । पिण राहदारी तो थे लेता जुं लियां जावो । पिण थांणो एक जायगा ने छाने लेवो[7], ज्यु पातसाह सुं जाहर न हुवो ।'

---

**शब्दार्थ—**

1. आमा सामा = दोनों पक्षों के । 2. दाव लिया = मोर्चा लिया । 3. वांसे = उसके पीछे । 4. पाट वेठो = गद्दी पर वैठा । 5. उवाका री फरदां = घटनानवीसों के लेख । 6. थेटसूं = प्रारम्भ से । 7. छाने लेवो = गुप्त रूप में वसूल करो ।

**टिप्पणी-**

१- इसका वास्तविक नाम मुहम्मद मुहसीन था और खानजहां बहादुर कोकलताश का पुत्र था । (मा० उ०; भाग 5, पृ० 460--461) ।

**तुक**

तरै सिरदारां पाछो जव इण भांत जमायो ।
जद फिर कमधाँ अमल जमायो ।।

**बात**

अजमेर रो सोवेदार सीपैदार खां तो पुरब तरफ गयो ने अजमेर रे सोवे सफीखां[1] आयो । अत करड़ो हुवो[1] । जायगा जायगा नाकां मांथै थाणा वांधीया । जोधपुर रे गांव चांखा रो थाणायत गसत[2] चढीयो थो । सु सांणी दोय भागचंद ने अमरो दोनु भाई मारग में आण निसरोया सु मरांणा ।

सं. १७८८ लागो । ने जेतावत नाथो नरायणदासोत तुरक हुवो थो सुं मनसव लियो थो,.सुं मनसव छोड़ ने मगरे चढीयो । सोभत सुं लसकरी खां री फोज आई कजियो हुवो ।

**तुक**

दोनु भव डबकाया[3] उगरै, धवळै दाग दिरायो ढगरै ।।

**बात**

पातस्याहजी सुजाणसिघजी सुं लीवाणां री रद बदळ[4] कराई । पछै नबाव मेड़ता री फोजदारी सुजाणसिघजी सुं तागीर करने कंवर म्होकमसिघ ने दीवी ।

---

**शब्दार्थ-**

1. करड़ो हुवो—कठोर प्रशासक हुआ । 2. गसत = गश्त, देख रेख के लिये पहरा देना । 3. डवकाया = डूबो दिया । 4. रद बदळ = विचार विमर्श ।

**टिप्पणी–**

१– सफीखां-इस्लामखां मशहदी का पुत्र, बादशाह शाहजहां के समय से शाही सेवा में आया था ।- (मा० उ०, भाग 5, पृ. 283-284) ।

सुजाणसिंघजी सुं पातस्याह राजी हुवो । सुजातखां दिसां पातस्याह जाणियो-महाराज सुं अो मिलियो बै छै ।[1]

### चौपाई

रोद पती दिल होए राजी । कहो सुणो थे बातां काजी ।।
वोई खान सुजायतखां जी, सूजै कमधज राखी साजी ।।

### बात

ऐक वार सीवाणां रो हुकम सुजाणसिंघ जी नु आयो थो । अैह केहता था-म्हां सु सभ्है नहीं । किणी बात री मतलब री अड़बी[2] थी, अरज आं रे होय न थी। ने पातस्याह रे मन में इणां री गुंजास थी[3], तिण सुं फेर इणां नु सीवांणो धामीयो[4] । तरै इणां च्यार सो असवारां रो मनसब इजाफा री अरज लिखी । अै बातां सुजातखां सुणी । तरै जाणियो इणां फेर मारो गिलो[5] पातस्याही में होय। तिण सूं सुजाणसिंघजी नुं मेड़ता सुं बुलाय लिया । म्होकमसिंघ नुं मेड़ते मेलियो। जोधपुर काजम बेग ने राखने नवाब आप गुजरात गयो ।

राणांजी रा घर में धूंकल ऊठियो । राणा जैसिंघ ने कवर अमरसिंघ रे माहोमाह लागी । राणोजी नास ने घाणेराव आया । राठोड़ भेळा किया । पछै फेर मेवाड़ पाछो लिवी ।

अकसमात घर रै वेध आणों, मेवाड़े घरे धंध उठाणो ।
राणा कंवर था अत रीसाणो, हलचलियो[6] मोटो हिंदवाणो ।।

### दूहा

राणै आदू रीत न राखी, (देख) कंवर ने धरती दाखी ।
जेर बड़ा नु मेले जाखी[7] सींउ उवारै दुनिया साखी ।।
ढेबर था राणोजी चढिया, पाछै कंवर अमरा रे पड़ीया ।
जितरे इण दरवाजा जड़िया[8], सैस उदेपुर कंवरे खड़ीया ।।

---

**शब्दार्थ–**

1. मिलियो बे=मिल कर चलता है । 2. अड़बी=रुकावट । 3. गुजांस थी=आशा थी, विश्वास था । 4. धामीयो=प्रस्ताव रखा । 5. गिलो=बुराई । 6. हलचलियो=हलचल पैदा हुई । 7. जाखी=हत्यारे । 8. जड़िया=बन्द किये ।

मुसालां में मुकसल मीलायो, हाड़ोती रे बीच रहायो।
फोजां ले खुमाण फीरायो, बळै उदैपुर सेहर वसायो।।
कंवर खेड़ रा कटक कराया, चढ़ै उदैपुर पार चलाया।
रच देबारी घाट रुकाया, राणां था बतकाव रचाया।।
मुख मरजाद[1] राणे थे मेली, बेटे वद भगळा खोली।
हमें छोड़ दो स्हैर हवेली, बंद में पड़ो सो कुण थांरो वेली[2]।।
लाग इसो चितोड़ां[3] लागो, मन भय माने राणो भागो।
धन स्है मेल मेले धोगो, निकलियो ले आयो नागो।।

**बात**

राणांजी घांगेराव रा गोपीनाथ रे सरणै आयो सुद ५[1] ने म्हां सुवायो, उदीयापुर था भागो आयो। राणोजी गोपीनाथजी ने इण भांत समाचार कह्या-

छल कर कंवर राणै के छलियो,
मुख सगतावत[4] चूंड़ा[5] मिलिया।
चित चऊवाणां च झाला चलिया,
भाई तद राणावत भीळिया।।
फुटकर तीजां कैईक नीती,
आपस मांय मांडी अनीती।
उमरावां मिल तोत करायो[6],
कंवर अमर वद राह करायो।
रावत केसो पासे रईया,
गाढ पंवारै सोलंखी गईया।
फिरकै झाला फुटकर कईया[7],
कै सीसोदा कमधज कईया।।

---

**शब्दार्थ-**

1. मरजाद=मर्यादा। 2. थांरो वेली=तुम्हारा साथी। 3. चितोड़ां=चितोड़ के निवासी (राणा के लिये संबोधन)। 4 सगतावत=सिसोदियों की शक्तावत शाखा। 5. चूंडा=चूंडावत। 6. तोत करायो=छल किया। 7. कईया=कई एक।

**टिप्पणी-**

१- माघ सुदी 5,1748 वि० =बुधवार, जनवरी 13,1692 ई.।

मुतसदी कै आया म्हारै,
सबळ खजानों ज्यांरे सारे[1] ।
बंद रा हुकम कढो ऊवारे,
उपर कुंभलमेर ऊतारै ।।
कंवर उदयपुर हूंत कढावो,
बीजी बिरीया[2] मोह बैठावो !

बात

पछै गोपीनाथजी बात हाथ संभाई । मदत रै वासते सारे कागद म्हैलिया । म्हाराज नु समाचार आया म्हाराज फोज मेली । भगवानदास चांपावत नुं मुदे कर[3] म्हैल्यिो ने और पिण वेदू आया–

रतन खान रतना रो रामों । तिण जोधां बंस पायो जामो ।।
मुकंद तणो जोधो मछराळो । उदैभाण करवा उपराळो[4] ।।
साथ घणो भेळो हुवो । पण जथै आंपणै जुवो जुवो[5] ।।
दूरती अेक न माने दूहो[6] ......................................।।
खैड़ थका खजानो खावे । आप मता में आवे जावे ।।
काम तिको फिर किसो करावे । पत मेवाड़ जदे पिसतावे ।।
अब लाखां रोड़ा[7] इम आंणी । बळै कही गोपीनाथ बांणी ।।
आवे जू दूरगो आसांणी[8] । पण तो रहसी रहसी पांणी[9] ।।
जद राणो राजा जोखाणो । ऊथल पाथल धरा ऊपाणो ।।
तिण वेळा मो थाकै जांणो । तोड़े सेट दूरगे तुरकाणो ।।

पछै दुरगादासजी नुं मेळण रे वासते राणां जी महाराज नुं लिखीयो । तरै महाराज दुरगदासजी ने कह्यो-तरै दुरगदासजी पाछली सारी अरज करी-म्है उसड़ी उसड़ी चाकरी करी । काबल सुं सारा साथ ने दीली लायो । उठा सुं महाराज ने

---

शब्दार्थ–

1. ज्यांरे सारे=जिनके अधिकार में । 2. बीजी बिरीया=दूसरी बार । 3. मुदे कर=नेतृत्व सौंप कर, मुखिया बना कर । 4. उपराळो=रक्षा करने वाला । 5. जुवो जुवो=अलग अलग । 6. दूहो=आज्ञा । 7. रोड़ा=रुकावटें । 8. दूरगो आसांणी=राठोड़ दुरगादास आसकरण का पुत्र । 9. पांणी=इज्जत ।

देस पोहचाया। म्है उठे कजिया किया। और उमराव सारा ईंदरसिंघजी सुं मिलिया। जोधपुर ईंदरसिंघजी नुं बेठाणिया। कितराइक तुरकां सुं लाग गया[1], तिण री विगत-

जोधो सुजाणसिंघजी पींसागण जुनीया रा,
नरावत चंदरसेण पोहकरण
कुंपावत कीरतसिंघ सुरजमलोत आसोप ने

आऊवा रा चांपावत(सगरामसिंघ)सुरजमलोत फेर घणा, ने चांपावत उदैसिंघजी पाली वगेरे ईंदरसिंघ जी में गया। पछै ईंदरसिंघ जी गढ़ दाखल हुय ने उण सायत[2] सोनगजी री भांड कनै कूंट[3] कढाई, घणो ठठो[4] कियो। सारां रो अपमान हुवो। तरै सोनगजी मने कुहायो। म्हैं भेळा होय ने विखो कियो। अकबर नु फाड़ियो[5]। तरै सोनगजी ने देस में रख ने म्हैं पातस्याह ने अजमेर सुं दिखण ले जाय नांखीयो[6]। लारै सोनग जी दोड़िया, सुं तो रामसरण हुवा। ने हूं आ जाणतो पातस्याह कनै पका कवल लेने महाराज ने बारे काढ़तो[7]। इतरे पाछा सुं उदैसिंघ जी वगेरे दूजा सारा भेळा होय कचे जाव[8] महाराज नुं बारे काढ़िया। सुं तो पछाड़ी में आ फेर आपरै निजर आवसी। ने हमें मोनुं तियायत[9] जांणै छै। तरै हूं उदास होय कनारो[10] पकड़ बेठो। पिण सामधरमी चाकर श्री म्हाराज रो छूं। हुकम करसी तठै तयार छूं।" तरै श्री महाराज पिण आप रा दुख री बातां दुरगदास जी कनै कही–देखो छो म्हानुं कुण गिणै छै। बीजो और म्हारै थां सवाय कुण छै? म्हारै जोधपुर आव‌ी तरै थ्हारां घणा थोक[11] करसूं। ने लोक हळकी[12] बातां ओर तरै करे छै सुं आपरो मांजनो[13] गमावे छै।

साम धरम जग में थारो सारै, मुख उमराव[14] में थे छो म्हारे।
खारा बोलां जके भड़ खारे, बोझ बढ़ाई काढ़ै बारे।
जोर किसो म्हारो थे जांणो, आज रहो होय अपांणों।

---

**शब्दार्थ-**

1. लाग गया=मिल गये। 2. उण सायत=उसी समय। 3. कूंट=नकल। 4. ठठो=मजाक। 5. फाड़ियो=अलग किया। 6. नाखियो=पटका, ले गया। 7. बारे काढ़ तो=प्रकट करता। 8. कचे जाव=अनिश्चिता की स्थिति में। 9. तियायत=भेद भाव। 10. कनारो=तटस्थ। 11. घणाथोक=आदर सत्कार। 12. हळकी=निम्न स्तर की। 13. माजनो=इज्जत। 14. मुख उमराव=मुख्य सामन्त।

जद देखूं पायो जोधाणों, राखीस सारो जोय रहांणो ।
गिणै कुण आज म्होंने गिणती, बातां करै आपणै बणती[1] ।

## बात

निदान दुरगदास जी म्हाराज रो हुकम ले नैं राणां जी री मदत गया। घांणेराव जाय भेळा हुवा सु राणोजी दोढ़ी तांई सामा आया, बात कीनी । दुरगदास जी कह्यो-'घर रा कळेस[2] सु दुसमण रो चायो होय[3] । तुरक तो आहोज चावे छै । आपां कंवर सुं राड़ करां, दोनु तरफ मेवाड़ रो रसालो करै । कंवर मारीयो जाय तो पछै धरती कुण संभावै, भूंडा दीसीजै[4] । ने राणांजी रा दुसमणां नुं क्युंही होय, तो निपट हीज भूंडी होवे । तिण सु कवर सुं मेळ कीजै, पटो दीजै । मेवाड़ रा धणी दीवाण छो ।' इण भांत समजाय ने आ कही - 'पेहला तो दीवांण हीज भूंडी कीनी, तोत विचारीयो । तरै कंवर फितूर कियो । हमें कंवर री तकसीर माफ करो । कंवर नु म्है दीवाण रे पगै लगाय देसां ।' राणैजी कबूल कीनी । तरै दुरगदासजी कंवर अमरसिंघ नुं कहायो - 'थे कियो, सु कियो, भूंडो कियो[5] । धरती रा धणी तो निदान थे छो. पिण हमार हीज लोकां रे भखाये फितूर करो, सु दीवांण सलामत थकां थ्हानु धरती आवै नहीं[6] । ने राड़ करसो, तो म्है सारा राठोड़ दीवांण भेळा छां । दीवांण मेवाड़ रो धणी छै । थ्हां सूँ घणी भूंडी होसी । सु थे दीवांण रा पग पकड़ो । थ्हांरो बाप है, मेवाड़ रो खांमद है । थानूं बाप रै पगै लागतां अेब नहीं[7] । जायगा पांच परगना पटो थ्हानु ही हाथ खरच नु दीरावसां । घर में चैन हुसी । ने नहीं तो थ्हांरो घणो भूंडो होसी ।' इण भांत समजाया सुं कंवर पिण आरे हुवो[8] । दुरगदासजी रो घणो भलो मानियो। दीवांण रे ने कंवर रे मेळ हुवो । उमराव साराई आगे पटा पावता ज्यु ही पटा सदामद माफक[9] ठेहरीया । अेक हजार असवार राणांजी कनै राठोड़ां रा रेहणो ठेहरियो । औरां री सीख ठेहरी दुरगदासजी रो उदेपुर जावणो ठेहरियो । दीवांण नु कंवर नुं मिलायां पछै दुरगदास जी रो पाछो आवणों ठेहरीयो । कंवर री तरफ सु सोलंखी वगेरे केई आसामियां दुरगदास जी री मारफत बात करण सारू आयी थी, सु साथे हुई । दीवांण उदेपुर ने कूच कियो । और मारवाड़ रा साथ री

---

**शब्दार्थ–**

1. आपणे बणती = इच्छानुसार । 2. कळेस = उपद्रव । 3 चायो होय = चाहे जैसा होता है । 4 दीसीजै = दिखाई दे । 5. भूंडो कियो = बुरा किया। 6. धरती आवे नहीं = राज्य पर अधिकार नहीं हो सकता । 7. अेब नहीं = दोष नहीं । 8 आरे हुवो = तैयार हुआ । 9. सदामद माफक = सदैव की तरह ।

दाहनी खरची[1] सारू दीवांण रुपिया दुरगदासजी नुं सुपीया । सुं दुरगदासजी घाटा उपर रैहने दाहनी चुकाई साथ खेड़वां[2] ने सीख दीवी, और लुटेरो लोग सीख कर परो गयो ।

ने रांणो जी आगै जावता था सुं मारग में किणी सैहल[3] सी बात उपर रांणाजी री तरफ रो सोलंखी रा मन में खतरो बेठो चूक करण रो । सुं सोलंखी जाय ने कंवर रा मन में भरम घालियो[4], सु कंवर उदेपुर सु परो गयो, देहबारी जाय बेठो । जितरा में दुरगदासजी पाछा सूं दीवांण कनै जाय सामळ हुवा । दीवांण ने केयो--थे ओ काऊं फितूर कियो ।' तरै दीवांण कह्यो-म्हैं तो चूक री कांई बिचारी न थी, पिण कंवर रा उमराव कुंता थका[5], विनां समदां कंवर ने भखायो ।' तरै दुरगदास जी फेर दीवांण कने कोल बचन पका लेने कंवर नु दिलासा म्हेली, ने कह्यो-म्है पाछै रेया तिण सु इतरो हुवो । पिण दीवांण रे मन में किऊ न छै[6] । म्हैं बात में छां । म्हारो बचन छै ।' पछै दीवांण रो ने कंवर रो मिलाप श्री इकळंग जी ठेहरायो । उठी सुं तो कंवर आयो ने अठी सु दीवांण आया । कंवर आपरा हाथ रूमाल सुं बांध नै दीवांण सुं मुजरो कियो । दुरगदासजी कंवर रो हाथ पकड़ ने पगै लगाया । दीवांण किरपा करने कंवर रा हाथ खुलाया । धड़ीक बेठा तकसीर माफ कीवी । पछै कंवर अरज कीवी--'उमरावां रे भखाये, म्हों में इतरी तकसीर पड़ी, पिण दुरगदासजी जिसो ठाकुर हुवै ने ओ फितूर मिटै ।' दीवांण पिण दुरगदासजी रो जस गायो । कंवर रो रेहणो[7] राज सागर ठेहरीयो । ने दीवांण उदैपुर पधारीया । फेर पाट विराजिया । दुरगदासजी तिलक कियो । तरवार बंदाई । मेवाड़ रा उमरावां रो माण[8] गळियो । जेठ वद ५[1] दीवांण उदैपुर दाखल हुवा । श्री महाराज रो जस गायो । श्री महाराज मोटा छै । दुरगदासजी भगवानदासजी म्हारी मदत म्हेलिया । कंवर राजसागर ज़ाय रयो । पिण कंवर रे मन में धोकळ री धप[9] रही । सु दीवांण ने खबर पड़ गई । तरै दुरगदासजी नुं कैह ने मारवाड़ रा केइक सिरदार कने राखिया जोधा २ ।

---

**शबदार्थ--**

1. दाहनी खरची = दैनिक खर्च । 2. खेड़वां = किराये के सैनिक । 3. सैहल = सहज । 4. भरम घालियो = शंका उत्पन्न की । 5. कुंता थका = अन्दाज से ही । 6. किऊ न छै = कुछ भी नहीं है । 7. रेहणो = निवास के लिये । 8. माण = गर्व । 9. धोंकळ री धप = उपद्रव करने की इच्छा ।

**टिप्पणी--**

१-- सोमवार, अप्रेल 25, 1692 ई. । (ओझा० उदयपुर०, भाग 2, पृ. 590-91) ।

## तुक

रुक हतो रतनैस रो राम खत्री ध्रम राहा ।।१।।

मेर जिसो[1] मुकनेस रो, भारी उदीयापुर भाण ।।२।।

और पिण केईक आसामियां[2] उठै राखी, पटो दिया ।

हमें दुरगदासजी सीख मांगी, तरै दीवांण घोड़ो १, सोना रूपा री सोगात रो, ने सिरपाव ने हाथी रा रुपिया देने विदा कियो । ने डोढ़ महीना पछै भगवानदासजी पिण सीख मांगी[3] । तरै घोड़ो सिरपाव देने, हाथी रा रुपिया भगवानदास जी नु दिया । ने हाथी घोड़ा कपड़ा अै महाराज ने भगवानदासजी साथे मेलिया ने भगवानदासजी नु बिंदा किया ।

हमें दुरगदासजी तोड़ा ने दिली री तरफ गया । उठी कानो पेसकसी लेण सारू । ने भगवानदासजी म्हाराज री हजूर आया । ने मुकनदास सुजाणसिघोत चांपावत साथ भेळो कर डीडवाणां री तरफ गयो । मुलक में चोथ उघाई[4] । ने मेड़ते कंवर म्होकमसिंघ सु राड़ कीवी ।

## दूहा

पड़ी कंवर री पाघड़ी, ऊछळ पड़ियो आप ।
पड़ियो घोड़ो आपरो, तका धंणी थी टाप ।।१।।

कमधां आगै कंवरजी, खिसगा[5] नाळ खुसाय[6] ।
म्होकम सरबस मेळियो, रीत पराइ दराय ।।२।।

## बात

मुकनदासजी मगरा उपर गया । म्होकमसिंघ फेर पाछो कियो । पाछो आयो ने नाळ मांगी, पिण मुकनदासजी मानी नहीं । धूलकोट करने फेर राड़ कीवी । राड़ में खीसाणों[7] पड़ मेड़ते परो गयो । काजम बेग गांव उमरलाई सीवांणा री

---

**शब्दार्थ-**

1. मेर जिसो = पहाड़ के समान । 2. आसामियां = व्यक्ति, ठाकुर लोग । 3. सीख मांगी = रवाना होने की आज्ञा मांगी । 4. उघाई = वसूल की । 5. खिसगा = भाग गया 6. नाळ खुसाय = छोटी तोप छिनवा कर । 7. खीसांणों = शर्मिन्दा होकर, रोष करके ।

असाढ़ सुद ९ मारी[1] । पछै म्होकमसिंघ कंवर तांतु वस रा. जसकरण हरीसिंघोत खांप करमसोत उपर दोड़ियो । जसकरण आगे नागोर रा गाडा[1] लूटीया था ।

दुरगदास जी तोड़ा तरफ गया था,सु पुर मांडल, साहपुरो, बड़लो, सरवाड़ फूलियो, खारी रो ढ़ाहो गोड़ां सीसोदियां कनै और ही जायगा जायगा कने पेसकसी लीवी दरीबो मारीयो । तोडे सीसोदिया राजा रायसिंघ रा बेटा महासिंघ ने अनोपसिंघ मांहो मांह भायां रे रस[2] न थो सु अनोपसिंघ सु बागी थको फंट दुरगदासजी कने आयो थो । सुं उणरा ऊपर करनै दुरगदास जी असाढ वद १४[2] तोडे जाय लागा । सहर में भेळकी घाल दीवी[3] । राड़ हुई पछै कोट नु लागा । पछै केईक आसामियां कांम आई । पछै महासिंघ जी दुरगदास जी ने पेसकसी रा रूपया ४,००० च्यार हजार देने कूच करायो । दुरगदास जी अनोपसिंघ नु सीख दीवी । अनोपसिंघ आयो तरै दुरगदास जी नु पटो दीनो थो, सु पाछो परो दीनो । दुरगदास जी देव गांव आया । गोड़ चंदो भागो ।

## दूहा

पेहलां उंची पूंछ कर, चंदो भागो चोर ।
गमै लाज[4] गोड़ां इणा, जोम राखतो जोर ।।१।।

रा. नरसिंघ अखैराजोत खांप जोधो, दुरगदास नु कह्यो—

## तुक

उण दुरगा सु अरज की, मारी राखी मांम ।
मोनु जोरां मेटने[5], गोड़ां लियो गांव ।
जिण था निसदिन जीव में, ओ दुख रहै अजेस ।
तिण सु मोनु थापने, देव गांव दे देस ।

---

**शब्दार्थ**

1. गाडा=माल की गाड़ियां । 2. रस=मेल । 3. भेळ की घाल दीवी=शहर में उपद्रव शुरु कर दिया । 4. गमै लाज=इज्जत खो दी । 5. जोरां मेटने=बल पूर्वक नष्ट करके ।

**टिप्पणियां—**

१– रविवार, जून 12,1692 ई. ।
२– शुक्रवार, जून 3, 1692 ई.

आसावत सांभळ इसो, बोले दुरगो बोल ।
देवगांव मैं तो दियो, तूं नाहर बड़ तोल ।।३।।

बात

दुरगादास देवगांव नाहरसिंघ जी नु दियो । वळै भोळावण कंवर किसनसिंघ जुनियां वाला नु दीवी । किसनसिंघजी कह्यो-राज कूच करो, खुस्याली राखो. मो सूँ हुसी सुं इणां री उपर राख सूँ[1] ।' पछै दुरगादास जी अजमेर री तरफ आया । गांव मारीया कूच कियो । अजमेर रो सोबायत सफीखां रो बेटो पाछै आयो । राड़ हुई, ने तेजसिंघ जी काम आयो ।

तुक

आवियो कांम अगजीत छल[2], तु तिण वेळा तेजसी ।

बात

अजमेर रो सोबायत अजमेर गयो, दुरगदासजी कूच कियो ।
सं. १७४९ लागो । भाटी रिणछोड़दास दौड़ियो ।

तुक

मुख गुणचासा मांप, रिणछोड़ो रामा तणो ।
बड़ा बड़ी दै वाट, धाड़[3] भाटी दौड़ियो ।।

बात

रीणछोड़दास गांव डांवरो मारीयो । जोधपुर सुं काजमबेग रो बेटो अला-कुली चढ़ियो । सुजाणसिंघ जी साथे । सेतरावा वगेरा गांवा विगाड़ कर पाछा जोधपुर परा गया । पछै सुजाणसिंघ जी नु मनसब इजाफो, तोग मनसब मुरातब[4] आयो । सीवांणा री रदबदळ हुई । सुजाणसिंघ जी सीवाणे

---

शब्दार्थ–

1. उपर राख सूं=सहायता करूंगा । 2. अगजीत छल=अजीतसिंह के लिये । 3. धाड़=लूट मार । 4. मुरातब=(मुरातिब)=दर्जा, श्रेणी ।

कबूल कियो[1] । अर सीवाणां री तरफ कूच कियो । इतरा में खबर आई । देवगांव रा. नाहरसिंघ उपर गोड़ आया । कंवर किसनसिंघ जुनिया कैकड़ो सुं नाहरसिंघ री मदत भादवा सुद ११[१] गयो थो, सुं उठे काम आयो । आ बात सुजाणसिंघ जी साभळ ने गोड़ा उप्र चळाय ने पीसांगण गया पेहला पीसांगण आया । करण,जुंझार-सिंघ ने लेने जुनिया गया । किसनसिंघ जी रो कारज कीनो । ने साथ भेळो कियो । तरै गोडां नु चिंता ऊपनी[2], नै बीजापुर में गोड़ साथ भेळो कियो । राड़ री तयारी किवी । गोड़ां में मुदे गरीबदास वगेरे च र भतीजा उदैसिंघ वगेरे ने बेटा आठ अमरसिंघ, स्यामराम, मथुरादास, मानसिंघ, वगेरे । अठी सुं कवर करण जुंझारसिंघ केकड़ी साथ भेळो कियो । खारी ढावा रो साथ ने और नागोर रा गावां रो साथ बुलायो[3] । और भारी भारी आसामियां पीसांगण सुं सुजाणसिंघ जी मेली । सारी फौज भादवा सुद११[२] बीजैपुर आय लागी । गोड़ां गढ़ संभायो । वारै राठोड़ां डेरो कियो मुलक मारीयो, विगाड़ियो । घेरो दियां दिन २० हुवा । गढ़ तूटै सुजांणसिंघ जी नुं पींसागण सुं बुलाया । आसोज सुद १[3] बीजैपुर आया । आसोज सुद ७[४] हाको कियो[4] । आमा सामा आदमी घणां काम हाको पेस न गो । पछै मास ३ गोलां री राड़ हुई । कोट थोथो[5] कियो ने ठठड़िया वणाई ने मोरचा सांकड़ा लिया । धमधमा बणाया । गढ़ में सामान तूटो[6], भुखां मरै । पछै गोड़ गढ़ वारे नीसर गया । राठोड़ां रो साथ पाछै दोड़ियो । गोड़ मारीया, फतै हुई । मिगसर सुद ५[५] गढ़ लियो । १४ बीजंसिघोत कांम आया । गरीबदास जैसिंघोत, सामराम, मुथरादास, अभैराम वगेरे । पछै सुजाणसिंघजी जूनीयां जाय फैर पाछा आया । आसकरणजी ने बीजैपुर राख आया ने कूच कियो ।

उठी गुजरात सु नवाब जोधपुर आयो । सुजाणसिंघ जी नु जोधपुर

---

**शब्दार्थ–**

1. कबूल कियो = स्वीकार किया । 2. ऊपनी = उत्पन्न हुई । 3. साथ बुलायो = सेना बुलवाई । 4 हाको कियो = आक्रमण किया । 5. थोथो = खोखला । 6. सामान तूटो = रसद समाप्त हुई ।

**टिप्पणियां-**

१– (प्रथम) भादवा सुद 11, सं. 1749 वि. = शुक्रवार, अगस्त 12, 1692 ई. ।
२– (द्वितीय) भादवा सुद 11, सं. 1749 वि. = रविवार, सित०, 11,1692 ई. ।
३- आसोज सुद 1, सं. 1749 वि. = गुरुवार, सित०, 30, 1692 ई. ।
४– आसोज सुद 7 सं. 1749 वि. = गुरुवार, अक्तूबर 6, 1692 ई. ।
५– शुक्रवार, दिसम्बर 2,1692 ई. ।

बुलाया । ने म्हाराज सीवाणों दाबीयो थो । ने आप पीपलूद रेहता था । तठै अजमे रा सोबायत सफीखांन रो समाचार आयो–'महाराज मों सूं मिळो । मोंने श्री पातस रो समाचार आयो छै, म्हाराज ने मनसब देसां ।' तरै म्हाराज ठावो[1] आदमी नबाब कनै मेलियो । सुं नबाब सु बात करने कोल बचन लीना । जोधपुर महारा नूं देणो ठेहरायो पातसाहजी नुं समाचार चलाया । सुं अठारवे दिन पूठो समाचा आवै । तरै महाराज ने बुलावां जद वेगा आवे । सुं वादै समाचार पातसाहजी र इण भांत आयो । जोधपुर महाराज ने देणों कबूल कियो । तरै नबाब रा आदमी महाराज कने आया । म्हाराज उमरावां सिरदारां सुं बात कीवी । सारा कही- अछी बात छै । काम बणसी[2], तो बड़ी बात छै ओर तरै कोई चूक देखसां तो आप सांवठी फोज सुं जावसां । आपणों कुंही[3] बीगड़ै नहीं । कजियो करने पाछ आवसां ।' पछै महाराज पीपलांणा सुं आसोज सुद १०[1] कूच कियो । दुरगदासजी ने बुलाया । सुं आ बात मेळरी अजमेर रा सोबादार सुं करण री दुरगदासजी मन में बेठी नहीं । ने खींवकरणजी ने महाराज कने मेलिया । सो सींवाणां सूध सांथे आया । पछै खींवकरणजी वसीयां में गया । महाराज कूच कियो । उण सम महाराज कने मुदे उदेसिंघजी था । ने पेहला तो महाराज अजमेर रे पाखती मग गया । उठां सु सारी बात री चोकसाई[4] करण नुं मुकंददासजी ने अजमेर मेलिया । सु मुकंददासजी सफीखां रो बचन लेने महाराज ने अजमेर बुलाया, सुं महाराज अजमे पधारीया । सुं सेहर रे बारे डेरा दिया । माहवद ८[2] नवाब सु मिळिया । ने नवा कने सारी हकीगत पातसाहजी ने लिखाई । नै महाराज नबाब सुं सीख करने मग पधारीया ।

उठै सांभाळीयो[5] जोधपुर सुं सुजायत खां सीवाणै सुजाणसिंघजी ने बैठा गयो छै[6] । तरै महाराज साथ विदा किनो - चांपावत भगवानदास जोगीदासो वगेरे । ने वसीयां रो जावतो करायो । अंह सारा सीवांणा री तरफ आया, सा रंग दीठो[7] । महाराज नुं अरज लिखी-सुजायतखां सुजाणसिंघजी ने सीवाणै बेठा परो गयो । हमें ओ परगनो आंपणै सफीखां कनै इजारो कर लिजो ।' अै समाचा

---

**शब्दार्थ–**

1 ठावो = प्रतिष्ठित । 2. काम बणसी = कार्य होगा । 3. कुंही = कुछ भी 4 चोकसाई = जांच पड़ताल । 5. सांभळीयो = सुना । 6. बैठाण गयो छै = अधिकार कर दिया है । 7. रंग दीठो = स्थिति की जांच पड़ताल की ।

**टिप्पणियां–**

१– रविवार, अक्तूबर 9,1692 ई. ।

२– गुरुवार, जनवरी 19,1693 ई. ।

आया, तरै महाराज मुकनदास जी ने अै समाचार अजमेर लिखिया । सुं सफी खां ने कह्यो-मैहतो थां कनै आया था । सुं जाणियो थो जोधपुर मनमन्न दिरावसो । सुं तो थे कह्यो-हमार मगरे रेहो । हूं पातसाहजी ने अरज लिखुं छूं । महाराज म्हों सूं मिळिया । पाछै मोटा राजा छै. पातसाही बंदगी[1] कबूल कीवी छै । सुं हमें जोधपुर लिख मेलो, सुं पातसाह जी जोधपुर लिख मेलसी । सुं थे. जमाखातर[2] राखजो । सुं अे समाचार कह्या सु कूड़ा नीजर आवे छै । पिण म्है तो अठी आया । ने सीवांणो गांठ जायगा[3] म्हां नीचै थी ने उण तरफ वसीयां वेठी थी सुजायत खां ने सुजाणसिघ जी जायगा खाली देखने[4] दोनु सांमल था, सुं सीवाणैं जाय खालो कराय ने सुजाणसिघ जी ने वेसाणिया । सुं हमें वसियां ने दुख हुसी[5] । हमे थे सीवांणो पाछो दिरावो तथा इजारे देवो । तथा सुजायत खां सुजाणसिघ जी ने लिखो, सो हमार हासल[6] री खेचल[7] करे नहीं, हासल अनामत रहे । जितरैं जोधपुर वगेरे री सनद थे । पातसाह जी कने मंगाय देसो ।' अैह समाचार सफीखां सुण ने कह्यो भली बात छै । म्हांरो आदमी सीवाणैं सुजाणसिह जी कने मेळसूं । हाफज नांवे[8] आदमी १ सीवाणैं मेलियो । किरोड़ी थको आयो । सुं सुजाणसिघ जी सूं बात कीवी ने दरबार रो साथ भगवानदास जी वगेरे भेळा हुवा ने गांवा रा लाटा अटकाया[9] । उठी सीवाणां सु सुजाणसिंघ जी रो साथ आयो । मांहो मांह कजियो हुवो । उण कह्यो—म्हांनु पातसाह जी सीवाणां रा परगना रो हासल दीरायो छै ।' तरै सारा सिरदारां महाराज ने अरज लिखी-' सफी खा कियो सुं तो दीठो, दगो कियो । अठै पातसाह सीवाणों सुजाणसिघ जी नु दियो । हमें सफीखां सुं कासु हुवै[10]? आप हमें देस में उरा पधारो । उठै गया था. आहा जायगा खाली थी तो गई । हमें आपां सुं हुसी सुं करसां । हमार तो म्है सारा भेळा होय ने कजियो थापियो थो सुं जोधपुर सुं काजमबेग सुजाणसिघ जी री मदत आयो ने हासल उण ने दीरायो । ने म्हैं पिण मांहरै थोड़ो बळ जोर करने म्है पिण खायो । सफीखां रो कीरोड़ी काजमबेग ने सुजाणसिघ जी सुं मिळ गयो । सुजाणसिघ सीवाणों सझ बेठो छै[11], सूं आपां काढ देसां ।'

अै समाचार सिरदारां रा लिखिया महाराज मुकनदासजी ने लिखिया ।

---

**शब्दार्थ**

1. बंदगी=सेवा । 2. जमाखातर=धैर्य और विश्वास । 3. गांठ जायगा=महत्वपूर्ण स्थान । 4 खाली देखने=अरक्षित देखकर । 5. दुख हुसो=कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा । 6. हासल=कर । 7. खेचल=कर वसूली का तकाजा करना । 8 नांवें=नाम का । 9. लाटा अटकाया=खलिहानों पर प्रतिबन्ध लगवाया । 10. कासु हुवै=क्या हो सकता है । 11. सझ बेठो छै=मोर्चाबन्दी करके तैयार है ।

मुकनदास जी नवाब सफीखां ने कह्या । नवाब मनवारां री बातां[1] तो घणी कीवी । पिण निदान चौकस[2] जीव में आ बेठी तुरकां रे दगो थो । जाणता था, ललोपतो कर लगाय महाराज ने धीजाय[3] अजमेर राख ने पकड़ां । आहा वात निजर आयी । तरै मुकनदास जी महाराज कनै उरा आया ने सारा समाचार कह्या । तरै महाराज ने उदैसिंघ जी तो मगरा रे गांव समेळ विराजिया ने मुकनदास जी ने देस में मेलिया । सो मांकळसर आया । भगवानदास जी नु मिळिया। सारा भेळा हुय ने वसीयां री तरफ चढ़ीया । ने मुलक में धुंकल घालणो[4] ठेहरीयो । काजमवेग फळोधी रो गांव लटीयाळी मारी, सोझत री तरफ वसीयां उपर दोड़ियो ।

सं. १७५० लागो । काजम बेग ने सुजाणसिंघ रो साथ दोड़ियो ईसग उपर । सु भाटी जैसिंघ दे री लुगाइयां तीन पकड़ लाया । सु पेसकसी लेने छोड़ी, ने आगा सुं फैल जामनी[5] लीवी । फैल करण पावे नहीं । ने सीवांणा सु सुजाणसिंघजी रो साथ दोड़ीयो-

**तुक**

सुरजमल समीयाण, सोह[6] दोड़ावे साथ नु ।
रोहाड़ै रोकाविया, चोर करै चऊवांण ।।

**बात**

महाराज समेळ था, सु सफीखां तो घणो दिलासा लिखबो करीयो । पिण चोड़े[7] वात निजर में आय गई, तुरकां रे चूक छै । तरै महाराज समेळ सु कूच कर चांग बोड़ाणे और मगरे जैतारण रा गांवा होय सोझत रा पहाड़ां होय सिरीयारी सारण आय रहचा । ने भगवानदासजी ने राजसिंघजी अखेराजोत ने सूजो साहवखां धवेचो हरोळ किया, स चढ़ीया सु करमावस गया सु उठै राड़ हुई ।

**तुक**

आंबेरा अवसांण, कछवाहा मंडीया केहर ।

---

**शब्दार्थ–**

1. मनवांरा री बातां=शिष्टाचार की बातें । 2. चौकस=शंका । 3. धीजाय=विश्वास देकर । 4. धुंकल घालणो=उपद्रव करना । 5. जामनी=जमानत । 6. सोह=सारा । 7. चोड़े=प्रत्यक्ष ।

**बात**

उठी सीवाणौ सुं सुजाणसिंघजी रो साथ चढ़ीयो ।

**तुक**

सूजै करी कसीस[1] बाळीयाणो बाळियो[2] ।
गयो धवेचो गांव, असगतो ढाळै ।
सीस सूजा वालो साथ सीदत धवेचां सरकरे ।
बंध मवेसी वांधने हद दिखाया हाथ ।

**बात**

मिरजो भवरांणी महेचां उपर आयो । रावळ भारमल बात करी । सुजाणसिंघ जी री मारफत मिरजा सुं मिलियो । उठै केसरीसिंघ पिरथीराजोत गोड़ रे ने सुजाणसिंघजी रे मिरजै केहने मेळ करायो । भेळा जीमाया, वेर भांजीयो[3] । जोधपुर गया । पछै दरबार रो साथ भेळो होय ने गांव मारीया सुजाणसिंघजी धोंकळ सुण ने जोधपुर सुं आया । सुजातखां ने मिरजो पिण[4] आया । पछै नवाव तो परो गयो । ने मिरजै भवरांणी मोकळसर मारीया ने बीजाई[5] गांव मारीया ने पाछा आया ।

**तुक**

हेके दळां हमेस, तांई अजमळ सूजै तणां ।
धरक हुवै धोंकळां, इसड़ो पड़ै अंदेस ।।

**बात**

मिरजो गांव मार ने कुंडल जाय थो, सुं मारग में तेजसिंघ ने मुकनदासजी मिरजा री बेही[6] उप्र जाय पड़ीया । सुं वहीर लूटी । इण वात पर मिरजो मोकळसर म.रीयो ने महाराज उठा सुं घाटा सिरीयारी सुं कांगसी सिणली री तरफ पधारीया था । सुं अठे औ विचारीयो दुरगदासजी बचनां बचन[7] बेराजी होय घरे

---

**शब्दार्थ—**

1. कसीस = प्रयास । 2. बाळियो = जलाया । 3. भांजियो = नष्ट किया । 4. पिण = भी । 5. बीजाई = दूसरे भी । 6. वेही (वही) = सामान आदि । 7. बचनां बचन = बातचित में ।

जाय बेठ रह्या छै । लोगां मांहो मांह आपरे मतलब कोई बचन कह्या । मांहरी चिंता किणी नु नहीं । दुरगदासजी सरीखो[1] घरै बेठो, आ वात आछी नहीं । साराई उठै दुरगदास जी कनै जाय ने ले आवां । तरै सकोई सिरदार महाराज साथै दुरगदास जी ने लेण चढीया । ने भीमरलाई समाचार मेलिया । सु पेला दुरगदास जी सामां आया । महाराज रे कदमां लागा । निजर निछरावळ करने महाराज ने घर में पधराय[2] ने बेठा । बातां करी । अजमेर रा सफी खां री बातां निकळी । महाराज फुरमायो-ठाकुरां थे तो म्हानैं अजमेर जावतां पालिया था, सुं उवाइज[3] हुई । कांई गरज पली नहीं । तुरकां रे चूक दगो थो । सु थांहरो बचन म्हानै याद अ यवो करीयो[4] । सुं हमें सारो कांम थे हाथ संभावो । म्है उठी गया तरै पाछा सु धरती लोकां दाबी । हमें सारी बातां थांह सु[5] आछी हुसी ।' तरै दुरगदास जी पाछी अरज करी--धन[6] म्हारों भाग श्री जी म्हारै घरे पधारीया । हूं चाकर छूं । आदर मान[7] रा भूखां छां । ने महाराज ने म्है सनमुख न दीठा[8] रूखा दीठा तरै हूं कानो[9] पकड़ बेठो । हमें दोय महीनां पछै महाराज री कीरपा रो पूरो परचो[10] हुवां सु हजूर आय चाकरी करसूं । हमार आप पधारै ।' आह वात सुणने महाराजा बेराजी हुवा । सीरावणी[11] पिण क्युंही जीमिया कींऊ न जीमिया, चढने पाछा कुंडल उरा आया ।

उठा सु मोकळसर आया । इणां सिरदारां मनवार कीवी न साथे हुवा । उठा सु पहाड़ां में नाळ रे नांके सेहळे आय रहिया । उदैसिंघ जी काम रा मुखिया था । महाराज तो सेहले बिराजिया ने मुकंनदास जी तेजसिंघ जी हठीसिंघ जी साथ भेळो करने दोड़िया । सु तुरकां रा थाणां नवा था सु उठावणा मांडीया ।[12] तरै काजमबेग आयो, तरै आधा उतरीया । उठै नौरंग पठाण आय पोहतो सु राड़ हुई । हठीसिंघ जी घोड़ा उपर सु पड़ीयो सु पकड़ाणो । सु नोरंग खां पकड़ने जोधपुर ले आयो, सु बेड़ियां घाल कैद कीनो ।

पछै काजमबेग पाटोदी मारी । सबळसिंघ गौयंददासोत रो साथ कांम आयो । ने श्री हजूर तालकै रो साथ दरबार रो थो सु जालोर री चौथ लेण ने गयो थो, सु उठै कजियो मांमलो हुवो, तिण में साथ कांम आयो, सु तो आयो, ने बाकी

---

**शब्दार्थ—**

1. सरीखो = जैसा । 2. पधराय = बैठाकर । 3. उवाइज = वही । 4. आयवो करियो = आता रहा । 5. थांह सुं = तुम से । 6. धन = धन्य । 7. आदर मान = आदर सम्मान । 8. सनमुख न दीठा = उदासीन देखा । 9. कानो = तटस्थ । 10. परचो = प्रमाण । 11 सीरावणी = नाश्ता । 12. उठावणा मांडीया = हटाने लगे ।

रा उरा आया।[1] दरबार रे साथ जाळोर रे गांवां चोथ री चिठियां[2] मेली थी। उण समै जाळोर कमाल खां था। तेजसिंघ जी मुकनदास जी फलोधी री तरफ गया था। चांखा रो थाणायत तुरकां रो भागो। सुजाणसिंघ जी रो साथ कांणाणा रे थांणै सु चढ़ ने पाटोदी रो बास[3] मारीयो। पछै सबळसिंघ जोधो आय ने बड़ा बेटा ने सुजाणसिंघ जी कने मेल ने हासल देणो कियो[4]। मदनसिंघ जोधो नवाब सु मिळियो थो। सु काजमबेग साथे वसी रा गाड़ा उपर दोड़ियो, गाडा लूटीया। ने पेहला मदनसिंघ विखं दोड़िगं थो, ने पछै नवाब रे चाकर रहीयो। सुजाणसिंघ जी रो साथ दोड़ियो सु भायल पांचा मनावत नु पीपलाणै में मारीयो। पांचा रो बेटो धाड़ै हालियो थो, तिण वासतै। ने अजमेर सोबो सफीखां थो सु जेठ सुद ९ मुवो।[1]

एक फकीर लीबासी[5] फितूर उठायो, ने अकबर नांव धरायो। काजमबेग उण पाछै चढ़ीयो। फकीर नाठ गयो, ने इण फकीर लाल डेरा करने कितरायक मेवाड़ां ने ठगीया ने केई मारवाड़ रा सिरदार पिण भेळा हुवा, दस दिन आटो अठी उठी सु करने खवाड़ियो, काजमबेग सुणियो तरै फकीर लबासी नाठ गयो।[2]

सं. १७५१ लागो। श्री महाराज सीवाणै रे गांव सहेली बिराजता था। ने सुजातखां जोधपुर थो। ने हमें अजमेर रो सोबो हैमद खां ने हुवो। सु सुजायतखां अजमेर गुजरात रो चालियो आवसी।

ने गुजराती नारायणदास कलुंबी आगे महाराज श्री जसवंतसिंघजी री सलामती में[6] पटण में दरबार में चाकर थो। पछै सुजांणसिंघजी री बिरादरी में पातसाही मनसब पायो। सु नारायण दास पातसाह जी रे हजूर जाय ने पातसाही औहधी फरमांन दुरगदासजी रे लायो, ने फेर बात करण सारू[7] आयो, ने कह्यो-

---

**शब्दार्थ –**

1. उरा आया = लौट आये। 2. चोथ री चिठियां = चौथ वसूली के मांग पत्र। 3. बास = इलाका। 4. देणो कियो = देना स्वीकार किया। 5. लीबासी = धूर्त्त। 6. सलामती में = जीवन काल में। 7. बात करण सारू = समझौता वार्ता करने के लिए।

**टिप्पणियां-**

१– बुधवार, मई 23,1694 ई.।

२– मूंदीयाड़०, भाग 2, पृ. 198-199।

बैगम नु ने अकबर रा बेटा सुरताण नु देवो ने थे मनसब लेवो। इण नरायणदास पेहला पातसाह सु अरज कराई थी - 'दुरगदास सु पेहला बात कर राखी छै। सु सुरताण ने देसी।' तिण उपर नरायणदास साथे पातसाही अैहदी मेलिया। सु नरायणदास पेहली तो सीवांणै आयो। सुजाणसिंघजी सु मिळियो। पेहला तो डोफर री बातां[1] घणी कीवी। पछै दुरगदासजी कनै गयो। केई बातां कीवी। तरै दुरगदासजी कह्यो-थांरी थोथी[2] बातां दीसे छै। इण बातां सु मेळ होय नहीं। पेहला महाराज रो मनसब, मारवाड़ जागीर में, ने खरची आवे जद सुरताण नु देवां।' तरै नरायणदास बिलखो[3] मुंढ़ो कर ने सिवाणै गयो। फेर पाछो दुरगदासजी कनै आयो। बातां में भरमाया। फेर दुरगदासजी नरायणदास नु सीख दीवी। पासपाह रा कवल वचन अैहदी[4] साथे ले आयो थो, सु पाछो ले गयो। पातसाह कनै झूठो पड़ियो।

रा. हठीसिंघ सांवतसिंघोत चांपावत जोधपुर में नवाब रे केद थो सु महाराज कमालखां जालोरी री मारफत नवाब ने हाथी १ देने हठीसिंघ नु छुड़ायो। तेजसिंघजी मुकनदासजी आळोच करने[5] दुरगदासजी कनै आया। सु माहो मांह ओळुंभा[6] आया। दुरगदासजी कह्यो-'मों में चूक काऊ? सु सारा मौं सु रुख चोर बेठा। ने म्है ही सारी सभा रो रंग ओर भांत दीठो, तरे हूं ई गोसो पकड़ बेठो। हमें सारा ही सुमना हुवो तो हूं चाकरी ने तैयार छूं।' तरै तेजसिंघजी, मुकनदास जी कह्यो - 'आप और तरै विचारो मती। अै सारा थोक आछा हुवा सु आपरा किया हुवा। आप में कोई किणी बात रो चुक काढे, सु मुरख होय सु काढ़ै। आप सरीखो दूजो छै कुण। हुकम तो सारो आपरो रेहसी। सारा ही आपरा कहिया में रहसी। आप श्रीम्हाराज री हजूर पधारो।' तरै दुरगदास जी महाराज री हजूर आया। मसळत करने सारा ही महाराज ने ले चढ़िया सु रायथळ री तरफ गया। जाळोर जोधपुर बिचै बसता था[7] तिणां सारा ही कनै सु पेसकसी लीवी। नै काजमवेग पिण चढने आयो। पछै महाराज ने सारो साथ अठी उठी फिरबो कियो। काजमवेग पछै परो गयो। ने महाराज कोटड़ा री तरफ पधारिया तुरक पाछा फिर गया।

ऊदैसिंघ जी सदाई[8] महाराज साथे रहीया ने और सिरदार कदेई महाराज

---

**शबदार्थ—**

1. डोफर री बातां = व्यर्थ की बनावटी बातें। 2. थोथी = खोखली, प्रभावहीन। 3. बिलखो = उदास। 4. अैहदी = बादशाह के सचिवालय का एक अधिकारी विशेष। 5. आळोच करने = परामर्श करके 6. ओळुंभा = उपालम्भ। 7. बसता था = आबादान इलाके थे। 8. सदाई = सदैव ही।

भेळा, कदेई महाराज रे काम जुदा जुदा किणी किणी तरफ रह्या। जोधपुर रो नायब काजमबेग मुवो। ने महाराज कोटड़े पधारीया ने पेसकस लीवी सुजाणसिंघ जी रो साथ धवेचां माथे दोड़ियो[1]। कजीया किया। महाराज कोटड़ा सुं भाटीयां रा गांवां उपर जाय ने वाप सरीखा गावां कनै पेसकसी लेने गांव मारीया, ने पोहो-करण होय ने पाछा देस पधारीया। काजमबेग रा बेटा अलाकुली ने भगवानदास चढाय ले गयो सुं रीड़मलसर में पोता। जीवण नुं मारीयो। हमें सुजायत खां गुज-रात सुं पाछो जोधपुर आयो। श्री महाराज जी कुंडल रहीया। दुरगदास जी सीख मांग ने भीमरलाई गया। गुढ़े जाय बेठा।

सं. १७५२ लागो। सुजायत खांन जमैवंधी[2] लेण ने असवार हुवो। सोझत सुं लसकर खां मेवाती ने बुलाय ने काजमबेग री जायगा नवाव राखियो। महाराज रे ने उदैसिंघ जी रे मांहो मांह अणवणत[3] हुवो। तेजसिंघजी मुकनदास जी एकट होय ने महाराज री तरफ जाय ने पछै वसीयां री तरफ गया। श्रीजी छड़ा साथ सुं कोट कोलर पधार ने लसकर खां सुं राड़ कीवी सु श्रीजी री फतै हुई।[1] पछै रांणा जी रे महाराज परणीजिया।[4]

**कवत**

राजा कुंडल रहे, रिधु सुरज राठोड़े।
भड़ां अध मनै भुंडा, दिस दिस धूप दौड़े।।
उदैसिंघ सु ड़तै, पुरकस वेधो पड़ियो[5]।
जद राजा अगजीत, खेगै[6] दुरगा दिस खड़ियो।।
कीच बीच बात सारी कही, आयो दिल उकराळियो।[7]
सामतां देख मोटो सहूं, दुरगै नेह दिखावियो।।१।।

---

**शब्दार्थ-**

1. धवैचां माथे दोड़ियो = धवेचां राठोड़ों पर धावा किया। 2. जमैवंधी = भू-राजस्व। 3. अणवणत = अनबन। 4. परणीजिया = शादी की। 5. वेधो पड़ियो = विरोध हुआ। 6 खेगै = घोड़ा। 7. उकराळियो = अधैर्य से, अतिशीघ्रता के साथ।

**टिप्पणीयां-**

१- कोट कोलर गांव में यह लड़ाई माघ सुदी 5, 1752 वि. = मंगलवार, जनवरी 28, 1696 ई. को हुई थी। (जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ० 92; राजरूपक०, पृ० 340-43)

सुण आसावत सुतन, धंणी नु दीनी धीरप।[1]
विखो आपणै वसु[2], करो सोढां री कीरप॥
होय, धरा जद हाथ, चलाओ त्युंई चालसां।
वहै आज सूँ वहोला, लाख बात जी भालसां॥
आणियां मनाय पाछा अठै, सकाजै महाराज नूँ।
सैह कही बात धरबिध[3] समझ, सोहड़ां दुरग समाज नूं॥२॥

उदैसिंघ उण अमन, आध कज पकड़ै आंटो।
डेरां बैठो दूर, छाड़बा हुवो छांटो॥
भाई बंध भतीज, मनांग्यानां[4] था मेळू।
जीव खरखसो[5] जांण, एकठा रया उखेलू[6]॥
संप[7] री एक न वणी सलण, कितां जु जु मत मत कह्या।
दुरगेस मुकन राजा दिसी, रस एकारो थप रहा॥३॥

मसलत सुं महाराज, कूच कांठा सुं कियो।
गाडे दुरगो गयो, दिखावा[8] टाळो[9] दियो॥
मतलब काज मुकनेस जुदेई फिरीयो जांणै।
चांपा होय चितभंग[10], थया[11] सैह आप ठिकाणै॥
इळ डोह डोह[12] गिर अधपती, मांग ढाल कुर माळ रै।
आय ने कोट कोलर अजो, नाके बैठो नाळ रै॥४॥

**बात**

लसकरीखां डाव[13] देख ने महाराज उपरै आयो। राड़ हुई। लसकरीखां भूंडै हवाल[14] नाठो। श्री महाराज री फतै हुई।

---

**शब्दार्थ-**

1. धीरप = धैर्य। 2. आपणै वसु = अपने लिये। 3. धरविध = अन्तरंग। 4. मनांग्यानां = अन्दर ही अन्दर। 5. जीव खरखसो = प्राणों की हानि। 6. उखेलू = छोड़ने को तत्पर। 7. संप = एकता। 8. दिखावा = दिखाने के लिए। 9. टाळो = अलग हो। 10. चितभंग = भ्रमित। 11. थया = चले गये। 12. डोह डोह = भ्रमण करके। 13. डाव = दाव, अवसर। 14. भूंडै हवाल = दुर्गति से।

तुक

ऐकाएक अभंग, राड़ कर उभो राजा ।
जैत पाय अगजीत, बजाया फतै रा बाजा ।।

बात

महाराज रा आगला बडैरा परवाड़ा[1] कीना सुं प्रवाड़ा इण परवाड़ै माथे आद कर बताया छै–

कवत

'मलीनाथ' जु तिम, भिड़ै, पतसाह भगाड़ै[2] ।
'मैहमद' नु 'रीड़माल', पगां तल दीध पछाड़ै ।।
बंध[3] 'साह बहलोल', छत्रपती जोधे छोड़े ।
जवन[4] 'धडूक' जिसो, गाजियो सातळ गोड़े ।।
पाधोरिया[5] 'साह पिरोज' नु, सुरजमल सावासीयो ।
'दालतखान' सूं मेटियो, 'गांगे' दूंद लगासीयो ।।१।।

राव 'माल' दळ मेल, लीध सैरसाह लड़ाई ।
जावल 'साह जलाल', पांडू री संन पजाइ ।।
हमजो 'चुहड़' हण्यो[6], बार जगहथ बंधायो ।
'अकबर' कटकां आवड़ै, चिरपटिया चाढ़ चलावियो ।
काढ़ियो घेंच 'मुदफर' करण, 'उदैसिंघ' बळ आपरे ।
असुराण मेट चाळे इळा, सो विरदां चाळे बापरे ।।२।।

'सूरसिंघ' तद बैंहस, घैचीयो बाहादर ।
'अंबरसाह[7]' ऊपाड़, दिखण सिर नांखी चादर ।।
'गजन' करै गजगाह, खुरम' 'साहजान' खिसायो ।
जरा लाय 'जसराज', उजीणी लोह उठायो ।।

---

शब्दार्थ–

1. परवाड़ा = प्रसिद्ध कार्य । 2. भगाड़ै = भगाया 3. बंध = बन्दी बनाया । 4. जवन = मुसलमान, यवन । 5. पाधोरीया = परास्त किया । 6. हण्यो = मार डाला । 7. अंबर साह = मलिक अम्बर ।

दिखळाविया हाथ आछा दुरंत, साहैजादां मन संकीयो ।
अवरंग मुराद ऐकण अणी, हिये चढ़ने हाकीयो[1] ।।३।।

**बात**

महाराज रो ओ परवाड़ो पराकंम सुण नै रांणो जैसिंघ राजी हुवो ।

**कवत**

वाको फेल इत वहै, असूरां वीढवा रै ।
जस सांमळ जैसिंघ, रूडां कमधज राज रै ।।
खुस बखती[2] खुमांण, प्रथम नाळैर पठायो ।
साहो थपे स लगन, तुरत परणण तैड़ायो[3] ।।
उजाळा हुवा हिंदू इता, आज अभंग अगजीत सूं ।
जठै जठै जसराज रो, बधीयो बंस छतीस सूं ।।१।।

जान[4] मान कर जदै, अजो उदयापुर आयो ।
साहो गोदलुक[5] सहे, पेख मांढो[6] मलपायो ।।
सीस सैहरो बांध, घूमरो जाजै घोड़ो[7] ।
तोरण बांधै ताम, जदै हथलेवो जोड़े ।।
बेध(द) बिध चंवरी वेठ, बिचै [मंत्र] भण भलो ।
फेर राच फैरा फिरै, लाडी परसी लाडली ।।२।।

**बात**

पछै मनवारां हुई । भेला जीमिया, गाळिया गाई[8], लाड कोड हुवा ।

**कवत**

महाराज परण डेरा मछर, आ कीरत उजाळी ।
........ .. .................................... ........।।

---

**शब्दार्थ–**

1. हाकीयो = चलाया, सामना किया । 2. खुस बखती = अच्छे समय का । 3 तैंड़ायो = निमन्त्रित किया । 4. जान = बारात । 5. गोदळुक = गोधूलि मुहूर्त । 6. मांढो = मण्डप, कन्या पक्ष । 7. जाजै घोड़ो = घोड़ों का समूह । 8. गाळियां गाई = व्यंग भरे गीत गाये ।

उठी मास मास आप वहेत मेपा विचारे।
देवाळिये बिध देख, परंण ने उरा पधारे।।
राणा रे वखरास, सदा थी वेटा सेती।
मेल कीध महाराज, कुली केही पाछली केती।।

**बात**

पछै महाराज आपरे डेरे आया–

**कवत**

आई इते अवाज, गूज बातां गैवाऊ[1]।
कागद वेध ही कही, बळै कह गया बटाऊ[2]।
दुरगै वँगम दीध, मैळ री बात मंडाई।
बात राख दिल मांह, इसी बिध निजरां आई।
तालकै ऐक बेठो तरै, गांठ बांध[3] मन गोमरे।
सावधान हुय जसराज सुत, भरम हुय रहैसी भूमरै।।१।।

जुगत सुणै अगजीत, बड़ी बातां दुरगारी।
अखाट भारी अकळ, धीरवंत चित में धारी।।
ऊदै करण अण राग, रयो थो चाकर राणै।
म्हैमत फेर मनाय, आप रै साथे आंणै।।
पाट थंभ[4] जांण भड़ पतंग रे, आचै जांपा आगळा।
त्रिप बिया तिलक अगजीत, त्रिप कनजा चढ़ती कळा।।

सं. १७५३ लागो। पातसाहजी रो हुकम सुजातखां जी ने आयो। रुपिया ने मुनसब दुरगदासजी नु देने ज्युं हुवै तिऊं सुरतांण नु हजुर मेल्हो। सुरतांण राठोड़ा रे कनै, तिण सु पातस्याही नाम सु आबरु[5] रहे नहीं। ने संसार में भांड हुवां छां[6]। पातस्याह रे पोतो पोती राठोड़ां रे घरे छै।' इण हुकम उपर सुजायतखां

---

**शब्दार्थ–**

1. बातां गैवाऊ=गुप्तचरों के समाचारों से। 2. बटाऊ=राहगीर। 3. गांठ बांध= बात को मन में रखकर। 4. पाट थंभ=सिंहासन का स्तम्भ, प्रमुख व्यक्ति। 5. आबरु= इज्जत। 6. भांड हुवां छां=हंसी मजाक का साधन बन रहे हैं।

असवार हजार सतरै सुं गुजरात सुं जोधपुर आयो। छानै छानै कागद दुरगदास जी नु लिखियो–पातस्याह जी इण बात रै पले आयो छै, ओ दाव छै । चूको मती, मेळ करो । ने सुरताण नु म्हारै हवाले करो । पातस्याह जी री हजूर मेलो । थे मनसब ल्यो । ओ कागद बाच ने दुरगदासजी चित चलायो[1] । कानां कुसी करड़ो करै बेंत लगायो । पाछा लिखिया परठ अेह बात कुहाड़ै ।[1]

श्री महाराज मेवाड़ सूँ कूच कर मारवाड़ में पधारीया । म्हाराज दुरगदास जी सुं मिळिया । दुरगदासजी केयो–लोक अे बातां वणावे छै[2] । पिण हूं तो आपरा मतलब रे आटै काम बणाऊं छूं । आप खुस्याली राखो । पेहला दरबार रो काम कर सूँ । ने मतलब काढ़ सूं[3] । हूं आप सूँ बेमुख कोई होऊं नहीं । इतरा दिन आप आळस कियो । हमें देखो तो सई, बरस दिन में धरती सारी वाळ सूँ, ने घेर सुं । जिण भांत धरती घरै आवसी जिण भांत आंण सूँ । हूं आपरी चाकरी में छूं । आप उतावल कर मन में और तरे[4] कोई दोख आंणो मती । तमासो देखो, पासा रो ढाळ देखो । काहूं हुवे छै । म्हारी चाकरी आफेई[5] निजर आवसी । इण भांत दुरगदास जी क्यूं अरज बिनती कीनी । महाराज अे बातां सूण ने मन में दुरगदास जी सूं संप आणियो[6] । ने इण बात में मुकनदास जी पिण सामल था ।

हमें १७५४ लागो । श्री महाराज दुरगदास जी ने फूरयो-म्है थांहरी बात मानस्यां तो पछै राज किण तरै करसां । ने दूजा री बात मानी है, तो ठाकुरां थे मानी है । थ्हांरी इसी कांई गैर बात[7] है सुं कांई बात म्हैं मांना ।' घणी आछी तरह सुं पछै परधानगी रो सिरपाव दीनो चांपावत मुकनदास जी दुरगदास जी री तरफ सुं काम करै । उदैसिंघ जी ने और बीजाई चांपावत रीसाय गया ।[8]

---

**शब्दार्थ–**

1. चित चलायो = विचार करने लगा । 2. वणावै छै = बना रहे हैं । 3. मतलब काढ़ सूं = कार्य करूंगा । 4. और तरे = अन्यथा । 5. आपेई = अपने आप । 6. संप आणियो = मेल किया 7. गैर बात = बुरी बात । 8. रीसाय गया = नाराज होकर गये ।

**टिप्पणी–**

१– शाहजादा मुहम्मद अकबर ने दक्षिण की ओर जाने से पूर्व अपने पुत्र बुलन्द अख्तर और पुत्री सैफितुन्निसा को राठौड़ दुर्गादास को सौंप दी थी । तब राठोड़ दुर्गादास ने उन दोनों को गुप्त रूप से मारवाड़ में रखा था । इन्हीं दोनों को बादशाह औरंगजेब वापस प्राप्त करना चाहता था । अतः उसने अहमदाबाद के सूबेदार सुजायतखां को यह कार्य सौंपा । शुजायत खां ने ईसरदास नागर के माध्यम से राठोड़ दुर्गादास से बातचीत की ।
(फतुहात०, पृ. 167 अ; दुर्गादास राठोड़०, पृ. 111–113) ।

पछे दुरगदास जी सुरतांण नु बाड़मेर सुं लेने जोधपुर आवता था। मारग में पालड़ी महाराज रा डेरा था सुं उठा सुं महाराज नु लेने जोधपुर आया। निबाब सूं मिळिया। पछै नबाब कनै पातस्याह ने अरज लिखाई। तरै महाराज रे नावें मुनसव जाळोर हुई। डोढ़ हजारी जात पांच सो असवारां रो मुनसब हुवो। ने मुकनदास जी रे मुनसब में पाली हुई। छव सदी जात ने च्यार सो असवारां रो। पछै दुरगदास जी आप भाई भतीजां बेटां पोतां सुधो मुनसब लियो। आसामी जणा १३ सूं। मेड़तो पट्टण वगेरे छव ठोड़। सुं दुरगदास जी री जागीरी रो कांम भंडारी विठलदास रे जुमे थो[1]। तिणां रा भाई भतीजा रेहता। ने आप पिंडा श्री महाराज कने रेहता। रा० रुघनाथसिंघ चांपावत मुकनदास जी रो भाई बिरादरी माहे आसामी १३ सू मुनसव लियो। दुरगदास जी आपरे ने बिरादरी रे तो पेहला मुनसव ठेहराय राखियो हीज थो।

पछै दुरगदास जी अकबर रा बेटा सुरतांण ने बेटी नूं लेने दीखण पातसाह रो हजूर गया।[1] सूरतांण नु पातसाही हजुर पोंहचाय ने आप पाछा देस आया।

नै श्री महाराज सं. १७५५ जाळोर पधारीया, ने जालोर में राजधानी बंधाई। ने दुरगदास जी में कोई मोटो चूक[2] तो है नहीं ने भारी चाकर थो, मोटी चाकरी[3] थी, जिण सुं आपरो मुनसव जुदो करण जू न थो। तिण में ई मेड़तो लियो सुं ठीक नहीं। ने बीजूं[4] बखत देखतां[5] जालोर ही दुरगदास जी जिसो मोटो चाकर हुवे तरे हेटे आंणै।

हमैं सं. १७५५ लगायत १७६३ तांई जालोर राज कियो। चांपावत उदैसिंघ जी ने श्री महाराज जाळोर साथे ले गया। ने जेतावत उरजनसिंघ जी जाळोर श्री महाराज कने रया। सुं इणां दोनु ही सिरदारां ने श्री महाराज बावोजीं कैह बतळावता[6] ने घणो मुलायजो राखता। ने घणां मुतसदी भंडारी विठलदास, व्यास

---

**शब्दार्थ**

1. जुमे थो=सौंपा हुआ था। 2. मोटो चूक=भयंकर अपराध। 3. मोटी चाकरी=महत्व-पूर्ण सेवाएं। 4. बीजूं=दूसरा। 5. बखत देखतां=समय को देखते हुए। 6. बतळावता=सम्बोधित करते।

**टिप्पणी—**

१— राठोड़ दुर्गादास स्वयं शाहजादा अकबर के पुत्र व पुत्री को लेकर बादशाह औरंगजेब के पास ब्रह्मपुरी नामक स्थ न पर पहुंचा। तब शुक्रवार, मई 20, 1698 ई. के दिन उसने बादशाह से भेंट की।

दुरणाचारज प्रोहित रिणछोड़ ठावा । ने फेर ही मुतसदी खवास पासवान, व्यास पुरोहित जाळोर गया । कितरायक सिरदार मारवाड़ में आप आप रे ठीकांणै रह्यो । तुरकां ने उधड़ो[1] पइसो कोई परो देता ने मुलक रो दोड़ा धावो वसैख[2] थो, सुं बोहत हुवो । ने कितरायक सरदार मतै पातसाह सुं पेहलाइज सरफराज[3] हुवा था ।

हमें श्री महाराज सांचोर रे गांव होठळू रा चूवांण लालसिंघ तथा चतरभुज दयालदासोत रे परणीया था, सु श्री चवाण जी रे सं.१७५९ रा मिगसर वद १४[1] तो महाराज कुमार श्री अमैंसिंघ जी हुवा ने सं. १७६३ रा भादवा वद ८[2] कंवर वखत सिंघ जी हुवा । घणां उछब हंगाम[4] हुवा ।

जालोर में चांपावत उदैसिंघजी ने जेतावत उरजनसिंघ जी ने भंडारी व्यास पिरोहित वगेरे चाकर था । ने परधानगी रो कांम चांपावत मुकनदासजी दुरगदास जी थकां करता । दीवाणगी भंडारी विठलदास । सु जाळोर री पेदास आमदनी गोलख[5] हुती सुं पांतीयां[6] घाल ने आथण री आथण[7] बेंच लेता । पांती च्यार हुती । तिण री विगत–

१. पांती एक चांपावत उदैसिंघजी आपरी लेता ।

१. पांती एक जेतावत उरजनसिंघजी उरी लेता ।

१. पांती एक भंडारी विठलदास व्यास दुरणाचारज लिखमीचंद वगेरे चार पांच जोरदार चाकर था सुं बेंच लेता ।

१. पाती एक श्री महाराज ता. रा खरच नुं राखता जिण सुं काम चलावता ।

---

**शब्दार्थ-**

1. उधड़ो = अनुमानित । 2. वसैख = विशेष । 3. सरफराज = सम्मानित । 4. उछब हंगाम = उत्सव और खुशियों के समारोह । 5 गोलख = नकदी । 6. पांतीयां = हिस्से । 7. आथण री आथण = नित्य सायंकाल में ।

**टिप्पणियां—**

१– शनिवार, नवम्बर 7, 1702 ई. ।

२– मंगलवार, अगस्त 20, 1706 ई. ।

भंडारी विठलदास दीवाणगी रो बर हुकम कर तो । दूजा सिरदारां ने जाळोर माफक[1] जागीरी पटो दियो थो। केइक कने रेहता, कई गांवां में रेहता। पातस्याई सोबादारां ने गांवों रो टको[2] परो देता। ने दूजा चाकरां ने आजीवका विठलदास रे मन जांणी[3] कर दीवी। सुं अंतस[4] तो मरजी रो जोर सारां ने चाकरी रो छतो रह्यो ने आजीवका तो कामेतियां[5] रे हाथ। सुं इणा रो सकरड़ पणो पिण जादै, सुं कर दियो जिण माफक में ई दिन काढ़ता । ने जाळोर री कारकूनी तो श्री दरबार रे हाथ। बाकी सारा ओधा[6] विठलदास रा राखिया रह्या। इण तरै पांतियां बेंचे। तरे राजा रा चाकरां ने काहू मिळै[7] ने काम कांई हाळे।

तिण उप्र कितरायक दिन तो लिया गया। इण तरै सुं श्री महाराज ने घणी दोरी लागे। पिण बेंत प्होंचे नहीं[8]।

पछै मेड़तियां री आसामियां मेड़तिया किल्याणसिंघ रार्जसिंघोत आलण्या-वस ने दोयेक फेर श्री महाराज रे दरसण मुजरो करणे ने मारवाड़ सुं आई थी। तिणां राज रो ओ सरूप[9] देख ने हद सूदी[10] अरज कीनी--आप ने जोधपुर ल्हैणी छै का नहीं। आ चाल भली नहीं। तिण उप्रे पाछो फुरमायो–जाणां तो सारी छां, पिण ढब[11] थे देखोई छो।' पछै उणां री अरज सुं जाळोर में बंदवसत री विचारी। तरै उदैसिंघ जी उरजनसिं जो ने खारी लागी। हमें दोनुं जणां मिळने मोटो पाप विचारीयो[12]। ने नागोर ईंदरसिंघ मोहकमसिंघ ने छाने कह्यो मेलियो-म्है महाराज कनै रेह ने पिसताया छां। आप चढ़ने जालोर वेगा पधारसी। हमें जेज करसी नहीं। हमें कंवर म्होकमसिंघ[1] खुस्याल हुय ने जाळोर उपर नागोर सुं चढ़ीयो।

---

### शब्दार्थ–

1. माफक=अनुसार, अनुरूप। 2. गांवों रो टको=गांवों का कर। 3. मन जांणी=इच्छानुसार। 4. अंतस=अन्त:मन से। 5. कामेतियां=कार्य करने वाले कर्मचारी आदि। 6. ओधा=पद। 7. काहू मिळै=क्या मिलता। 8. बेंत पहोंचे नहीं=वश नहीं चलता। 9. ओ सरूप=यह ढंग। 10. हद सूदी=अत्यधिक। 11. ढ़ब=स्थिति। 12. पाप विचारियो=कुकृत्य करने का विचार किया।

### टिप्पणी -

१– मोहकमसिंघ मंगलवार, जनवरी 1, 1706 ई. के दिन नागोर से रवाना हुआ। (राज-रूपक०, पृ. 390; जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 99–100)।

## दूहा

कुमत[1] करी म्होकम कमध, अकळधारी इण दाय[2] ।
सूतो नाहर[3] छेड़ कर, जाळंधर[4] गढ़ जाय ।।१।।
चारण पूछण मेलियो, ऊदै उरजन पास ।
हूं आंऊ संग थांहरे, काम करो थे रास ।।२।।
आगे ईंदरसिंघ रे, हरवर[5] हुता राज ।
तातैं तुम से मैं कहूं, राज न मां को काज ।।३।।

## बात

म्होकमसिंघ चारण ने जालोर मेलियो । कुहायो—म्हारा राज में तो थे करसो जिहूं हुसी । आगे ईंदरसिंघ रे हरोल थे था । तरै तो जोधपुर रा धणी म्है हुवा ही था । ने पछै दाणां पांणी[6] सुं थाने तो सोनग दुरगदास ने लगाय लेण ने चेराई मेलिया था । सुं उणां री बातां उपर थे बैस रया । दूजूं[7] थे तो मांहरा थका हीज छो । हमें म्है नागोर सुं चढ़ सीताब आवां छा ।' इण चारण साथे कुसामदी कवाई ।

## दूहा

मत हीणां[8] जा चंदमिल, सुरत न कीधी काम ।
अपग्रह आयो जाणिकै, लिधो लुंड बुलाय ।।४।।
म्होकम ने थावर लगो[9], दसा फिरी वहु भाय ।
खोटे दिन आया थकां, ते मन कियो उपाय ।।५।।

इणां म्होकमसिंघ ने बुलायो ने इणां उणां दोना ही ने सोढ सती[10] आ.ई । कांई बात सूजी नहीं ।

---

**शब्दार्थ—**

1. कुमत = कुमति । 2. इण दाय = इस प्रकार । 3. सूतो नाहर = सोये हुए सिंह को । 4 जालंधर = जालोर । 5. हरवर = हरावल में, अग्रणी । 6. दांणा पाणी = भाग्यवश । 7. दूजूं = अन्यथा । 8. मत हीणां = मतिहीन । 9. थावर लागो = शनि का प्रकोप हुआ, बुरे दिन आये । 10. सोढ सती = साढे सात वर्ष के लिये शनिश्चर की बुरी दशा ।

**दूहा**

मोहकम चाले जांण कर[1], कहियो साहब खान ।
जुझारसिंघ हरनाथह, कही कुसळ कै कान ।।६।।
जुझारे कहीयो जरै, उदई तिण आय ।
सही तो म्होकम मिल समंद, जाळंधर गढ़ जाय ।।७।।

**बात**

इणां रा समाचार मारवाड़ रा सिरदारां ने रीयां रा मेड़तिया कुसळसिंघ अचळसिंघोत ने खबर दीनी । म्होकमसिंघ नागोर सुं जाळोर उपर चढ़ीयो छै । तिण री खबर लेणी हुवे तो ओ बखत छै–

उदै उरजन ते कयो, चूक रच्यो मन ठीक ।
सही कुसळसिंघ विचार मन, रखै लगावे लीक ।।८।।

**बात**

उदैसिंघ जी उरजणसिंघ जी मिळ गया छै । ने कोई मोटी कुबद[2] विचारी छै । पछै थे जांणो, रखै, कोई लीक नहीं लागे ।

**दूहा**

कुसळसिंघ अचळेस तण, कीधी गोठ वंणाय ।
थाळ परुसै सबन कूं, इतै खबर दी आय ।।९।।
थाळी मेले ऊठ कर, घोड़ो लियो मंगाय ।
जांण (क) गेंहली सिर कळस[3], जीव[4] नहीं पिंड[5] मांय ।।१०।।

**बात**

आ खबर आई तरे कुसळसिंघ जो आगे गोठ करता था, सुं सुणत पांण पुरसी थाळी मेल घोड़े चढ़ असवार हुवा—

---

**शब्दार्थ–**

1. चाले जाण कर = रवाना होना सुनकर । 2. मोटी कुबद = बड़ा दगा । 3. जाणके गेहली सिर कळस = मानो पागल स्त्री के सिर पर मटका, एक मुहावरा, प्राणों की चिंता नहीं करने वाला । 4. जीव = प्राण । 5. पिंड = शरीर ।

**दूहा**

'जसु' कह्यो 'कुसळा' सुणो, विथा[1] कवण तों थाय।
थाळी पटकै उठीयो, जीमण न आयो दाय ।।११।।

कुसळै मुखतें युं कह्यो, सुण भाई मुख खाय।
मन की मन में ले चलू, कही न आवे कांम ।।१२।।

चूक रच्यो मो साम सुं, मुरख मनो उपाय।
करम अमीणो[2] जोर है[3], तो म्है पोहचूं जाय ।।१३।।

भाग हुसी तो देख सुं, जीवतो उण रंग।
देख जोग विखमी वंणी[4], जीव जीव के संग ।।१४।।

छैंती[5] पड़ियां अत घणी, खत्री पण सह जाय[6]।
अन पांणी जब खांवसां, नवीज काया पाय ।।१५।।

'कुसळ' चढ़ै अस खेड़ीयां, लियो दीढ़[7] पे नेम।
उण साहिब विण एक पलक, कहो जीव ये केम ।।१६।।

'जसू' नाथ दिढ़ साथ कर, उठ चलै कज स्याम।
जो पोंचा[8] पैहलां पलक, (तो) पाड़ां म्होकम मांम ।।१७।।

**बात**

कंवर म्होकमसिंघ कूच दर कूच जाळोर नुं चढ़ीयो। ने खींवसर सुं करमसोतां राइका[9] २ चढ़ाया था, सुं राइको एक खींवसर सुं जीवणूं बाजू ने एक डावी बाजू खवर देता, जीवणी बाजू वाळो राइको जाळोर आधी रात रा प्होतो। आगै महाराज ने तो कोई खबर न थी, ने सुख मैहल में पोढ़ीया था, ने राइको जाय श्री चहुवांण जी सु मालम कराई। ने चहुवांण जी श्री म्हाराज रे मुठी देने जगाया। अरज कीवी– 'म्होकमसिंघ नागोर सुं आवे छै।' तरै श्री म्हाराज ने खबर नहीं,

---

**शब्दार्थ–**

1. विथा=दुःख। 2. अमीणो=हमारा। 3. जोर है=प्रबल है 4. विखमी वंणी=अघटित घटा तो। 5. छैंती=दूरी। 6. सह जाय=सभी समाप्त हो जावेगा। 7. दीढ़=दृढ़। 8. पोंचा=पहुंचे। 9. राइका=रैवारी, ऊंटों का टोला रखने वाले।

ने अण जांण[1] थका नींदरा सुं उठने उदैसिंघजी उरजनसिंघजी रे डेरे पधारिया। बाबोजी कैह बतलावता। सुं म्हाराज पधार ने फुरमायो-बाबोजी म्होकमसिंघ आंवण री अफवा[2] सांभळी है[3]। सुं किण तरै है।' तरै इणां अरज कीवी– 'ना म्हाराज झूठी बात हुसी। म्होकमसिंघ रो मुंढो है[4], अठा उपर आवे। आपणै फेर. मेड़तिया जिसा चाकर है। आप नचीता[5] पोहढे, ने खुसी रखावै।' इण तरै तोत[6] सुं कही। पिण श्री महाराज इणां रा केहणां री तरै जांण लिवी[7]। सुं पाछा म्हैळां पधार ने आपरो साथ ने राजलोक कंवरां ने लेने डोडीयाल रा पहाड़ां पधा--रीया। ने डोडीयाळ उवाळों बड़ी चाकरी प्होतो[8]। हाथ जोड़ ने सामो आयो।

ने व्यास दीपचंद बालकिशन रो श्री महाराज जाळोर सुं अधरत[9] रा निकळिया। तरै दीपचंद घरै जाय ने दुरणाचारज लिखमीचंद ने कयो–'बाबाजी श्री म्हाराज निकळिया छै, ने आपणी चाकरी माथा लग है, सुं सेवा लेने आप पधारो।' सुं अे तो उदैसिंघ जी रा राहा[10] में था सुं वड़बड़ाटा[11] करने कयो– 'म्हैं तो टाबर ओडीयां में लिया घणाई दिन फिरीया। थारे व्यास पदवी चाहिजै है तूं जा।' तरै दीपचन्द पाछो आय ने कांणी सांड उप्र पीलांण मेल, सेवां वगेरे कड़ा मोती प.र,खटपटो सांढ उप्र घाल ने अेकलो चढीयो। सुं बाजार में जावतां मोदी फतो पीथो हाट में वेठो थो। तिण ने कयो–कींउई[12] अमल हुवे तो दो।' तरै अदसेर पका री बटी एक चोखी दीवी। ने कह्यो–किंउई सीरावणी[13] दीरावो।' तरै कंदोई ने जगाय ने अदमण पकी[14] मोतीचूर रा लाडू ने वेसण री सेवां दुपटी में घाल दीवी। सुं गाठां मुंढ़ा आगे अे निकाळियो। ने श्री महाराज जागेसर जी रा भाखरां कनै,गांव अगर बगरी जांजरखां रा पोता। सुं अरठ उप्र ऊभा रया। सुं चांपा-वत तेजसिंघ जी कांकाणी रा आइदानोत वगेरे घणा जणा अमल खावता। सुं कनै नहीं सुं बायड़ां[15] आवण लागी। ने कंवर जी अभैसिंघजी टाबर था सुं भूख रे राहा[16] खांवण रे वासतै आड़ो कियो[17] कनैस किंऊ नहीं[18]। ने श्री

---

**शब्दार्थ–**

1. अणजांण=अनभिज्ञ। 2. अफवा=उड़ती हुई सूचना। 3 सांभळी है=सुनी है। 4. मुंढो है=हिम्मत है। 5. नचीता=निश्चिन्त होकर। 6. तोत=बनावटी। 7. जाण लिवी=समझ गये। 8. चाकरी प्होतो=सेवा करने का अवसर मिला। 9. अधरत=आधी रात में। 10. राहा में=सलाह में। 11. बड़बड़ाटा=वड़बड़ाते हुए। 12 कीऊंई=थोड़ा बहुत। 13. सीरावणी=नाश्ता। 14 अदमण पकी=पक्के तोल की आधा मन। 15. बायड़ा=नशे के लिये आने वाला आलस्य। 16. राहा=कारण। 17. आडो कियो=हट करने लगे। 18. कनैस किंउ नहीं=पास में कुछ भी नहीं था।

महाराज कने दूरवेणी सासती रेहती, तिण सुं जाळोर कांनी रो मारग देखता था सुं फुरमायो-'अेक ऊंट चढ़ीयो कोई आवे है।' जितरे नेड़े रो आयो, तरे फैर फुरमायो सही तो कांणची सांढ़ ने दीपलो है।' चितरे घड़ीक ने दीपचंद आयो। ने आसरीवाद दियो। तरै अरठ उप्र श्री महाराज पगै लागणो कियो। नै फुरमायो-आवो व्यास किऊई अमल है।' तरै इण कयो-'आपरे परताप अमल मोकळो है[1]।' बटी काढ़ ने निजर कीवी। सारां लियो। पछै फुरमायो- किहुई कटोरदान में वाभा रे वासतै है।' इतरै उण कयो-श्री कंवर जी कांई, साराई रे वासतै मोकळो है।' गांठ मुढां आगे म्हैली। जद सुं व्यास पदवी इणां रे हुई।

पछै डोडीयाळ पधारिया। ने कितरायक चाकर जाळोर में जीव डीगायो[2], सुं साथे न हुवा। हमें मोहकमसिंघ दूजे दिन जाळोर आयो।[१] पोहर तीन रो आंतरो रयो[3]। श्री महाराज तो निकळ गया। तरै मूंढो फीको कियो।[4] चांपावत उदैसिंघ जी, जेतावत उरजनसिंघ जी, व्यास दुरगाचारज, लिखमीचंद ने राजगुर पुरोहित अखैराज दळपतोत फेर कितरांक म्होकमसिंघ सुं मुजरो कियो। ने निजर निछरावळ कीवी ने म्होकमसिंघ सांमळ हुवा। भंडारी विठलदास प्रो. रिणछोड़ जगू वगेरे धरम ढीकांणै राख घरे बेठा रया। पातस्याह रा हुकम बिनां जाळोर में अमल हुवो नहीं, पकड़ा धकड़ी[5] हुवै नहीं।

मेड़तिया कुसळसिंघ अचलसिंघोत भाईपा सुधा[6] रीयां सुं चढ़ता रीयां रो ठाकुर इणां रे भाइपा में दूजो थो, जिण ने कयो-काकाजो धणीं री खबर लेणी हुवै तो आ वेळा है।' तरै उण कयो- 'थांरै रीयां चाहिजे है तूं जा।' सुं अे रीयां सु चढ़ीया

---

**शब्दार्थ-**

1. मोकळो है=बहुत है। 2. जीव डीगायो=लालच में फस गये। 3. आंतरो रयो=फासला रहा। 4. मूंढो फीको कियो=उदास हो गया। 5. पकड़ा-धकड़ी=कैद करना आदि। 6, भाईपा सूधा=सारे कुटुम्बियों के साथ।

**टिप्पणी-**

१- मोहकमसिंह माघसुदी 3,1762 वि.=रविवार जनवरी 6,1706 ई. के दिन जालोर पहुंचा था। (जोधपुर ख्यात., भाग 2, पृ. 200)।

दूहा

चलया बळुंदै आविया, बिजै पिछाणी बात[1] ।
ऊठ आयो साथे हुवो, मूळ गिणी नहीं रात ।।

बात

बळूंदा सुं चांदावत बीजैसिंघ जी हरिसिंघोत चढ़ीया–

दूहा

अनंस[2] लीधां आवियो, कुळलो सुत अचळैस ।
सिर (लगो) आकास सुं, बड़ हथ चढ़ती वैस ।।१९।।
नेणां (खांवंद) निरखियो, संसा[3] मिटै सिताव ।
कुसळो फूलै कंवळ जूं[4], चढ़ै चोगणी[5] आब ।।२०।।

बात

इसी तरे रीयां सुं कुसलसिंघ घोड़ा दोय सै ने बळुंदा सुं चांदावत बीजैसिंघ जी डोडीयाळ आया । श्री महाराज रो दरसण कियो, जीव खुस हुवो ने दरसण करने रोटी जीमिया ।

दूहा

कुसळो मुछां ताण कर, पोरस आंण परचंड ।
देसां म्होकमसिंघ रै, खागां चोसिर डंड ।।२१।।
नाहसै वहसै ऊससों[6], (पो) रस दाखै पांण ।
मोहकम रे मांमळ बिना, सिर झाड़ूं केवांण[7] ।।२२।।
राजधरा तेजळ रखै, मित्री मित्र उपाय ।
साथ करै आ सांवठो, सांमां सीस चलाय ।।२३।।

बात

इसी तरै कुसळसिंघ जी मुंछां ताण, पोरस आंण महाराज सुं अरज कीनी ।

---

शब्दार्थ-

1. पिछाणी बात = स्थिति को समझ लिया । 2. अनंस = अन्न जल । 3. संसा = संशय। 4. कंवळ जूं = कमल के समान । 5. चोगणी = चार गुना । 6. ऊससों = जोश में आता हुआ । 7. झाड़ूं केवांण = तलवार से प्रहार करूं ।

आप असवार हुईजै । चाकर रा हाथ देखीजै । ने म्होकमसिंघ जी सुं कजियो करसां तरवार म्यान मां सूँ काढ अरज कीवी–केहतो म्होकमसिंघ उपर बैहसी, कैह म्हारो माथो भाड़ सूँ ।' घणों हट कर म्हारांज ने असवार किया । कुसळसिंघ जी विजैसिंघ जी कनै साथ कामूं[1] हुतो । सुं ले मोहकमसिंघ उपर सामा चलाया–

पछै फेर दिन पांच में, जगो रीदो सव आय ।
.............. ................सिंघ रो, मोरी पातल मांय ।।२४।।

भींव बभकै सीस अर, बादळ जिम वरखाय ।
दोड़ दोड़ सिर ओप..., खागां खेर उड़ाय ।।२५।।

तिण बेळां रो 'तेजसी', आभै सीस लगाय ।
'जगो' भीर साथें लियां, खगां उथैला खाय[2] ।।२६।।

## बात

फर उदावत जगरामजी ने रीदेनारायण जेतारण री तरफ सुं आय सांमळ हुवा । चांपावत तेजसिंघ जी आइदानोत पिण आय सामळ हुआ । घोड़ा हजार दोय चढ़ीया । ने म्होकमसिंघ जालोर फिर पाछो जावतो थो । उदैसिंघ जी उरजनसिंघ जी ने कईक चाकर म्होकमसिंघ साथे हुवा ने श्री महाराज गांव खंडप रातड़ीया मुतलल कजियो कियो । घोड़ा उठतां ही म्होकमसिंघ नाठो ।[1] डेरा परा लूटीया, हाथी आयो । हाथी रो नांव फतैगज दियो । उदैसींघ जी तो नासतां घोड़ा सु गिर पड़िया । तरै सिरदारां अरज कीवी-बावोजी गिर पड़िया है, सुं घोड़ो दिराइजं । सुं म्होकमसिंघ सुं जाय सामळ हुवे ।' तरै श्री हजूर उदैसिघ जी ने

---

### शब्दार्थ

1. कामूं = कार्य करने वाला । 2. खगां उथेला खाय = तलवारों से लड़ता हुआ ।

### टिप्पणियां–

१– मोहकमसिंह मंगलवार, जनवरी 15, 1706 ई० के दिन मेड़ता से वापस रवाना हुआ। इस वापसी यात्रा के समय अजीतसिंह ने उस पर आक्रमण किया था ।

(जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 103; राजरूपक (पृ. 399) के अनुसार यह संघर्ष धूनाड़ा नामक ग्राम में जोधपुर से 32 मील दक्षिण-पश्चिम में हुआ था ।

घोड़ो इनायत कियो । ने जैतावत उरजनसिंघ जी रो डेरो लूट में थो, तठै उभा था । ने महाराज रे साथ उपर चलाया । तरै श्री महाराज साथ ने बरजिया[1], ने फुरमायो- 'हाथी जितरी गऊ[2] है, बाबोजी है, सु कांई करणी नहीं ।' तरै पछै उरजनसिंघ जी आपरो डेरो ले चढ़ बहीर हुआ[3] ।

पछै श्री म्हाराज इणोज फौज सूं कूच कीनो । सांचोर सुराचंद कानी पधारीया, ने पइसो उगाता हा ।

ने सं. १७६३ बरस फागण रो महीनो थो, ने सिवरात रो दिन । घैर[4] पांणी गुलाल सुं रमीया[5] था । ने श्री महाराज बावड़ी संपाड़ो[6] करण पधारिया था । जितरै अेमदाबाद सुं भंडसाली मुता कपूरचंद रो एक घर अैमदाबाद थो, तिण रो कासीद[7] वादै आयो-

## दूहा

आई खब्बर अचीत की, मिट गई मन की दाह ।
कासीदां इम आखियो, मर गयो ओरंगसाह[1] ।।१।।

इण तरै कासीद आयो । महाराज संपाड़ो करता मालम हुई । ने बारै पधार ने उण सायत असवार हुवा सु जोधपुर पधारीया । सं. १७६३ चेत्र वद ५[2] जोध-पुर गढ़ दाखल हुवा । ने सिणगार चोकी बिराजिया । नबाब जाफर खांन नायब थो गोळ री गढ़ी में । तिण ने लूट लीनो । सु नास ने, आसोप रो ठाकुर कीरतसिंघ सुरजमलोत नबाब कने थो, तिण रे डेरे जाय बेठो । तरै श्री महाराज पकडण ने

---

**शब्दार्थ–**

1. बरजिया = मना किया । 2. हाथी जितरी गऊ = हाथी के समान निरीह प्राणी । 3. बहीर हुआ = रवाना हुए 4. घैर = गैहर । 5. रमीया = खेले । 6. संपाड़ो = स्नान । 7. कासीद = पत्र वाहक ।

**टिप्पणियां-**

१– 28 जीकाद 1118 हि. = शुक्रवार फरवरी 21, 1707 ई. के दिन बादशाह औरंगजेब मरा था । (मआसिर०, पृ. 521) ।

२– बुधवार, मार्च 12, 1707 ई. । वस्तुतः अजीतसिंह को औरंगजेब के मरने की खबर रविवार, मार्च 9, 1707 ई. को मिली । तब वह शीघ्रता से रवाना होकर जोधपुर पहुंचा था । (जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 105) ।

असवार हुवा, तरै मंढी में पधारतां कुंपावत भींव सबळसिंघोत मुंढा आगे जाय ने हाथ जोड़िया। फुरमायो–'निबाब ने पकडंण ने पधारा हां।' तरै इण अरज कीवी-'मारा भायां रे डेरे है, सुं मने ही मरणो पड़सी।' तरै असवारी पाछी फीरी। आसोप भींव सबळसिंघोत नु हुई। नबाव ने कीरतसिंघ अहैमदाबाद गया।

श्री महाराज गढ़ पधार ने फुरमायो– सैहर में दाढ़ी वाळो देखो तिण ने मराय नाखो। तरै मोहर दाढ़ी[1] हुई। नायां रे घणां रुपिया आया। कितरांक कराई केईक उखैल[2] नांखी। अेक पोर में हिंदवाणी[3] हुई। कितराक तुरकां ई दाढ़ीया मुंडाई।

श्री महाराज गढ़ विराज ने विखा रा चाकर था तिणां साराई रा छोटी मोटी चाकरी माफक श्रीमुख सुं दूहा फुरमाया सुं दूहा-

## दूहा

करी विखा में चाकरी, साम धरम सिरधार।
कैंह लागा कुबधिया, हुवा पछै बहु खवार।।१।।

कंवर जी आ करी,
ऊदै उरजन भींच,
कंवर जी आ करी।

'सोनग[1]' 'सांवत[2]' 'अजबसिंघ[3]' विखो कियो तिहूं भाय।
अमल मूळ असुरांण रो, हुवो न मुरधर मांय।।२।।

---

**शब्दार्थ–**

1. मोहर दाढ़ी=दाढ़ी बनवाने की एक स्वर्ण मुद्रा हुई। 2. उखैल=नोंचली।
3. हिंदवाणी=हिन्दूधर्म का बोलबाला।

छंद संख्या

१. चाकरी=सेवा। आ करी=ऐसा किया।
२. भाय=भाई। असुरांण=मुगल।

**टिप्पणियां–**

१. सोनग विट्ठलदासोत चांपावत राठोड़।
२. सांवतसिंह जोगीदास विट्ठलदासोत चांपावत राठोड़।
३. अजबसिंह विट्ठलदासोत चांपावत राठोड़।

देई तणा संजोग सूं, कियो सरग मझ वास।
तठा पछै तुरकाण रो, काम वण्यो बहु रास ।।३।।

सामसिंघ हरदास रो[1], स्याम ध्रम सिर राख।
झटकां मुहड़ै झड़ गयो, सूरज चंदो साख ।।४।।

हरिसिंघ गिरधर[2] सकज, स्यामो दुरजन सोय।
फेर सत्रसाल[3] स्याम कज, विखो कियो ध्रम जोय ।।५।।

अै सारा गैणाण दिस, कीधो वडो पयांण।
ज्यां नहीं असुराण री, मुखां न काढी आंण ।।६।।

भाटी वड़ा भूजाळ, कंवर जी आ करी।
साम सुछळ धर कारणै, सिरधारे ब्रजनाथ।
दिली मझ झटकां जुड़ै, वड़ भाटी जगनाथ[4] ।।७।।

जोधाणै तंहवर जुड़ण, आयो करण उखैल।
तिण वैलां भाटी सुभळ, करी किसोरे[5] मेळ ।।८।।

---

## शब्दार्थ–

छंद संख्या

३. देई तणे संजोग सूँ = दैव योग से। रास = अच्छा।
४. झटकां = तलवारों का वार। झड़गयो = मारा गया।
५. सकज = वीर। स्याम कज = स्वामी के कार्य।
६. गैगाण दिस = स्वर्ग की ओर। पयांण = प्रस्थान।
७. भूजाळ = आजानुबाहु, विशाल भुजाओं वाला। सुछळ = के लिये। दिली मझ = दिल्ली में। झटकां = तलवारें।
८. जुड़ण = आने पर; सामना होने पर। उखैल = युद्ध।

## टिप्पणियां-

१. सुन्दरदास हरिदास ठाकुरसियोत करमसोत।
२. हरनाथ गिरधरदासोत चांपावत राठोड़।
३. छीतरदास गिरधरदासोत चांपावत राठोड़।
४. जगनाथ विट्ठलदास हरदासोत जसावत भाटी।
५. किसोरसिंह महेसदासोत जेसा भाटी।

सुत महेस सांवत सकज, बह हथ बुध विसाळ।
सीस कीसोरै समपियो, भाटी लाल भुंवाळ ।।९।।

जसो सुत सबळेस रो, जळ चाढ़ै जैसांण।
मरण जसा महाराज 'रो' सीस दियो जोधांण ।।१०।।

सुत सहटौ सुरतांण रो. भड़ भाटी रुघनाथ[1]।
सीस दियो दिली सहर, राज महलां साथ ।।११।।

ऊदावत आखाड़सिंध. भारमल[2] बहु भाय।
वळ पाछो कोसां दसां, अवरां सबै निभाय ।।१२।।

सुण सरवण मृत महल को, बळ भारो वरवीर।
आयो काम अचूक रो, सांवत मनै सधीर ।।१३।।

रिणछोड़ो[3] गोइंद रो, जोधो जोध जवान।
लारां मोहरी सावतां, सीस समापण दान ।।१४।।

मोहरी थां महाराज रे, डावी बांह दईत।
औ चाळै खत्रवट समट, तो कुण राखै रीत ।।१५।।
लूण उजाळण राजरो, काज सुधारण स्याम।
मुहरी बेध सारां मोहर, लड़ भिड़ आयो काम ।।१६।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद सख्या

९. समपियो=समर्पित किया। लाल भुंवाळ=सामन्तों में शिरोमणि। बह हथ (हथ-बाह)=तलवार चलानेमें सिद्धहस्त।

११. सहटौ=अडिग, सबल। राज महलां=महारानियें।

१२. आखाड़सिंध=योद्धा, वीर। वळ=मुड़कर। अवरां सबै निभाय=अन्य सभी की रक्षा की।

१३. सुण सरवण=कानो से सुन कर। अचूक=अचानक।

१४. मोहरी=मुखिया; समापण=समर्पण।

१५. डावी बांह दईत=बाँईं मिसल का प्रमुख व्यक्ति। खत्रवट=क्षत्रित्व। समट समेट कर।

१६. लूण उजाळण=नमक का हक़ पूरा करने के लिये।

**टिप्पणियां–**

१. रुघनाथ सुरताणोत जेसा भाटी।
२. भारमल दलपतोत भींव उदावत राठोड़।
३. रणछोड़दास गोंइंददास भगवानदासोत जोधा।

साथ भतीजो जगतसिंघ[1], संग काका रे साथ।
दरवाजै दिल्ली तणौ, दियो रंगे सिर हाथ ॥१७॥

चंद्रभाण[2] द्वारा सुतन, साम सुछळ खग साहि।
काम सुधारै सामरो, गरक किया झड़ मांहि ॥१८॥

कुंभो[3] हरी कमंध वड, मिळै न खरचै दांम।
स्याम सुछळ संग चद रै, आए हैं बड़ काम ॥१९॥

दुरगदास[4] आसा तणों, मंत्री वड़ वरवीर।
राज अचळ थिर राखवा, साहस धरै सधीर ॥२०॥

अस झुंडा बिच ओरवै, जाडा थंडा देख।
काम न आयो स्याम कज, लिख्यो विधाता लेख ॥२१॥

काची मन धारी नहीं, चढै चोगणों छोह।
खेत पड़ै खग झालियां, जब लागै तन लोह ॥२२॥

भाई 'देदो' आय भळ, सांवत सकजो राम।
मुख आगे दुरगैस रे, तुरत आवियो काम ॥२३॥

किण बाकी राखी नहीं, हे हे कहियो कोय।
काहू के दस पांच ज्यूं, काहू के इक दोय ॥२४॥

---

## शब्दार्थ–

छंद संख्या

१८. गरक किया झड़ मांहि = सिर तोड़ कर समाप्त कर दिया।

२०. आसा तणों = राठोड़ आसकरण का पुत्र।

२१. अस झुंडा बिच ओरवै = समूह के बीच घोड़ा डाल दिया। जाडा थंडा देख = सघन सेना को देख कर।

२४. हे हे कहियो कोय = कायरता प्रकट नहीं की।

## टिप्पणियां-

१. जगतसिंघ रतन गोइंददासोत जोधा।

२. चंद्रभाण द्वारकादासोत खंगारोत जोधा।

३, कुंभो कीरतसिंह खंगारोत जोधा।

४. दुरगादास आसकरण नींबावत करणोत राठोड़।

दोढ़ी आगळ वेसतो, दोढ़ी दोढ़ीदार।
कांम आवियो जोगड़ौ[1], मारै मीर अपार ।।२५।।

सूजो चंदो सळकीया, राजड़[2] उदळ[3] लार।
सांगो[4] सूजो[5] पातळो[6] रूपा मेळ करार ।।२६।।

धांधळ सांहणी गहलड़ा, आसायच पंवार।
जोलू गूजर देवड़ा, हाड़ा मिटै करार ।।२७।।

चहुवांणां ने गोहिलां, नया वंड नींवांण।
वामण को रहियो नहीं, कोटेचा पड़िहांण ।।२८।।

अरक जसो हिंदवांण रो, सो आथम सब ईस।
राज रहावण सिर धरै, भार मुकंद[7] धर सीस ।।२९।।

माजी जादम जोइयो, सुत देऊं किण जोय।
उमरावां नजदीकियां, ओर न सुझै कोय ।।३०।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

२५ वेसतो = बैठता था, पहरा देता था।

२६. सळकियो = निकल गये।

२९. अरक = सूर्य। जसो = महाराजा जसवंतसिंह। आथम = अस्त हुआ। भार = बोझ, उत्तरदायित्व।

३०. माजी जादम = महाराजा जसवंतसिंह की रानी जसकंवर जादव, करौली के राजा छत्रमणि की पौती। किण जोय = किसको खोज कर। नजदीकियां = रिस्तेदार।

**टिप्पणियां-**

१- जोगीदास कुसलावत सोभावत।

२- राजसिंह बलरामोत उदावत राठोड़।

३- उदयसिंह लखधीरोत चांपावत राठोड़।

४- संग्रामसिंह जुझारसिंह महेसदासोत चांपावत राठोड़।

५- सूरजमल नाहरखान राजसिंहोत कूंपावत राठोड़।

६- प्रतापसिंह देवकरणोत जेतावत राठोड़।

७- मुकंददास कलावत खीची।

मन चितां राणी घणी, धीर दिये नहीं कोय।
राज रहावण आपतें, पोहच किणी री होय ।।३१।।

सुणी बात सब मांहली, महल करै मन चींत।
काढै कुसळै देसपती, जेसो अवर न भींत ।।३२।।

रावत दोढ़ी आय कर. अरज करी यह दाय।
राज तणां सुत साम मों, सूपीजे सुरराय ।।३३।।

जतन करै ने राखसूं, खबर न देऊं कोय।
नहि देऊ लालच किनै, जो कळ दूजी होय ।।३४।।

जीव गमाऊं गांठ रो तन मन देऊ वार।
और किणी नहीं सुंप सूँ, ओ साहिब सिरदार ।।३५।।

राज कुसी हो मातजी, फिकर करो मत काय।
हूं जतने महराज नै, लेजा सूं धर मांय ।।३६।।

मुरधर में पधराय कर, विखो करा सूँ राज।
असुर उडाड़ें ऐकठा, भला करा सूं काज ।।३७।।

म्हैं ओरी महाराज रैं, राज हमारे साम।
देह हणूं तिण कारणै, तो मों सुधरे काम ।।३८।।

---

**शब्दार्थ—**

छंद संख्या

३१. धीर दिये नहीं कोय = धैर्य देने वाला कोई नहीं है।
३२. मांहली = अन्दर की, गूढ़। काढ़ै कुसळै = कुशलतापूर्वक निकाल दे। जेसो = उसके समान।
३३. दोढ़ी = ड्योढ़ी पर। दाय = इस प्रकार।
३४. जतन करै ने = यत्नपूर्वक। दूजी होय = विपरीत परिस्थियियां उत्पन्न होने पर भी।
३५. गांठ रो = अपनां।
३६. काय = कुछ भी। धर मांय = प्रदेश में, राज्य में।
३७. पधराय कर = ले जाकर। भला = अच्छे।
३८. ओरी = सेवक। हणूं = त्याग दूं, न्योछावर करूं।

जीवतो (तो) जासू नहीं, निसचे मुरधर मांय।
देह भांजसूं स्याम जी, नहीं दुसरो उपाय ।।३९।।

कै दीजै महाराज मों, काय तजूं मैं देह।
अवर बात धारुं नहीं, समझ कही मन ऐह ।।४०।।

मांजी सेंठो जाए कर, सूंपे सूरज साय।
ले जावो सेंठा थका, वेगा मुरधर मांय ।।४१।।

ओरंग कस असाध है, अजमल कान कहाय।
ले जावो विरिया थका, वेगा मुरधर मांय ।।४२।।

विखो करीजो जोख सूं, ज्युं सब सुधरै काज।
लड़ भिड़ ने पधराव जो, जोधाणै महराज ।।४३।।

इए विध कहि सुपत उवां, जतन करै बहुभाय।
होय सबोलो मळपियो, मुकनो मुरधर मांय ।।४४।।

मुकनो मंत्री मोट मन, खीची खेड़ै राव।
आभ डिगंतौ अो थंभो, विकट खेल लख दाव ।।४५।।

ले आयो महराज नूं, आप सीस धर स्याम।
तातै खीची मुकनसी, आय सक्यो नह कांम ।।४६।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

३९. देह भांज सूं=शरीर त्याग दूंगा, मर जाऊंगा।

४० अवर=अन्य। धारूं नहीं=स्वीकार नहीं करूंगा।

४१. सेंठो=शक्तिशाली, दृढ़। साय=साक्षी में। सेंठा थका=सुरक्षित रूप से। वेगा=शीघ्र।

४२. ओरंग=बादशाह औरंगजेब। असाध=असाध्य। अजमल=अजीतसिंह।

४३. जोख सूं=भली प्रकार से। पधराव जो=स्थापित करना।

४४. बहुभाय=दोनो भाइयों को। होय सबोलो=गर्वित होता हुआ। मळपियो=द्रुत गति से प्रस्थान किया।

४५. आभ डिगंतौ अो थंभो=विकट परिस्थिति में सहारा बना।

आयो खीची मुकनसी, कळा चली बहुभाय ।
जोधा रिड़मळ मिळ सको, कियो विखो धर मांय ।।४७।।

औरंग इंदरो अरधियो, टीको दियो लिलाड़ ।
बाजी साजी ना रही, दीधी अदब गमाड़ ।।४८।।

मांझी दुरगो मुकनसी, कमधज खीची चोज ।
अै रूठा इंदरसींघ रै, परो गमावण खोज ।।४९।।

मिळियो भाटी रामलो[1] काळो कंटक कूड़ ।
जाय बधायो इंदरीयो, पड़ी सीस पर धूड़ ।।५०।।

आप वधारै जसपती, अत इतबारी जांण ।
सूंपे कंवर जू पीथळे, मन जांणै भ्रम खांण ।।५१।।

व्यास पिरोहित वेदिया, दुवै निकळचा भाय ।
लै देरासर आरती, सामा मिळिया जाय ।।५२।।

आयो देख इंदरीयो, कमधां खाधी तेस ।
कळ चाली केवांण गहि, भूल न रहिया बेस ।।५३।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

४७. कळा चली बहुभाय=अनेक राजनीतिक चालें चली । जोधा रिड़मल=रांव जोधा व रिणमल के वंशज ।

४८. इंदरो=राव इन्द्रसिंह रायसिंहोत । अरधियो=निमन्त्रित किया, बुलाया । गमाड़=खो दी, नष्ट हो गई ।

४९. परो गमावण खोज=समूल नष्ट करने के लिये ।

५०. काळो कंटक कूड़=नागरूपी दुखदायी झूठा व्यक्ति । बधायो=स्वागत किया ।

५१. इतबारी=विश्वासपात्र ।

५३. कमधां खाधी तेस=राठोड़ क्रोधित हुए । कळ चाली केवांण गहि=तलवारें पकड़ कर संघर्ष प्रारम्भ किया ।

**टिप्पणी–**

१– राम कुंभावत जैसा भाटी ।

अो भाऊ भगवान रो[1], सोभो कर बाझूंठ ।
कूक घाल जोधाण गढ़, प्रथम लिया इण ऊंठ ।।५४।।

हेलकरी कमधां मिळै, धकै पछाड़ै धींग ।
जोधाणां सूं वैग ही, उतारै इंदरसींग ।।५५।।

अौरंग अस चढ़ अावियो, अजमेरां खड़ अाप ।
रूप कियो जमराय के, कौत भेलै न ताप ।।५६।।

सोबां थांणा मेलिया, अौरंग मुरधर मांय ।
मोटा छोटा कमधजां, हैल करो थे जाय ।।५७।।

'सैख सादुळौ' मेड़तै, मेले साह निसंक ।
देवळ ढाहै देवरा, हींदू करो निवंक ।।५८।।

अोसर अायो चाहतां, मैंड़तिया मन माय ।
मरसां कज महाराज रै, लड़सां सामां जाय ।।५९।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

५४. वाभूंठ = झपट कर । कूक घाल = त्राहि त्राहि मचा कर ।

५५. हेलकरी = अाक्रमण किया । धींग = योद्धा ।

५६. अस = घोड़ा । अजमेरां खड़ अाप = स्वयं चलाकर अजमेर अाया । जमराय = यमराज । कौत = घोड़ा ।

५७. सोवा थांणा मेलिया = जगह जगह चौकियां स्थापित की ।

५८. सैख सादुळो = सादूला खां, मेड़ता में किरोड़ी नियुक्त था । निसंक = नि;संकोच । देवळ ढाहै = मंदिरों को तोड़ा । निवंक = सीधे ।

५९. अोसर = अवसर । मेड़तिया = राठोड़ दूदा जोधावत के पुत्र, मेड़ता में निवास करने के कारण मेड़तिया कहलाये । सामा जाय = सामने जाकर ।

**टिप्पणी-**

१- भगवानदास का भाई = विट्ठलदास कुशलावत ।

राजड़[1] अचळो[2] गोकळो[3], रूपो[4] सरस रंढाळ ।
रामो[5], हिमतो[6], सुंदरो[7], बळवंत जोध बहाळ ।।६०।।

सांवळ[8] पातळ[9] राजसी[10], ने मांभी जगराम[11] ।
साथ हुवो इण रे सको, मनो पुरावण हाम ।।६१।।

सावत 'सांवत' सीरखा, मेड़तिया मछरीक ।
पाडण अरधर पातळो, रिमा लगावण लीक ।।६२।।

मेड़तिया मानी नहीं, मिळवाची मन वात ।
मारे समि मेछाण नूँ, भांजे सो अम्ह गात∅ ।।६३।।

---

## शब्दार्थ–

छंद संख्या

६०. बहाळ = बलवान, आजानुबाहु ।
६१. मनो पुरावण = मन की इच्छा पूरी करने के लिये ।
६२. मछरीक = योद्धा । रिमा = शत्रु ।
६३. मिळवा ची = मिलने की । मेछाण = म्लेच्छ, मुगल ।

## पाठान्तर-

महाराजा अजीतसिंह के इन दोहों की एक अन्य प्रति संस्थान में संगृहीत मूंदीयाड़ री ख्यात (पृ. 211–226) उपलब्ध है। यहां पाठान्तर उसी के आधार पर दिया जा रहा है- ∅मार सांह मिलछाण नू, भांजेसा इम गात ।

## टिप्पणियां—

१– राजसिंह प्रतापसिंहोत मेड़तिया ।
२– अचलसिंह प्रतापसिंहोत मेड़तिया ।
३– गोकलदास प्रतापसिंहोत मेड़तिया ।
४– रूपसिंह प्रतापसिंहोत मेड़तिया ।
५– रामचंद्र मेड़तिया, राजसिंह का भाई ।
६– हिम्मतसिंह जगतसिंहोत मेड़तिया ।
७– सुन्दरदास हरिसिंहोत मेड़तिया ।
८– सांवलदास आइदानोत दलपतोत चांपावत ।
९– प्रतापसिंह पृथ्वीसिंहोत करमसोत ।
१०– राजसिंह बलरामोत उदावत ।
११– जगराम विजैरामोत उदावत ।

'सेख साळुलो' मारियो, बड़ो बांधियो नेत।
साको कीनो सह मिळे, मिळै (ज) पोहकर खेत ।।६४।।

नित प्रमाणै पामियो, साम धरम सिरधार।
स्याम काम इन सांबियौ, बसिया सरग मझार ।।६५।।

सह जानी हाले गया, रह्यो न ऊभो कोय।
अण होणी होणी नहीं होणी होय सु होय ।।६६।।

तैं सुत मांझी नीपना, कुसळो[1] ने कलियांण[2]।
रिमा पछाड़ण रंढ घणा, करै न तिल भर कांण ।।६७।।

चांपा में 'सोनग' सकज, ता पाछै सह कोय।
छाप अनै नीसांण कर, लियो नगारो जोय ।।६८।।

'दुरगो' अकबर[3] लार है, दिखण गयो दुरंत।
ता पाछै चांपा मिळै, भली दिखाळी छेत ।।६९।।

उदसिंघ लखधीर रो, साहस मने संभाय।
साथ करै मुख आगळै, कळ चाली इळ माय ।।७०।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

६४. नेत = मर्यादा, नेतृत्व । पोहकर खेत = पुष्कर के रण क्षेत्र में ।
६५. नित (नीत) = नियति । पामियौ = प्राप्त किया ।
६६. रह्यो न उभो कोय = कोई भी रुका नहीं । होणी = होनहार ।
६७. मांझी नीपना = मुख्य व्यक्ति उत्पन्न हुए । तिल भर कांण = थोड़ी सी भी कमी ।
६८. चांपा = राव रणमल के पुत्र चांपा के वंशज, चांपावत राठोड़ । छाप अनै नीसांण कर = चिह्न व ध्वज ग्रहण करके ।
६९. दुरंत = बहुत दूर । छेत = क्षत्रित्व ।
७०. संभाय = धारण कर । साथ करै मुख आगळै = सेना को आगे कर ।

**टिप्पणियां**

१– कुशलसिंह अचलसिंहोत मेड़तिया ।
२– कल्याणसिंह राजासिंहोत मेड़तिया ।
३– शाहजादा मुहम्मद अकबर, औरंगजेब का चोथा पुत्र ।

भगवानो[1] जोगा तणो, सक सांवत सिरताज।
कियो विखो मुरधर मझै, लिधां भुजबळ लाज ।।७१।।

तेजसींघ[2] चांपा मझै, साम धरम सिरधार।
बेटो आईदान रो, वळवंत जोध अपार ।।७२।।

सुत सुजाण मुकनो[3] कमध, चांपो विखमी चाळ।
रिम भांजै पाधर लड़े, अर सह खागां पाळ ।।७३।।

अखैराज[4] लखधीर रो, एक मनो हुय ऐम।
स्याम धरमी साच मन, भल सुधारे जेम ।।७४।।

प्रिथीराज रो डीकरो, धनराजो[5] धैंधींग।
मेवासो चोड़े मंडै, रिमा पछाडंण रींग ।।७५।।

उदैभांण[6] देदा तणो, सांवत सह सधीर।
'औरंग' सुं अड़िया रहै, नित चोड़े वरवीर ।।७६।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

७३. पाधर लड़ै = सामने की लड़ाई करते हैं।

७४. एक मनो = एक मन से, लगन पूर्वक।

७५ डीकरो = पुत्र। धैंधींग = निर्भीक योद्धा। मेवासो = निवास स्थान।

७६. अड़िया रहै = अड़ कर खड़े रहे, मुकाबला करते रहे।

**टिप्पणियां-**

१– भगवानदास जोगीदासोत चांपावत--इसको सोमवार नवम्बर 21,1709 ई. को महा--राजा ने प्रधान बनाया था।

२– तेजसिंह आईदानोत चांपावत।

३– मुकनदास सुजाणसिंह आईदानोत चांपावत।

४– अखैराज लखधीरोत चांपावत राठोड़।

५– धनराज पृथ्वीराज विट्ठलदासोत चांपावत।

६– उदयसिंह देवीदास विट्ठलदासोत चांपावत।

पछै पछै फिर सांगसा[1], विखो कियो इकवार।
काची साची ना धरी, तौ नहिं पोहता पार ।।७७।।

तेजमाल रा डीकरा, विखो कियो बहु भाय।
लालच मन नहिं आणियो, मिळचा न तुरकां जाय ।।७८।।

प्रथम विखो हरनाथसिंघ[2], चांपा सिर हर मोड़।
काम कठण विध आवियो, रुकहथो राठोड़ ।।७९।।

अरजन[3] कानड़[4] लाखीयो[5], अै तीनू तत सार।
स्याम सुछळ सह सामतां, कीधो विखो अपार ।।८०।।

सवळसींघ[6] खाना तणों, सकजो काम जु सांम।
पहल प्रथम खेतासरे, आप आवियो काम ।।८१।।

ता पाछै उगरो[7] विजो[8], तेजो[9] फतो[10] सधीर।
मुरधर मांहे दोड़िया, वडहथ वड वरवीर ।।८२।।

---

**शबदार्थ–**

छंद संख्या

८१. सकजो काम जु सांम=स्वामी के लिये उपयोगी।
८२. वडहथ वड वरवीर=विशाल भुजाओं वाला श्रेष्ठ वीर।

**टिप्पणियां-**

१– संग्रामसिंह जुझारसिंहोत चांपावत। पूर्व में यह बादसाही मनसबदार था लेकिन सं. 1741 वि. में राठोड़ सांवतसिंह चांपावत के मरणोपरान्त बादशाही सेवा छोड़ कर राठोड़ मुगल संघर्ष में शामिल हुआ था।
२– हरनाथसिंह गिरधरदासोत चांपावत।
३– अर्जुन गिरधरदासोत चांपावत।
४– कान्ह गिरधरदासोत चांपावत।
५– लखसिंह चांपावत।
६– सबलसिंह खानावत चांपावत राठोड़।
७– उग्रसिंह सबलसिंहोत चांपावत।
८– विजो (विजयसिंह) सबलसिंहोत चांपावत।
९– तेजसिंह सबलसिंहोत चांपावत।
१०– फतैसिंह सबलसिंहोत चांपावत।

भांण तणां चांपा विहद, नाहर[1] बदरी रूप।
सातां सखरा भाइयां, स्याम काम अनूप ।।८३।।

ऐक मना आखाड़सिंध, मिळै न किण ही जाय।
हळभळ लावै एक हुय, रहै गिरंदा मांय ।।८४।।

मुकनदास[2] रा डीकरा, जोधा जोध जवान।
स्याम धरम सिर पर रखैं, और बात नहि मान ।।८५।।

उदैभांण[3] इंद्रभाण[4] मिळ, चंद्रभाण[5] बहु चाय।
ओ हिमतो[6] लखमण तणो, करणो[7] सुबुध्र कहाय ।।८६।।

'इन्द्रभाण' आखाड़सिंध, सिरधारे ध्रम स्याम।
नाडूळे नर राव वळ, आप आवियो काम ।।८७।।

'विसनो'[8] सुत 'माधव' तणो, बालो वड़ो वंहाल।
सझै गिरंदां स्याम कज, मुरधर मझ कळ चाल ।।८८।।

---

**शब्दार्थ—**

छंद संख्या

८४. हळभळ = हलचल। एक हुय = सम्मिलित होकर।
८५. जोधा = राव जोधा के वंशज, राठोड़ों की शाखा।
८७. सिरधारै ध्रम स्याम = स्वामिधर्म ग्रहण करके। नाडूळे = नाडोल नामक स्थान पर।
८८ बालो = राठोड़ भाखरसी रणमलोत के पुत्र बाला के वंशज। सझै गिरंदां = पहाड़ों में मोर्चाबन्दी की।

**टिप्पणियां-**

१- नाहरखां हरिसिंहोत चांपावत।
२- मुकनदास सादूल रतनसी मालदेवोत जोधा।
३- उदैभाण मुकनदासोत मालदेवोत जोधा।
४- इन्द्रभांण मुकनदासोत मालदेवोत जोधा।
५- चंद्रभाण मुकनदासोत मालदेवोत जोधा।
६- हिम्मतसिंह लक्षमण सादूलोत मालदेवोत जोधा।
७- करण मुकनदासोत मालदेवोत जोधा।
८- विसनदास माधोदासोत बाला राठोड।

'अखो'[1] पबो[2] ते बांहियां, सूरा हसस सधीर।
समियाणे साची कियो, इधक वधायो नीर ।।८९।।

'विसनो' 'अखियो' सूजड़[3], लिखमैं[4] बियै संभाय।
'पुड़दळखांन' 'पछाड़ियो' गढ़ समियाणै जाय ।।९०।।

जेतां में 'मांडण' भलो, कळ चालै कमधज।
विखे बिलाड़ो मारियो, सार केवाणां सज ।।९१।।

फेर 'कूंभलो' सहसबळ 'हिमता' तणो सधीर।
सातां भायां सामठो, भलो चढावै नीर ।।९२।।

कूंपां में केहर[5] कमध, रामो[6] भोम[7] रंढाळ।
स्याम काम नूं सांतरा, बळवंत जोध वहाळ ।।९३।।

विखै भला वह दोड़िया, काची करी न काय।
धकै चढ़े जे सामुहां, दीधा तुर्क उठाय ।।९४।।

---

## शब्दार्थ—

छंद संख्या

८९. समियांणै = सीवाणा में । साची कियो = प्रमाणित किया ।

९३. कूंपां = राठोड़ कूंपा मेहराजोत के वंशज । रंढाळ = हठीला ।

९४. काची करी न काय = कायरता प्रकट नहीं की । धकै = आक्रमण । सामुंहा = सामने ।

## टिप्पणियां-

१– अखैराज माधोदासोत बाला राठोड़ ।

२– पबो (पर्वत) चांदा जैतसियोत बाला राठोड़ ।

३– सूरजमल भींव भोजराजोत उदावत ।

४– लिखमीदास प्रिथीराज दलपतोत करमसियोत ।

५– केसरीसिंह सबलसिंह दलपतोत कूंपावत ।

६– रामसिंह सबलसिंह दलपतोत कूंपावत ।

७– भीमसिंह सबलसिंह दलपतोत कूंपावत ।

रामसींघ[1] पदमो[2] खरा, फिरै फोज में आय।
गांव वसी रा छोड़ कर, रह्या थळां में जाय ।।९५।।

'राजड़' रायांपुर रहे, फिरै फोज के मांय।
'जगरामो' विजपाळ रो, रहै गिरदां जाय ।।९६।।

एक मनो आखाड़सिध, 'जगरामो' रिण जंग।
कदै दूरंगो ना भयो, रह्यो सदा इक रंग ।।९७।।

सांवळ[3] दीपो[4] गोविदो[5], देदो[6] 'किरतो' साय।
जुगत भली विध दौड़िया, सबै मुरधरां मांय ।।९८।।

'भाऊ' 'ऊदो' 'नाहरो' 'माहब' 'वीको' रूप।
तंत वणै 'तैजळ' तणों, रिण बंकड़ा अनूप ।।९९।।

उमरावां कूंपा कटक, रूप अजब[7] हरीयंद।
चुतरो[8] सुंदर[9] सहस वळ, काटण असुरां कंद ।।१००।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

९५. रह्या थळां में जाय = रेगिस्तानी प्रदेशों में जाकर रहे।
९७. कदै = कभी भी। दुरंगो = विरोधी।
९९. बंकड़ा = बांके। अनूप = अनुपम।
१००. कूंपा कटक = कूंपावत राठोड़ो की सेना में।

**टिप्पणियां-**

१- रामसिंह जेतसिंहोत कूंपावत।
२- पदमसिंह जेतसिंहोत कूंपावत।
३- सांवलदास कूंभोत उदावत।
४- दीपचन्द कूंभोत उदावत।
५- गोइंददास कूंभोत उदावत।
६- देवीदास कूंभोत उदावत।
७- अजबसिंह अमरसिंहोत कूंपावत।
८- चुतरसिंह फतैसिंह भावसिंहोत कूंपावत।
९- सुन्दरदास अमरसिंह कूंपावत।

चुतरो[1] जोध[2] छंछाळ अत, राहणियो दळराम[3]।
स्याम सुछळ बेढ़ीमणां, भला सुधारे काम ।।१०१।।

देवकरण[4] देवीदास[5] मिळ, भला दौड़िया जोर।
मेड़तिया मिळिया नहीं, रह्या भोम चिकोर।।१०२।।

चांदावत झूंझारसींघ[6], साहबखान[7] सनाह।
भला भूम पर दौड़िया, रिम तौड़े रिमराह ।।१०३।।

उहड़ां मांझी कोढ़णो, भगवानो[8] बहु भाय।
भोज[9] अखा सुत, स्याम कज, दौड़े मुरधर मांय ।।१०४।।

खींवकरण[10] आसा तणों, भुज गहयां बहु भार।
भल दौड़े धरती मझै, सैंह जाणै संसार ।।१०५।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१०१. छंछाळ = बहादुर।
१०२. रह्या भोम चिकोर = प्रदेश के रक्षक बने रहे।
१०३. चांदावत = चांदा जैमलोत मेड़तिया के वंशज राठोड़।
१०४. उहडां = राव आसथान के पुत्र जोपसा के चौथे बेटे उहड के वंशज, उहड़ राठोडों की एक खांप।

**टिप्पणियां–**

१– चतुरसिंह विजावत रायमलोत मेड़तिया।
२– जोधसिंह राजसिंहोत रायमलोत मेड़तिया।
३– दलराम अजबावत मेड़तिया।
४– देवीसिंह माधोसिंहोत मेड़तिया।
५– देवीदास बिसनसिंह रायमलोत मेड़तिया।
६– जुझारसिंह हरराम गोइंददासोत चांदावत मेड़तिया।
७– साहिबखांन मेड़तिया।
८– भगवानदास सुंदरदासोत उहड़ राठोड़।
९– भोजराज अखैराजोत जगनाथोत ऊहड़।
१०– खींवकरण आसकरणोत नींवावत करणोत।

तेजकरण[1] दुरगैस रो, सकजो सांवत खांण।
पाड़ै अर धर पातळौ, ऊडाड़ै असुरांण ।।१०६।।

देवकरण[2] जसकरण रो, एकण मन अणबीह।
रिम भांजै पाधर लड़ै, जांण विछूटौ सींह ।।१०७।।

रूपा पाता रिमहरा, लड़ भिड़ भांजै सींग।
इंदा मांगळिया अनत, धकै पछाड़ै धींग ।।१०८।।

गोगादे पूनावतां, चाचग चाहड़देह।
खोखर पूनावत सकज, रहिया सको अरेह ।।१०९।।

फतो[3] चतुरभुज[4] स्याम कज, भुज गहयां बहु भार।
भोज[5] भलो दळथंभणो, लालो[6] अजब[7] मुरार ।।११०।।

---

## शब्दार्थ-

छंद संख्या

१०६. ऊडाड़ै असुरांण=मुगलों को समाप्त किया।

१०७. अणबीह=निर्भीक। विछूटौ=शृंखलाओं से मुक्त।

१०८. रूपा=राव रणमल के पुत्र रूपा के बंशज रूपावत। पाता=राव रणमल के पुत्र पाता के वंशज पातावत।

१०९. गोगादे=राव वीरम के पुत्र गोगादे के वंशज। चाचग=राठोड़ चाचिग आसथानोत के बंशज। चाहड़देह=राठोड़ चाहड़दे देवराजोत वीरमोत के बंशज। अरेह=निष्कलंकी।

## टिप्पणियां-

१- तेजकरण दुर्गदासोत करणोत।

२- देवकरण जसकरण आसावत करणोत राठोड़।

३- फतैसिंह चौहान।

४- चतुरभुज दयालदासोत चौहान।

५- भोजा दयालदासोत चौहान।

६- लालसिंह चौहान।

७- अजबसिंह चौहान।

जगू[1] सको में अत सरस, नाडूळो चहवांण ।
पाड़े पाधर मुगलिया, सिर देवे केवांण ।।१११।।

भायल महैवचा भला, आप मतै अणरेह ।
स्याम सुछळ ध्रम सामरे कैतां भांजी देह ।।११२।।

नख चौरासी लख मझ, नरा अनं करमसोत ।
सांडावत आखाड़सिध, मंडला सरस अनोप ।।११३।।

मंडलां सारा अत भला, चत्रभुज[2] बगसीदास[3] ।
लिखमो[4] भाऊ आय भळ, नाह रहै नितरास ।।११४।।

सिवदानो[5] ने भींव[6] भळ, ऐह सुतन रिणछोड़ ।
खागां अरि ऊथामणां, रुके पाधर दौड़ ।।११५।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१११. नाडूळो चहवांण = नाडोल का चौहान ।

११२. भायल = परमारों की शाखा । महैवचा = महेचा राठोड़, जगमाल मालावत के वंशज । केतां भांजी देह = कितनों ने ही प्राणों की आहुति दी ।

११३. नख = नक्षत्र । नरा = राव सूजा जोधावत के पुत्र नरा के वंशज राठोड़ । करमसोत = राठोड़ करमसी जोधावत के वंशज । सांडावत = राठोड सांडा रणमलोत के वंशज । मंडला = राठोड़ मंडला = रणमलोत के वंशज ।

११५. ऐह = ये । ऊथांमणा = उलटाना, नष्ट करना ।

**टिप्पणियां-**

१– जगन्नाथ फतेसिंहोत चौहान ।

२– चतुरभुज नरसिंहदासोत मंडला राठोड़ ।

३– बगसी नाथावत मंडला राठोड़ ।

४– लिखमीदास नाथावत मंडला राठोड़ ।

५– सिवदान रणछोड़दासोत जोधा ।

६– भीवसिंह रणछोड़दासोत जोधा ।

फतैसींघ[1] विजपाळ रो, जोड़ न बीजो जोय।
छोटों ही सिर धरम धर, दीखण आयो डोय ।।११६।।

सवळा सुत आखाड़सिध, कूंपा स्याम सनाह।
केहर रामो भींवसी, जाण लगो रिमराह ।।११७।।

विजैसींघ[2] हरीचंद रो, मेड़तियो बड़ मान।
चांदावत चढती प्रभत, अवर न सम वड़ आन ।।११८।।

जिण री मांई कर मतो, लै निकसी महाराज।
मारू धर में आंणता, कियो विकज को काज ।।११९।।

आप वहेली धाय हुवै, हुवै रावत रखवाळ।
मुरधर मांहे ऐ मिळे, पधराए गोपाळ ।।१२०।।

कामदार केहर[3] जिसो, हुवो न होसी और।
मरण जसा महराज रै, नहीं खामियो अणदोर ।।१२१।।

ता पाछै कायथ प्रछळ, हरकिसनो[4] जगनाथ[5]।
विखै मझारै दौड़िया, वडा कमधजां साथ ।।१२२।।

---

## शब्दार्थ-

छंद संख्या

११६. जोड़ न बीजो जोय=उसके समान दूसरा दिखाई नहीं देता। दीखण आयो डोय=दक्षिण में घूम फिर कर आ गया।

११७. सनाह=कवच, रक्षम।

११८. चढ़ती प्रभत=उदित होता हुआ शक्ति पुञ्ज।

११९. जिण री मांई=जिसकी माता। विकज को काज=विकट कार्य।

१२१. कामदार=दीवान। खामियो=सहन किया। अणदोर=अनादर।

१२२. कायथ=कायस्थ जाति के। प्रछळ=प्रबुद्ध।

## टिप्पणियां-

१- फतैसिंह विजपालोत गोरधन चांदावत कूंपावत।

२- विजैसिंह हरिदासोत चांदावत मेड़तिया।

३-- केसरीसिंह रामचंदोत पंचोली।

४-- हरीकिशन रामचंदोत पंचोली।

५-- जगन्नाथ रामचंदोत पंचोली।

'आसकरण'[1] अत ही सरस, भंडारी वरीयाम।
स्यांम कांम सकजो सदा, सरस सुधारै काम ॥१२३॥

एक मनो बुधमान तण, आसकरण अणबीह।
स्याम काम सिर धार रह, रहि है सदा अबीह ॥१२४॥

हलम हलावं अत घणां, हेक साम चै काज।
साथ फिरै लै सांवतां, भला सुधारै काज ॥१२५॥

केही बैंठो देखकर, कहां लीयो सभाय।
कळ चाली इक स्याम कज, मुगत मुरधरां मांय ॥१२६॥

हेमराज[2] भळ दौड़ियो, गयो दिखण मझ देस।
तातै सारा पत गह्यो, आय चढ्यो तिण देस ॥१२७॥

रूपचंद दलीचंद है, भंडारी अभैराज।
इतरा सो मिळ एकठा, स्याम सुधारै काज ॥१२८॥

कायथ सांवळदास रो, गंगाराम गरीठ।
तें सुत सब ही कामरा, सांम हाथळियां पीठ ॥१२९॥

ता पाछै वीठल[3] अभंग, साम तणो हुजदार।
काम करै सुभ मोकळा, अत बुधवंत अपार ॥१३०॥

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१२३. वरीयाम=श्रेष्ठ। सकजो सदा=सदैव कार्य करने वाला।

१२५. हलम हलावै=दौड़धूप करता। साम चै=स्वामी के।

१२६. मुगत मुरधरा=मुक्तिदायिनी मरुधरा भूमि।

१२८. सो मिळ एकठा=सभी इकठ्ठे होकर।

१२९. गरीठ=बलिष्ठ, योद्धा। कामरा=काम के।

१३०. हुजदार=अधिकारी। मोकळा=बहुत सारे।

**टिप्पणियां-**

१-- आसकरण प्रयागदासोत भंडारी।

२- हेमराज जगनाथोत भडारी।

३- विट्ठलदास भगवानदासोत लूंणावत भंडारी।

भंडारी ओपै भला, विगतो वीठलदास।
आप कचैड़ी बैसतां, काम वण्यो सहि रास ।।१३१।।

भलो विखा में दोड़ियो, स्याम धरम सिर धार।
'अजै' जोधाणै आणियो, तातै पोहतो पार ।।१३२।।

सारा में नादान थो, 'वीठलदास' वजीर।
मया करता मैहपती, चढ्यौ चोगणो नीर ।।१३३।।

'वीठल' 'नारण[1]' 'गिरधरो[2]' सामौ[3] मने सधीर।
अै च्यारूं 'भगवान' रा, नित प्रत वडा वजीर ।।१३४।।

महा मंत्रीवी मोट मन, साम धरम सधीर।
ओपत अत सारां सिरे, नित प्रत वडा वजीर ।।१३५।।

'हेमराज' रो डीकरो भंडारी धनराज।
सुध मनो द्रग देखकर, मया करे महाराज ।।१३६।।

देवराज[4] जगनाथ रो, तें सुत मांईदास[5]।
आय वण्यो सिर आपरै, काम वणावे रास ।।१३७।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

१३१. ओपे भला = अच्छे दिखाई देते हैं।
१३३. मया = कृपा। चढचो चोगणो नीर = सम्मान बढ़ा।
१३५. महा मंत्रीवी = उचित सलाह देने वाला, सलाहकार। मोट मन = विशाल हृदय वाला।
१३६. सुध मनो = सच्चा, स्वामी भक्त।
१३७. आय वण्यो = सौंपा जाने वाला कार्य। वणावे = करता है।

**टिप्पणियां-**

१- नारायणदास भगवानदासोत भंडारी।

२- गिरधरदास भगवान दासोत भंडारी।

३- सामदास भगवानदासोत भंडारी।

४-- देवराज जगनाथोत लूंणावत भंडारी।

५-- माईदास देवराजोत भंडारी।

पंचोळी पूरा पखैं, 'रामो' वेणीराम'।
फेर 'रतनसी' रूपड़ो, करवा विगता काम ।।१३८।।

'कीसनचंद' सह कांम रो, मया करै महाराज।
जो जो सब विध सूंपीयो, भलो सुधारे काज ।।१३९।।

भलो भंडारी 'खेतसी'[1], फिरतो फोज की लार।
साथ रह्यो 'आसा' तणै, धरीय ठीक करार ।।१४०।।

डाढ़ी मुहड़ै राखियां, परी नहीं संवराय।
गढ़ आयां करसू परी, नेम लियो मन मांह ।।१४१।।

राये चंद[2] दीपा तणो, रहतो लसकर मांहि।
'खैराळू' रोळो हुवो, काम आवियो तांहि ।।१४२।।

फेर 'खेतसी' खींवसी[3], रुघो[4] भंडारी साय।
ऊंडै पाणी पैठ कर, करी तपस्या आय ।।१४३।।

कामदार हुजदार में, अै वडभाग वजीर।
वडै राज छत्रपत रे, सही तो सबळो सीर ।।१४४।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१३८. पखैं=पक्ष वाले। विगता काम=ढंग से गिनाने वाले कार्य।

१३९. जो जो सब विध सूंपीयो=जो भी कार्य सौंपा गया।

१४१ परी नहीं संवराय=दाढ़ी नहीं करूंगा। गढ़ आयां=जोधपुर पर अधिकार होने पर।

१४३. ऊंडै पांणी पेठ कर=कठिन कार्य करके।

१४४. वडभाग=बड़े भाग्य वाले। सबळो सीर=घनिष्ठ संमंध।

**टिप्पणियां-**

१-- खेतसी भंडारी।

२-- रायचंद रुघनाथ दीपावत भंडारी।

३-- खींवसी रासावत दीपावत भंडारी।

४-- रुघनाथ रामचंदोत भंडारी।

लूण हरामी लूंडीया, कमी न राखी काय।
सींधवी ईंदरसींघ सूं, सामा मिळिया जाय।।१४५।।

मुहता मन भेळा हुआ, कोह न आयो काम।
सुमतियां मझ स्याळिया, सीस धरा अन स्याम।।१४६।।

सारां ही विप्रा सिरै, एक भलो सुखदेव[1]।
सुध मने हुय स्यामरी, झाली सबखी सेव।।१४७।।

त्रिवाड़ी 'सुखदेव' रो, ऐको बात अथाह।
एक विना महाराज रे, और न कीधो नाह।।१४८।।

भगत सिन्यासी सेवड़ा आयस ने दुरवेस।
ले लै मुहड़ों टळ गया, भय पड़ियां पंडवेस।।१४९।।

तत्व 'विजै' तिण मांहलो, ग्यानविजं[2] गुणराय।
यां नहि पासी छोड़ियो, धर साहस मन मांद।।१५०।।

ऐकण धारण अै रहे, और बात सब छोड़।
तातै नहीं को दरसणी, करै न यांकी होड़।।१५१।।

रावत खीचो मुकनसी, अत बुधवंत अचाळ।
छत्रपति रख सीस पर, राज धरा रखवाळ।।१५२।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

१४५. लूण हरामी लूंडीया = नमक हराम शैतान।
१४७. सारां ही = सभी से। सिरै = श्रेष्ठ। सबखी = निकट की। सेव = सेवा।
१४९. आयस = नाथ पंथी साधु। दुरवैस = फकीर।
१५०. गुणराय = गुणवान। पासी छोडियो = साथ नहीं छोड़ा।
१५१. ऐकण धारण = एक समान। दरसणी = दृष्टि में।

**टिप्पणियां-**

१-- सुखदेव चतुरभुजोत तिवाड़ी।
२-- ग्यानविजय जैन साधु।

रावत मुकनदास रैं, हैं बंधव सीवराम[१] ।
स्याम सुछळ साहस सथिर, भला सुधारे काम ।।१५३।।

जेसो पिंड में जो मरद, महा मंत्रवी मूळ ।
सेवा तें सनमुख रहै, तातै निपट सथूळ ।।१५४।।

रावत रे सुत गोकळो[२], धरमी परम सदाय ।
नित साहस धारै मने, पाप नहीं पिंड मांय ।।१५५।।

द्वारो करमो जोध रो, हरखो[३] हठी रंढाळ ।
सेवा में सबखा रहै, डील तणां रखवाळ ।।१५६।।

सोभां में सकजो सदा, ताको नांव दयाळ ।
सावचेत सेवा मझै, अवर न जांणै आळ ।।१५७।।

'दयालदास[४] अखाईसिंघ, ताकै बांधव तीन ।
बदरी, जीवण, प्राग[५] भल, रहै सदां लवलीन ।।१५८।।

कछवाहो फिरतो समथ, दळो भीम भूजाळ ।
आठ पोहर उभो रहे, सेवा मझ अचाळ ।।१५९।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१५४. पिंड = शरीर । जो मरद = जो व्यक्ति । निपट = नितांत ।
१५६. करमो जोध रो = राठोड़ करमसी जोधावत का, करमसियोत राठोड़ । सबखा रहै = निकट रहे । डीला तणां रखवाळ = महाराजा के अंग रक्षक के रूप में ।
१५७. सोभां = सोभावतों में । सावचेत = सावधान ।
१५८. भल = अच्छे । लवलीन = अनुरक्त ।
१५९. भीम भूजाळ = भीम के समान शक्तिशाली । अचाळ = स्थिर, अचल ।

**टिप्पणियां**

१– सिवराम कलावत खीची, मुकनदास का भाई ।
२– गोकलदास मुकनदासोत खीची ।
३– हरनाथसिंह भींवोत करमसियोत राठोड़ ।
४– दयालदास वैणीदासोत सोभावत ।
५– प्रयागदास वैणीदासोत सोभावत ।

जुझांणियो कलियाण है, फोजदार कलियांण।
सेवा में सुचिता रहे, और नही कुछ आंण ।।१६०।।

मांगळियो भोजू तणो, 'खेतळ' खंभू ठाण।
सावधान सेवा मझै, अत उंचै आथाण ।।१६१।।

'रुघो' धना सुत 'रामड़ो' 'लखमण दान' 'किसन्न'।
दरगाही आसो[1] सथिर, सेवा घणी तें मन्न ।।१६२।।

अै तो बातां आगली, कही वणाय वणाय।
गुण जाझो लघुवात में, कही किसी विध जाय ।।१६३।।

ता पाछै धांधळ मिळे उदैकरण[2] मन आंण।
गोइंद[3] केसो[4] विविध अत, तीनू बंधव जांण ।।१६४।।

'भगवानो' 'नरीयो' सथिर, 'मेघो' 'अरजन साथ।
सदा रहै सेवा मझै, कदै न अळगा जाय ।।१६५।।

'अखो' 'हेम' 'सिवदास' है, अबदारी दिल सुध।
सावचेत निस दिन रहे, नहीं आवे कुबुध ।।१६६।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

१६०. सुचिता रहे=सावधान रहे। नहीं कुछ आंण=कुछ भी स्वीकार नहीं किया, कुछ भी दूसरा विचार नहीं किया।

१६१ भोजू तणो=भोजा का। आथांण=स्थान, आसन।

१६३. आगली=पूर्व समय की। वणाय वणाय=पद्य रचना करके। गुण जाझो=समझ लेना। किसी विध=किसी तरह से।

१६४. धांधळ=धांधल आसथानोत के वंशज, धांधल राठोड़।

१६६. अबदारी=पानी पिलाने वाला सेवक।

**टिप्पणियां-**

१- आसकरण नाथावत बारहट।

२- उदैकरण मनोहरदासोत धांधल।

३- गोइंद मनोहरदासोत धांधल।

४- केसो (किरतो), मनोहरदासोत धांधल।

साहणी 'जोगो' ने नरो, 'देवो' रायसींघ'।
'हरी' ने 'उगरो' (ही) सदा, खीज खातै (थै) धींग ।।१६७।।

जोगा रो 'सांवळ' 'विजो' 'नरा' सुतन मन आंण।
'राजो' 'भोजो' ने सबळ, कलियाणौ अै जांण ।।१६८।।

'जोगराज' ने 'वीरमदे', 'देवराज' 'धनराज'[1]।
जोड़ वणी गैहलोंतां, सब ही लिये समाज ।।१६९।।

जादम 'पीथो' 'भाखरो', 'जीवराज' पंवार।
'बळू' चित्रधर 'भागचंद' मझ सेवा हुसियार ।।१७०।।

'रामचंद' 'गिरधर' सुतन, देळो' भोपत साय।
'नेतो' गूजर 'भागचंद' हरचंद वाभी मांय ।।१७१।।

'सांवळ' जानी, रासतों, नाई गोविंद नाम।
आयो अपणै ही तणां, करै मोकळा कांम ।।१७२।।

तंबोळी 'बैणी, प्रकट, वैद सदा 'सतीदास'।
आठ पहर कर जोड़ियां, रह सेवा मझ रास ।।१७३।।

प्रोहित पांणी संग धरै, ताको नाम कलियाण।
धनो चतुरभुज दूधड़ो, अै सारा पहचांण ।। ।।१७४।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१६७. सांहणी=जाति विशेष। खीजखातै (खीजमतै)=सेवा में।

१६९ जोड़ वणी=जोड़ी बनी हुई। समाज=परिवार, कुटुम्ब।

१७२. अपणै ही=अपणायत में, अपना समझ कर।

१७४. प्रोहित पांणी संग धरै=पुरोहित, पानी पिलाने की सेवा पर नियुक्त, सेवा में उपस्थित रहे।

**टिप्पणी–**

१– ये तीनों चुतरा गहलोत के पुत्र थे।

फेर गरीबी कांम में, दाढ़ी 'मीमो साह'।
'सुखो' 'भीमसी' 'हाथियो' त्यांरी करै सराह ।।१७५।।

बेटो द्रोणाचार रो, नामज लीखमीचंद[1]।
साथ हुतो 'दुरगा' तणै, पड्यो तुरक कै फंद ।।१७६।।

'महमद आरफ' नाजरह स्याम धरम सिरधार।
प्रकट भये दुनियांण में, आय खड़ौ तिणवार ।।१७७।।

व्यास पुरोहित बांणिया, अब थरकावै सींग।
विलखा होय पाछा बळचा, काढ़ दिया इंदरसींघ ।।१७८।।

'अखैराज' फिर आवियो, द्रोणाचारज व्यास।
और सको साथे लियां, काम न आयो रास ।।१७९।।

सुंदर भट दुज अत ईधक, अवां को निज दास।
ताको पठायौ नृपत पै, आय रह्यो ऊ पास ।।१८०।।

'कैसर खां' 'सैबाज खां', छड़ीदार तिणवार।
मिरधां 'मेहमद अली' 'जीवण' शेख तयार ।।१८१।।

राजु 'मोहबत' ने 'बेधो', बळ मझ भांड सरूप।
गावत बाबत कज सुभ, भाखे गीत अनूप ।।१८२।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

१७६. दुरगा तणै = राठोड़ दुरगादास के। फंद = कैद।
१७८. बांणिया = व्यापारी, बनिये। थरकावै सींग = सर को धुनते हैं। बिलखा = उदास। बळचा = पलटे।
१७९. काम न आयो रास = कार्य सिद्ध नहीं हुआ।
१८१. छड़ीदार = छड़ी लेकर चलने वाला सेवक। मिरधां = डाक चौकी की व्यवस्था करने वाले सेवक।
१८२. भांड = जाति विशेष। विभिन्न प्रकार की नकलें उतारने वाली जाति।

**टिप्पणी-**

१- लिखमीचंद द्रोणाचारजोत व्यास, दक्षिण से वापस आते समय आश्विन सुदी 8, 1741 वि. के दिन इसको गिरफ्तार किया गया था।

'नीलकंठ ने 'रामदत', मांगळियो 'सादूळ'।
सेवा में निस दिन रहे, दूर न हुवै मूळ ।।१८३।।

अभैराम सादूळ रो, कळ चालण कमधज्ज।
साम धरम सिरधारियां, राखण कुळवट लज्ज ।।१८४।।

भगवानो[1] जगनाथ रो, कूंपावत दिढ़ कोट।
पांतो गोवरधन रो, दीये अर सिर दोट ।।१८५।।

बारठ 'केहर'[2] बागड़ो, बड़ो विखायत जोर।
रहै सदा दरगाह में, कदै न जावे चोर ।।१८६।।

भाट 'मनोहर' आगलो, गुहली तणों कहाय।
फोजां मैं फिरतो सदा, रहतो सेवा मांय ।।१८७।।

सेवग 'रुघपत' ने 'रिदो', बळ बीदो 'बळराम'।
दान कजै किण और को, अेकळ लेव न दांम ।।१८८।।

लाहोरी नाथू भलो, मोहबत पीरोसाह।
आयो आपणै काम में, रहे बंदगी मांह ।।१८९।।

'रतनो' 'धोवी' ने 'जसो' फेर 'मनो' तिण मांय।
आयो आंपणै बंग सू, रहै बंदगी मांय ।।१९०।।

'अली मेहमद' नाम तुल, मोहण सैख कहाय।
खड़ै रहे दरबार में, छड़ियां हाथ संभाय ।।१९१।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१८४. कुळवट=कुल की रीति। लज्ज=समान।

१८५. दिढ़=दृढ। अर सिर दोट=शत्रुओं के सिर पर प्रहार किया।

१८६. विखायत=विपत्तिकाल में साथ देने वाला। बांगड़ो=सिंह तुल्य।

१८९. लाहोरी=लाहोर निवासी। बंदगी=सेवा में।

१९१. छड़ियां हाथ संभाय=हाथों में छड़ी लेकर।

**टिप्पणियां-**

१-- भगवानदास जगनाथोत कूंपामत, झूपेलाव का ठाकुर।

२- केसरीसिंह भींवोत बारहट।

'मजनु' 'जाफर' 'बहादरो' अैह फरास अचूक।
मुदै दान तिण म्हायलो, पड़ै न आ मैं चूक ॥१९२॥

'विद्रावन' जोसी विहद, मोरत काढ़ै ठीक।
तातै उत्तम काम हुवै, कदै न लागै लीक ॥१९३॥

'मुरली' ने 'नरसींघ' मझ, भले रसोईदार।
रसोड़ो महाराज रै, करेह वेग तयार ॥१९४॥

'महासींघ' हाडो मने, रहै सदा हजूर।
कांमे नांवे ठीक है, कदै नहीं व्है दूर ॥१९५॥

द्रोणाचारज वालकिसन, वालमुकंद वलदेव।
भागचंद लालो सको, सदा रहे नित सेव ॥१९६॥

'अखैराज' दळपत रो, प्रोहित पाट कहाय।
सदा रहै सेवा मझै, कदै न अळगो थाय ॥१९७॥

'उदैराज' गुजंर 'विजो', साम खबर थिर पाय।
सिरियारी डेरा हुवा, पाय लग्या तद आय ॥१९८॥

घड़ीयाली 'नंदू' 'विजो' मुहतो 'दीपो' माय।
'भींवपुरी' ने 'भागचंद या थिर सेवा मांय ॥१९९॥

---

**शब्दार्थ—**

छंद संख्या

१९२. फरास = पेशखाने के सेवक। आ मैं = इनमें।

१९३. मोरत = मुहूर्त्त। कदै न लागे लीक = कभी रुकावट नहीं आयी।

१९४. रसोईदार = खाना बनाने वाला। वेग = शीघ्र।

१९५. हजूर = दरबार में। कांमे नांवे = लिखने पढ़ने में।

१९७. प्रोहित पाट कहाय = राज पुरोहित कहलाता है। न अळगो थाय = दूर नहीं होता है।

१९८. थिर पाय = निश्चित सूचना मिलने पर। डेरा = पड़ाव।

१९९. घडीयाली = घड़ी बजाने वाला नौकर।

'दीपो'[1] बालकिसन रो, है ध्रम चो आंकूर ।
नहीं न्यारो हुवे कदै, रहि है सदा हजूर ।।२००।।

मोहकम हंदै आवणै, और व्यास गा भाज ।
तद दीपो महराज रै, सबळै आयो साज ।।२०१।।

ओरां इण बहु आंतरो, जेतो पाप धरम ।
ओ तिरीयो ध्रम साम कै, इता हुवा अकरम ।।२०२।।

ऐक हुकम श्रीपत तणै, 'मोहकम' 'मोहण' मार ।
सिर लिधो 'उरजण' तणों, करे शत्रु संहवार ।।२०३।।

'बालकिसन' बळ भाळियो, स्याम धरम सिरधार ।
और न क्यूं मन आंणियो, तासै पोहतो........पार ।।२०४।।

सीरोही रा साथ में, है प्रोहित जैदेव ।[2]
और न क्युं मन आंणियो, तातै पोहतो पार ।।२०५।।

ताको सुत रिणछोड़[3] है, सो अपणो निज दास ।
बाळपणां में बंदगी, सदा रह्यो इम व्यास ।।२०६।।

---

**शब्दार्थ–**

**छंद संख्या**

२००. ध्रम चो=धर्म का । न्यारो=अलग ।

२०१. मोहकम हंदै आवणै=मोहकमसिंह के आने के समय । गा भाज=भाग गये ।
साज=उपयोगी सामान ।

२०२. ओरां=अन्यों से । अकरम=कुकर्म ।

२०३. मोहकम मोहण मार=मोहकमसिंह व मोहनसिंह, इन्द्रसिंह के पुत्रों को मरवाकर ।

२०४. बळ भाळियो=दृढ निश्चय किया ।

**टिप्पणी-**

१– दीपचंद बालकिसन नाथावत व्यास ।

२– जैदेव पुरोहित, इसके घर पर अजीतसिंह रहा था ।

३– रणछोड़दास जैदेवोत पुरोहित ।

'रुघियो' 'भोपत' 'सहसियो', 'सुंदरीयो' तिण माय ।
बारी करवा बंदगी, लागा कदमां आय ।।२०७।।

महेवचा आखाड़मल, जेतो भाहरमल्ल[१] ।
उदैभांण, सूजो, विजो[२], रिमधर करण उथल्ल ।।२०८।।

'सुरताणसिंघ[३] सगतेस पुनः, 'साहबखान'[४] सधीर ।
लड़ै धवैचां रेण कज, गिरां चढावै नीर ।।२०९।।

भायल 'आसो'[५] पांचीयो[६], सबळो 'देद' कहाय ।
'अखो'[७] लड़ै रिण सांमहो, बसै गिरदां माय ।।२१०।।

'दूदो' 'रुघपतो' 'जैंतसी', विखो कियो लख दाय ।
गांव छोड़ वसियां तणां, रह्या थळां मझ जाय ।।२११।।

रूपा पाता जैत हथ, दुरगो गोविंद तास ।
जोधो मुकनो नारणो, सदा रहै निज दास ।।२१२।।

गढ़ दाखल हुवां पछै सिरदारां ने चाकरी में वदारो∅बढायो तिण राह रा#भाट सतीदास दूहा कह्या जिकै लिखिया—

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

२०८. आखाड़मल=वीर । उथल्ल=पलटना ।
२०९. धवेचां=राठोड़ों की शाखा । गिरां चढावे नीर=पहाड़ पर पानी चढाना, कठिन कार्य करना ।
२१०. भायल=परमारों की शाखा । गिरंदा=पहाड़ ।
∅वदारो=इजाफा । # तिण राह रा=उसी भाव के ।

**टिप्पणियां-**

१- रावल भारमल जगमाल दूदावत महेचा ।
२- विजो मनोहरदासोत महेचा ।
३- सुरतांणसिंह सकतसिंहोत धवेचा ।
४- साहबखान जेतावत धवेचा ।
५- आसा सांवलोत भायल ।
६- पांचा मानावत भायल ।
७- अखा आसावत भायल ।

## दूहा

'अचळा' ने परताप रो हुती न रैहवा ठांव ।
तोनु महाराजा दियो, रीयां सरीखो गांव[1] ।।१।।

गांव विंजावस नांनीयो, पित ज्यां रो खातो ।
दीधो आलम देखतां, तै तोनुं बांतो ।।२।।

.................................................................।
तिण 'ऊदा' जगराम ने, तैं दीधी नीबाज[2] ।।३।।

सबळा[3] रा सबळा किया, लेख परा रा लोप ।
खारड़िया रा खूंद नै, तै दीनी आसोप[4] ।।४।।

## निसाणी छंद

तैनु दीधो आऊवो[5] धर थी काणीह ।
राखंवा राजा अजा, कीरत आपाणीह ।।५।।

पैहली हुती दूधवड़, तोनु दी पालीह ।
सेवा सत पुरषां तणीह, क्यूं जावै खालीह ।।६।।

---

### शब्दार्थ–

छंद संख्या

१. हुती = थी । रेहवा = रहने के लिए । तोनु = तुम्हें ।
२. नांनीयो = छोटा । आलम = संसार ।
४. सबळा किया = शक्तिशाली बनाये । लेख परा रा लोप = विधि के लेख को लांघ कर ।
५. धर = जगह । राखैवा = रखने के लिये ।
६. पैहली हुती = पहले थी । दूधवड़ = दूधोड़ गांव ।

### टिप्पणियां-

१-- सन् 1708 ई. में महाराजा अजीतसिंह ने राठौड़ कुशलसिंह अचलसिंहोत मेड़तिया को रीयां का पट्टा दिया था ।
२– राठोड़ जगराम उदावत के पुत्र अमरसिंह को नीबाज का पट्टा दिया था ।
३– राठोड़ सबलसिंह दलपतोत कूंपावत ।
४– राठोड़ कीरतसिंह से जब्त करके भीम सबलसिंहोत को प्रदान की ।
५– राठोड़ हरनाथ तेजसिंह आईदानोत को आऊवा प्रदान किया ।

## दूहा

ऐकर सूं आगे हुवो, लसकर वाळौ कांम।
तौनु महाराजा दियो, बगड़ी सरीखो गांव ।।७।।

छोटी रीयां उपरां, दियो कोसाणो गांम।
दीधो दौलतसींघ[1] ने, हो अजमळ वरीयाम ।।८।।

हुती न रहवा बाप रै, दोय पगा ने ठांव।
वडो विखायत्त जांण नै, राहण दी दळराम[2] ।।९।।

खीची ने रावत केहो, दीधी गांगाणीह।
राखैवा 'राजा अजा' कीरत आपांणीह ।।१०।।

राणै बावर राखियो, मेवाड़ां सूं माड़।
तिण 'उदा' जगराम ने, ते दीधी पींपाड़ ।।११।।

धणी कीयो ढूंढाड़ रो, दोय वेला जैसींघ[3]।
साहस बांधै साह सूं धींग 'अजा' रिण धींग ।।१२।।

ऊथपियो अमरेस रो, राण कियो दोय वार।
जोरावर 'जसराज' रा, तैं अजमळ उदार ।।१३।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

७. ऐकर = एक बार। लसकर = सेना।
८. छोटी रीयां उपरां = छोटी रीयां नामक ग्राम के साथ।
९. दोय पगां ने = दो पैर रखने को। ठांव = जगह।
१०. रावत केहो = रावत की पदवी प्रदान की।
११. मेवाड़ां सूं माड़ = मेवाड़ी सामन्तों के विरुद्ध होकर।
१२. धणी कियो = स्वामी बनाया। रिण = युद्ध क्षेत्र।
१३. ऊथपियो = हटाया हुआ। अमरेस रो = महाराणा अमरसिंह का।

**टिप्पणियां–**

१– दौलतसिंह जुझारसिंह गोइंददासोत चांदावत मेड़तिया।
२– दलराम अजबावत रायमलोत मेड़तिया के पुत्र पृथ्वीसिंह को रैण का पट्टा प्रदान किया था।
३– सवाई राजा जयसिंह, जयपुर का शासक।

तै थारो कर थापियो, रामपुरै संग्राम[1] ।
रांण तणी रूकां मुहै, मार उतारी मांम ।।१४।।
देतां आलम दाखियो, 'माना'[2] ने रतलाम ।
पर दुख काटण विरदपत, तू वीकम कै राम ।।१५।।
छोटा मोटा डीकरां, कैई किया निहाल ।
बैसाड़ै वीरदादपत, हाथां हाथी ढाळ ।।१६।।

म्हाराजा जी श्री अजीतसिंधजी री जनमपत्री लिखतं । सं. १७३५ शाके १६०० रा चैत वदि ४ बुधवार[3] लाहोर में जनम हुवो लगन वर गोतम

-जन्म कुंडलिका-




**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

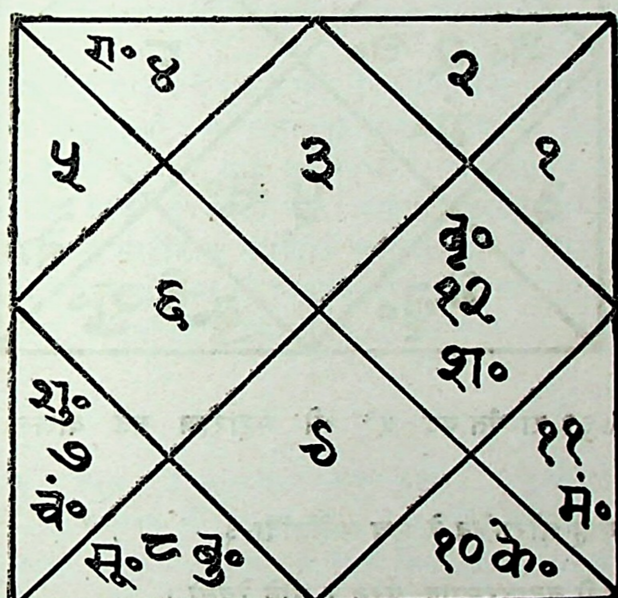
१४. थापियो = स्थापित किया । रूकां मुहै = तलवारों के सामने । मांम = अभियान ।
१५. पर दुख काटण = दूसरों के कष्टों के निवारण के लिये ।
१६. छोटा मोटा डीकरां = छोटे बड़े व्यक्तियों को । किया निहाल = सुसम्पन्न बना दिया ।

**टिप्पणियां-**

१- रामपुरा का चंद्रावत शासक संग्रामसिंह ।
२- मानसिंह केसरीसिंहोत, रतलाम का शासक ।
३- फरवरी 19,1679 ई. ।

म्हाराजकंवार श्री अभैसिंघजी री जनम पत्रका लिखते-जालोर रो जनम, सं.१७५९ रा शाके १६२४ रा मिती मिगसर वदि १४ सनिवासरे[1] घटी ३१/१७जनम

–जन्म कुंडलिका–




टिप्पणी–

१– नवम्बर 7,1702 ई.।

म्हाराजकंवार श्री बखतसिंघजी री जनम पत्रका लिखते-सं० १७६३ शाके १६२८ रा प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे भाद्रपद क्रसन पक्षे तिथो ८[1]

-जन्म कुंडलिका-




सं. १७६३ रा चैत वद ५[2] श्री महाराज गढ दाखल हुवां पाछली हकीगत-

पातस्याह ओरंगजेब रे मुख साहेजादा-३

१ पाटवी बहादरस्याह, पूरब रे सोवे रेहतो।

१ माजम सोवे थो, ने पातस्याह राजी थो सु पातसाही उमराव फोज पिण इण कने रेहती।

१ कामबगस छोटो सुं दीखण कानी री जागीरी दीवी थी सुं उठीने हीज रेहतो।

---

टिप्पणियां-

१- मंगलवार, अगस्त 20,1706 ई.।

२- बुधवार, मार्च 12,1708 ई.।

औरंगजेब फोत हुवो तरे बाहादरस्याह रै ने माजम रै धवलपुर वडी वेढ़ हुई ।[१] मांजम काम आयो, ने तखत बाहादरस्याह बेठो । अत करड़ो[1] हुवो, सुं पेला तो आंबेर जबत कर जैंसिंघजी ने काड़ दिया । सुं निकल ने जोधपुर आया । सुं महाराज सुं मिळिया । तरै श्री महाराज कोल-वचन दियो। राज नूँ आंबेर हुसी तो म्है ई जोधपुर लेसां । पछै बाहादरस्याह अजमेर आयो । सुं जात करने[2] अजमेर रो सोवो सैदां ने दीयो, ने मारवाड़ ऊपर आयो । सुं बिलाड़ा डेरा किया । ने मारवाड़ में फेर पाछी तुरकाणी हुई[3], जोधपुर थाणों मेलियो । फुरमायो-'विना हुकम मतै[4] अमल कीहूं कीयो । हमै जमा खातर राखने हजूर आवो, मुलाजमत करो ।' तरै श्री म्हाराज राजलोक कंवरां नै तो सीवाणां री तरफ मेलिया । साथे पं. हरकिसन ने मेलियो । ने श्री महाराज ने जैंसिंघजी पातस्याह री हजूर बिलाड़े जाय ने मुलाजमत कीवी[२] । सुं चवड़ै तो मेरवानी फुरमाई, ने मन में सुद नहीं[5] ।

ने बाहादरस्या मांजम रे धूंकळ सुण ने छोटो भाई कामबगस दीखण में उली कानी[6] जमी धावतो थो । सुं पातस्याह बादरस्याह रो दीखण तरफ कूच हुवो । १७६४ रा काती सुद १[३], साथे कूच कियो । श्री महाराज ने जैंसिंघजी दोनूँ साथे लिया । जोधपुर आंबेर तुरकांणी रही । थांणा राखिया । सो डेरां मेवाड़ परै[7] सीतामऊ हुवां । तरै श्री माहाराज करणोत दुरगदासजी ने फुरमायो - 'पातसाह जोधपुर आंबेर तो थाणां राखिया सो निभां किण तरै[८] । पातस्याह नरबदा उतरै, मै चढ़ने परा पधारां, थाणां उठाय देसां । पाछो आवसी मै देख लेसां । पिण

---

**शब्दार्थ—**

1. अत करड़ो = प्रबल । 2. जात करने = दर्शन करके । 3. तुरकाणी हुई = मुगलों का अधिकार हुआ । 4. मतै = स्वेच्छा से । 5. सुद नहीं = साफ नहीं । 6 उली कानी = इस तरफ । 7. मेवाड़ परै = मेवाड़ की सीमा के बाद । 8. निभां किण तरै = निभाव कैसे हो ।

**टिप्पणियां-**

१- यह युद्ध जाजव नामक स्थान पर रविवार, जून 8, 1707 ई. के दिन लड़ा गया था । इस युद्ध में बड़ा शाहजादा मुहम्मद मुअज्जम जीता और आजमशाह मारा गया था । (इरविन०, भाग 1, पृ. 15-26) ।

२- बादशाह बहादुरशाह अजमेर से मेड़ता होते हुए बिलाड़ा के पास आनन्दपुर कालू नामक स्थान पर पहुंचा । इसी स्थान पर अजीतसिंह आदि फरवरी 13,1708 ई. के दिन उससे मिले थे । (अखबारात० (बहादुरशाह), वर्ष 1, पृ. 443-53; राजरूपक, पृ. 422-24) ।

३- बुधवार, अक्तूबर 15,1707 ई. । यह तिथि गलत है । वस्तुतः बहादुरशाह सोमवार, मार्च 23,1708 ई. के दिन दक्षिण की ओर रवाना हुआ था ।

मोहकमसिंघ अठै है सो पाछै कुबध[1] करै। सो इण ने थे अठा सुं उचकावो[2] तो ठीक है। थांरो सद जांणै है।' तरे दुरगदासजी महोकमसिंघ सुं मिळिया। पैला तो दूजी बांतां कीवी, राजी हुवां कयो-'रावजी तो पुखता[3] हुवा है'। कांई किसी हुवै तो राज रो धणी मोवणसिंघ हुवै, ने आप अदर[4] रहो।' तरै मोकमसिंघ पातस्याह सुं अरज कीवी - "हजरत रावजी रो डील नीरांट[5] बै बै आराम छै। सो उवारै लिखियो है। हुकम हुवै तो अेक बार नागोर जाय आऊ।" सीख कर नागोर गया। नै पातस्याह नरबदा उतरीयो कटक सूधो।

तरे महाराज ने जैसिंघ जी जेठ वद २[1] मुरड़ ने चढ़ आया, सो उदैपुर पधारीया। रांणै अमरसिंघजी नीरांट लाड उछब कीयो। सं. १७६४ काती जोधपुर पाछो तुरकां रो थांणो आयो ने काती सुद १ बिलाड़ा सुं पातस्याह साथै दीखण कानी चढ़ीया। जेठ में नरबदा सुं मुरड़ ने जेठ वद १३[2] उदैपुर पधारीया। ने राजा जैसिंघ जी ने राणां अमरसिंह जी री बेटी परणाया असाढ़ में।[3] पछै महीनो दोढ़ दोय उदैपुर रया। सुं रूपीया अेक हजार रोजीनो तो जैसिघजी ने, ने रूपीया पांच सो म्हाराज श्री अजीतसिंघ जी ने नित खरच रा रोजीने देता। सांवण में पीछोलाव रा म्हैलां में पोढ़ीया था, ने रात रा घटा भारी आई, गाज वीज[6] हुवो। तरै श्री महाराज उमराव चौकी था, जिणां में भंडारी विठलदास ने हेलो मारने फुरमायो-' देखो घाट केहड़ी आई है ने हवा री वेला है।' तरैं इणा अरज कीवी-' कांण री घटा ने क्हैण री हवा।" तरै फुरमायो— 'इऊं कीऊं कयो।" तरे इणां अरज कीवी-"देस छूटो, पारका[7] म्हेलां में कांण री हवा। जोधपुर पधारीजे ने

---

**शब्दार्थ-**

1. कुबध = कुचेष्ठा। 2. उचकावो = अलग करो। 3. पुखता = वृद्ध। 4. अदर = बीच में ही। 5. नीरांट = अत्यन्त। 6. गाज बीज = मेघगर्जन व विजलियों की कौंध। 7. पारका = दुसरों के।

**टिप्पणियां-**

१– रविवार, अप्रेल 15,1708 ई.; लेकिन जोधपुर ख्यात० (भाग 2, पृ. 127-28) के अनुसार वैशाख सुदी 12 (मंगलवार, अप्रेल 20, 1708 ई.) को बड़ौद = (बड़ावदा = मंदसौर से 38 मील द. पू. में) से मुड़े थे।

२– शुक्रवार, मई 7,1708 ई; यहां पर भी पांच दिन का अन्तर है। जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 129; राजरूपक, पृ. 427 के अनुसार मई 2, 1708 ई. को पहुंचा था।

३– यह विवाह सोमवार, मई 10, 1708 ई. को हुवा था। (वंशावली०, पृ. 37; वीर विनोद, भाग 2, पृ. 834)।

हुवा कराइजे ।'' तरै फुरमायो– "पातसाह जबर है।" तरै इणां अरज कीवी-- 'आपरो भाग ने ताप इण सूँ ई वधतो जबर है।'' परभातै ई नगारो करनै तुरत पधारीया। सोझत में हुय पातस्याही थांणा उठाय दीया। सं. १७६५ रा सावण वद १३[1] पाछा गढ दाखल हुवा, ने जैसिंघजी ने श्री म्हाराज री फोज आंबेर जाय कायम कर जेसिंघ जी ने पाछा बेसाणियां पातस्याही थाणां ऊठाय दीया।

नै दीखण में पातसाह सुं मालम हुई सुं घणो रोस चढ़ियो। अजमेर सैदां ने अतराजी[1] लिखी–तुम सरीत लोपी। अब तुम राड़ कीजो, ने काड दीजो, नहीं तो चूड़ी पैर घर में धसजो[2] ।'' ने नारनोल रा सोबायत नै पिण सांमळ होण रो लिखियो। जिण उप्रे सैदां अजमेर नारनोळ सुं डेरा बारै कीया। नै श्री महाराजा पिण बड़ी फौज सुं दरकूंचां सामे पधारीया, ने आंबेर सुं जैसिंघजी आया, सांमळ हुआ। सं. १७६५ रा काती सुद १३ सैद गीरतखां, हसनखां सुं देवजांनी सांभर उप्रे राड़ हुई[2] । सैदां ने मार लिया। कोई नाठा। राठोड़ भींव सबळसिंघोत कूंपावत आसोप रो वाजने[3] काम आयो। श्रीजी री नै जैसिंघ जी री फतै हुई। सैदां रो कटक लूटीयां[3] । सांभर ने डीडवाणों पातस्याही था सुं अमल कर पैदास[4] आदो आद ठैहराई।

---

**शब्दार्थ-**

1. अतराजी=नाराजगी। 2. धसजो=बैठ जाना। 3. बाजने=युद्ध करके।
4. पैदास=आमदनी।

**टिप्पणियां-**

१– रविवार, जुलाई 4, 1708 ई.।
उदयपुर से रवाना होकर अजीतसिंह अपने साथियों सहित जून 29, 1708 ई. को जोधपुर पहुंच कर शहर घेर लिया। जोधपुर में बादशाही अधिकारी महराव खां ने पांच दिन तक प्रतिकार किया, लेकिन बाद में दुर्गादास के माध्यम से उसने जोधपुर छोड़ कर मेड़ता होता हुआ अजमेर की तरफ चला गया। इसके बाद ही उक्त दिन अजीतसिंह जोधपुर के दुर्ग में प्रवेश कर सका। (राजरूपक, पृ. 427-29; 431; जोधपुर ख्यात० भाग 2, पृ 131-133; इरविन०, भाग 1, पृ. 67-68)।

२– शनिवार, अक्तूबर 16,1708 ई.। सांभर का यह प्रसिद्ध युद्ध रविवार, अक्तूबर 3,1708 ई. के दिन हुआ था। (जयपुर रिकार्डस. (हिन्दी), भाग 2, खं. 3, पृ. 11; राजरूपक., पृ. 434-440; थर्टी., पृ. 68-69)।

३– वस्तुतः आक्रमण के प्रथम प्रहार से घबराकर अजीतसिंह व जयसिंह भाग खड़े हुए। किन्तु सैय्यद हसन अलीखां के मारे जाने से पासा पलट गया था। मुगल सेना भाग खड़ी हुई। (सियार., भाग 1, पृ. 24; सांभर युद्ध., भूमिका, पृ 4-8)।

सांभर डीडवांणै, हाकम श्री महाराज री तरफ सुं भं. खींवसी रासावत दीपावत ने म्हेलियो । सुं बरस एक में सांमलायत रुपीया १८,००,००० अठारे लाख-तिण री विगत-

१,००,००० काजी कनै ।
१,००,००० पं. सायब राम कनै ।

२,००,००० फुटकर फरोई जुदी ।

मुत्सदीयां ने कांम सूंपीया री विगत-

१- परधानगी रा. मुकनदास सुजाणसिघोत चांपावत, पटै पाली ने वधारा में सथलाणो फेर दिरीजियो ।

१. दीवांणगी भं. विठलदास भगवानदासोत लूणावत ।

१. खानसामां प्रो. रीणछोड़ जैदेवोत मरजीरो । विखारी चाकरी सिरोई रा साथ में थां थेट सूं[1] ।

१. व्यास पदवी व्यास दीपचंद नाथावत विखा री चाकरी ।

१. वगसी पं० हरकीसन रामचंदोत झामरिया ।

१. बारठ केसरीसिंघ भीमसिंघोत ने बेटा दोय गोरखदान जी, करणीदान जी ।

१. मैड़ते हाकम भं. नारायणदास भगवानदासोत लूंणावत ।

१. जैतारण हाकम भं. देवराज जगनाथोत लूंणावत ।

१ सोझत ।

१. जोधपुर ।

१. सिवाणो ।

१. जाळोर ।

---

**शब्दार्थ-**

1. थेट सूं—प्रारम्भ से ।

१. फळोदी ।

१. सांचोर ।

१. दोढ़ीदार--गूजर विजैराम ।

१. जोधपुर सिकदार सोभावत दयाळदास वैणीदासोत निज मरजी[1] रो चाकर ने दोढ़ी रो कांम[2] दिए करता ।

१. श्री हजूर रे दफतर दारोगो खीची सिवराम किल्याणदासोत गांव भवाद वगैरे बीस हजार रो पटो, ने हाथी, मिसंद[3] लारै बैठण रो कुरब, मुकनदास रो भाई ।

१. रावत पदवी खीची गोकळदास मुकनदासोत गांव गांगाणी वगैरे बीस हजार रो पटो कड़ा मोती. हाथी मसंद वगेरे लारे बैठण रो कुरब । मुकनदासजी री मोटी चाकरी थी सु उप्र लिखीज है ।

१. मोदी फतो पीथो दोनु भाई जाळोर में चाकरी पोहता तरै मोदीखानो, तवेला पीलखाना रो, ओसवाल, सु फतै रा जोधपुर रहै ।

१. मोदी राजसी सिरोई जाळोर रो चाकरी वास सु मोदीखानों रसोड़ा रो ने फेर मोदी मेघजी मूळजी अै ही सिरोही रा था ।

भंडारी विठलदास ने कैद हुई । मास आठ रही । सु कैद हुई तरै सिंघवी वखतमल, तखतमल जोधमल, जीवणमल वगैरे सुखमलोत विखा में बीकानेर जाय बैठा, तिणां नु रुपिया २०,००० बीस हजार माथे कर भराय दीवांणगी दीवी थी संवत १७६४ में (मांस पांच रही थी) । नै पछै विठलदास रै अढाई लाख माथे कर दीवांणगी दीरावता हा । आज सवारै[4] में हुणु[5] थी, सु दीवी । ने संमत १७६६ रा काती[1] में फेर पाछी कैद हुई । सकरड़पणों जादा, ने दुरगदासजी री हीमायती[6] थेट सूं । सो कैद करने भंडारी रुघनाथ दीपावत ने दीवाणगी दीवी थी ।

---

**शब्दार्थ—**

1. निज मरजी = कृपा पात्र । 2 दोढी रो काम = ड्योढ़ीदार का कार्य । 3. मिसंद = मसनद, गद्दी, बैठक । 4. आज सवारै = आज कल में । 5. हुणु = होने में । 6. हीमायती = सिफारिश ।

**टिप्पणी-**

१- अक्तूबर, नवम्बर, 1708 ई. ।

ने विठलदास रे फेर रुपिया ठेहर ने छूटो। सु दीवाणगी पाछी तयार हुई। लोग रुघनाथ ने कैहण लागा–जनमपत्री रो जोग साजियो थो[1]।' जितरे विठलदास मत कुमत सु एक रूको उदावत जगराम विजैरामोत, नींब्राज रा ठाकुर ने दीयो थो। सु दईवगत[2] सु रुघनाथ रे हाथ आयो। जाय मालम कीयो। नें जगराम जी नै रुघनाथ रो तो ठीक नहीं, पिण विठलदास ने कवायो-'कौल बैन छै। ने परभात रा म्हां कनै रुघनाथ आयो थो। थे जाबतो राखजो।' तरै विठलदास दोढ़ीदार गूजर था तिण ने पूछीयो। हेत थो, सुं गुजरां कयो-एक रूको रुघनाथ मालम करतो थो। पाछो तो किऊं फुरमायो नहीं ने रीस में पिण छता था[3]। सु विठलदास निकळतो थो जितरै अ वारी पधार गई। खासा सु उतरीया। तरै विठलदास जामां री दांवण पकड़ ने कयो--आपनै श्री बडा महाराज री आंण है, कोई साची जुठी रो तार कढावसी[4]।' तरै आप जांभो जपट ने छुड़ाय लियो ने फरमायो--"हरांमखोर रो कांई तार।" कैद कर मेड़ते पधारता चूक कीयो। सोढ़ेर मरायो थो। ढोढ़ी गूजरां सु उतरी। जद सु सोभावत वरकरार रह्या। ने भंडारी दीपावत वढ़ीया।

नै एक बार ओदा इण तरै हुवा, तिण री विगत--

१. दीवाणगी भं. माईदास देवराजोत लूंणावत।

१. देस दीवाणगी भं. खीवसी रासावत दीपावत।

१. जोधपुर कचेड़ी री हाकमी भं. रुघनाथ रामचंदोत

१. मेड़ता री हाकमी, भं. देवराज

जोसी गिरधर सांचोती निबाब कने रहतो सुं श्री महाराज स्हैर दाखल हुवा कह्यो-'म्होरत अवल देखने दाखल हुवे।'

मास ९ नव भं० माईदास खींवसी रे भेळो काम रह्यो। सं. १७६७ खिजमतां फेरी[5]। आसोज में भं० माईदास ने कैद कियो, मास ६ रयो। पछै बणाड़ पट्टे दीवी। ने काम इण तरै हुवो, तिण री विगत-

---

**शब्दार्थ-**

1 साजियो थो = भाग्यवश हुआ था। 2. दईवगत = दैवयोग। 3. रीस में पिण छता था = लेकिन अत्यन्त क्रुद्ध थे। 4. तार कढावसी = सत्यता ज्ञात करेंगे। 5. खिजमतां फेरी = अधिकारियों के पदों में परिवर्तन किया।

१. तन दीवांण भं० खींवसी; राव पदवी, हाथी पालखी, कड़ा मोती।

१. देस दीवांण भं० रुघनाथ; राव पदवी, हाथी, पालखी कड़ा मोती; ने कचेड़ी री हाकमी वेटा अनोपचंद नु।

१. जाळोर सांचोर भं० पोमसी रासावत।

अै सारा दीपावत।

सं. १७६६ में श्रीजी कूच कर नागोर ईंदरसिंघजी उपर पधारीया। मोरचा दिया, गोळा कोट में पड़ै ने स्हैर भिळण री तयारी हुई। तरै घणी आजीजी[1] सुं अरज कराई -'मोनुं मारजै नहीं। रुपिया २,००,००० दोय लाख निजर करूं, ने आय मुलाजमत करूं। जमीत ले ने रकीब में हाजर हो सूं।' तरै राठोड़ भगवानदास जोगीदासोत चांपावत वगेरे उमरावां अरज करी - 'इतरी आजीजी करे, हुकम बजाय लेवे, तिण ने मारण रो हुकम न हुवै, माफ करैं।' तरै म्हेरवान होय माफ कीयो। ईंदरसिंघ आय मुजरो कियो। तरै रुपिया १,००,००० एक लाख ने घोड़ो इनायत कियो। ईंदरसिंघजी मुजरो कियो। तरै श्री महाराज लटको कियो[2]। मुतमल रे पाखती डावी बाजू बेठा। सीख देतां बीड़ो दियो, तरै सीलाम करने डेरे गयो। सं. १७६६ रा माह सुद ८[1] ओ काम हुवो। नागोर रो मुलक सारो मारीयो गयो। बरस च्यार तक आबादांन हुवे नहीं जुं हुवो[3]।

जोधपुर आवेंर मतै अमल कियो ने सांभर री राड़ में सैद नाठा, कटक लूटीयो गयो। अै समाचार दीखण में पातसाह सुं मालम हुवा, तरै घणो रोस में चढ़ियो। आगे दीखण में बादशाह बादरस्या ने भाई कामबगस रे वेढ़ हुई, कामबगस काम आयो। बाहादरस्या री फतै हुई।

तरै मारवाड़ ढूंढाड़ उपर कूच कियो। सुं अठी ने पधारतां मारग में साहजादे अजीमजी ने असदखान वजीर औरंगजेब थकां रो, वगेरे फेर नबाबां अरज

---

**शब्दार्थ—**

1. आजीजी = लाचारी। 2. लटको कियो = स्वीकार किया। 3. जुं हुवो = जैसा हो गया।

**टिप्पणी**

१- शुक्रवार, जनवरी 27, 1710 ई.।

किवी-दोनूं राजावां ने लगाय लिरावो[1] तो ठीक है। आगेई वडा पातसाह अठाईस वरस पच थाका[2] था। पिण काम रस न आयो । घणी समजास ने अरज कीवी। पछै अजीमजी, निबाब खानखांना, म्होबतखां (रा) श्री महाराजा ने लिख्या आया-'थ्हारां मातबर आदमी[3]हजुर भेज ज्यों, ज्यूं थारां मतलब हासल कराय दां।' तिण उपरै राठोड़ भगवानदास जोगीदासोत, चांपावत, भं० खींवसी, प्रो. अखैराज तिवरी रो, मुंनसी उदैराज पं. रामकीसन नु हजूर भेजीया। उवाजवळ[4] अरज लीखी थी। सुं सारी मंजुर करी ने पातसाही जी फुरमायो-'आय ने मुलाजमत करो। उतन सरफराज हुसी।' तिण सुं श्री महाराजा ही मजूर करी[1]। ने पातसाह निपट म्है-रवानी री निजर उपर आयो[5]। निबाव महोबत खां नूं नै बुंदेला सत्रसाळ नूं सामा मिलण ने म्हेलिया। सुं सं १७६६ रा असाढ़ वद ७[2], गांव गंगवाणे आया। ने महाराज रो डेरो गांव सीराणै थो। कोस दोय रो बीच, तिण बिचे फेर मान बाड़ी खड़ी करी ने निबाब फरमान निसांण ले आया। श्री म्हाराज ने आंबेर रा राजा जैसिंघ जी सांमा जाय अदब बजाय फरमान निसांण लियो। पछै निबाब सुं मिळिया। निबाब इतरो कियो--हाथी १, घोड़ो १, कपड़ा रा थान नग ९। घणी मनवार कीवी-'आपरै मिलण री हकीकत पातस्याहा नुं ने बड़ै निबाब सूं लिख सूं। तरै बोहोत खुसवत[6] हुसी।' पछै डेरे पधारीया। आसाढ वद ८[3] गांव चांवढ़ीया-वास डेरो कियो। म्होबत खां जो डेरे आया। तरै श्री महाराज घोड़ा दोय ने कपड़ा रा थान ९ दिया। सिसटाचार घणो हुवो। वद ९[4] श्री महाराजा नै म्होबत खां हाथियां चढ गांव डूमाड़ै डेरो कियो। ने पातस्याह रो डेरो गांव राजोसी

---

**शब्दार्थ—**

1 लगाय लिरावो = मित्रता कर लो। 2. पच थाका = तंग हो गये। 3. मातबर आदमी = महत्वपूर्ण व्यक्ति। 4. उवाजवळ = सारी बातचीत आदि। 5. उपर आयो = हुवा। 6 खुसवत प्रसन्न।

**टिप्पणियां—**

१— महाराजा अजीतसिंह और जयसिंह के वकील शाहजादा अजीमुश्शान के माध्यम से मई 10,1710 ई. के दिन दन्दवा सराय पर बादशाह से मिले थे। (जयपुर अखबारात. (बहादुरशाह) वर्ष, 4, पृ, 33; जोधपुर ख्यात. भाग 2, 155)।

२-- बुधवार, जून, 7, 1710 ई.।

३-- गुरुवार, जून 8, 1710 ई.।

४— शुक्रवार, जून 9, 1710 ई.।

हुवो, कोस ४ चार उपर । वद १०[१] निबाब खानखाना जी सामा आया । निबाब इतरो दियो - हाथी, १ घोड़ो १, कटारी १ जड़ाव री, खंजर जड़ाव रो, कपड़ा रा खूम[1], मेवा रा खूम । अेकंत बैस पातस्याह फुरमायो सुं कह्यो, घणी मनवार कीवी । डेरां गया । वद ११[२] श्री म्हाराज असवार हुवा, नै उठी सुं पातस्याह हुवो थो । सुं साहाजादो अजीमजो सांमा आया । तरै श्री म्हाराज पालकी सुं उतर ने मुजरो कियो । पछै घोड़े असवार होय ने पातस्याह जी सुं मुलाजमत कीवी सुं मुलाजम करतां तखत खां उभो रखायो । पछै डेरां दाखल हुवा । ने इण माफक हुवो-जोधपुर परगनां समेत सोले हजारी चवदे हजार रो मनसब घोड़ो, सीरोपाव, हाथी, दुगदुगी, तरवार सिरपेच सारा जड़ाऊ ।[3] सुं बोहत म्हैरवानी फरमाई ने देसरी रुखसत[2] दीवी ।

आज पैहला पातसा तखतखां उभो राखने किणी सुं मुलाजम कराई नहीं, ने साहाजादो किणी सामो आयो नहीं । जुं श्री महाराज सुं फुरमाई । डेरां दाखल हुवां पछै घड़ी च्यार ने सीकार एक हिरण ने खूम दो खरबूजां रा भेजिया । आंबेर रा राजा जैसिंघजी ने श्री महाराज आंबेर दिराई । राजा जी ने बचन दियो थो ने साथ लेने पधारिया था । जिसोज[3] सारा हिंदू तुरकां में नकसो रयो । जेसिंघ जी आंबेर गया । नै श्री महाराजा जोधपुर (पधारीया) नोबतां बाजी, घणो उछब हुवो ।

सं १७६७ रा असाढ़ वद ११[४] जोधपुर रो नव म्होरो हुवो थो । जोधपुर गढ़ दाखल होय ने इण माफक १७६७ में काम हुवो ।

जोधा सुजांणसिंघ केसरीसिंघोत जुनीयां रो धणी महाराज श्री जसवंत-सिंघ जी रो चाकर थो । नै जेतारण रो गांव रास इणां रै पटै थी । नै पाटण

---

**शब्दार्थ-**

1. खूम = ख्वान = खौन = थाल । 2. रुखसत = विदाई, आज्ञा, छुट्टी । 3. जिसोज = जैसा ही ।

**टिप्पणियां-**

१- शनिवार, जून 11,1710 ई. ।

२- रविवार, जून 12,1710 ई. । (राजरूपक, पृ. 448-49; इरविन., भाग 1, पृ. 73) ।

३- अखबारात., बहादुरशाह., वर्ष 4, पृ. 111-112, महाराजा अजीतसिंह को इस समय 4000 जात व 4000 सवार का मनसब प्राप्त हुआ था ।

४- रविबार, जून .1, 1710 ई. ।

तालका दरबार री तरफ चाकरी करतो। नैं मरजी पिण जादा था। सुं श्री जसवंत-सिंघ जी धाम पधारीया पछै म्हाराजा श्री अजीतसिंघ जी दळथंभण जी रो जनम लाहोर में हुवो, ने पातसाह री हजूर आया। नैं अठी जोधपुर सुं दीवाणां पं. केसरीसिंघ रामचंदोत, भाटी रुघनाथसिंह लवेरा रा वगेरे उमराव दीली गया। तिणां में सुजाणसिंघ पिण दिली गयो सुं पातसाह री मरजी निराट[1] नहीं। ईंदर-सिंघ जी ने जोधपुर देण सुं चित[2]। तरैं इण माफक सिरदारां रो जीव ठांवचे[3] नहीं। तरैं रिणछोड़दासजी, दुरगदास जी वगेरे सांम धरमी था, जिण कयो-पातस्या उमरावां ने फाड़ैं छै[4]। ने चाकर राखै छै। सुं म्हां कितराक रे तो नेम है[5]। सुं अठे कजीयो कर काम आवसां। ने कोई रेहसी सुं विखो करसी। पिण पातस्याह जोरावर छै। सारा मुलक में अमल पातस्याह रो होसी। सुं थे पातस्याह सूं लगाय लेवो तो भलां। म्है किणी समैं दौड़ता फिरता थांरै घरे आवां तो विसराम[6] नैं जायगा छै। तरैं इतरा पातस्याह सुं लगाई विगत—

१. जोधो सुजाणसिंह केसरीसिंघोत जुनीयां।

१. नरावत चंदरसेण (सबळसिंघोत) पोकरण।

१. कूंपावत कीरतसिंघ सुरजमलोत आसोप।

१. चांपावत (संग्रामसिंघ जुझारसिंघोत) आऊवो।

कितराक पातस्याही चाकर रया ने पटा लिया। सुं चंदरसेण जी तो थेंट तांई अेक धारण[7] रया। चाकर तो पातसाह रा था, पिण कोई दरबार रो चाकर विखायत[8] उणा री जायगा में जाय निसरतो तो उण नु विसराम देता। सोबादार कनै कोई बात दरबार री आय निसरती तो दरबार री बात हळकी न कैहता[9]। ने गुर आंमना[10] राखता। जांणतां म्है दरबार रा चाकर छां। इण वात सुं महाराज श्री अजीतसिंघ जी जोधपुर पधारीया तरैं चंदरसेण जी रा बेटा सूं राजी हुवा, नैं पोकरण उणां रे बाहाल राखी।

नैं सुजाणसिंघ जी नीरांट भूंडा हुवा पातस्याहा जी रा नीरांट स्यामधरमी

---

**शबदार्थ—**

1. निराट=अत्यन्त। 2 चित=इच्छा। 3. ठांवचे नहीं=स्थिर नहीं। 4. फाड़ैं छै=तोड़ रहे हैं। 5. नेम है=निश्चय। 6. विसराम-आराम, शरण। 7. अेक धारण=एक समान। 8. विखायत=विखा करने वाला, कठिनाइयों में दिन व्यतीत करने वाला। 9. हळकी न कैहता=बुराई नहीं करता। 10. गुर आंमना=इज्जत, सम्मान।

हुवा । दरबार री कांई गुर आमना राखी नहीं । सोझत, सिवाणै, मेड़तै में इणां री फोजदारी रही । तरै मुलक में पातस्याही अमल घणो वरतियो । किणी जायगा तुरकां री आसंग न पड़ती. तठै जाय ने अैह हमगीर होय ने गांव मारता । राठोड़ां उपर जोर पोंचावता । जैतारण रे परगनं उदावतां रा साथ सु बड़ा खेटा किया[1] । कोई राठोड़ उणां कनै चाकर जाय रह्यो, तिण नु तौ राखियो ने आप राजा कहाया । कोई परवानो उणां रा चाकरां रै नांवे दीठो, तिण में महाराज श्री सुजाणसिंघ जी लिखियो छं । कोई राठोड़ महाराज श्री अजीतसिंघ जी लेखे धरती में दोड़ियो तिण सु निपट खेदो[2] कियो । पातस्याही सामधरमी-पणों घणो जतायो । श्री महाराज री हजूर कदै मुजरो कवायो नहीं । दावा मुदी[3] थका रया । पातस्याह तथा कोई उमराव अजीतसिंघ जी री खबर मंगावतो—देखां काऊं[4] सभाव है, १ लायक छै कना नहीं । सु इण बात सुजाणसिंघ जी खबर मंगावता । अैक वार खड़िया तेजसिंघ चारण नै म्हेलियो जासूस रूखो[5] । सु तेजसी तो पाछो आय नै म्हाराज रा सभावां री घणी तारीफ कीवी । इण तारीफ रो गीत छै । चारण आछो पिण सुजाणसिंघ जी घणां भूंडा हुवा ।

ऐक दिन नबाब सुजायतखां ने सुजाणसिंघ जी, चंदरसेण जी नरावत, म्हो-कर्मसिंघ कंवर बैठा सेहज में बात चलाई । जोधपुर रा राज रो उवारस कुण ? तरै सुजाणसिंघ जी तो आह कही--"उवारस[6] काइ ? धणी देवै जीकण नु आवै ।" मतलब ओ--"म्हैई उदेसिंघोत छां । म्हानै दे तो म्हैई वारस ।" तरै चंदरसेण नरा-वत बोलियो-पातस्याह कांऊ देसी । जोधपुर रो उवारस जसुतसिंघ जी रो वेटो अजीतसिंघजी छै और उवारस कुण छै ? नै कदास[7] पातस्याह देवे तो कंवर म्होकर्मसिंघजी कांनी हाथ कर ने कयो - 'ओ ठाकुर पिण उवारस - पणां ने मुढा आघो घाळै । पिण इण सिवाय कोई तीजो ठाकुर हर[8] करे तिण रा माथा उप्रे इतरी तरवारां पड़ै सु धरती जातो पड़ै ।' चंदरसेण आहा कही, तरै सुजाणसिंघ जी तरवार री मूठ उपर हाथ दीयो ने चंदरसेण पिण तरवार री मूठ उपर हाथ दियो । नै नवाब दीठो कजीयो होय । तरे और बातां छेड़ी. ने आप उठ बेठो हुवो, नै अै आप आपरै डेरे गया । सु सुजाणसिंघजी रा अै पराक्रम[9] था । फैर सुजांण-सिंघ जी रै हथणी छोटी सीक थी सु श्री महाराज मंगाई थी । सु देणी तो रही पिण

---

**शब्दार्थ-**

1. खेटा किया = झगड़ा किया । 2. खेदो = विरोध । 3. दावा मुदी = दावेदार के रूप में । 4. काऊं = केसा । 5. जासूम रूखो = गुप्तचर बना कर । 6. उवारस = वारिस, उत्तराधिकारी । 7. कदास = यदि कभी भी हो तो । 8. हर = इच्छा । 9. पराक्रम = कार्य ।

पाछो कह्यो - 'मेड़ता सु कुंभार रै अवळ हुवै छै । सु मंगाय रमो ।' फैर इण ताछ री केई बातां है ।

श्री महाराज जोधपुर गढ़ पधार ने इणां बातां रो खेदो तां मन में राखीयो नै घणी दीलासा लिख ने करण, जुझारसिंघ ने जोधपुर बुलाया । सुजाणसिंघजी रा अै दोनु बेटां ने सिरपाव दियो । कीऊं पटो लिख दियो । पछै गढ़ उपर दौलत-खांना रा मूंढा आगै दोनूं भायां ने चूक सूं मारीया ।[१] सु चूक करण में इतरां जणां था । विगत–

१. रा० जैसिंघ सूरसिंघोत मेड़तिया विसनदासोत, पटै वोरूंदो ।

१. चांदावत दौलतसिंघ जुझारसिंघोत, कोसाणों ।

१. चांदावत अरजन गोपालदासोत पटै गांव बडरुण ।

१-- रा. मेड़तिया रायमलोत पिरथीसिंघ दळरामोत रायण ।

इतरा जणां चूक कियो । पछै गुनो[1] माफ कर पीसांगण जुनिया वगेरे पटो बाल राखियो ।

सोढ़ो भगू तिण घोड़ा रो नांव 'अजीतो' काढीयो । तिण सु श्री महाराज वेराजी हुवा । सु बावळली गांव रा ईंदा[२]............लखधीर रो भाई ने मारण ने मेलियो । सु बाड़मेर कोटड़े गयो । उठै हाकम उपर परवानो कर दियो । ऊंट एक छव महीनां ताई चराय ने तयार कियो । थोरी एक साथै लियो चढने भगू रे गांव[३] ....... गया । कोटड़ी बारै उतरीया । रावळ मांय सु रोटीयां आई सु खादी नहीं धरती

---

**शब्दार्थ–**

1 गुनो = अपराध ।

**टिप्पणियां-**

१– गुरुवार, मई 14,1713 ई. की रात्रि में उनको छल से मारा गया था । (जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 157) ।

२– कविराजा संग्रह, ग्रन्थ संख्या 113, के प. 275 क पर ईंदा का नाम जोधासिंह लिखा है ।

३– सोढा भगू (भाखचंद) के गांव का नाम दीगाड़ी लिखा है । (कविराजा संग्रह, ग्रन्थ सं. 70, प. 467 क. 197 क) ।

में छानै से घाल दीवी। पछै रात रा हुक्का रा चिलमिया ने पोळ में वार दोय तथा च्यार गया। चिलम भर लाया। पाछली पौर दोढ रात रही ने पोहरायतां ने ऊंग[1] आवती देख ने मांय पेस गया[2]। सु कटारियां सूं भगू ने मार बारै ऊंट बंदोयो थो जठे आया। सु देईवगत सु ऊंट तुड़ाय नाठो। थोरी कठी नै दूजै मारग नाठो, ने इंदो नाठो सु कोस ५ तो आयो। जितरै दिन उगाळी[3] हुई। चोर च्यार मिळिया। चोरां सिरदार दीठो, तरै खोवण लागा[4]। तरै इण कही-'महाराज श्री अजीतसिंघ जी भगू सोढा ने मारण म्हेलियो थो सु मारने आयो छूं। हमैं म्हों सूं हालियो जावे न छै। सु थे चारणां रा गांव............तांई पोछाय देवो। म्हारै खने हथियार गैहणो छै, सु सारा कपड़ा सूधा थांनू देसां। ने फेर श्री महाराज ने लिखनै इनाम दीरावसूं।" तरै चोरां आपरी धणीयां उपरै बैसाण ने चारण रो गांव कोस पांच थो, जठे पोछाय दियो। पछै उठा सुं बाड़मेर होय ने जोधपुर आयो, मुजरो कियो। तरै श्री महाराज फुरमायो-"मांग" तरै गांव बांवळली भायां हेटे थी[5] सु लीनी। श्री महाराज तो वदता[6] पटा रो फुरमायो। पिण इण कयो--म्हारे तो लाख छै[7]।" वदतो बधारो न लियो।

सिरदारां रा पटा सळूजै नहीं। तरै राठोड मुकनदास सुजाणसिंघोत चांपावत पटो हजार २०,००० बीस रो च्यार बेटां रै नावै लिखायो। तरै सारा सिरदांरा रा पटा लिखाणां। आगै श्री बड़ा म्हाराज री सिलांमती में सिरायत[8] दोय था। आऊवो ने रीयां सु म्हाराज श्री अजीतसिंघ जी री सीलांमती में सांभर रा डेरा सिरायत आठ ठेहरिया सं. १७६५ में।

करणोत दुरगादास जी री फौज जूदी[9] उतरती। सु श्रीजी मिसल[10] में डेरो करण रो फुरमायो। तरै दुरगदास जी अरज कराई-"हूं तो अेक पछै वड़ी[11] में आय रह्यो हूं। नें पाछला मिसल में इज करसी।" सु मरजी में कम आयी। तरै दुरगादास जी राणां नै लावण रो मिस कर ने उदैपुर गया। नै बेटां ने मिसल में डेरो करण रो कैह गया, ने राख गया। नै पिडा उदैपुर गया सु उठै ही रामसरण

---

**शब्दार्थ–**

1. ऊंग=निद्रा। 2. पेस गया=घुस गये। 3. दिन उगाळी=सूर्योदय। 4. खोवण लागा=लूटने लगे। 5. हेटे थी=अधिकार में थी। 6. वदता=अधिक। 7. लाख छै=बहुत है। 8. सिरायत=प्रमुख। 9. जुदी=अलग। 10. मिसल=राजकीय दरबार या फौज में निश्चित स्थान। 11. पछै वड़ी=पीछे की तरफ।

हुवा । सं. १७६४ गया था पछै ......... में रामपुरै गया था । सुं विगत घणी हुवै छै, । दुरगदास जी रामपुरै ही चलिया था[1] ।

प्रधान चांपावत मुकनदास सुजाणसिंघोत ने रुघनाथसिंघ चांपावत रै दोलतखाना में चूक हुवो । उदावत परतापसिंघ राजसिंघोत कियो । दोनूं भायां ने मारीया । सु दोढ़ी बारे मुकनदास रा रजपूत बैठा था । तिणां में गहलोत भींवो ने........धनो दोड़ दोढ़ी में पेठ गया[1], सु उदावत परतापसिंघ ने मारीयो । नै परतापसिंघ रो पिरोयत सिवराम भींवां धना नु मारीया । नै परतापसिंघ जी ने गढ़ उपर घू पोळ रा मूंढा आगै दाग दियो[2], ने छतरी म्हाराज श्री अजीतसिंघजी कराई, सुं घू पोळ रा मूंढा आगै छै । मुकनदास जी ने चूक सं. १७६६ उतरते हुवो[2]।

सं. १७६६ प्रधानगी चांदावत भगवानदास जोगीदास बिठलदासोत ने हुई । सं. १७६८ राव पदवी ने भीनमाळ पटै दीवी ।

सं. १७६७ जेतावत ऊरजनसिंघ परतापसिंघोत बगड़ी रे श्री दळथभण जी रो झूठो फीतूर[3] उठायो थो । नै किणी ने पकड़ ने दळथभण जी बणाया था । सुं व्यास दीपचंद हसतै[4] चांपावत रायसिंघ ने मेल ने माळवा रे गांव.......... दलथंभण जी बणायो जिण ने उरजनसिंघ जी जेतावत दोनूइ[5] ने मराया ।[3]

म्हाराज श्री जसवंतसिंघ जी रे राजलोकां में राणाजी श्री देवड़ी जी सिरोई था सु बुलाया । सूरसागर सोनां रूपा री तुला[6] बैसाण्या । पछै देवलोक[7]

---

**शब्दार्थ—**

1 पेठ गया = घुस गये । 2. दाग दियो = अन्तिम संस्कार किया, जलाया गया । 3 फीतूर = उपद्रव । 4. हसतै = माध्यम से । 5. दोनूइ = दोनों को । 6. सोना रूपा री तुला = स्वर्ण व चांदी से तोला जाना । 7. देवलोक = स्वर्गवास ।

**टिप्पणियां-**

१– राठोड़ दुर्गादास अक्तूबर, 1708 ई. में सांभर से उदयपुर गया था । वहां कुछ समय रहने के बाद वह महाराणा की आज्ञा से रामपुरा के प्रबन्ध के लिये रामपुरा भी गया था । लेकिन दुर्गादास के अन्तिम दिन उज्जैन में व्यतीत हुए । जहां नवम्बर 22, 1718ई. के दिन उसकी मृत्यु हुई । (दुर्गादास राठोड़, (हिन्दी अनुवाद) पृ 145,157) ।

२– यह घटना श्रावण सुदी 11, सं 1765 वि. = शनिवार, जुलाई 17, 1708 ई. के दिन की है । (जोधपुर ख्यात., भाग 2, पृ. 133) ।

३– यह घटना आसाढ सुदी 11,1764 वि. = गुरुवार, जून 17, 1708 ई. की है । (जोधपुर ख्यात., भाग 2, पृ. 113) ।

हुवा । घणों पुन[1] कियो ने विरमभोज[2] कराया ।

म्हाराज श्री अजीतसिंघ जी रै राजलोक ने कंवर बायां री विगत--

१. रांणीजी श्री रांणावतजी अमोलखदेजी रांणां श्री अमरसिंघजी रा भाई गजसिंघ राजसिंघोत री बेटी, सं० १७५३ रा असाढ़[1] में व्याव, पटरांणी[3]---

१. कंवर सुरतांणसिंघजी सं० १७७५ रो जनम थो । सुं भं० गिरधरदास अैमदाबाद में जूठी अरज कीवी । तरै महाराज अभैसिंघजी ने भरम पड़ीयो । तिण सुं चूक करायो । पछै बात जूठी हुई, तरै गिरधरदास ने फुरमायो - "पेट फूट ने मरसी ।"

१. बाई फूलकंवर म्हाराज बखतसिंघजी जैसलमेर रावळ अखैसिंघजी ने परणाई सं० १८०८ में ।

१. बाई इंदरकंवर पातस्याह फरकसैर ने सं० १७७२[2] सुं प्यालो लेने[4] धाम पधारीया ।

१. बाई फतैकंवर, कंवारी राम सरण हुई ।

— १ कंवर, ३ बायां ।

सुं राणावतजी रो गोळ में सिखरबंध[5] देवरो. तुंवरजी रा झालरा कने थो ।

१. रांणी श्री वड़ी चवांणजी, चवांण चुत्रभुज दयालदासोत री बेटी, होठलू रा, नाम राजकंवर ।

१. कंवर जी श्री अभैसिंघजी जनम सं० १७५९ रा मिगसर वद १४ सन[3] घड़ी ३१, पल २७ जालोर में ।

---

**शब्दार्थ—**

1. पुन = पुण्य । 2. विरमभोज = ब्रह्मभोज । 3. पटरांणी = प्रमुख रानी ।
4. प्यालो लेने = जहर पीकर । 5. सिखरबंध = शिखरोंवाला ।

**टिप्पणियां—**

१- जून, 1697 ई. ।
२- सन् 1716 ई. ।
३- शनिवार, नवम्बर 7.1702 ई. ।

१. कंवर श्री बखतसिंघजी सं० १७६३ रा भादवा वद ८ जनम सोमवार[1]।

१. कंवर जेतसिंघजी सं० १७६५ जनम ने, सं० १७६६ राम कहो।

— ३ कंवर।

१. रांणीजी श्री बड़ी भटीयांणीजी जैसलमेर रा रावळ अमरसिंघजी री बेटी लाल कवर नाम, सबळसिंघजी री पोती, परणी जैसलमेर सं० १७५५ में।

१. कंवर श्री उदोतसिंघजी बड़ा था, कंवर पदै रामसरण हुवा, जनम सं० १७५८ रो ने रामसरण सं० १७५९ में हुआ।

१. कंवर श्री किसोरसिंघजी सं० १७६६ रा आसोज वद ११[2] रो जनम।

१. कंवर जोधसिंघजी सं० १७६७ (रो जनम) राम कहो।

१. बाई सूरज कंवर आंबेर राजा श्री सवाई जैसिंघजी स्हैदां सु डरता जोधपुर आया तरै सूरसागर रा डेरां म्हेलां में डेरो दोरायो थो सु० सं० १७७६[3] रा में परणाई।

— कंवर ३, बाई १।

१. रांणी श्री छोटी चुहांण जी गांव रोहीचा रा चौ० फतैसिंघ प्रथीराजोत री बेटी। सु श्रीजी सलांमत थका रामसरण हुवा। कंवरा री विगत--

१. कंवर श्री अणदसिंघजी सं० १७६४ रा आसोज वद ५[4] रो जनम, ईडर रो राजा।

१. कंवर श्री रायसिंघजी सं० १७६८ रा सांवण वद १२[5] रो जनम, ईडर गया दोनुं भाई।

---

## टिप्पणियां—

१– मंगलवार, अगस्त 20,1706 ई.।

२– रविवार, सितम्बर 18,1709 ई.।

३– सन् 1720 ई.।

४– शुक्रवार, सितम्बर 5,1707 ई.।

५– रविवार, जुलाई 1,1711 ई.।

१. अखैसिंघजी वाल थका[1] रामसरण हुआ ।
–३ कंवर

१. रांणी श्री छोटी भटीयांणी जी देरावर री, मृगकंवर नाम, दौलतसिंघ रामचद्रोत री वेटी। कंवर एक हुवो सु मास सात रा हुयने राम कहो।

१. रांणी श्री बड़ी तुंवरजी अमरंगदेजी, पाटण रा तुंवर बगसीराम जसवंतोत री बेटी, नाम विजैकंवर । दो वेटी-बाई किशोरकंवर ने बड़ी अभैकंवर वाई थी । तिणां ने राणां जगतसिंघ प्रतापसिंघोत ने उदैपुर सं० १७८३ व्याव हुवा ।

१. रांणी श्री जाड़ैची जी नवानगर रा जाम लाखारी बेटी । नांव वदन कंवर थो । तिणां चांदपोळ कांनी बावड़ी कराई । निराट घणा निज मरजी में था । तिणा रे बेटी १ हुई - अखैकंवर ।

१. रांणी श्री लाडी[2] तुंवरजी लाखासर रा तुंवर कीरतसिंघ री बेटी ।

१. रांणी श्री चावड़ीजी मांणसा रा चावड़ा पीरथीराज री बेटी । गोपाळदास उदैसिंघोत री पोती, नाम अमरकंवर थो ।

१. रांणी श्री देवड़ी जी सिरोई रा राव दुरजणसाल वैरीसाल उदैसिंघोत री बेटी । सं० १७६५ रा वैसाख में परणीया, नाम अणंदकंवर ।

१. रांणी श्री सांचोरी जी चुहांण सेसमल बळुओत री बेटी, नांव जैतकंवर, फींचरा ।

१. रांणी श्री गोड़जी राजगढ़ रा गोड़ केसरीसिंघ री बेटी, सं० १७७७ रा काती वद ऽऽ[1] दीवाळी ने मनोरपुर परण्यां । प्रथीराजजी री पोती, नांव बखतकंवर ।

---

**शब्दार्थ—**

1. वाल थका = बचपन में ही ।
2. लाडी = छोटी ।

**टिप्पणी—**

१– गुरुवार, अक्तूबर 20,1720 ई. ।

१. कंवर सोभागसिंघजी सु महाराज श्री विजैसिंघजी रा राज में देवलोक हुवा। रीत रा राज में देवलोक हुवा। रीत सुं राखता बाई सभाकंवर हुई थी।

१. राणी श्री बड़ी सीसोदणीजी देवळिया रा रावत प्रथीराजजी री बेटी, प्रथीराज प्रतापसिंघोत री। नाम अनोपकंवर। श्रीजी सीलामत थकां रामसरण हुवा। जालोर थकां रामसरण हुवां तिण रे कंवरां री विगत--

१. कंवर रतनसिंघजी सं० १७७४ रा सांवण सुद ९[1] देवळिये जनम। नै कंवर रूपसिंघजी सं० १७७५ रो जनम सु म्हाराज श्री अभैसिंघजी रा राज में मारोठ रे मेड़तीये जसु सांवतसिंघोत ऊहड़ विहारीदास किलादार ने म्होणोत चंदरसेण भांड जलाल इणां च्यारूं जणां मिलने कागद दवाई[1] कीनी। जैपुर रा राजा जेसिंघजी सुं मिळीया सु तो विगत[2] नीचे मंडसी। पछै सं० १८०८ म्हाराज बखतसिंघजी गढ़ दाखल होय ने दोनु भायां ने नागोर म्हेलिया। आख्यां में सिळायां फेरता था सु आपचकरने[3] दोनुं भाई रामसरण हुआ।

२. कंवर जोरावरसिंघजी ने कंवर एक फेर हुवो थो सु बालपणै चलीया।

१. रांणी श्री चुहांणजी नींबराणां रा चुहांण तोडरमल री बेटी ......सुं श्रीजी सीलामत थकां रामसरण हुवा। तोडरमल प्रतापसिंघ छत्रसालोत रो, नाम बखतकंवर।

१. कंवर श्री मानसिंघजी सं० १७७२ राम कहो।

१. झालोजी श्री उतमदे हलोद रा झाला चंदरसेण गजसिंघोत री बेटी--

१. कंवर श्री प्रतापसिंघजी सं० १७६७ रो जनम सु महाराजा श्री भींवसिंघजी रा राज में रामसरण हुदा, सं. १८४९ में. कंवरपदा में बारेप चूक सु मारिया तरे।

---

**शब्दार्थ—**

1. कागद दवाई = पत्र व्यवहार। विगत = विवरण। 3 आपचकरने = आपघात करके।

**टिप्पणी—**

१– रविवार, अगस्त 4,1717 ई.।

१ कवर छतरसिंघ जी सं. १७७० राम कहो ।

१ बाई बखत कंवर ।

१. रांणी जी श्री सेखावत जी मनोहरपुर रा सेखावत सगतसिंघ जगतसिंघोत री बेटी उदैकंवर नाम ।

१. बाई सोभागकंवर उदैपुर रा राणां जगतसिंघ जी रा कंवर प्रतापसिंघ जी नुं महाराजा श्री अभैसिंघ जी स. १७९७ में परणांई ।

१. रांणी श्री छोटी सीसोदण जी देवळिया रा, तिणां रे कंवर एक हुवो. सुं दसोटण पेहला राम कहो ।

१. राणी चुहांण ..............री बेटी । सं. १७८१ रा असाढ़ सुद ९ [1] परण्या, नाम अजबकवर थो ।

२. खवास-अजबगुल, खवास गुलबदन ।

१. पासवान सांचोर रा चवांण बलदेव महेसदासोत री बेटी रो डोलो लाया था । सुं गढ उपर भोळाय ने गया । सु गढ़ सुं उतारणी नहीं । तरै जनानी में दाखल कर दीया । परणीया नहीं, तिण सुं पासवान कीवी ।

१. खवास नैणसुख ने खवास अजबगुल थी ।

१. फेर पड़दायेतियां, गायणियां, ऊड़दावेगणियां, छोटा बरदारणीयां जळूस घणी थी ।

| | |
|---|---|
| राणियां | खवास ४, |
| कंवर २१, | बायां ८ । |

सं० १७६८ रा फागण में पातस्यांह बाहादरस्या कलांवत री बेटी जोरावरी घर में घाली थी । ने कलांवत पातस्या कनै खिलवत में थो । तानसेन रो पोतो । सु कीं जरब सु[1] पेस कबज म्हाय गोसे[2] लायो सु तारतखांना में जावतां

---

**शब्दार्थ–**

1. जरब सुं = किसी तरह से । 2. गोसे = गुप्त रूप से ।

**टिप्पणी–**

१– शुक्रवार जून 19, 1724 ई. ।

कलांवत बाहादरस्या पातस्या ने मारीयो ।[1] वेटी जोरावरी[1] सु घर में घाली थी, तिण रो बैर लियो ।

## दीली री हकीकत-

इण बैहदां में साहजादो फरकसेर लालकोट में सु किणी जरव निकळ गयो । सु कलाळ रा घर में लुक ने पछै पूरब में स्हैद[2] छाड़ गया था, तिणां में गयो । मु स्हैदां में छै । नै दीली तखत मोजदीन बेठो । पिण उसो तप नहीं । वजीर असदखां रा बेटा जुलफगार ने दीवी । असदखां तो औरंगजेब बाहादस्या कने काम कियो थो । सु पुखतो[3] हुवो तरै वेटा जुलफगार ने दोराई। पिण मोजदीन कोका[4] ने घणो बधायो । हुकम सारो कोकळतास खां रो, तिण सु उमीर सारा बेराजी रया ।

हमें पूरब रा जमींदार बाराह रो स्हैद अब्दुला खां हसनअली खां सितर असो हजार फौज सूं फरकसेर नुं लेने कूच कियो । खरची[5] रो जतन[6] न थो । सु स्हैदां रे ममां पास नगदी थी सु दीवी । अठी सुं मोजदीन सांमो कूच किनो । श्री म्हाराज नु बुलाया सु तो न गया । नै भं. विजैराज ने म्हेलियो ने फुरमायो--'दोना सुं कागद दुहाई राखजो नै फते हुवे जिण सांभल रहीजो । चतुराई सु काम कीजे ।" हमें फरकस्हेर स्हेदां रा डेरा आगरा मुतसल[7] हुवा । फेर खरची खूट । गई । दिन एक रो ढंग न थो[8] । सु आगरा में एक सेठ लखैसुरी[9] धनवंत तिण रै ने स्हैदां रे राहा थो । पेहला स्हेदां रो मोदी थो जिण ने कवायो-"पांच लाख तो रुपियौ ने दोय सौ थिरमा ने दुसालो देवो । हम जीवता रहेगा तो पाछा खूब तरै देवेगा ने मुवै तोत मारी खैर[10] ।" तरै सेठ रुपिया दुसाला ने दोय सो गाडा मीठाई म्हेली । आप स्हैदां री फौज में परो गयो । स्हैदां रुपिया बेंच दुसाला ठावका ने उठाय मीठाई बैंच स्हेदां कयो - अब हमकूं सायब ने वजीराई दीवी । उस बखत चढ़ खड़ा रया । अठी ने मोजदीन कने फोज तो लाख थी, पिण जुलफगार पचास

---

**शब्दार्थ-**

1. जोरावरी = बलपूर्वक । 2. स्हैद = सैय्यद बन्धु । 3 पुखतो = वृद्ध । 4. कोका = धाय भाई । 5 खरची = धन । 6. जतन = यत्न । 7 मुतसल = नजदीक । 8. ढंग न थो = रसद नहीं थी । 9 लखैसुरी = लखपति । 10. तमारी खैर = तुम्हारी भलाई ।

**टिप्पणियां-**

१- बादशाह बहादुरशाह की मृत्यु लाहोर में फरवरी 18,1712 ई. को हुई थी ।

२- बहादुरशाह के मरणोपरान्त शाहजादा मोइजुद्दीन जहांदारशाह के नाम से बादशाह बना था । (वकील (राजस्थानी) पृ. 31, क्र. 148/136; पृ. 35 क्र. 163/149) ।

हजार सुं बाजवणो[1] ऊभो थो। चित उदास थों पातसाहा ने विगाड़ण[2] में तो नहीं पिण जांणी बखत पड़ेंगे तब काम कर लेवेंगे। हमे मोजदीन फरकसेर रे राड़ हुई। मोजदीन रे नसीब में कुछ नहीं। असदखां कने पातसाही लोक थो सुं लड़तो थो, सुं पातस्या मोजदीन ने किणी कह्यो - 'जुलफगार तो मिळ गयो छै, नै असदखां इण रो बाप।' सुं पातस्या भागहीण[3] थो। सुं हुतै कजिये निकळ गयो। तिण री कांई ठीक पड़ी नहीं, कठीने गयो? ना तो काम आयां री ठीक न्हां नाठां री ठीक। पछै धणी विगर कांहु हुवै। तरै असदखां वगेरे लोक तो भाज गयो, स्हैदां फत रा नगारा वजाया।[1]

अवदुला हसनअलीखां खेत में लोहा पड़ीया। ने कोकलतासखां काम आयो। किणी उपर न क्रियो। ने जुलफगार जुं रा जुं[4] पगां उभो छै, भागो नहीं। तरै फरकसेर रुको लिख भेजीयो-'तुम तो पातस्याही बंदा छो। तमारो धरम थो सुं कियो, पिण अब किस खातर[5] खड़ा हो। पातस्याहा तो भाग निकले। सुं भागां पीछै तखत न बैसता है।' इण भांत कुहायो। कुछ जमां खातरी हुई। जद जुलफगार दिठो--"हमें कांई हुवे।" तरे फरकसेर सुं मुलाजमत कीवी। स्हेदां ने खेत म्हांय सुं उठाय ने पाटा बंदी कराई। दिली आया। तखत फरकसेर बेठो।[2] वजीर वगसी स्हैदां दोनां भायां ने दीवी। ने जुलफगार ने चूक कर मरायो। स्हैद बधिया। ने असद खां टोपी पैर[6] कुरांण ले मसीत में जाय बेठो। ने केवे-"जुलफगारिया जनमें तब नगारा बजाया ने मुवो तब ही नगारा बजाया।"

भंडारी विजैराज पातस्याहा सुं जाय मुजरो कियो ने विदा होय ने जोधपुर आयो।

नागोर राव ईंदरसिघ जी रे ने कंवर म्होकमसिंघ दिली फरकसेर कने

---

**शब्दार्थ-**

1. बाजवणो=एक बाजू। 2. विगाड़ण=खराब करने में। 3. भागहीण=भाग्यहीन। 4. जुं रा जु=ज्यों का त्यों। 5. किस खातर=किस के लिये। 6. टोपी पैर=सन्यासी बनकर।

**टिप्पणियां-**

१- आगरा का यह युद्ध 13 जिल्हिज 1124 हि दिसम्बर 31,1712 ई. के दिन हुआ था। (इरविन०, भाग 1, पृ 229-236)।

२- 22 जिल्हिज, 1124 हि. (जनवरी 9, 1713 ई.) के दिन फर्रुखसियर गद्दी पर बैठा और उसके नाम का खुतबा पढ़ा गया। (इरविन०; भाग 1, पृ. 239)।

सरफराज छै । जोधपुर री हर[1] छोड़ै न छै । जिण उपर श्री महाराज व्यास दीपचद ने फुरमायो "म्होकमसिंघ ने मरावणो । इण रो मरणो हुवे तर सुख सुं पोढां[2] ।" तर व्यास दीपचंद हसते चूक ने इण माफक म्हैलिया–

१. पादरु रो धवेचो म्होकमसिंघ, भाई अमरसिंघ

१. थोब रो महेचो करणसिंघ

१. कीटणोद रो भाटी अमरसिंघ पीरागदासोत ।

१. पाटोदी रो जोधो दुरजणसिंघ सबळसिंघोत ।

च्यार तो मुखी[3] ने फेर पचीस तीस घोड़ा सोदागर बेचण रे राहा अठा सु गोसे हालिया । दिली गया, केई महीनां रया । म्होकमसिंघ घणो जाबतो[4] राखे । वारे जावता सु निकळे । दिली जिसी जायगा पातस्यात हुई । बैंत[5] कठैई पूगे नहीं इऊं करता एक दिन म्होकमसिंघ छड़ी असवारी[6] सु कांण करावण जावतो थो । ने इणां ने खबर हुई । तुरत घोड़ा जीण कर चढ़ीया । म्होकमसिंघ वेहती असवारी आवतां दीठा । तरै पालखी सुं नीचा उतर ने कनै बेरो थो, वाड़ थी, मकी वाई थी, ने मकी माथा लग थी, सु ढाल बाड़ उपर दे कूदने मकी में छिपियो । नै असवारी रो लोक हाक्या वाक्या[7] हो नास गया । नै अैह घोड़ा पालखी कने आया । आगे देखे तो काकड़ियां रो चोर[8] दीसै नहीं । जितरे ही श्री म्हाराज री तपस्या तावै म्होकम रै पाघ में तुररो थो तावड़ा सु जळजळाट[9] कियो । निजर आयो तरै घोड़ा उपाड़ मकी में नाखिया । माली पातस्याह री दवाई[10] दीरावतो रह्यो । पिण अै तो म्होकमसिंघ कने आय मार माथो पाग सूदो लेर निकळिया ।[1] सु जोधपुर आय मुजरो कियो । पाग निजर किवी ।

---

**शब्दार्थ–**

1. हर = इच्छा । 2. सुख सु पोढ़ां - सुख से नींद लेवे, निश्चित हो जावें । 3. मुखी = मुख्य । 4 जाबतो = सुरक्षा प्रबन्ध । 5. वैंत = अवसर । 6. छड़ी असवारी = अकेला ही । 7. हाक्या वाक्या = हक्के वक्के । 8 काकड़ियां रो चोर = मूल अपराधी । 9. जळजळाट = चमक । 10. दवाई = दुहाई ।

**टिप्पणी-**

१– भादवा सुदी 5, 1770 वि. = शनिवार, अगस्त 15, 1713 ई. के दिन मोहकमसिंघ की हत्या हुई थी । (पंचोली सिवकरण० ग्रन्थ 6 प. 94 क; राजरूपक०, पृ. 458) ।

म्होकमसिंघ ने मारीयो, पातस्याहा सु मालम हुवो। पातस्याह फरकसेर बोहत रीस चढ़ीयो। नै म्होकमसिंघ रा भाई म्होवणसिंघ नु दिली बुलायो। सुं नागौर सु लोक हजार दोयेक कूच कियो। तरै फेर व्यास दीपचंद अरज कीवी- "हुकम हुवे तो इण ने म्होकमसिंघ भेलो म्हेलूं। निवाजस[1] म्हारी अर्ज माफक दीरावंणी हुसी।" तिण उपर इण माफक विदा किया-

३. जोधो दूरजणसिंघ, म्होकमसिंघ फतेसिंघ ए तीनूं सबळसिंघोत।

१. जोधो सुरजमल दुरजणसिंघ सबलसिंघोत पाटोदी रो जोधो मेसदासोत।

सु घणां घोड़ा ले बीड़ो ले चढीया। सु म्होवणसिंघ रो डेरो सेखावटी में गांव कासल हुवो थो। जठे जाय पोहोत ने घोड़ा तो पाव कोस ऊले कांनी सबळा राख सिज्यां रा[2] रुसनाई री बखत[3] दोढ़ी माथै आदमी दोयेक था जिण ने लोप[4] म्हांय जाय म्होवणसिंघ ने मार ने कुसळे खेमे[5] पाछा जोधपुर आया मुजरो कियो[1]। श्री महाराज घणां राजी हुवा। भेळा जीमाया। जद सु राठोड़ा भेळा जीमे है ने सगपण पिण राठोड़ां बराबर हुवे जोधा मैसदासोत।

सं. १७६९ रा फागण में दीपावतां नुं अटकाव[6] हुवो थो, जद दीपावत भं. माईदास ने सोबादारी समदड़िया गोक्ळदास नु ने मु. कोचर गोपाळदास ने मुहता आईदास नुं मेड़ता री हाकमी हुई थी। नै दिली उकील पं. गुलाळचंद मेलियो थो सं. १७६९ रा फागण में।

हमें जोधपुर भंडारी खींवसी रुघनाथ वगेरे दीपावतां ने अटकाव हुवो थो ने पातस्याहा फरकसेर म्होकमसिंघ म्होवणसिंघ ने मारणां सुं स्हैद हसनअली नें फौज दोग लाख सु मारवाड़ उपरे विदा कियो। नै राजा जैसिंघजी पातस्याहा सुं ने निबाव सु अरज कीवी-महाराज ने हुकम माफक समभाय देसां। म्हारो कयो

---

**शब्दार्थ-**

1. निवाजस = ईनाम इकराम। 2. सिज्यारा = संध्या के। 3. रुसनाई री बखत = रोशनी के समय। 4. लोप = अवज्ञा कर। 5. कुसळे खेमे = कुशलतापूर्वक। 6. अटकाव = कैद।

**टिप्पणी-**

१- राजरूपक, पृ. 482-83; वीर विनोद, भाग 2, पृ. 841।

नहीं मानसी तो म्है मूंढा आगे होय[1] ने समझावसां ।" राजा जैसिंघ जी नुं उजीण रो सोबो हुवो । नै श्री म्हाराज ने थट्टा रा सोबा रो फरमान मेलियो । श्री म्हाराज कबूल न कियो ।

हसनअली खां हरसोर रे गांव रिडमोंडी आय डेरा किया । सं. १७७० रा मिगसर में राइके बाग डेरो कियो । नं परगनां सारा हुकम पूगो साथ भेळो कियो । भं. खींवसी ने अटकाव थो । सुं हजूर बुलाया । चांनणी रो परेच[2] आडी[3] राख फुरमायो–"रुघनाथ ने तोई छोडूं नहीं, तुं काम ले ।" तरै खींवसी अरज किवी– 'रुघनाथ बिनां कोई छुटूं नहीं ।" तरै इणीज तरै दूजै दिन रुघनाथ ने बुलाय ने फुरमायो-- "खींवसी ने तो कोई छोडूं नहीं, ने तुं काम ले ।" तरै रुघनाथ कबूल करने साथे हुवो । जद सुं दीपावतां रे माहो मांय कुसंप[4] ठेहरीयों नें दीवांणगी भं. माईदास लूणावत ने मु. गोकळदास समदड़ियो इणां रे हीज रही । श्रीजी रो आगो कूच हुवो । घोड़ो हजार १८,००० अठारे भेळो हुवो । सुं राहण डेरा हुवा । नै हसनअली खां कने जाब सारू[5] इतरा जणां ने म्हेलिया ।[1] तिण री विगत-

प्रधान चांपावत भगवानदास जोगीदासोत ।

जोधो भींव रिणछोड़दासोत खैरवो ।

उदावत लालसिंघ गोपीनाथोत कांणेचो ।

मेड़तियो किल्याणसिंह राजसिंघोत, आलण्यावास ।

जोधो हरनाथ चंदरभांणोत देधाणो मेड़ता रो ।

भंडारी रुघनाथ ।

उदावत रीदेराम राजसिंघोत रायपुर ।

इतरा जणां नुं रिडमोंडी रा डेरा नबाब कनै म्हेलिया था । सुं दगो कर मैं

---

**शब्दार्थ–**

1. मूंढा आगे होय=आगे चलकर हरावल में रह कर । 2. परेच=पर्दा । 3. आडी= बीच में । 4. कुसंप=मनमुटाव । 5. जाब सारू=बातचीत के लिये ।

**टिप्पणी-**

१– वकील. (राजस्थानी), पृ. 50, क्र सं. 243/220 ।

इणां दोली नबाब चौकी[1] बेसांण दीवी । सु दिन ३ तो डेरां रया. पछै निबाब रे डेरै बुलाया । सु चांपावत भगवानदास जी ने जोधो हरनाथ तो डेरां रया ने बाकी रा निबाब रे मुजरै गया । मुजरो कियो । सु निबाब फेर दगो कर ने इणां ने उठे वैसांण दिया । आ खबर डेरां आई, तरै भगवानदासजी ने हरनाथ चढ़ उभा रया[2] । सु चाकर एक भगवानदास रो नास निकळियो । सु आप नै महासिंघ भगवानदासोत ने कयो--"ठाकुर काम आया ।" तरै महासिंघ संपाड़ो कर भदर हुआ[3] । नै तीया रो जीमण करता था । लोक जीमण ने बेठो थो । ने उठै हरनाथ जी भगवानदास जी ने कयो-- 'आप निकळो, हूं लारे कजियो कर कांम आवसूं । राज लारै तुरकां ने आवण देऊं नहीं । तरै भगवानदासजी निकळिया । नै जोधो हरनाथ चंदरभांणोत बाज ने[4] काम आयो । नै तीया रो[5] जीमण हुवां ठाकुर आया । तरै चारण कयो-

आव भगवान, तोंने भगवान उबारीयो ।
भगवान तूं मरै नहीं, किणी मिनख रे मारीयो ।
साठ हुतां पायगा, पिण अैकण ही सारीयो ।।

गीत कयो तिण री तुक है । सु आ सारी हकीगत श्रीजी सु मालम हुई । तरै श्रीजी राहण सु पाछो कूच कियो सु आसोप डेरा किया, ने नबाब मेड़ते डेरा किया । खीची जोधा नु जोधपुर म्हैलियो । राजलोक कंवरां ने पोकरण फलोदी म्हेलिया ।

नै भं० खींवसी ने जोधपुर सु चेत रे महीने हजूर बुलायो, मुजरो कियो । इण माफक हुवो। विगत-

१. भं० खींवसी ने दीवांणगी, हाथी, पालखी, सिरपेच किलंगी, जड़ाऊ कड़ा मोती, मोत्यां री कंठी, माळा, जड़ाऊ तरवार, कटारी ने मोर में नावों-प्रधान भण्डारी खींवसी दीवाण भंडारी रुघनाथ, सिनदां भेळी हुती-इण माफक हुवो ।

१. भं० रुघनाथ ने सोबेदारी, हाथी, पालखी, जड़ाऊ कड़ा, मोती सिरपेच, कंठी मोतियां री ।

---

**शब्दार्थ—**

1. चौकी = पहरा । 2. चढ़ उभा रया = तैयार हो गये । 3. भदर हुवा = सर मुंडवाया । 4. वाज ने = लड़ाई करके । 5. तीया रो = मरणोपरान्त तीसरे दिन का ।

१. भं० पोमसी रासावत नु जोधपुर गढ़ उपर म्हेलियो, सु गढ़ किलो सजियो, ने पोमसी ने मेड़ता री हाकमी थी । मेड़ता रै गांव गंगारड़ै मेळो नवो मंडायो सु हासल[1] रुपिया ५,००० बैठता ।

भं० खींवसी नु नबाब कने बात करण नु म्हेलियो, सु सिरदारां ने, ने रुघनाथ ने तो सीख दीराई, ने बात इणा तरै ठेहराई -इंदरकंवर बाई नु पातस्याह नु परणावणा, ने थटा रो सोबो कबूल कियो ।[1] ने कंवर जी श्री अभसिंघ जी भं० खींवसी ने निबाब लारै दिली म्हेलिया । निबाब पूठो[2] कूच कियो ।

किसनगढ़ रूपनगर रे राजा राजसिंघजी ने आगे हजूर आवण रो हुकम हुवो थो । सु राजसिंघ रे..........रीज वुनी रा सबब सु उजर कियो थो । ने अरज ........ ....म्हारा बेठा तीनू रीकाब मेलीजे ।" तरै राजसिंघ रै.............हुई । किसनगढ़ ने और ही परगना इणां रा था सु .............. में जबत किया । ने रूप-नगर जाय ने घेरीयो । मोरचा दोय निपट नजीक[3] लागा । सु किलो भीलण लागो ने राजसिंघ रे तोप थी, तिण (ने राख,ण गुमज[4] थो सु भाज गयो, नै राजसिंघ दीठो हमें मारीयो जाऊं । तरै बंदगी कबूळ कर[5] सुद मनो होय चाकर होय सीलामा करतो करतो आसोज वद १[2] आय कदमां लागो । हाथी तोपां निजर किवी । नै अरज किवी--"म्हों में तासीर छै, हूं समधी नहीं उम्मेदवार छुं । तकसीर माफ कराजो । और चाकर छूं जु उंई चाकर छूं । जठा तक हूं जीऊं तठा तक हजूर सु अलगो न रहूं ।" अठा तक आजीजी करी ने तरवार तो पैहला हीज खोल ने मोरचां मेल दीवी थी, नाळ, १ ने हाथी १ ने रुपया १,००,००० एक लाख निजर किया था । जद श्रीजी म्हेरवान होय किसनगढ़ वगेरे परगना सारा इनायत किया ।

---

**शब्दार्थ–**

1 हासल = राजस्व । 2. पूठो = वापस । 3. नजीक = निकट । 4 गुमज = गुम्बद । 5. कबूल कर = स्वीकार कर ।

**टिप्पणियां-**

१– 25 रबिउस्सानी = गुरुवार अप्रेल 29, 1714 ई. के दिन नबाब हुसैनअली खां से बात-चीत होने के बाद यह समझौता हुआ था । -(अखबारात०, फर्रुखसियर० सन् 3, खण्ड 1, पृ. 99; राजरूपक, पृ. 462 464) ।

२– शुक्रवार, सितम्बर 5, 1712 ई. ।

राजसिंग नु साथे लेने सांभर मैं कूच कियो । सं० १७६९ रा आसोज वद ३[1], ओ काम हुवो थो ।

सं. १७७० रा में श्री कंवर जी ने भं० खींवसी निवाब साथे दिली जाय पातसाहा सु मुलाजमत कीवी[2] । जेठ में हजूर गढ़ पधारिया ।

सं० १७७१ रा आसोज में श्रीजी जोधपुर सु थटा ने कूच कर सींवाणे होय बाड़मेर कोटड़े पधारीया, ने भं० खींवसी ने दिली लिखीयो—"थटै लाखें वातां[1] न जावसां । गुजरात रो सोबो मारोट, परबतसर, बंवाल, केकड़ी वगेरे मुनसब में हुवां आई नु चलावसां[2] ।" तिण उपर खींवसी जिसो चाकर सु सं० १७७१ रा मिगसर में गुजरात रा सुबा रो फरमान आयो[3] । मारोट परबतसर बंवाल केकड़ी वगेरे मुनसब में हुवां री भंडारो खींवसी री अरजी आई । थट्टा रो सूबो म्होकूफ[3] ठेहरायो छै । जरां श्रीजी कोटड़ा सु जोधपुर गढ़ पाछा पधारीया । ने दिली सु तुलाराम ने चेलो नाहर खां गुजरात रा सोबा रो फरमान लेने श्री हजूर आया । तरै भं० विजैराज खेतसीयोत ने सिंघवी मूळचंद सुंदरदासोत नु गुजरात ने विदा किया । सु सं० १७७१ में अेमदाबाद में अमल कियो ।[4] विजैराज तो अेमदाबाद में रहो ने सिंघवो मूळचंद ने अडाळच कोस पांच तठे हाकम म्हेलियो । ने कंवर जी अभैसिंघ जी ने हपत हजारी मुनसब ने नोवत सिरपाव, हाथी मोतियां री माळा दे खींवसीं ने सिरपाव दे जोधपुर ने विदा किया । सु जोधपुर आया सं० १७७१ रा असाढ़[5] में ।

स० १७७२ रो लागो प्रधान चांपावत भगवानदास जोगीदासोत रामसरण

---

**शब्दार्थ–**

1. लाखैं बातां = किसी भी स्थिति में । 2. चलावसां = रवाना करेंगे । 3. म्होकूफ = स्थगित ।

**टिप्पणियां-**

१– रविवार, सितम्बर 7, 1712 ई. ।

२– वकील० (राजस्थानी), पृ. 53 क्र सं. 256,231

३– यह फरमान तो इंदरकंवर की शादी के बाद ही दिसम्बर 29, 1715 ई. के दिन जारी किया गया था । (फरमान०, पृ 47, क्र. 7,90) ।

४– भंडारी विजैराज आदि 7 शाबान, 1127 हि० = गुरुवार, जुलाई 28, 1715 ई. को अहमदाबाद पहुंचे थे (मीरात०, पृ. 367) ।

५– जून-जुलाई, 1715 ई. ।

हुवो सु धणी उदासी फुरमाई । नोबत दोय टंक[1] न बाजी ने पछै प्रधानगी भं० खींवसी ने इनायत हुई । दीवांणगी रुघनाथ ने हुई ।

सं० १७७२ रा काती सुद ११[1] जुनागढ़ रो निबाव अेमदावाद उपर आयो थो, सु अडाळच सिंघवी मूळचंद झगड़ो कर भली तरै सु वाज काम आयो तरवार रे मुंढ़ै । जद सूं सिंघवी मूळचंदोतों री चाकरी[2] ठेहरी ।

सं० १७७२ रा आसोज में बाई जी श्री इंदरकंवर ने दिली म्हेलिया । साथे कंवर जी अभैसिंघ जी ने भं० खीवसी मांणसां सूदो[3] दिली गया । सु पातस्याह फुरमायो-'थ्हांरे हिंदवां री रीत हुवे तिण माफक व्याव करो ।' सु सं० १७७२ रा पोस में व्याव हुवो[2] । भं० खींवसी री बहू पातस्याह रे केसर रो तिलक कियो, मोतियों रा आखा चड़ाया, नाक खींचियो । पछै पातस्याह सिरपाव दियो । ने फेर इण माफक दियो । तिण री विगत-

१. प्रो० अखैराज ने सिरपाव हाथी गुरपदा रो[4], पटै तिंवरी ।

१. बारठ केसरीसिंघ भींवोत ने सिरपाव हाथी तोरण रो[5] ।

१. भं० खींवसी ने सिरपाव, सिरपेच, किलंगी, पदक, हाथी ।

इण माफक हुवो ने म्हाराज कंवार श्री अभैसिंघजी रे नांवे नागोर मुनसब में लिखाय फरमान[3] म्हेलियो । ने खींवसी सारी अरज लिखी । तरां मेड़ता रा

---

**शब्दार्थ—**

1. दोय टंक=दो समय । 2. चाकरी=सेवा । 3. मांणसां सूदो=परिवार के सदस्यों सहित । 4. गुरपदा रो=गुरु होने के रूप में मिलने वाला नेग । 5. तोरण रो=तोरण द्वार पर मिलने वाला नेग का ।

**टिप्पणियां-**

१– गुरुवार,, अक्तूबर 27; 1715 ई. ।

२– समकालीन फारसी लेखों के अनुसार 29 रमजान 1127 हि०=शनिवार, सितम्बर 17,1715ई.के दिन इन्द्रकंवर को कलमा पढ़ाकर उससे बादशाह ने निकाह किया । इसके बाद ही बुधवार, दिसम्बर 7,1715 ई. को ही हिन्दू रीति से विवाह किया था । (शिवदास०, प. 4 अ-ब; इरविन०, भाग 1, पृ. 304-305) ।

३– फरमान०, पृ. 47, क्र. 10/7 ।

हाकम भंडारी पोमसी ने जोधपुर रो हाकम भंडारी अनोपसिंघ रुघनाथोत दीपावत नैं श्री म्हाराज रो गुजरात सुं हुकम व्हीतो नागोर जाय कायम कीजो । सुं भ० पोमसी मेड़ता री फौज सुं ने जोधपुर सोभत री फौज सांमळ हुई । सं० १७७२ रा जेठ में चढ़ीया सुं असाढ़ वद १३[1] गांव नाराधरा डेरा हुवा । तरैं नागोर सुं ईंदर-सिंघजी री फौज सांमी आई । सुं पोर ३ तीन मोरचा री राड़ हुई । ने नागोर री फौज नाठी सुं नागोर गई । ने भंडारी पोमसी कूच कर असाढ़ सुद ११[2] नागोर डेरा कर ने मोरचा लगाया । नैं नागोर ईंदरसिंघजी री आसामियां इरा माफक मिळ गई । सुं नागोर म्हांय सुं आय ने पोमसी सांमळ डेरा किया । विगत-

१. कूंपावत कानो-गांव दीहावड़ी वगेरे ।

१ चांपावत आईदानोत ने लुणसर मेड़तिया ।

अैह मिळ गया तरैं ईंदरसिंघजी काचा[1] पड़ने राठोड़ भींव रिणछोड़दासोत जोधा खरवा रा, री मारफत वात कराय ने नागोर तो छोड़ी ने कोलियारी ने रुण री पटी रावजी ने देणी ठहरी । नैं रावजी नागोर छोड़ने दिली पातस्याहा कने गया । सं० १७७३ रा सावण वद ७ सन[3] नागोर में श्रीजी रो अमल हुवो, ने जिंडो रोपियो ।[2] नैं नागोर कायम हुवां री अरजी गुजरात श्री म्हाराज ने लिखी अैमदाबाद, सुं उठै तोपां री सिलक[3] हुई । नैं सिरदारां नु सिरपाव ने सोनेरण[4] तरवारां आई । नै नागोर री हाकमी भं० पोमसी रासावत नु हुई । तरां पोमसी अरज लिखनै मेड़ता री हाकमी छोड़ी । सुं भं० गिरधरदास उदैकरण खेतसी रा पोता ने हुई मेड़ता री[4] ।

म्होणोत नैणसी सुंदरदासोत रा बेटा करमसी वगेरे तो राव रायसिंघ जी ईंदरसिंघ जी भींत में चुणायो केई घांणी में मराया था । ने छोटा टाबर दोय

---

**शब्दार्थ-**

1. काचा = कमजोर । 2. जिंडो रोपियो = झंडा फहराया । 3. तोपां री सिलक = तोपां की सलामी । 4. सोनेरण = स्वर्णिम ।

**टिप्पणियां—**

१- बुधवार, जून 6,1716 ई. ।

२- शनिवार, जून 23,1716 ई. ।

३- शनिवार, जून 30,1716 ई. ।

४- राजरूपक, पृ. 478-80; जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 165-166 ।

सांवतसिंघ ने संगरामसिंघ बडारण्या किसनगढ़ ले गई थी, सु मोटा हुवा, तिणां ने भं० खींवसी रुघनाथ अरज करी --'तकसीर[1] माफ करावो म्होंणोतां री।' तरै म्हेरवान हांय ने सांवतसिंघ संगरामसिंघ ने किसनगढ़ सु हजूर बुलाया। सांवतसिंघ ने तो जालोर री हाकमी हुई, ने सांवतपुरो बसायो नै संगरामसिंघ ने मारोठ परवतसर वगेरे हुई।

सं. १७७३ रो लागो। गुजरात रो सोबो स्हैदां सु राहा जांण ने तागीर[2] कियो[1]। तरै श्रीजी भं० खींवसी नु लिखियो म्हे श्री द्वारकानाथ जी री जातरा[3] कर आवां छां, जितरै सोबो पाछो बहाल कराव जो।

सं. १७७३ रा में श्रीजी पेहला तो वड़नगर उपर पधारीया, जाड़ेचां री राजधानी थी। तुरकांणी में किऊ खून गुनी[4] पड़ गयो। पेहला तो डोला सु जाड़ेची परणिजिया था, पछै फौज उपर लेने श्री म्हाराज पधारीया। मोरचा करड़ा[5] लागा ने फुरमायो- "रुपिया दस लाख ले सू।" तरै श्रीजी री सासू निरांट पगां पड़ी, ने अरज कराई- "किड़ी उपर[6] कांहूं कोप करावो।" तर उदावत रीदै-राम राजसिंघोत रायपुर ने मेड़तिया किलयाणसिंघ राजसिंघोत आलण्यावास दीवान मं० रुघनाथ ने सामल लेने अरज कीवी। निहायत रुपिया पांच लाख ठेहरीया ने पांच लाख माफ किया। श्रीजी रा काकी सुसरा ने ओळ में[7] दीयो ने श्रीजी रो साळो पावी नगर रो धणी थो सु मुजरे आयो। निरांट बालक ने देख ने दया आई। मोतियां री कंठी ने घोड़ो इनायत कियो, दिलासा दिवी, बंदगी में साथे लियो।

उण सु फोज रो कूच कर जेठ में श्री द्वारका जी पधारीयां। राजलोक ने उमराव मुतसद्दी कविला सूधा साथे था, सु सारा द्वारका जी आया। दरसण किया, घणो उछव हुवो।

आलणियावास रो ठाकुर ने रीयां रो ठाकुर चलिया, जिण भाव रा श्री हजूर श्री मुख सुं[8] दूहा फुरमाया सु लिखतै—द्वारका जी में संवत १७७३ रा रे वरस—

---

**शब्दार्थ-**

1. तकसीर=दोष, कसूर। 2. तागीर=जब्त। 3. जातरा=दर्शन के लिये की गई यात्रा। 4 खून गुनो=अपराध 5. करड़ा=कठोर। 6. किड़ी उपर=गरीब पर, निर्बल पर। 7. ओळ में=जमानत के रूप में। 8. श्रीमुख सूं=महाराजा ने स्वयं।

**टिप्पणी-**

१- मई, 1717 ई. में गुजरात का सूबा जब्त किया गया था (मीरात०, पृ. 367-68)।

## दूहा

और सबै आंणद हुवो, ऐक बात नह चाह।
किलयाणो राजड़ तणो, मुवो द्वारका मांह ।।१।।

आयो थो दीदार कूँ, गया किलाणो मेल।
सोच सोच चुप होय हैं, देख देइ को खेल ।।२।।

संमत सतरे तिहतंरे, अमावस वळ भोम।
प्रथम जेठ कीलाण संग, सती कियो तन होम[1] ।।३।।

कीलाणो राजड़ तणो, मेड़तियो मछरीक।
सरग गयो संग ले सती, पाड़ कळेजे लीक ।।४।।

आगळ कुसळे दाझदी, फेर दइ किलीयाण।
जीवतां तो भूलां नहीं, सई देव की आंण ।।५।।

साम धरमी स्याम को, साथी तन चो साच।
काम पड़ां तन भांजतो, ज्यूं कर गहली कांच ।।६।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१. नह चाह = अनइच्छित । राजड़ तणो = राजसिंह का ।
२. दीदार कूं = दर्शनार्थं । मेल = छोड़कर । देइ को खेल = विधाता की लीला ।
३. अमावस वळ भोम = मंगलवार अमावस्या ।
४. पाड़ = अंकित करके । लीक = लकीर ।
५. आगळ = पहले । दाझदी = जला दिया । सई = सहन किया । देव की आंण = दैव आज्ञा से ।
६. चो = का । तन भांजतो = मर मिटने को तैयार रहता ।

**टिप्पणी-**

१– मंगलवार, प्रथम जेठ वदी 15, 1773 वि. = अप्रेल 30, 1717 ई. ।

गेहली हंदो बैंहड़ो, सती तणो नाळेर ।
सूझै नहीं किलांण सौ, रहै जगत सह हेर ।।७।।

कुसळो प्यारो पूत थो, ज्यूं सत हुवो किलांण ।
जोर नहीं जगदीश सूं, बैठ रहै मन जांण ।।८।।

सोच घणो मन सांपनौ, दाव न लगो कोय ।
देवण वाळो ले गयो, तैं बेठे चुप होय ।।९।।

गयो किलाणो जतन कूं, छोड़ जगत की आस ।
सती सहत अमरापुरी, जाय कियो गरवास ।।१०।।

जीवतां कीलाणसींघ, बालो थो बहु भाय ।
गयो जु पाछो ना वळे, तैं सोचूं मन माय ।।११।।

साथीड़ो चाले गयो, रहे द्रगन हम जोय ।
जोर कियो मन मोकळो, दाव न लागो कोय ।।१२।।

और विथा तन नह भई, रही ताप दिन चार ।
छोड़ी देह किलाणसी, अैसी कीं करतार ।।१३।।

समत सतरै तीहंतरै, प्रथम जेठ मन जांण ।
भोभ अमावास मझ द्वारका, छोड़ी देह कलियांण ।।१४।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

७. गेहली हंदो बैंहड़ो = पागल के सिर पर द्विघट के समान, हर समय मौत को हथेली पर रखने वाला।

८. कुसळो = राठोड़ कुसलसिंह अचलसिंघोत मेड़तिया ।

९. सांपनौ = उदास, दाव = उपाय । कोय = कोई भी । तैं = जिससे ।

१०. गरवास = घर वास, निवास स्थान ।

११. बालो = प्रिय । गयो जु = जाने वाला । ना वळे = नहीं लौटता है ।

१२. द्रगन = आंखों के सामने । मोकळो = अत्यधिक।

१३. विथा = बिमारी । नह भई = नहीं हुई । ताप = ज्वर ।

१४. मझ द्वारका = द्वारिका तीर्थ में ।

कछवाही बहु कोड कर, साथ चली कर साथ ।
तज काची साची धरी, हर सिर राखे हाथ ।।१५।।

## सती वर्णन

सती वचन-श्री हजूर में अरज कराई-

### दूहा

अरज करी हमतें इहें, दरसण दीजै मोय ।
ज्यु सुधरै मांहरी सबे, रहै न ऊंणत कोय ।।१६।।

ऊ थो सुत सत रावळो, हूं गोली बहु भाय ।
कृपा हुती तातै कहूं दरसण दीजै आय ।।१७।।

अरज मान लीवी अवस, इण विध दरसण दीध ।
पड़दो हुतो कनात रो, सो टुक ऊंचो कीध ।।१८।।

बाघो दीधौ तास रो, अत भारी बहु मोल ।
फिर माळा मुकतान की, दई गळा सुं खोल ।।१९।।

साड़ी राती वादलै, अत मूंगी बहु भाय ।
फेर रूपे रो घाघरो, लीनो सीस चढाय ।।२०।।

अै हिज साड़ी घाघरो, ऊवा माळा गल मांय ।
पहर लिया दरबार रा, और न आया दाय ।।२१।।

---

शब्दार्थ–

छंद संख्या

१५ कोड़ कर=प्रसन्नता पूर्वक । काची=अस्थाई । साची=सत्य की ।

१६. हमतें=हमारे से । ऊंणत=अभिलाषा ।

१७. ऊ=वह (ठाकुर कल्याणसिंह के लिये सम्बोधन) । रावळो=आपका । गोली=सेविका (यहां दास्य भाव प्रकट किया गया है )

१८. टुक=थोड़ा

१९. वाघो=पोशाक । तास रो=जरी का । दई=दे दी ।

२०. राती=लाल रंग की । रूपे रो=चांदी का ।

मुजरो कीधो देख कर, फेर लागी कुळ पांय ।
अरज करी इण भांत सूं, रही न ऊंणत काय ।।२२।।

हूं छूं गोली रावळी, ऊथो लघु निज दास ।
साथ चली इण कारणे, पलक न छोडूं पास ।।२३।।

अै छै छोरू रावळा, सिरदारो सुत और ।
चरण सेवसी रात दिन, और इण नहीं ठौर ।।२४।।

अरज इती कर चालिया, धरण न लग्गे पांय ।
कोड करे कलियांण नूं, लै बैठी गर मांय ।।२५।।

अरज इसी मुखतें करी, तव प्रताप सझ काम ।
ओ छै छोरु रावळो, ले जासूं सुभ धाम ।।२६।।

साथ चली साथे लियां, सो को कहै सराह ।
आप तिरंती तारीयो, भलो तियां तें नाह ।।२७।।

एक वात आछी भई, भली पामियो धाम ।
आखर तो इण देह रो, कठेक हो तो काम ।।२८।।

तठ लाधो सायर तणों, वळे गोमतो विसेख ।
देह तजि मझ द्वारका, पुरबलो भव लेख ।।२९।।

मुगत गया दोनु मिल, उरे न रहिया कोय ।
साम चरण मझ द्वारका, त्यां कू मुगत न होय ।।३०।।

---

**शब्दार्थ–**

**छंद संख्या**

२२. लागी कुल पांय=गोत्र वालों बुजुर्गों के चरण स्पर्श किये ।
२३. पलक न छोडूं पास=क्षण भर के लिये भी दूर न करूं ।
२५. धरण=जमीन । गर मांय=चिता में ।
२६. छोरु=बच्चे । सुभ धाय=पवित्र स्थान, स्वर्ग ।
२८ आछी भई=अच्छा हुआ । कठेक हो तो=कहीं पर हो तो ।
२९. लाधो=मिला । वळे=फिर । पुरबलो=पूर्व जन्म का । भव लेख=भाग्य का लेख ।
३०. मुगत=मोक्ष । उरे=बीच मंजिल में ।

घरे हुती सीसोदणी, सुण कर कीयो साथ ।
वडो भाग उण नार को, हर सिर दीधो हाथ ।।३१।।

साथ चली 'कलियाण' रै, दोय सतीकर साथ ।
वडो भाग नर नार को, बांह गही हर हाथ ।।३२।।

तीन दिवस तैं थिर रहे, इक 'कलै' के काज ।
ता पाछै फिर देसकूं, परस चले बृजराज ।।३३।।

कूच कियो गुजरात कूं, खांत करै अणपार ।
परम परस पाछावलां, साथ (लिये) संसार ।।३४।।

पांच दिना में पोचस्यां .. ....जाभी इळगार ।
सैण संभालो जीव में, कीधो को (ल) करार ।।३५।।

ऐक बात विकटी भई, कही न मोपे जाय ।
सिरदारो कुसळा तणों, मरगो भोले मांय ।।३६।।

सुं कहिये मुखते इसी, कही न लभ्भै साव ।
इण पख में दोय जणा, मरै मीर उमराव ।।३७।।

समत सतरे तीहंतरै, बीज अनै, गुरवार ।[1]
'सिरदारो' कुसळा तणो, छोड़ दियो संसार ।।३८।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

३१. धरे हुती = घर पर थी । वडो भाग = भाग्यशाली ।

३३. थिर रहे = निवास किया । कलै के काज = कल्याणसिंह के क्रिया कर्म के लिये । परस = दर्शन करके ।

३४. खांत करै = सावधान होकर ।

३६. विकटी = विकट । मोपे = मुझ से । भोले मांय = भूलवश ।

३८. बीज = द्वितीया । छोड़ दियो = त्याग दिया, मर गया ।

**टिप्पणी-**

१– गुरुवार, द्वितीय ज्येष्ठ वदी 2,1773 वि. = मई 16,1717 ई. ।

समत सतरै तीहंतरै, दुतीये जेठ वद पख ।
'सिरदारो' सरगे गयो, इळ ऊबारे लख ।।३९।।

'किलीयाणे' 'सिरदारे' छेती रखी न काय ।
अंतर दिवस अठार रो, हुवों काम विण चाय ।।४०।।

भली न कीधी रामजी, अत गण करी अनीत ।
'सिरदारो' खोसे लियौ, सो मो आवत चींत ।।४१।।

'सिरदारो' चाली गयो, मो तन दु:ख लगाय ।
जो जो बीठे जीव में. सो सो कही न जाय ।।४२।।

'सिरदारों' पत रो हुतो, जीव हुता अण पार ।
सो दै छोह खोसीयो, भली न की करतार ।।४३।।

सुखी नहीं संसार में, मो दु:ख दाभी देह ।
तातै मोरे जीव में, आवतू वात अछेह ।।४४।।

पालो थो पोतो करै, अपनी निज जन जान ।
ताकूं लीधो खोस कर, भली न की भगवान ।।४५।।

'कुसळो' साले सेल जूं 'कलो' कटारी जेम ।
(दु:) खै है सिरदारीयो, मो उर करवत जेम ।।४६।

सिरदारै सीखां करी, अत लांबी अण पार ।
अैसो मी(तन) मित को, सो फिर राखण हार ।।४७।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

४० छेती = दूर । विण चाय = इच्छा के विरुद्ध ।

४१. कीधी = की । अत गण = अत्यधिक । खोसे = छीनना ।

४२. चाली गयो = चला गया । बीठे = घटित होता है ।

४३. पत रो = विश्वासपात्र । छोह = छेह = धैर्य त्याग कर, अधीर

४५. पालो थो = पालन किया था । पोतो करै = पौत्रवत् ।

४६. साले = खटकता है । सेल = नुकीला हथियार विशेष ।

४७. सीखां करी = प्रस्थान किया । अत लांबी = अत्यन्त लम्बी ।

सिरदारै साथे हुती, नारी परतग दोय।
ठाली भुली रैह गई, साथ गई नह कोय ॥४८॥

ऊठ गयो छै ऐकलो, सिरदारो तज साथ।
घरै अछेजां मांहली, वात जलै का हाथ ॥४९॥

इक दोय मैंई करो, जो हर झालै हाथ।
तो सुधरै सि(रदारियो), उठ चले वे साथ ॥५०॥

गांव नगर रो नी–कूं, पीपल तोडो नाम।
'सिरदारो' कुसळा तणो, (गयो परो) किण ठांम ॥५१॥

........रा हूँ आविया, सैह बेठी चुप होय।
'सिरदारै' रै साथ में, नार चली नह कोय ॥५२॥

अठा उठां री एक हो, साथ चली नह कोय।
रांडां भूंडी आदरी, बैठ रही चुप होय ॥५३॥

तें थी किधो तें कहियो, कूच (कियो मन) जांण।
वैगे पोहचण चाह कर, हम कीनोह पंयाण ॥५४॥

'जसू' सुतन रामेण रो, साम धरमी - सोय।
..........त ह ता सकज, चलै इक दिन दोय ॥५५॥

'जसो' जबर उ मर गयो, गढ़ वाड़ै पड़ हाण।
करै परम सो सो हुवै, बैठ रहै मन जांण ॥५६॥

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

४८. परतग = प्रत्यक्ष, ठाली भुली = कुपात्र।

४९. ऊठ गयो छै एकलो = अकेला ही चला गया।

५३. अठा उठांरी = साथ व घर में रहने वाली। रांडां भूंडी आदरी = आदि काल से ही विधवा होना एक अभिशाप माना गया है।

५४. पथांण = प्रस्थान।

५५. साम-धरमी = स्वामीधर्म का पालन करने वाला। चलै इक दिय दोय = दोनों ही एक ही दिन चले गये।

'करमो' खीची........,वल गूजर 'उदैराज' ।
पातर मरगी नाथड़ी, (इण सूँ) भयो अकाज ।।५७।।

चेलो मरगो 'नेतियो'........................ ।
रचना रची दयाल जी, कह काहा गुण होय ।।५८।।

संमत सतरै तीहंतरै, दुतीय जेठ गुर दिन ।
दुतिया तिथ पख चांदणो, मरग्यो रामकिसन ।।५९।।

चोर बड़ौदे चल गयो, 'रामकिसन' निज दास ।
गिरंथ संवारण को गई, वड़ो पड़यो विसवास ।।६०।।

सेवक 'राम किसन' सी, यथा मीळे न कोय ।
मन में वी चिंत मोकळी, बैठ रहे चुप होय ।।६१।।

काजू चाकर जीव रो, काम सुधारण जोग ।
जग भरियो जगदीश रो, सबै निकामैं लोग ।।६२।।

तीरथ आवत जावतां, मरगा तीन हजार ।
देखी जै दुनियांण दिस, सोच हुवे अण पार ।।६३।।

इतै मरगै राह में, माणस तीन हजार ।
ऊंठ तुरगंम व्हैल रो, कर कुण सकै सुमार ।।६४।।

चले चले हम सज्जनां, आई वीरम गांव ।
फोड़े पड़ै जहांन में, मारग में सब ठांव ।।६५।।

---

**शब्दार्थ—**

**छंद संख्या**

६०. गिरंथ=धन सम्पत्ति । संवारण=ठीक करने वाला ।
६१. यथा=वैसा । वी=हुई । चिंत=चिंता ।
६२. काजू=काम करने वाले । निकामैं=निकम्मे ।
६३. तीरथ आवत जावतां=तीर्थ यात्रा के समय ।
६४. ऊंठ तुरगंम व्हैल रो=ऊंटों, घोड़ों व बैलों का । सुमार=गिनती ।
६५. फोड़े पड़ै=कठिनाइयां आई । सब ठांव=प्रत्येक स्थान पर ।

इण दिन हम कूं आवियो, साह तणो फरमांण।
अब तुम वेगा आवजो, ढील न कीजो जांण॥६६॥

ललोपतो जाभौ लिखी, आछी भांत वणांय।
वेगा आवो वार तज, ढील न कीजो कांय॥६७॥

गिलो लिखे सह पाजियां, सहर लियो धर लूट।
पकड़ लोक हकनाक सूं, टको लेत है कूट॥६८॥

मुलाणां बोहरा मिळै, हिंदू धरम विरोध।
क्यूं कूड़ी साची लिखै, वात करी कर क्रोध॥६९॥

पाजी खेध जणाय कर, सोबो दियो उतार।
इतरा दिन आवण तणी, कांई लगाई वार॥७०॥

इतकूं आवण आख कर, गई करण कूं जात।
कही सब हम तुमन कूं, कहो कोण यह बात॥७१॥

लोकाई में ई कही, वार लगाई काय।
धरियो औरे भांत को, मनसोबो मन मांय॥७२॥

मेल इणां रै सेद रै, सो नह आवत दाय।
फांट पड़ै इण दोय रै, सो फिर करो उपाय॥७३॥

असो मस में जांण कर, सोबो दियो उतार।
आवेगो महराज इत, तब फिर करें तयार॥७४॥

---

**शब्दार्थ—**

छंद संख्या

६७. ललोपतो = खुशामद। जाभो = तरह तरह से।

६८. गिलो = शिकायत। हकनाक = अकारण। टको = पैसा।

६९. मुलाणां = मुल्ला मौलवी आदि। कूड़ी = झूठी।

७०. पाजी = दुष्ट। खेध = विरोध।

७१. इतकूं = यहां पर। आख कर = कह कर। जात = यात्रा पर।

७२. लोकाई = दिखावटी। औरे = दूसरी तरह की।

७३. सैद रै = सैय्यद बंधुओं से। फांट पड़ै = विरोध उत्पन्न हो।

..................... .....................,............................... ।
लोक दिखावण कारणै, सोबो दियो उतार ।।७५।।

सोबो सैद दिरावियो, लीजै उरो समेट ।
आय मिलै महराज इत, तबै करीजैं भेंट ।।७६।।

सैदां सुं आंटो पड़ै, मुगलां मेल मंडाय ।
ता पाछै मन मानियां, वणै काम बहु भाय ।।७७।।

लिखियो आयो साहरो, आवो ढील निवार ।
जब द्रगन हूं देख हूं, सोबो तबै तयार ।।७८।।

आवो वेगा ढील तज, जूं सह सुधरे काज ।
ओ सोबो गुजरात रो, ममारक महाराज ।।७९।।

यह मन निहचे जांण जो, सज्जनियां बहु भाय ।
नैकह कुदरत पाजियां, सोबो लियो छिनाय ।।८०।।

लेण अम्हां पट आंतरो, 'जैसिंघ' कड़वा कूड़ ।
जो आवै महराज इत, पड़ै सबै मुख धूड़ ।।८१।।

कछवाहै किरपण थकै, कूड़ी कही वणाय ।
तेड़ लिया महाराज कूं, मूळ न आयो दाय ।।८२।।

तेड़त ही महराज कूं, तुरंत करेह फिसाद ।
राज हुतां पतसाहजी, राखत है नित वाद ।।८३।।

---

**शब्दार्थ–**

**छंद संख्या**

७६. समेट=संभाल कर । करीजैं भेट=प्रदान करना ।
७७. आंटो पड़ै=विरोध उत्पन्न हो । मन मानियां=इच्छानुसार ।
७८. ढील निवार=आलस्य छोड़कर । द्रगन=आंखें ।
८१. जैसिंघ=आंबेर का शासक, सवाई जयसिंह ।
८२. किरपण=कंजूस । तेड़ लिया=बुलवा लिया । मूळ=मुख्यतया ।
८३. तेडत ही=बुलाते ही । बाद=हठ ।

धांकळ करसी तेड़ियां, सहर लेवसी लूट।
मुलां जुलावां कूंजड़ां, परा काढ़सी कूट ।।८४।।

अैसे अैसे भांत की, वातां कही वणाय।
तातै चित चटपट लगी, फिकर पड़ी मन मांय ।।८५।।

म्है पिण चाहो ऐम थो, फेर दीउं खग झाट।
करुं प्रलै म्लेछांण रो, दूरंग नूं दहवाट ।।८६।।

आवत हैं हम जात कर, इतै खबर इह आय।
मुसळे धरम विरोध कर, गुसो, कियो मन मांय ।।८७।।

लौंडे आखर और सों, कहिया होय अधीर।
अब ही मैं महराज सूं, सोबो दियो तगीर ।।८८।।

लोकां लौड भखाय कर, भोंखीयो अण पार।
फेर लगायो जेझीयो, प्रगट जणायो खार ।।८९।।

निबळे निबळाई करी, आखर बात अछेप।
पहला देस्यां पाछणां, पछै लूण सर लेप ।।९०।।

क्रोध भयो हमकूं इधक, मन में धरे उखेळ।
इण गंडक सूं अत घणी, कहो फेर कुण मेल ।।९१।।

करूं उखेलो मोकळो, मो आगळ तिल माथ।
खपगी देव प्रताप कर, सही पतस्याह साथ ।।९२।।

---

**शब्दार्थ-**

छंद संख्या

८४. धांकळ = दंगा, उपद्रव। जुलावां = जुलाहे।
८५. चटपट लगी = चिंता हुई।
८६ खग झाट = तलवार का प्रहार। दहवाट = विध्वंस करूं।
८७. इतै = इतने में। मुसळे = मुगल, बादशाह फर्रुखसियर।
८८. लौंडे = शैतान। तगीर = जब्त करना।
८९. भखाय कर = भड़का कर। जेझीयो = जजिया कर।
९०. अछेप = अछूत। देस्यां पाछणां = घाव करके।
९१. उखेळ = संघर्ष, युद्ध। गंडक = कुत्ता (हीनता सूचक शब्द)।

ऊखेळूं दिल्ली सहत, गमूं रसातळ जोय ।
हवे आगळ माहरैं, टिक नह सकेह कोय ।।९३।।

'औरंग' आगळ खेय गई, 'फरंक' केही बात ।
श्रीजी तणा प्रताप कर, इ अत वात विख्यात ।।९४।।

खोसेवा पातसाह नूं, वंळ लूटण गुजरात ।
आंणी यह मन मांहलै, भली वणी यह वात ।।९५।।

आई लूटण सहर कूं, इते संदेसो आय ।
ओ छै सोबो रावळो, रीस न कीजो काय ।।९६।।

मीयां कागळ मेलिया, लिखियो बोहत वणाय ।
ओ छै सोबी रावळो, रीस न कीजो काय ।।९७।।

हूं छूं छोरु रावळो, राज हमारे बाप ।
मांहरे जा जी छै गरज, वेग पधारो आप ।।९८।।

सोबा देस्यां आपनै, ओ सोबो कुण मात ।
मैं दोहरो दीदार विण, ताथ कहूँ यह वात ।।९९।।

सूंस लिखै अत मोकळी, रखि न तिल भर कांण ।
जूठ न जाणै सुंदरी, हमै देव की आंण ।।१००।।

---

**शब्दार्थ-**

**छंद संख्या**

९३. उखेळूं=उखाड़ दूं । रसातळ=पाताल में ।

९४. औरंग=बादशाह औरंगजेब । फरंक=बादशाह फरुंखसियर ।

९५. खोसेवा=लूटने के लिये । वळ=और । आंणी=विचार किया ।

९६. रीस=क्रोध । कांय=किसी प्रकार की ।

९७. मीयां=मुगल ने (बादशाह के लिये सम्बोधन) ।

९८. राज=आप, अजीतसिंह के लिये सम्बोधन,

९९. दोहरो=दुखी । विण=बिना । ताथ=जिससे ।

१००. कांण=मर्यादा । देव की आंण=इष्ट देव की सौगन्ध ।

लिखी आजीभी मोकळी सो मों कही न जाय।
श्री जी तणा प्रताप रो, डर वरत्यो मन मांय ।।१०१।।

पांच दिवस में पांच खत, पंजा कवल समेत।
मीयां सुध मन मेलिया, प्रगट दिखावण हेत ।।१०२।।

ललोपतो कुसांमदी, सोगंद लिखी अपार।
जूट नहीं तिल एक ही, सोह दीठी संसार।।१०३।।

वात तगीरी रद भई, गुसो दियो सै खोय।
चूक न दीठो साह को, सो बैठे चुप होय ।।१०४।।

अब कागळ द्रिग देख कर, दीनो गुसो निवार।
सूबो सूं पै पाजियां, पछै करी इळगार ।।१०५।।

तीन दिवस सरखेत में, रहीया इण विध चाय।
टूकह मुसळे बळ कियां, देवां सहर लुटाय ।।१०६।।

पाजी पेहला जोर था, मांहनु अळगा जांण।
तोप चढाई पोळ पर, किया सांतरा बांण।।१०७।।

खोज हमीदे वद अकल, कोळी लिया बुलाय।
वेदां बोलो मांडियो, अकल रही नह काय।।१०८।।

म्है आया गुजरात में, गया जवन सह नास।
जीवण की तिल जीव में, रही नहीं कुछ आस ।।१०९।।

---

**शब्दार्थ–**

छंद संख्या

१०१. वरत्यो=व्याप्त हुआ।

१०२. पंजा कवल समेत=पंजे के निशान सहित फरमान। हेत=मैत्री।

१०४. रद भई=निरस्त हो गई। चूक=गलती।

१०६. इण विध=इत तरह। चाय=चाह कर। टूकह=थोड़ा सा भी।

१०७. अळगा=दूर। सांनरा बांण=धनुष बाण तैयार किये, युद्ध की तैयारी की।

१०८. खोज हमीदे=हमीद खोजा। बद अकल=कुबुद्धि। बोलो=अत्यधिक।

केते सामें आय कर, चरण लगै बहु भांय।
अरज करी इण भांत की, आवो महलां माय ॥११०॥

पाजी तैं हम पूछियो, सोर मचायो काय।
सही तो भूलै ही सबै, नह समझै मन मांय ॥१११॥

ऊडाऊं पल एक में, सहत तमीणो सांम।
अेसे कै लख बार मैं, किया मोकळा कांम ॥११२॥

सहर जवन जवनेस कू, गमू रसातळ मांय।
आगळ लूणां लूणियां, दीना अलग उडाय ॥११३॥

काजी मुल्ला खोजरो, बगसी वाकादार।
कुविये मिळ अरजां करी, कर मन्नन अणपार ॥११४॥

प्रगट माफ कीनो गुसौ, निपट अजीजी देख।
क्यूं ही आंटे जांण नै, मारीजे सिर मेख ॥११५॥

मन विचारी ईहड़ी, कुलां सहर में जाय।
हळवळ मुसळां होवसी, वहदो करै बलाय ॥११६॥

सहर मांही हम जाय कर, कहा सुधारें काम।
मधकर बेहधो मांड कर, खोस लेवसी गांम ॥११७॥

कहियो फर्रकशाह नू, नह आवे महराज।
तेडंता करसी तुरत, तुरकां तणों अकाज ॥११८॥

---

**शब्दार्थ–**

**छंद संख्या**

११०. केते = कितने ही। बहु भांय = बहुत प्रकार से।

१११ सोर = शोरगुल। काय = क्यों?

११२. ऊडाऊं = समाप्त कर दूं। तमीणो = तुम्हारा। लख बार = अनेकों बार।

११४. मन्नत = मिन्नतें, मनवार, प्रार्थनाएं।

११५ मारीजे सिर मेख = सर पर प्रहार करेंगे, बदला लेंगे।

११८. अकाज = अकार्य अनिष्ट।

## वात

सं. १७७४ में श्रीजी गुजरात सु जोधपुर गढ पधारीया[१]। जेठ में भं० खींवसी रे बेटी पोती रो व्याव हुवो। तरै श्रीजी कंवरां सहैत खींवसी री हवेली अरोगण[1] ने पधारीया, पगमंडा[2] किया। रुपिया १००) श्रीजी वडवैड़ा[3] में घालिया। ने रुपिया २५,०००) पचीस हजार खींवसी निजर किया। रुपिया १००) निछरावल किया।

और हळोद रा झाला जैसा ने मरायो, फिटक उरजा नं मेल ने। सुं पैसारे पैस[4] मार आयो[२]।

सं १७७४ रा में मु० अखैराज वागरेचा (मुहता) पेहला म्होकमसिंघ सुं मिळियो थो, जिण सु मरायो। घर खालसे कियो।

महाराज श्री अजीतसिंघजी करायो इण माफक कमठो[5] हुवो-

१. सं० १७७४ रा में फतै गोळ कराई कोट सूदी[6], गोपाल पोळ हेटे।

१. सं० १७७४ रा में दौलतखाना रा मुंढा आगे वडो मेहल राज-अेवास[7] तीखंडीयो[8] करायो थो। सु इण में धाम पधारीया तिण सुं श्री वखतसिंघ जी पड़ायो।

---

### शब्दार्थ-

1. अरोगण=भोजन करने के लिये। 2. पगमंडा=बिछायत पर पैदल चलना। 3. वडवैड़ा=स्वागत कलश। 4. पैसारे पेस=पिछवाड़े से घुस कर। 5. कमठो=निर्माण कार्य। 6. कोट सूदी=परकोटे सहित। 7. राज-अेवास=राजा के निवास के लिये। 8. तिखंडियो=तीन मंजिल वाला।

### टिप्पणियां-

१– राजरूपक, पृ. 494 के अनुसार महाराजा अजीतसिंह श्रावण मास के कृष्ण पक्ष सं. 1774 वि. में जोधपुर आया था।

२– यह घटना संवत् 1773 वि. की है।

१. गंगस्यामजी रो देवरो सिखरबंध करायो। मंडी में पंच देवरीयो[1] वाजे। नै मूळ नायक जी रो देवरो गूंदी कनै बड़ हेटलो[2] पिए करायो।

१. सं. १७७६ मंडोर इक थंभियो[3] मैहल ने जनाना री जायगा बाग में कराई। नै श्री काळा गोरा भैरू जी रा सरूप[4] भाखर में कुराया[5]। पनां किवी सु जाये परणिये[6] जातां[7] सरू हुई। श्री गणेस जी रो सरूप बीच में कुरायो। कनै साळां में पहाड़ में वडेरां रा सरूप घोड़ां चढीया तथा मारवाड़ में दूजा नांव जाद[8] हुवां-मेहो मांगळियो, रामदेव तंवर, हड़वू सांखळो, पाबूजी ने श्री गुसांइ जी; आं देवतां री साळ श्री अजीतसिंघ जी री करायोड़ी है।

ने मंडोर में वड़ा म्हाराज श्री जसुतसिंघ जी रो देवळ नागादड़ी उपर करायो।

इतरा रूपा रा देवतां रा सरूप नवा कराया–साढ़ा तीन हाथ रा सुं विगत—

१. ठाकुर जी श्री मुरली मनोहर जी, श्री चत्रभुज सरूप ऊभां रो[9], गढ़ उप्रे श्री अणंदघण जी रा मंदिर में है। नै म्हाराज श्री गजसिंघ जी अमर चंपू दिक्खणी री सेवा[10] लाया सुं इण मंदिर में है।

१. श्री हिंगलाज जी रो सरूप उभां रो।

१. श्री महादेव जी पारवती जी विराजिया भेळा[11]।

## सं० १७७५ रा (वरस) री हकीगत-

पातस्याह फरकस्हैर नबाब जुलफगार खां बीजो तिण नु बगसी गिरी री सिलाम छानै कराई थी। सुं सैद अबदुला, हसनअली नू खबर हुई। सुं

---

**शब्दार्थ–**

1. पंच देवरीयो = वह मंदिर जिसमें मुख्य मंदिर के चारों दिशाओं में चार मंदिर हों। 2. वड़ हेटलो = वट वृक्ष के नीचे। 3. इक थंभियो = एक स्तम्भ का। 4. सरूप = मूर्त्ति। 5. कुराया = खुदवाया 6. जाये परणिये = जन्म तथा विवाह के समय। 7. जातां = पूजन। 8. नांव जाद = प्रसिद्ध। 9. सरूप ऊभां रो = खड़ी मूर्त्ति। 10. सेवा = मूर्त्ति। 11. भेळा = साथ में।

कितराक दिन तो जाब गोसे कियो[1] । पछै हसनअली खां अरज कराई-"म्हां में कांई तखसीर पड़ी । सु म्हांरी खिजमत बीजा नु सिलाम करावे । हमें म्हाने चाकर जांणै तो नवाब ने सूंप देवे ।" नै चितखांत[2] मोकळी पड़ी । तिण सु पातस्याह चेला नाहर खां ने फरमाण देने श्रीजी नुं बुलावण म्हेलिया । सु जोधपुर आयो । श्रीजी सं० १७७५ रा भादवा में दिल्ली पधारीया । पातस्याह सूं मुजरो कियो ने डेरां री सीख दिवी ।

तरै पाछा पधारतां अब्दुला खां ने श्रीजी साथे पधारीया । सु निबाब रै हाथी श्रीजी निबाब भेळा बैठा । श्रीजी नु अेकला जांण नीबाज रो उदावत अमरसिंघ कुसळसिंघोत छवरी वाळां री जायगा अंबाड़ी रे पाछै जाय बेठो । पछै श्रीजी निवाव रे डेरे पधारीया । माहो मांय ललोपतो[3] कियो तिण उपरे आंबेर रो राजा जैंसिंघ जी कोतां फर्रकस्हैर रै कानै लागा[4] । ने कयो-"म्हाराज तो सैदां सुं मिळ गया छै ।" तरै पातसाह रूह फेरी[5] । म्हाराज सुंणी तरै दीठो-'हमें सैदां सूं पकी करणी[6] ।'

तरै सैद ने म्हाराज कोल बचन कर कुरांण बिचै ले एक दिल हुवा ने भाइ-चारो कियो । तरै फेर पातसाह सुं मालम हुई । तरै पातस्याह कयो-"हूं तो म्हाराज नूं म्हारा तनाई[7] जांणतो थो, तरै बुलाया था । सुं अै सेदां सूं अेक हुवा ।' तिण उपर जैंसिंघ जी रे कहे, फेर पातस्याह श्री म्हाराज ने चूक विचारीयो । अेक बार तो बाग में सोर बिछाय[8] ने उपरै विछायत कीवी । म्हाराज आवे तरां अठै बैठांण सोर लगाय देजो ।' सुं आ खवर श्री बाईजी पोहचाई । तरां उण ठोड़ नहीं विराज मुजरो कर डेरे पधार गया । पछै फेर दूजै फेरै[9] घावड़ीया मांय राख बुलाया । तीजै फेरै नवाड़ै बैसांण दगो विचारीयो । पिण तेज प्रताप सु चूक न सझियो[10] तरै पात-साह दीठो चूक तो सजियो नहीं । तरै फेर पांचमी वार सिकार रो मिस कर डेरां उपर आवण रो[11] विचार कर पिंडा पातस्याह चढ़ीया सु अब्दुलाखां ने खवर हुई । सु श्रीजी रे डेरै आदमी २०,०००बीस हजार सूं पिंडा आय बेठो । पातस्याह डेरा

---

**शब्दार्थ—**

1. जाब गोसे कियो = गुप्त रूप से पूछताछ की । 2. चितखांत = मन में दुविधा । 3. ललो-पतो = विचार विमर्श । 4. कांनै लागा = कान भरे, चुगली की । 5. रूह फेरी = विचार बदले । 6. पकी करणी = पक्की मैत्री करनी । 7. तनाई = सम्बन्धी, हितैषी । 8. सोर विछाय = बारूद विछा कर । 9. दूजै फेरै = दूसरी बार । 10. चूक न सझियो = षड्यन्त्र सफल नहीं हुआ । 11. डेरां उपर आवण रो = डेरों पर आक्रमण करने का ।

कने आयो । निबाव रो लोक सांवठो देखने आधा सिकार रम लालकोट दाखल हुआ ।[१]

तिण सु श्रीजी रा मन में मोकळो खतरो पड़ियो । अेक दिन असवारी कर ने बारे पधारीया था, ने मारग में आगै श्री जादम जी नै उमराव काम आया था, जिका जायगा आई । जूना चाकर[1] था, जिणां अरज किवी--"आ जायगा छै । अठै श्री हाडी जी, कछवाई जी, जादम जी ने उमराव काम आया था ।" श्रीजी जायगा देख रोस में चढ़ीया । मूंछा रे बळ घाल[2] फुरमायो - "इसा मोटा वैर भूले तिकै राजा किसा ? इणीज ठोड़ पातस्याह ने मार ने एक कबर असपत री करीजै ।" तरै चाकरां अरज कीवी–"इसी वात हुवां तो दळापंग श्री जैचंद जी जिऊं अख्यात हुवै[3] ।"

पछै सैद अब्दुळा खां रे डेरै पधारीया । सला करने हुसनअली खां दिक्खण थो, सुं ताकीद करने बुलायो सु फागण वद १४[२] आयो ।

पातस्याह रे सैदां सु ने श्रीजी सु खतरो ऊपनो[4] । तरै औरंगजेब थकां रो वजीर असद खां मसीत में थो, जिण ने सारी हकीकत केवाई-"हमें कांई कियो चाहिजै ।" तरै असद खां अरज कराई--'जुलफगारिया ने तो सैदां कहे मार नाखियो। ऊ कैद में थकोई हमार आडो आवतो[5] । ने हूं बुढो हुवो । केई दिन पातस्याही कियां चावो तो बगसी गिरी री सिलांम कराई जिण नबाव ने सैदां नें सूप देवो ।" सुं चित में न बेठी ।

श्रीजी नैं स्हेदां सला कर धरम करम लेने पातस्याह ने कैद रो मनसोबो कियो--"इण रा फैल ने तरै[6] निपट जबर छै इण ने उठाय देणो[7] । ने और हर कोई बहादरस्याह रा पोता ने थांपा ।" नै श्री म्हाराज जैसिंघ जी ने कवायो—

---

**शब्दार्थ—**

1. जूना चाकर=पुराने सेवक । 2. बळ घाल=ताव देकर । 3. अख्यात हुवै=प्रसिद्धि हो। 4. ऊपनो=उत्पन्न हुआ । 5. आडो आवतो=काम आता । 6. फैल न तरै=स्वभाव, विचार व कार्य प्रणाली । 7. उठाय देणो=हटा देना ।

**टिप्पणियां-**

१– जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 108-109; इरविन० भाग 1, पृ. 353–356 ।
२– शनिवार, फरवरी 7, 1719 ई. ।

'कैंह तो घरै परा पधारजो, नहीं तो किया-पावसो[1] ।' तरै जैसिंघजी तो पातस्याह नुं छोड़ डील रो मिस कर आंबेर गया । नै सैदां पातस्याह ने कहायो-कै तो बगसी-गिरी री सिलांमती कराई, तिण नबाब नुं हमकूं सूंप देवो । का तोपखाना री लाल-कोट री दारोगाई म्हानुं सूंपो । तो म्हारा मन में खतरो मिटै ।' तरै लालकोट री किलेदारी ने तोपखाना री दारोगाई सैदा नुं दीवी । तरै तोपखांना रो सारो लोक सैदांरे थको हुवो[2] ।

फागण सुद २[1] लालकोट घेरीयो, पिण लड़ै कुण ? मरे कुण ? आडो कोई आयो नहीं । तरै फागण सुद १०[2] निबाब अब्दुलाखां हसनअलीखां ने श्री म्हाराज, ने कोटा रो हाडो दुरजणसाल जी, रूप नगर रो राजा राजसिंघ जी, फैर हिंदू श्रीजी में था[3] सुं सारा श्रीजी साथे दीवांण अंब में जाय बैठा । पातस्याह जी जनानां में जाय बेठा । नाजर साथे फूलां री माळा श्रीजी नूं मेली । माळा में रुको घालियो, तिण में सूंस सबद लिखियो, कुरांण बिचै दीवी । घणी आजीजी लिखी-'म्हारी पातस्याहत थांरे दिवो रैहसो । नै हुकम सारो थांरो रैहसो, थां सूं किणी वात री तफावत[4] हुसी नहीं । जैसिंघ रै कहे हम बोहत बात चूका, म्हाराज आप वडा हो ।' कुरांन सर लगाय निरांट करड़ा सूंस लिखिया था । तरै भंडारी खींवसी, महाराव दुरजणसालजी, रूपनगर रा राजा सुं सला कर तीनूं ही श्री म्हाराज सुं सला किवी, अरज किवी - श्रीजी पातस्याह ने राखिया चावे तो अजेस[5] किऊं बिगड़ियो न छै । पातस्याहत में हुकम आंपणों रहसी । नै मोकळो आछो लागसी । हिन्दू सारा श्रीजी रा हुकम में छं, ने तुरक पिण कितराक सांमल होसी । पातस्याह रो किऊं विगड़ण देवां नहीं । पछै मरजी ।' तरै श्रीजी फुरमायो- सैंदा ने श्री हिंग-लाज जी बिचै दिया[6] । पातस्याह म्हां सूँ चूक विचार डेरां उपरे आयो सुं नबाब डेरे न आवतो तो आपां नूँ कद छोड़तो । म्हासूं तो बचन फिरणी[7] आवे नहीं ।'मरजी में न आई ।

---

**शब्दार्थ—**

1. किया पावसो = कर्मों का फल भुगतोगे । 2. थको हुवो = अधिकार में हुये । 3. श्रीजी में था = महाराजा की सलाह में सम्मिलित थे । 4. तफावत = अलगाव । 5. अजेस = अभी तक । 6. बिचै दिया = साक्षी बनाया । 7. बचन फिरणी = वचन भंग करना ।

**टिप्पणियां-**

१- मंगलवार, फरवरी 10,1719 ई.

२- बुधवार, फरवरी 18,1719 ई. ।

सैंदा रा आदमी जनानां में आय पातस्याह फर्रकस्हैर नुं पकड़ लाया, कैद कियो। श्रीजी दिन तीन दीवांण अंब[1] में सेवा कीवी, झालरां बजाई[2]। उठे हीज अरोगिया, सुख फुरमायो। सैंदां ने कैहने बाई जी नु जोधपुर पोछाया। नै नाजर साथे थो। पछं बाई जी प्यालो ले ने धाम पधारीया! स. १७७५ रा वैसाख सुद१०[1] फरकस्हैर रे गळै तसमों खेचने[3] मारीयो।

फागण सुद १३[2] साह रफीलदरजात[4] नुं तखत बैसाणियो, सुं बेगोहीज फौत हुवो। महीनोक जीवियो। तरै रेफीलदोलां[5] नुं बैसाणियो, नांव जहांसाह दियो।

जितरै आगरा में पातस्याही चाकर हुतां तिणां ने जेसिंघ जी अेक दोय अकबर रा बेटा कैद में था, तिणां ने बारे काढ बेसाणियां रा समाचार दिली आया। तरै सैद हसनअली फौज लेने आगरै जाय लागो। किलो घेरोयो। श्री म्हाराज दिली सुं पातस्याह ने पिण असवार कियो, कूच हुवो। जितरै सं० १७७६ रा भादवा वद ऽऽ (अमावस्या)[3] आगरा रो किलो फतै हुवो। नेकोसर[6] नुं दोनुं भतीजां सुं पकड़ कैद कियो। जितरै पातस्याह जहांसाह (जहांदार साह) ई फौत हुवो[4], मास छव पातसाही कीवी।

सं. १७७६ रा आसोज में फौज में सुं भं० खींवसी ने सैदां रो उजीर राजा रतनचंद नुं सायजादो[7] लेण नु मेलिया। सुं दिली आया म्हेमदस्याह बरस २२ में थो, सुं अव्वल निजर आयो तरे कयो--"आप पधार ने तखत विराजो।" तरै मैह--मदस्या री मां आगला पातस्याह बेगा बेगा फोत हुवा जांण ने जांणी--'अे ले जाय ने मार नाखै छै।" तिण सुं कयो--"म्हारा बेटा रे तो पातस्याह कोई चाहिजे नहीं।" तरै सूंस सबद[8] री निसा दीवी। भं० खींवसी पातस्याह री मां कने

---

**शब्दार्थ—**

1. दीवांण अंब=दीवान आम। 2. झालरां बजाई=उत्सव मनाया। 3. तसमों खेंचने=फांसी देकर। 4. रफीलदरजात=रफीउद्दरजात। 5. रेफीलदोलां=रफिउद्दौला। 6. नेकोसर=निकोसियर। 7. सायजादो=शाहजादा 8. सूंस सबद=सौगन्ध, शपथ।

**टिप्पणियां—**

१– शनिवार, अप्रेल 18,1719 ई.।

२– शनिवार, फरवरी 21,1719 ई.।

३– मंगलवार, अगस्त 4, 1719 ई.।

४– मीरात०, पृ. 392।

ने पातस्याह कने कोल पंजा रो खत मुतालब रो नै म्हाराज सुं दूजा न हुणों तिण रो कुरांण बिचे दिराय लिखाय दसकत कराय पंजो कैसर रो करायो, कोल दिरायो। नै पातस्याह म्हैमदस्याह ने लेने आगरै आया। सायजादा थकां रो नाम रोसन अखतर थो। सुं तखत बैठां पछै नांव म्हेमदसा गाजी दियो[1]।

सं० १७७६ रा आसोज में म्हेमदसाहा जी रो अेक हाथ तो श्रीजी रा हाथ उपरै ने अेक हाथ अब्दुला खां रा हाथ उप्र लाय ने तखत बैठाणियो। नै श्री म्हाराज डेरे पधार ने फुरमायो–'ओ बोहत जोरावर हुसी ने घणो तपसी[1]।'

हमें सं० १७७६ रा में सैदां आम्बेर उपर कूच कियो। श्रीजी नूं गुजरात रो सोबा रो[2] फरमान लिखाय ने साथे लिया। नै आंबेर तोड़ण री निबाब रा मन में घणी धांप[2]। सुं जैसिंघजी ने वडो विचार पड़ीयो। आम्बेर घर सुं जावे जुं आय वणी[3]। मुलक छूटण लागो। तरै कुंभाणी बुधसिंघ नरुका केसरीसिंघ सेखावत दोलतसिंघ कुंभाणी जैतसिंघ, साह सीरीचंद नुं हजूर म्हेलिया। घणी आजीजी अरज कराई-'मोनुं जठे आप तइनात कर राखसो जठे आपरो हुकम कबूल छै।' तरै श्री म्हाराज विचारियो-म्हैं हिंदस्थान रा सिरदार हां। हाथी री असवारी करने छोटी असवारी न करीजै। दिली रा पातस्याहा फरकस्हैर ने उठायो, दूजो खातर में आयो सुं बैसाणियो, तो जैसिंघ रो कांऊ। ऐक बार तो आगैई आंबेर दीराई थी।' तरै श्रीजी निबाबां ने कह्यो—' जैसिघ जी री तकसीर माफ करो।' तरै निबाबा कयो-ओ म्हां तरैदार है। आप भेळा मत हुवे। कुसामंदी सुं डेको मती[4] मारवाड़ ने ई आछो न छै। घणा पिसताव सो, सजावार[5] करण देवो। ने एकण कंवर नुं बुलावो, जुं आंबेर बैसांण देवां। कछवावांरी जमीदारी काड देसूं। राठोड़ां री जमीदारी घाल सूं। असवार बीस हजार मारा राख सूं। आप बात करावो मती।' तरैश्री महाराज निरांट घणा दबाया, नै श्री महाराज रो बचन

---

**शब्दार्थ–**

1. घणो तपसी = बहुत प्रतापी होगा। 2. घणी धांप = प्रबल इच्छा। 3. आय वणी = परिस्थितियां बन गई। 4. डेको मती = बहको मत। 5. सजावार = दण्डित।

**टिप्पणियां-**

१- 15 जीकाद, 1131 हि. शनिवार, सितम्बर 19,1719 ई. के दिन बादशाह मोह-म्मद शाह गद्दी पर बैठा था। (मीरात०, पृ० 392।)

२- मीरात०, पृ० 393।

निबाव उथापे नहीं[1] । खारी मोकळी लागी । तरै नबाव माथां सु पाग पांवड़ा च्यारेक उतार ने बाय दिवी[2] । छाती कूटी, तीन धमीड़ा[3] लिया ने दलगीर हुवा । कयो-'इण सू आघो कढावो हो सुं याद रखावसी ।' इतरी कैह ने फोज रो कूच पाछो कियो । नै श्रीजी ने सीख हुई, सुं आंबेर पधार जैसिंघजी सुं मिळिया उठा सुं कूच हुवो सुं जैसिंघ जी री सैंदा सु निपट छाती फाटे[4], डरे । तिण सु श्रीजी रे साथे आया ।

अजमेर पधार मनोरपुर गोड़ां रे समत् १७७६ रा काती में दीवाळी रे सावे परणीयां । नै जोधपुर पधारीया । जैसिंघजी ने सूरसागर रा मेहलां डेरो दिरायो । ने जेठ में सुरजकंवर बाई, श्री बड़ा भटीयाणी जी जेसलमेर रा तिणांरी बेटी, जैसिंघजी ने सूरसागर परणाया । सु फतैपोळ सू लेने धू पोळ तांई वडारा-णियां, उलै कानी पातरीयां भगतणियां सोना रूपा रा गेहणां, केसरीया कसुमल लपा गोटा री पोसाकां, ने धू पोळ सु लेने लोहापोळ तांई गायणियां, खासी वडार-ण्यां रं आदो जड़ाव रो आदो सोना रो ने तास री ओरणिया केसरीया कसोमल पोसाखां ने जनानी दोढ़ी सू लेने थेट तांई पड़दायत्यां वगेरे जड़ाव रो भारी गहणां ने फरकसाई तास जरी वांदलां री पोसाखां इसी जलूस थी[5] । ने इणीज माफक मुसद्दी निपट सारी जलूस भारी थी । सु जसिंघजी चंवरी में बैस ने फुरमायो-'राज तो करां छां तो म्हें करा छां । अठे तो राज न छै इंदरपुरी छै ।' परणीज ने डेरे पधा-रीया । रा० हरनाथ तेजसिंघोत चांपावत आउवो. उदावत जसकरण परतापसिंघोत छीपीया ने केसर रा घड़ा ४० देने सूरसागर म्हेलिया । सु सारा कछवावां ने केसर सुं गरक किया[6] । नै जान नेत आया[7] । आथण रा अरोगण पधारीया, तिण री जलूस सूरजपोळ रा मुढा आगै श्री आणदघण जी रा मींदर कनै चौकी थी, तठै तो श्री म्हाराज जैसिंघजी ने श्री महाराज कंवार सारा अेक थाळ भेळा विराजिया । अठी ने लोहापोळ तांई ने उठी ने रसोवड़ा री पोळ तांई मारवाड़ रा ने आंबेर रा भारी उमराव पांतीये बैठा । रसोड़ा री पोळ सु लेने श्री चांवड़ा माता तांई दस हजारीया, पांच हजारीया, छोटा सिरदार आंबेर रा केईक अठारा पांतीये बैठा । नै लोहापोळ रे बारे लेने गोपाल पोळ तांई आबेर रो फुटकर साथ पांतीयै बैठो । घणो भारी हंगाम हुवो । नै अरोगियां पछै थाळ आला तासलियां सूधो जैपुर

---

**शब्दार्थ—**

1. उथापे नहीं = अमान्य नहीं करते हैं । 2. बाय दिवी = फेंक दी । 3. धमीड़ा = मुक्के की चोटें । 4. छाती फाटे = घबराते थे । 5. जलूस थी = सजावट थी । 6. गरक किया = गहरा रंगा कर दिया । 7. नेत आयो = निमन्त्रित कर आये ।

रा चाकरां ने दिरायो । सुं रुपीया पांच तथा सात हजार रै आंसरे हुसी । इण रीत बाई जी रो व्याव हुवो । ने गोपाल पोळ सुं लेनै फतेपोळ तांई जान पाछी जावतां पेहला जाड़बोर[1] मंगाय राखिया था सु बिछाया । रात रा पाछा जावता घणां आख-ड़िया, इसी हंसी करायी ।

भं० अनोपसिंघ रुघनाथोत ने फौज देने अेमदाबाद रे सोबे विदा कियो । नायब भं० रतनसिंघ उदैकरणोत नु राखियो । अेमदाबाद रो साऊकार भंडसाळी कपूरचंद जबर घणो । किणी चूक तकसीर वाळा कनै रुपीयो लेण देवे नहीं । इणां रा वडेरा[2] मारवाड़ रा गयोड़ा था । चंदरसेण जी थकां तुरकांणी हुई तिण में गया था । सुं कपूरचंद ने नायक सवाजबगस कनै दगो कर मरायो[1] । सं. १७७७ रा में सोबो तागीर हुवो, बरस दोय रहो ।

सं. १७७७ रा काती में रा० सांवतसिंघ किसनसिंघोत जोधा रतनोत दूगोली रो तिण नूं चूक करने मरायो । सरनावड़ा रा गोयंददासोत सिवसिंघ गोपीनाथोत ने म्हैल ने मरायो । अमल नागोर में बैंठण देतो न थो,[3], तिण सुं मरायो ।

सं. १७७७ उतरतां दिली पातस्याहा म्हैमदस्याह री पातस्याहत थी, नै स्हैदां रो हुकम छै, वजीरायत ने बखसी दोनु खिजमतां । सुं स्हैद कर जिकू हुवै छै[4] । हसनअली तो दिली छै, लाख फौज सूं । नै भाई अब्दुला दिक्खण दोय लाख फौज सूं छै । नै मुगलां में कचाई[5] छै असद खां तो मसीत में छै, दूजा मुगल छड़ा बिछड़ा रह्या । नै मुगल जणों एक म्हैमद अमीखां सुं स्हैदां सूं ललोपतो लाग स्हैदां रा मुंढा आगै काम काज भलायोड़ो[6] करे छैं । पातस्याहा म्हैमदसाह चित में बिचारीयो-- "म्है कैण रो पातस्याह छूं । स्हैद हरामखोर छै मोजदीन फरकसेर दोय पातस्यावां ने

---

**शब्दार्थ–**

1. जाड़बोर = झाडी के बेर (छोटे) । 2. वडेरा = पूर्वज । 3. बैंठण देतो न थो = होने नहीं देता था । 4. जिकू हुवै छै = जो ही होता है । 5. कचाई = कमजोरी । 6. भलायोड़ो = बताया हुआ ।

**टिप्पणी-**

१– मीरात०, पृ. 398-99 पर सवाजबगस का सही नाम 'ख्वाजाबगस' लिखा है ।

इणां बिगाड़िया पाट घात[1] चाकर कांम्र रा नहीं नैं तखत सांमळ रह्या सु साम धरमी छैं।" इसी दिल में स्हेदां सु दाहा लागी[2] पिण बेंत जोर[3] कोई दीसे नहीं इऊं करतां अेक दिन मुगल म्हैमदअमी स्हैदां कनां सु अरज (करण) ने पातस्याहा कने आयो थो। तरै पातस्याहा इण ने फुरमायो--"म्हैमदअमी मुगल सब मर गये।" तरै इण कह्यो—'हजरत सीलांमत मुगल न मुवे। सब जीवैं छैं।" इतरी बात हुई। पछै म्हैमदअमी खां मसीत में गयो। असदखां ने आ वात कही। तरै असद खां तो औरंगस्याही हुतो सु कयो--म्हेमदअमी मुगल पांचवे सातवें दिन निमाज रे राहा मसीत में भेळा हुवे तो खूब है।" सु हमें भेळा हुवां करे छै। इऊ करता फेर अेक दिन पातस्याहा म्हेमदअमो ने कयो "असद खां बुढे हुवे। अब कुछ अकल है क न है।" तरै इण कयो–"हजरतपना उसमें तो अकल तो वोहोत है, पिण तखत में निघे[4] न है।" तरै पातसाहा फुरमायो--"जे कुरान माथे लेवे तो फुरमावां।" तरै इण कह्यो-"हजरत सात वार माथे, लिवी मैं जात का मुगल हूं। आप खतरो मत राखे।" तरै फुरमायो–तु गोसे रख असद खां ने कहै, पातस्याहा गोसे मिलंण आवे।" इण असद खां ने कह्यो। असद खां केयो--"मेरे तो पातसाहा सु काम नहीं, पिण आवेगो तो मैं कुछ कऊंगो। पछै राजी बेराजी[5] हुवे तो क्हैण ने आवे।" तरै इण पाछी पातस्याहा ने गुदराई[6]। तरै पातस्याह रात रा फकीर रो भेख कर गोसे असद खां कने गयो। तरै असद खां कह्यो-'आव हरामी के साहब।" तरै पातस्याह कयो--"जाणता समझता तो सबहूं पिण कुछ ढब लागता न है।" इण तरै पातस्याहा वात करने पाछो आयो, स्हैदां ने चूक री सला ठेहरी[7]। सु पातस्याह कने इसो बळ नहीं ने सला वाळो पिण नहीं।

तरै असद खां औरंगसाई तो चाकर अकलवंत ने बेटा जुलफगार रो पिण बैर। सु अेक दिन मसीत में मुगल हैदर खां आयो। तरै सेणों जवांन[8] जांण असद खां कह्यो– "हैदरीया कोई मुगल ऐसा बी है, सु जुलफगार रो बेर लेवे।" जद हैदर खां मुढा सूं थूक ने कयो--'बापू जी थूक सूं मार डालूं हसन कूं"। पछै दोय आंगळी असद खां सांमी करने कह्यो– दोय आंगळी से हसन कूं मार नाखूं।" सु असद खां सु बात सला कर ने हैदर खां डेरे आयो। नै डेरां सु तयार होय ने पेस कबज ले आपरा च्यार सो आदमी जवान ले ने दिली बाजार में हसन अली असवारी

---

**शब्दार्थ-**

1. पाट घाट=गद्दी पर घात करने वाला, बादशाह के हत्यारे। 2. दाहा लागी=क्रोधाग्नि उत्पन्न हुई। 3. बेंत जोर=अवसर या बल। 4. निघे=दृष्टि में। 5. राजी बेराजी=नाराज होना। 6. गुदराई=कहा। 7. सलाह ठेहरी=निर्णय लिया। 8. सेणों जवांन=भला सिपाही।

कियां दरगाह[1] जावतो थो । सु बाजार में हैदर खां रा आदमी डावी जीवणी बाजू दोय सो लगाय दिया तीस-चालीस पांवड़ा दूर । नै हैदरखां अकेलो हालनै हसनअली री पालखी कनै मुलाजमत सीलांम करतो करतो आय ने कागद एक खोल छाती सु लगाय ने कयो-वजीर साहब गुजरात सु खत वादे अब ही आये हैं । कुछ मालम करणां है ।' तरै हसनअली कयो आगो आव ।' तरै सीलामती कर पालखी कने आय कागद दियो । हसनअली तो बाचण री धुन लागो[2] नै हैदर खां पेस कबज काढ़ चलाई -- दोय चोट[3] बाही । पेहला चोट तो कह्यो - आ तो मोजदीन जुलफगार का वैर की, ने दूजी चोट कह्यो - आ फरकसेर की ।' चूक कर नाठो सु वाजूवां में आपरा दोय सो आदमी था जिणां में पोहतो । नै असवारी री जळैबो लोक[4] थो सूं हाक वाकिया होय हवेली आयो । तरै लाख फौज नवाब वगेरे था, जिका हाक हूक[5] करण लागा । तरे मुगल म्हैमद-अमी स्हैदां कने थो जिण कह्यो--थे तो पातस्याही बंदा[6] छो. किस वासते कुछ करो । अंह काम तो हजरत पना रा हुकम सुं हुवा है ।'' पछै लोक तो बिखर गयो । पातस्याहा जी सुं अरु बरु हुवो । नै हसनअली ने हाथी रा पग रै बांदने घर घर बारणे फेरीयो । वजीरायत मुगल कमरदी खां ने हुई, बखसी खानदौंरा ने हुई ।

अंह समाचार आंबेर सु जैसिंघ जी ने पैहला पूगा[7] रात रा, सुं उण सायत[8] श्रीजी सुं बिना मिळिया बिना पूछियां सूरसागर सु चढ आंवेर होय दिली गया । नै पछे श्रीजी सुं पिण मालम हुई । ने दिखण में भाई अब्दुल्ला सुंणी । तरैं बोहोत रोस कियो । दोय लाख फौज सूं दिली उपर उण सायत कूच कियो । सु बीस कोस री मंजिल किवी तरै फोज रा लोकां कह्यो -'हुण हार तो परो हुवो । इतरी अदीर[9] करावो मत । लोक निभसी नहीं[10] थक जावसी ।" तरै अब्दुल्ला कह्यो--दस हजार पोहती चाहीजं । पातस्याह कितरीक बात, म्है करूं सोही पातस्या, ठोकर रे मुंढै ऊडाईस ।' इसो जोर कर धवलपुर मुतसल फौज आई । अठै दिली सु पातस्याही लोक मुगल वगेरे सितर असी हजार फौज सांमो डेरो कियो । 'हमें राड़ हुई सु पेहला तो अब्दुला री सकस हुई । पातसाही तोपखाना रा नग था सुं ऊंदा मार दिया पातस्याहा री फोज चळ विचळ होवण लागी । नै स्हैद अबदुला हाथी असवार थो । हाका करतो थो । ने पातसाह रा कटक में हाथी थो सु पातस्याहा रा तेज आंकुर तावै[11]

---

**शब्दार्थ-**

1. दरगाह=शाही दरबार । 2 धुन लागो=ध्यान दिया । 3. चोट=प्रहार । 4 जळैबी लोक = असैनिक सेवक । 5. हाक हूक=हो हल्ला । 6. पातसाही बंदा=बादशाह के स्वामीभक्त सेवक । 7. पैहला पूगा=पहले पहुँचे । 8. उण सायत=उसी समय । 9 अदीर=अधीरता । 10. निभसी नहीं=निभाव नहीं होगा । 11. तेज आंकुर तावै=पुण्य प्रताप से ।

अब्दुला रे हाथी ऊला हाथी ने दीठो ने रीस में, जोस में आय ने अबदुला ने ले ने नाठो। सु पातस्याहा री फोज में ले आयो। घोड़ा लोक सु कांई गरज न पली। अब्दुला ने पकड़ लीनो। पातस्याही फतै रा नगारा सैदानां बाजिया। स्हैद नाठा। केई चाकर रह्या। अबदुला ने कैद कियो, मारीयो न थो। इण रीत हसनअली अबदुला दोनुं भाई जिसी हरांमखोरी थी जिसी सजा पाई। नै म्हैमदसाहा जोर में आयो[1]।

सारा समाचार जोधपुर श्री हजूर मालम हुवा। तरै श्री म्हाराज विचारियो–'हमें पातस्याहा रो भरोसो न छै।' नै जैसिंघ जी पातस्याहा कने सरफराज हुवा। महाराज रो गुण भूल गया। पछै श्री महाराज जोधपुर सु कूच कर सोवे अजमेर पधारीया। अजमेर में पातस्याही चाकर था तिणां सीगलां ने[2] सीख दिवी। नै अजमेर सजी।[1] पातस्याह रै हुवै जितरा सारा कराया। तरै पातस्याहा सु मालुम हुई। महाराज अजीतसिंघ जी कोई बात खातर में आंणै न छै। सु पातस्याहा घणो रोस चढ़ियो। नै अंबखास[3] वणाय निवाबा ने हुकम फुरमाया। अजमेर उपर मुदफर अली ने विदा कियो। तीस हजार लोक साथे दियो। नै मुदफर री जमीत रो थोईज सु दिली सु अजमेर उपर कूच कियो।

अजमेर में श्रीजी दरवार कियो। उमरावां ने बुलाया। श्री म्हाराज कंवार अभैसिंघ जी पिण हजूर पधारीया। सला हुई। तिण उपर श्री महाराज कंवार अरज किवी–'आप खुस बखसी[4] राखे, अजमेर विराजिया रेवे। मोनूं बीड़ो देने[5] विदा करावै। ऊसवास फुरमावे नही। मुदफर किसूं, पिंडा सूं पातस्याहा आवे तो आपरी किरपा सु पातस्याहा ने पकड़ लेऊ।' नै उमरावां पिण घणी हमराय[6] सु अरज किवी। श्रीजी घणा खुस हुवा। श्री कंवर जी ने बीड़ो दे सामा विदा किया। भं० रुघनाथ दीपावत ने साथै म्हैलियो। घणी जलूस सुं असवार हुवा।

---

**शब्दार्थ–**

1 जोर में आयो = शक्तिशाली हुआ। 2. सीगलां ने = सभी को। 3. अंबखास = खास दरवार लगा कर। 4 खुस बखसी = प्रसन्न रहें। 5. बीड़ो देने = उत्तरदायित्व सौंप कर। 6. हमराय = एक मन होकर।

**टिप्पणी–**

१– जोधपुर ख्यात०, भाग 2, पृ. 178; राजरूपक, पृ. 523–24; सूरज प्रकाश, भाग 2, पृ. 94।

पेहला तो जाय नारनोल लूट लियो पातस्याही रसोवड़ा ता० सोवा री जायगा थी। माल घणोई लूटीयो, तिण रो पार नहीं । नारनोल में तुरक था सुं भाज गया । नै लूट में सिरदार फौज धणी धापी[1] । पछै नरनोल सूं कूच कर स्हैर साहजहांपुर डेरा किया । अमल कियो । कनां ताप सूं[2] मुदफर तो भाज ने पाछो दिली गयो । नै दिली में खळभळो पड़ियो । भार जमना पार हुवो । सामां आवण री आसंग[3] न आवै । तरै पातस्याह बात कराई । कंवर जी ने दिली बुलाया, मुलाजमत करी । नै लारा सुं कंवर अणदसिंघजी नै फेर विदा किया । साथे भं० थानसिंघ मनरूप फौज लेने डीडवाणों मारीयो । श्री अभैसिंघ जी ने सिरपाव मुनसब दियो । सपत हजारी नोबत हुई । नांव धूंकलसिंघ फुरमायो । श्री कंवर जी सीखकर जोधपुर पधारीया । श्रीजी रै पावां लागा । तरै घणां राजी हुवा । पिण श्रीजी रै कांई मरजी आई सुं श्री कंवर जी ने म्हेलां में पधराया ।[4] भं० खींवसी मोकळी अरज किवी-हमें श्री कंवर जी सायब ने म्हैला में मत रखावै ।' सुं नहीं मानी । फुरमायो-'थूं कंवरां रो ऊरसो[5] राखे छै ।' तरै चुप रह्यो ।

नै खींवसी ने दिली म्हेलियो । सुं अरज करने बाईसी[6] तो मोकूफ रखाई । नै राजराजेसुर ने राजराजनदार रो किताब (खिताब) पातस्याहा कनै सुं कढ़ायौ, नै श्रीजी ने म्हेलियो । श्रीजी रा लिखिया सूं राजराजेसुर रो खिताब जैसिंघ जी नुं हुवो । नै श्रीजी भं० भींवसी नु लिखियो-'हिंदस्थान में जजीयो आदमी दीठ रुपिया ७) ५) ३।।) लागतो सुं माफ करो । नै अवदुलाखां नु छोड़ो तो चाकरी करां ।' तरै भं० खींवसी अरज कर जजीया माफ रो हुकम हुवो । नै अवदुला खां रो पिण हांकारो भरीयो[7] । तरै जजीया माफ रा सिरपाव दिसां भं० खींवसी नुं निबाव कयो-'म्हाराज अठे नहीं, तिण सुं पेहला सिरपाव जैसिंघजी नुं देसां, नै पछै थे लेवो । तरै खींवसी कयो-'जजीयो माफ करसो तो पेहला सिरपाव म्हानै देवो । हूं म्हराज री ऐवज[8] हूँ । नै नहीं तो म्हैं त्यार नहीं । तरै श्री जी रा प्रताप सु पेहला तो खींवसी ने हुवो । पछै जैसिंघ जी ने हुवो । सुं जैसिंघ जी इण बात सुं मोकळा वेराजी हुवा, निपट खारी[9] लागी ।

हमें भं० खींवसी पातसाहाजी सुं विदा होय नाहर खां चेला नु साथे लेने

---

**शब्दार्थ**–

1. धापी = सन्तुष्ट हुई । 2 ताप सूं = प्रभाव से । 3. आसंग = हिम्मत । 4. म्हेलां में पधराया = महलों में नजर कैद कर दिया । 5 ऊरसो = पक्ष । 6. बाईस = शाही मनसबदारों की सेना । 7. हांकारों भरीयो = स्वीकार किया । 8 ऐवज = प्रतिनिधि । 9.खारी = कड़वी ।

हजूर आयो । विदां करता सिरपाव ने पदकां जुहार रा तो खींवसी नु दिया ने उगणीस सिरपाव उमरांवा ने हुवा । नै श्री म्हाराज कूच कर अजमेर सूँ सांभर पधारीया नै राजलोक कंवर पोकरण गया ।

पछै सांभर सु भं० खीवसी चेला नाहर खां ने पाछा दिली ने विदा किया । ने केवायो-अबदुला खां छूटां म्है हजूर आवसां ।' तरै नाहर खां ने खींवसी दिली गया । तिण उपर राजा जैसिंघ जी वजीर कमरदी खां जी, खानदौरा जी तीनू भेळा होय ने मनसोबो कियो-महाराज रे तलास[1] अबदुला खां ने छुड़ावण री है । सु ओ छूटो तो आंपणै काम रो नहीं ।' तिण सुं नाहर खां दिली गयो तरै पेहला अै तीनूं ही मिळिया । पोटाय[2] ने ललोपतो कियो । नै कह्यो-पातस्याहा थ्हां सू बूज-म्हाराज रै आवंण री काऊ ठीक । तरै थे अरज किजो—म्हाराज फुरमायो छं अबदुला खां जीवें जितरे म्हाराज चाकर नहीं ।' तरे नाहर खां कह्यो-'हूं आ बात कहूं जिण में मोनू कहूं फायदो[3] ।' तरे इणा कयो-'तू आ कहे तरे अबदुला ने परो भारसी । तरे म्है तोनू हफत हजारी करावसां ।' तरे इणां रा कया सूं इण हीज तरे अरज कीवी । तरे अबदुला खां ने परो मारीयो[1] पछे इणां तीनू अरज किवी-हजरत म्हाराज नू बुलावण नु नाहरखांन ने मेलावे, सु हफत हजारी करने म्हेले । तो औ वराबर बेस ने जाब करे[4] ।' तरे हफत हजारी रो सिरपाव मनसब नाहरखां ने हुवो । ने श्री म्हाराज ने लेण ने नाहरखां ने भं० खीवसी नु विदा किया ।

अबदुला खां ने मारीयां री म्हाराज सुणी तरै जाळपूळा[5] जूँ रीस चढी । नाहरखां ने खींवसी सांभर आया । तरै खींवसी नु म्हाराज बूजीयो-म्हैं तो अबदुला खां ने छुड़ावण ने मेलिया था, ने अबदुला खां ने अफूटो[6] मरायो ।' तरै खींवसी अरज किवी-सारो कांम जैसींघ जी रो है । पेहला तो मनै ठीक पड़ी नहीं । हमै हुई सुं हुई बढावे मती ।' तरै श्री म्हाराज लाल चोळ भर निजर[7] ने फुरमायो-,

---

**शब्दार्थ-**

1. तलास=इच्छा । 2. पोटाय=बहला कर । 3. कहूं फायदो=क्या लाभ । 4. जाब करै=बातचीत करेगा । 5. जाळ पूळा=घास की अग्नि के समान, एकदम । 6. अफूटो=उलटा । 7. लालचोळ भर निजर=क्रोधित होते हुए कठोर दृष्टि से ।

**टिप्पणी-**

१- खफीखां (भाग 2, पृ. 941) के अनुसार सितम्बर 30,1722 ई. के दिन अब्दुलाखां को जहर देकर मारा गया था।

श्री हिंगलाज करसो सु हुसी । पिण नाहर खां ने मारणो ।' तरै खींवसी डरीयो । अरज किवी-खांमखा मारणों हुकम हुवै तरै मने फेर पातस्याहो में जांणो भारी पड़सी[1] । सु डील बेचाक[2] रो मिस कर ने सांभर स्हैर में जाय बेठो । पछै भं० थानसिंघ खींवसीयोत ने रा० सिवसिंघ गोपीनाथोत मेड़तिया ने जाव रे मिस बड़ी फजर मेलिया । सु डेरां उपर गया । सु नाहरखां ने, नै भाई रोयला खां दोना ने मार लिया । डेरा सरब हाथी घोड़ा लूट लिया ।[१] नै फेर संभिया जिण ने मार नाखियो । ने सांभर सू कूच कर पाछा अजमेर दाखल हुवा ।

नाहर खां नु मारीयां री खबर पातस्याहा सु मालम हुई । कना पातस्याहा घणों रोस चढ़ीयो । नै जैसिंघजी घणी भिड़ाई[3] । इण तरै दिली रा चाकर ने मार नांखै । घणी अतराजी कर अंबखास वणायो । वजीर, बगसी, निबाब सरब दरगा बुलाया । अजमेर उपर बाईसी विदा कीनी । हैदरअली, बगस खां पठाण, म्है-मद अमी खां वगेरे इकवीस तो खान ने एक जैपुर रो राजा जैसींघ जी ।

**तुक**

कर कीरोध, विदा कीध सकरोध ।
जैसींघ सहेत बावीस जोध ।।

हमें दिली सु इण फौज रो कूच हुवो । श्री म्हाराज वड़ी फोज जळूस सूं अजमेर था । बड़ो दंगो लागो[4], ने विचार पड़ियो । श्री म्हाराज सीरे दरबार[5] कियो । उमराव चाकर सारां ने हुजूर बुलाया । श्रीजी मूछां वळ घाल नार वाळी एक निजर कर फुरमायो--"उमरावां चाकरां दिली सु आपां उपर बाईसी ने जैपुर वाळो आवे छै । सु कांई सला ।" तिण उपर उदावत अमरसिंघ कुसलसिघोत नींबाज वाळे अरज किवी सु विगत--

---

**शब्दार्थ-**

1. भारी पड़सी = कठिनाई आवेगी । 2. डील बेचाक = अस्वस्थता । 3. भिड़ाई = उकसाया । 4. दंगो लागो = हलचल होने लगी । 5. सीरे दरबार = विशेष दरबार ।

**टिप्पणी-**

१- यह घटना दिसम्बर 27,1722 ई. के प्रातः काल की है । (राजरूपक, पृ. 548-51; सूरज प्रकाश, भाग 2, पृ. 112,114; इरविन० भाग 2, पृ. 112) ।

सुत कुसळ[1] उदहर वळ सकज,
'अमरेस' नांम कीधी अरज।
'अवरंग' छोड़ मुनसब अभंग,
जगसाह[2] आप छळ कीध जंग॥
सजियो जेतारण जुध सधीर,
'औरंग' तणो मारे अमीर।
दळ साज 'अवरंग' रो फौजदार,
बिढ़ीयो गढ़ आये जिण वार॥
आपरा लूण प्रताप अन्न,
'जगसाह' आगै लसियो[3] जवन्न।
'जगसाह' आप छळ समर छोड़,
'मोहकम'[4] दळ लूटै दीध मोड़॥
अनी घणां कीध जुध सुछळ आज,
मांगू सुजि पाऊं माहाराज।
दईवांण'अजण'[5]तद वचन दीध[6],
कर जोड़ 'अमर' तद अरज कीध॥
'म्हैमद' असुर पतसाहा मांय,
इम हिंदवांण पतसाहा आप।
तुल बांदि बरोबर राज तेज,
म्हाराज आप बधतो मजेज॥
ऊथपे थपे पतसाहा आप,
वंक दे भूप न किया ऊथाप।
धर थंभ बरोबर तुजक धार,
वेढ़ रो अेम कीजै विचार॥

---

**शब्दार्थ–**

1. सुत कुसळ=कुशलसिंह उदावत का पुत्र। 2. जगसाह=राठौड़ जगराज उदावत। 3. लसियो=भाग खड़ा हुआ। 4. मोहकम=कंवर मोहकमसिंह राव इन्द्रसिंह का पुत्र। 5. अजण=महाराजा अजीतसिंह। 6. दीध=दीया।

साह हूँ साहा जुटे सक्रोध,
जोध हूं जुटे[1] सदा जोध।
छक बांध नोख जोधाण छात,
विध तेम कीजिये नोख वात ।।
उण साह जोध मेल्हे अनेक,
अर आप मेलजै मुझ अेक।
गढ़ चढ़े नाळ दगाऊं गरीठ,
खंदा दळ गोलां करूं रीठ ।।
आप रा तेज हुंता अभंग,
जवनां दळ अटकूं[2] करे जंग।
गुरधरा मोहर दळ समु अमाप,
उपर काज[3] रहे जै भूप आप ।।
इम सुणै रीझियो[4] पोहो अजन,
जमदढ़ खग बगसे दळ जतन।
सिरपाव बगस बहो[5] सिळे साज,
श्रीहथां[6] खाग बांधे सकाज ।।
कमधज अखाहर 'देवंक्रन',
तड़ जोध साथ 'नाहर' सुतन।
धारक कछ मोहणाहर सुधाम,
सुज किलादार मिंत्री 'संगराम' ।।
'विजपाळ' मिंत्री दळ अवर बांध,
सम्मान दीध गढ़ पेहलां सांध।
दे कुरब माल बहों मान दीध[7],
कमधज 'अमर' इम (सीख) कीध ।।

---

**शब्दार्थ**—

1. जुटे=सामना करते हैं। 2. अटकूं=रोक दूं। 3. उपर काज=उपर के कार्यों के लिये। 4. रीझियो=प्रसन्न हुआ। 5. वहो=बहुत। 6. श्रीहथां=महाराजा के स्वयं हाथों से। 7. मान दीध=सम्मानित किया।

सझ तोरण सिलांम भड़ थाग संग,
भुज ऊत छिवे मळहपे अभंग ।
नवखंड सिरे जुध करण नाम,
'तारागढ़'[1] चढ़ीयो 'असर' ताम ।।
धर उपर काज पौह तेज धाम,
मुरधरा मोहोर मंडीया मुंकाम ।।

## वात

सु इण रीत उदावत अमरसिंघ अरज किवी--'आप तो मारवाड़ में उरा पधार डेरो करो, ने अजमेर छोड़ तुरक आगा न आवे । ने अजमेर मारे माथा साटे[2] छै, सरबता[3] छोड़ सूं नहीं ।" सु इणां ने तो अजमेर म्हेलिया, ने श्री महाराज सांभर सु कूच करने त्रिवेणी, मनोरपुर कने छै, तठे डेरा किया । उठै फोजां बड़ी भेळी हुई । खरची मोकळी दीवी । नै पातस्याह री बाईसी हेदरकुली खां, राजा जैसींघ जी रा डेरा कोस च्यार पांच उपर आय हुवा । म्हाराज राड़ री तयारी किवी । सवारै राड़ करसां[4] तरै जैसिंघ जी ठावा आदमी श्री म्हाराज कनै म्हेलिया ने अरज कराई–"पातसाहां सु राड़ कियां पोंचा न पोचां । राठोड़ मरसी तो फेर पैदास न हुसी । पातस्याहा री फौज मरी तो फेर दुजी आवसी, पछै मरजी । आप हिंदस्थान रा मालक हो । सु पातस्याहा री फौज रो कुरब राख[5] अेक मजल डेरो पूठो[6] करावे ।" तरै श्री म्हाराज विचारियो-"ठीक है" । मजल अेक डेरा ऊली कांनी किया । नै पातस्याहा री फौज रा डेरा श्री म्हाराज री फौज रा डेरा री ठोड़ हुवा । पछै श्री म्हाराज तो दरकूच अजमेर हुय मेड़तै पधारीया । नै पातस्याह री फौज बाईसी अजमेर आयी । मोरचा लागा, पिण कांई गरज पली नहीं[7] । ने निबाब हैदरकुली सिरबलंद ने जैसींघ जी हाथी रे होदे तीनू भेळा असवार था, दरगा दरसण ने जावता था । सु गढ़ उपर सु गोळो इसो आयो सुं हाथी रो मावत तो उड़ गयो । हाथी पांणी पीवण ढाबियो[8] थो । नहीं तो तीनू ही उड़ जाय जु दर्गी थी । पछै निबाब ने जैसिंघ जी वात कराई । श्री म्हाराज ने अरज आई । म्हाराज कंवार

---

**शब्दार्थ**–

1. तारागढ = अजमेर के दुर्ग का नाम । 2. माथा साटे = सिर के बदले । 3 सरवता = सर्वथा । 4. राड़ करसां = युद्ध करेंगे । 5. कुरब राख = मान रख कर । 6. पूठो = पीछे । 7. गरज पली नहीं = स्वार्थ सिद्ध नहीं हुआ । 8. ढाबियो = रोका, खड़ा किया ।

श्री अभैसिंघ जी ने दिली मेलाइजै, ने इतरो मनसब छोड़णो-तिण री विगत--

१ अजमेर, १ भीणाय, १ केकड़ी, १ तोडो

१ परबतसर, १ मारोठ, २ हरसोर, भेरुंदो।

१ तोसीणो, १ वंवाल, २ सांभर, डीडवाणो।

१ नागोर, १ बांहाल।

तरै श्री म्हाराज विचारीयो हाल जाव लगाय लेणो। सं० १७७९ औ जाब हुवो।[1]

श्री कंवरजी नै जोधपुर सुं बुलाया पातस्याहा री फोज में अजमेर म्हेलिया। नै पेली भं० खींवसी ने साथे जावण रो फुरमायो। तरै खींवसी जाणियो-'साथे गयां माथे ढांग आवसी[1]। श्री कंवर जी हमें पाछा दोरा आवै[2]। तथा कांई करे तो ठीक नही।' तिण सुं खींवसी तो गयो नहीं। नै भं० रुघनाथ ने म्हेलियो। नै मुख रा० हरनाथ तेजसिंघोत चांपावत आऊवा रो निज-मरजी[3] रो थो, भरोसा बंद[4] तिण ने म्हैलियो। ने फुरमायो-'म्हैं थ्हांरे भरोसे म्हेलां छां।' सुं मेड़ता सुं अजमेर आया। निबाव कह्यो-आप दिली पधारो ने किणी बात रो खतरो रखावो मती। फैर म्है बाईस जिणां बचन देसां।' तरै श्री कंवर जी कह्यो - 'म्है कैण रो खतरो राखां, बचन लेवां। बचन तो कोई लेसी सुं मांहरो लेसी। म्हे किण रो वचन लेवां।' वाईसी वगेरे फौज रो पाछो कूच हुवो। श्री म्हाराज मंडोर दाखल हुवा। नागोर राव ईंदरसिंघजी ने पातस्याहा पाछो दियो। भं० मनरूप हाकम थो, सुं मेड़ते आयो।

नै अजमेर सूं कूच हुवो सुं मजल दोय तथा च्यार ने हरनाथ तेजसिंघोत

---

**शब्दार्थ—**

1. ढांग आवसी = दोष लगेगा। 2. दोरा आवे = मुश्किल से ही आवेंगे। 3. निज मरजी = कृपापात्र। 4. भरोसाबंद = विश्वासपात्र।

**टिप्पणी—**

१— जोधपुर ख्यात भाग 2 पृ. 181; राजरूपक पृ. 560-562; वंशभास्कर, पृ. 3082 के अनुसार सवाई जयसिंह और भंडारी रुघनाथ के माध्यम से यह सन्धि हुई थी।

आऊवा रो रामसरण हुवो । नै श्री म्हाराज मंडोर था, जठे खबर आई, तरै आप सोच घणो कियो, संपाड़ो[1] कियो । अेक टंक[2] नोबत न बाजी । ने श्री म्हाराज जोधपुर गढ़ दाखल हुवा ।

ने कंवर श्री अभैसिघजी दिली पधारीया । पातस्याहा सु मुजरो कियो । पछै फेर मुजरै पधारीया, सु सामले चसमें हपत हजारी चढ़ै ने पाखती रा चसमां बिजा अमीर कंवर चढ़ै । थेटू[3] रीत है । सु कंवरजी वाकब नहीं[4] । तरै सांमलै चसमै पधारीया । तरै मीर तुजक अरज किवी-इण चसमै न पधारैं, ने पाखती रे चसमें पधारैं ।' तरै कंवर जी फुरमायो - 'हमें तो आया सु तो इणीज चसमें जावसां ।' चढ़ण लागा[5], तरै मीर तुजक आडा हाथ दिया[6] । तरै कंवरजी कटारी उपर हाथ दियो । जितरै पातस्याहा देखने खानदौंरा नु मोतियां री माळा दिवी ने कह्यो-'कंवर ने माळा दे ने सदामंद रै चसमें लावो ।' सु मोतियां री माळा पेहराय ने मुजरा री जायगा ले जाय ने मुजरो करायो, नै पाखती रा[7] चसमा कर ने उंचा लाया । कंवर जी रो ई मुलायजो[8] राखियो ने बेदस्तूर[9] पिण बात होवण न दिवी ।

हमें कंवर जी रै जैसिंघ जी सु मोकळी अेकट[10] बंधियो, नै जोधपुर म्हेलां में थकां सगा भाई कंवर बखतसिंघजी सु अेकट बांध राखियो ही थो । पातस्याहा सु गोसे मिळ ने कौल, पंजा कुराण रो मुरातब कियो । भं० रुघनाथ वगेरे केई चाकर कंवर जी सु लगाई । जोधपुर श्री हजूर में आखर अेक लिखियो नहीं । घणा वाला कवां[11] ने सारी बात भूल गया सु विगत घणी है ।

सं० १७७८ रा में खंगारोत स्यामसिंघ मनरूपोत आंबेर सु छाड़ ने श्री म्हाराज कने आया । तिण ने पेहलां तो रुपिया एक हजार रोजीनो दिया, पछै पांच सो दिया । पछै तोडा रो पटो दियो । तोडो श्री म्हाराज रै जागीरी में थो । गोपाळदास कोचर तोडै हाकम थो ।

बूंदी रा राव राजा बुधसिंघ जी जोधपुर आया । आवेर राजा जैसिंघ जी

---

**शब्दार्थ—**

1. संपाड़ो = स्नान । 2. टंक = समय । 3. थेटूं = प्रारंभ से ही । 4. वाकब नहीं = जानकार नहीं, अनभिज्ञ । 5. चढ़ण लागा = जाने लगे । 6. आडा हाथ दिया = रोकने का प्रयास किया । 7. पाखती रा = पास वाले । 8. मुलायजो = कायदा, सम्मान । 9. बेदस्तूर = रीति के विरुद्ध । 10. अेकट = एकता, मेल । 11. वाला कवां = मीठी यादें ।

री बैन[1] परणिया था। बैन रे बेटो थो, सु जैसिंघजी भांणेज दीसां[2] बैन ने कयो- "ओ किण रो लाई।" तरे बैन कयो-"ओ तो साग है, पिण थाने ल्याया सूं हूं जाणूं छूं।" तिण उपर फौज मेल बूंदी खाली कराई। हाड़ा दलेलसिंघ जी ने दिराई। ने आपरी बेटी परणाई। तरै बुधसिंघ जी अठे आया था। सु श्री म्हाराज वड़ो उपर कियो। जद सूँ बूंदी सु इकतार[3] वहै छै।

श्रीजी दिली सु श्री गगा जी हरदुवार पधारीया था, सारा भदर[4] हुवा। भं० खींवसी अरज किवी-"हूं तो भदर हुवोड़ो घर में न रह सूं, पछै मरजी।" तरै माफ कियो। जैन धरम में घणा था, जिण सूं।

श्री महाराजा रा मन में दिली री तरफ रो खतरो घणों पड़ियो। तरै प्रो० जगू ने रा० सकतसिंघ आइदानोत चांपावत रोहट, इणां ने विदा किया-'कंवर जी ने ले आवो।' नै सं. १७७९ जोसी जगू जैकिसन ने आंबेर म्हेलिया था, सु खतरो पड़ियो। तरै आंवता नै मारग में मारीयो, जोधपुर में मारीयो।

सं. १७८० रा असाढ़ ९[1] चुवाण... ..............चीतलवांणा रा री बेटी, सांचोर सूं डोलो आयो सुं परणीया था, नै असाढ़ सुद १३[2] अगरणीया रा म्हैल में पोढ़ीया था, सुं चूक सूं[5] म्हाराज बैकूंठ पधारीया।

म्हाराज वखतसिंघ जी सिणगार चोकी पधार ने रा० अभैकरण दुरगदासोत चोकी थो, सुं फुरमायो-"म्हाराज ने महासतियां ने मंडोर पधरांवण री तयारी करो।" सुं तयारी कर पधराया। अभैकरण जी री रुख[6] कंवर जी में थी। महासतियां साथे कंवर अणंदसिंघजी, रायसिंघ जी सगा भाई ने किसोरसिंघ जी दूमात जुमले तीन कंवर निकळिया।

---

**शब्दार्थ-**

1. बैन = बहिन। 2. भांणेज दीसां = भानजे के लिये। 3. इकतार = एक समान, मधुर सम्बन्ध। 4. भदर = भद्र, मुण्डन। 5. चूक सूं = षड्यन्त्र द्वारा। 6. रुख = विचार।

**टिप्पणियां-**

१- शुक्रवार, जून 19, 1724 ई.।

२- मंगलवार, जून 23, 1724 ई।

म्हाराजा श्री अजीतसिंघ जी लारे सत हुवो[1] सु विगत–

## ६. श्री महाराणियां राजलोकां री विगत-

१. श्री बडा भटीयाणी जी जैसलमेर रा रावल अमरसिंघ जी री बेटी, किसोरसिंघ जी री मां।

१. श्री चहुवाण जी गांव होठळू रा चहुवांण चत्रभुज दयाळदासोत री बेटी म्हाराज कंवार अभैसिघ जी बखतसिंघ जी री मां।

१. श्री छोटी भटीयाणी जी देरावर रा भाटी दलेलसिंघ जी री बेटी।

१. श्री लाडी तूंवर जी लखासर रा तुंवर कीरतसिंघ जी री बेटी।

१. श्री चावड़ी जी मांणसां रा चावड़ा पिरथीराज जी री बेटी।

१. श्री कछवाई सेखावत जी मनोरपुरा रा राव सकतसिंघ जी री बेटी।

१. सीसोदीया ऊमेदसींघ जगतसिंघोत देवळिया वाळां री बहू राठोड़ थी। उणां सूं देवळियो छूट गयो थो। जरै बेटा २ सालमसिंघ, खुमाणसिंघ नाम था, सुं बेटां ने छोड़ ने श्री महाराज साथे आया।

४. सहेलियां

## २०. मांणस राजलोकां रा तथा बांया रा-

| | |
|---|---|
| २ बड़ी भटीयाणी जी रा | १ चहुवाण जी रो |
| २ तुंवर जी रा | १ छोटी भटीयाणी जी रो |
| १ सेखावत जी रो | १ सीसोदण जी रो |
| ३ जाड़ेची जी री | २ रांणावत जी रा |
| २ चावड़ी जी रा | १ देवड़ी जी रो |
| १ कुसळकंवर बाई री | ३ ईंदरकंवर बाई री |
| २० | |

---

**शब्दार्थ–**

1. सत हुवो = साथ में सतियां हुई।

४. खालसा रा मांणस ।

१२ गायणियां ।

९. उड़दा बैंगणियां ।

२. हजूर बैंगणियां ।

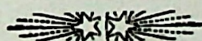
२. नाजर - नाथू, किरपो ।

५. पातरीयां

१. गंगा, महाराज नै चूक हुवो तरै मरांणी ।

**कवत**

राजलोक रीख दूण, बीस पड़दायत थारी ।
संग सहेली च्यार, अगन सीनान ऊजाळी ।।
बारै गायण वळै, वळै नव उड़दा बैंगण ।
हाथ ले चवरी हुवै, हुवै दोय जणा हजुरण ।।
पातरां पांच नाजर बीन है, भलबाई इमरत भावियो ।
सिधवंत अजन सतियां सहेत, सरग - लोक सिधावियो ।।१।।



# सन्दर्भ - ग्रन्थ

## आधार ग्रन्थ

[श्री नटनागर शोध संस्थान में संगृहीत ग्रन्थ]

**राजस्थानी–**


१. जोधपुर राज्य की ख्यात, भाग १ व २

२. मूंदीयाड़ री ख्यात नं. २

३. राठोड़ां री वंशावली (टंकित प्रति-बालमुकुंद खीची के संग्रह से)

४. उदैभाण चांपावत री ख्यात, भाग १, कविराजा संग्रह ग्रन्थ सं. १००

५. पंचोली सिवकरण लालचंद री बही, कविराजा संग्रह ग्रन्थ सं. ६

६. राठोड़ां री ख्यात, कविराजा संग्रह ग्रन्थ सं. ७२

७. कविराजा बांकीदास री ख्यात, कविराजा संग्रह सं. ७०

८. फुटकर पीढ़ियां व ख्यात, कविराजा संग्रह ग्रन्थ सं. ११३

९. जयपुर रिकार्ड (हिन्दी) मूल पत्रों का संग्रह भाग १-४ (वर्तमान में राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में संगृहीत।

१०. जोधपुर राज्य के पुरालेखों का संग्रह

**फारसी-**

१. अख़बारात-इ-दरबार-इ-मुअल्ला–(बहादुरशाह, फर्रु खसियर के शासनकाल के)

(i) रायल एशियाटिक सोसायटी लंदन-संग्रह

(ii) जयपुर संग्रह (वर्तमान में राज्य अभिलेखागार बीकानेर में)

२. फतुहात-इ-आलमगीरी, ईश्वरदास नागर

३. मुनव्वर-इ-कलाम, शिवदास लखनवी

४. तज़्किरात-उस-सलातीन-इ-चगताई, हादी कामवर

## प्रकाशित

**राजस्थानी–**

१. मारवाड़ रा परगना री विगत, भाग १, मुहणोत नैणसी कृत सं. डा. नारायणसिंह भाटी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ।

२. जोधपुर हकुमत री बही, मारवाड़ अण्डर महाराजा जसवंतसिंह, सं. डा. सतीशचन्द्र, डा. रघुवीरसिंह, डा. घनश्यामदत्त शर्मा ।

३. राजरूपक–वीरभाण रतनू कृत - सं. रामकर्ण आसोपा नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

४. सूरजप्रकाश-कविया करणीदान, सं. सीताराम लालस, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ।

५. वंश भास्कर, सूर्यमल मिश्रण कृत, भाग ४, (जोधपुर)

६. बांकीदास री ख्यात – सं. नरोत्तमदास स्वामी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ।

७. अजीत विलास (अज्ञात लेखक), सं. डा. नारायणसिंह भाटी, 'परम्परा' भाग २७, (१९६९ ई.) राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर ।

८. ऐतिहासिक बातें (संग्रह), 'परम्परा' भाग ११, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर ।

**फारसी-**

१. अकबरनामा, अबुल फजल कृत, (अं. अ.) हेनरी बेवरिज, भाग १-३ (बिब इण्डिका)

२ तुज़क-इ-जहांगीरी, जहांगीर कृत, अनुवादक ब्रजरत्नदास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

३. पादशाहनामा, अब्दुल हमीद लाहौरी कृत, भाग १-२ (बिब इण्डिका); हिन्दी संक्षिप्त अनुवाद 'शाहजहांनामा' (संशोधित संस्करण,) डा. रघुबीरसिंह, मनोहरसिंह राणावत, दिल्ली ।

४. वाक्यात-इ-आलमगीरी, आकिलखां राज़ी कृत, सं- जफ़र हसन ।

५. आलमगीर नामा, मुहम्मद काज़िम कृत, सं. ख़ादिम हुसैन और अब्दुल हैय (बिब. इण्डिका)

६. तारीख़-इ-दिलकश, भीमसेन कृत, (अं.अ.) सरकार., बम्बई, १९७२.

७. मआसिर-इ-आलमगीरी-मुस्तादखां कृत (बिब. इण्डिका)

८. मीरात-इ-अहमदी, अली मुहम्मदखां कृत (अं. अ.) एम. एफ. लाखण्डवाला, **Oriental Institute** वड़ौदा ।

९. मआसिर-उल-उमरा, शाहनवाजखां कृत, ( हिन्दी अनुवाद ) भाग १-५, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

**हिन्दी-**

१. मारवाड़ के अभिलेख – डा. मांगीलाल व्यास, जोधपुर ।

## सहायक ग्रन्थ


### हिन्दी-

१. जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग १-२, गौरीशंकर हीराचंद ओझा।

२. उदयपुर राज्य का इतिहास, भाग १-२, हीराचंद गौरीशंकर ओझा।

३. मारवाड़ का इतिहास, भाग १, पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ।

४. वीर–विनोद–श्यामलदास दधवाड़िया, उदयपुर।

५. महाराजा जसवंतसिंह का जीवन समय, निर्मल चन्द्रराय, जयपुर।

६. महाराजा अजीतसिंह एवम् उनका युग - मीरा मित्र, जयपुर।

७. सांभर युद्ध–डा० रघुवीरसिंह।

### अंग्रेजी-

१. ग्लोरीज् आफ मारवाड़ एण्ड द ग्लोरियस राठोड़, पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ।

२. अजमेर, हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव, हरविलास सारड़ा।

३. लेटर मुगल्स, विलियम इरविन, भाग १-२।

४. हिस्ट्री आफ औरंगजेब, यदुनाथ सरकार, भाग १-५।

५. हिस्ट्री आफ खिलजी, के. एस. लाल।

६. हिस्ट्री आफ शाहजहां आफ देहली, बी. पी. सक्सेना।

७. दुर्गादास राठोड़, डा. रघुवीरसिंह, दिल्ली।

८. **Thirty decisive battles of Jaipur, Th. Narendra Singh Jobner.**

# संदर्भ - संकेत - परिचय

| | |
|---|---|
| अखबारात० | =अखबारात-इ-दरबार-इ-मुअल्ला (लंदन-संग्रह) औरंगजेब व बहादुरशाह (श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ)। |
| अजीत ग्रन्थ | ='अजीत ग्रन्थ' बारहट ईसरदास कृत, सम्पादक डा० रघुवीर-सिंह, ओंकारदान चारण। |
| आदाब० | =आदाब-इ-आलमगीरी। |
| आ० ना० | =आलमगीर नामा, बिब इंडिका, कलकत्ता। |
| इरविन० | =लेटर मुगल्स, विलियम इरविन कृत, सर यदुनाथ सरकार द्वारा सम्पादित भाग १। |
| ईश्वरदास० | =फुतुहात-इ-आलमगीरी, ईश्वरदास नागर कृत (श्रीनट नागर शोध संस्थान, सीतामऊ की प्रति) |
| इ० ए० | =इण्डियन एण्टीक्वेरी। |
| उदयभाण चांपावत० | =राव उदयभाण चांपावत री ख्यात (कविराजा संग्रह ग्रन्थ सं. १००, ७५, ७६)। |
| ओझा, जोधपुर० | =जोधपुर राज्य का इतिहास, गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत। |
| ओझा, उदयपुर० | =उदयपुर राज्य का इतिहास, गौरीशंकर हीराचंद ओझा कृत। |
| जयपुर अखबारात० | =अखबारात-इ-दरबार-इ-मुअल्ला, जयपुर संग्रह (श्रीनट-नागर शोध संस्थान, सीतामऊ की प्रति) |
| जहांगीर० | =हिस्ट्री आफ जहांगीर, डा. बेनीप्रसाद। |

जोधपुर ख्यात० =जोधपुर राज्य री ख्यात, भाग १ व २ (श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ)।

थर्टी० =थर्टी डिसाइसिव बेटल्स आफ जयपुर स्टेट, ठा. नरेन्द्रसिंह।

दिलकश० =नुस्ख़ा-इ-दिलकश, भीमसेन कृत (अं. अ.) संपा. सर यदुनाथ सरकार।

दुर्गादास० =दुर्गादास राठोड़, डा. रघुबीरसिंह।

पादशाहनामा० =पादशाहनामा मुहम्मद वारिस कृत (श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ)

फ़ुतुहात० =देखो 'ईश्वरदास'

बही० =मारवाड़ अण्डर महाराजा जसवंतसिंह - 'जोधपुर हकूमत री वही'–सम्पादक डा. रघुबीरसिंह; डा. सतीशचन्द्र और डा. घनश्याम शर्मा।

बांकीदास० =बांकीदास री ऐतिहासिक बातां, सं. डा. दशरथ शर्मा।

भीमसेन० =देखो 'दिलकश'।

मआसिर०; म. आ. =मआसिर-इ-आलमगीरी, मुस्ताद साकी कृत (बिब इण्डिका, कलकत्ता)।

मा० उ० =मआसिर–उल–उमरा, शाहनवाजखां कृत (हिन्दी अनुवाद ब्रजरत्नदास कृत)।

मीरात० =मीरात-इ-अहमदी

मूंदियाड़० =मूंदियाड़ री ख्यात, (हस्तलिखित प्रति, श्री नटनागर शोध संस्थान. सीतामऊ)

राठोड़ां री ख्यात० =राठोड़ां री ख्यात, (कविराजा संग्रह ग्रन्थ सं. ७२)।

राठोड़ां री,ख्यात० =राठोड़ां री ख्यात (वणसूर महादान संग्रह की प्रति)।

रेऊ, मारवाड़० =मारवाड़ का इतिहास, पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ कृत।

वकाये रणथम्भौर० =वकाये रणथम्भौर वा सूबा अजमेर (हस्तलिखित प्रति, श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ)।

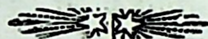
वकील० (राजस्थानी) वकील रिपोर्ट्स (राजस्थानी)।

वाक्यात० =वाकिआते-आलमगीरी।

वंशावली० =जयपुर के कछवाहा राजाओं की वंशावली (श्री नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ की प्रति)

विगत० =मारवाड़ रा परगनां री विगत, मुहणोत नैणसी कृत, संम्पा. डा. नारायणसिंह भाटी।

सारड़ा, अजमेर० =अजमेर हिस्टोरिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव, हरविलास सारड़ा कृत।



# नामानुक्रमणिका

पुरुष---

# स्थल - नामानुक्रमणिका

———